अनंत यात्रा

भाग 2

अनंत यात्रा

अनंत यात्रा

पूज्य श्री बाबूजी

एवं

बहिन कस्तूरी

के

मध्य पत्र व्यवहार

1948 से 1960 तक

भाग–दो

5 अप्रैल 1952 से 31 अक्टूबर 1953 तक

प्रथम संस्करण : जुलाई 1994

मूल्य: 45/–रूपये

प्रकाशक : श्री जी.डी. चतुर्वेदी
सी. 830–A, पारिजात
एच–रोड, महानगर
लखनऊ।

मुद्रक: शिवम् आर्ट्स
211, पाँचवीं गली
निशातगंज, लखनऊ
फोन: 386389

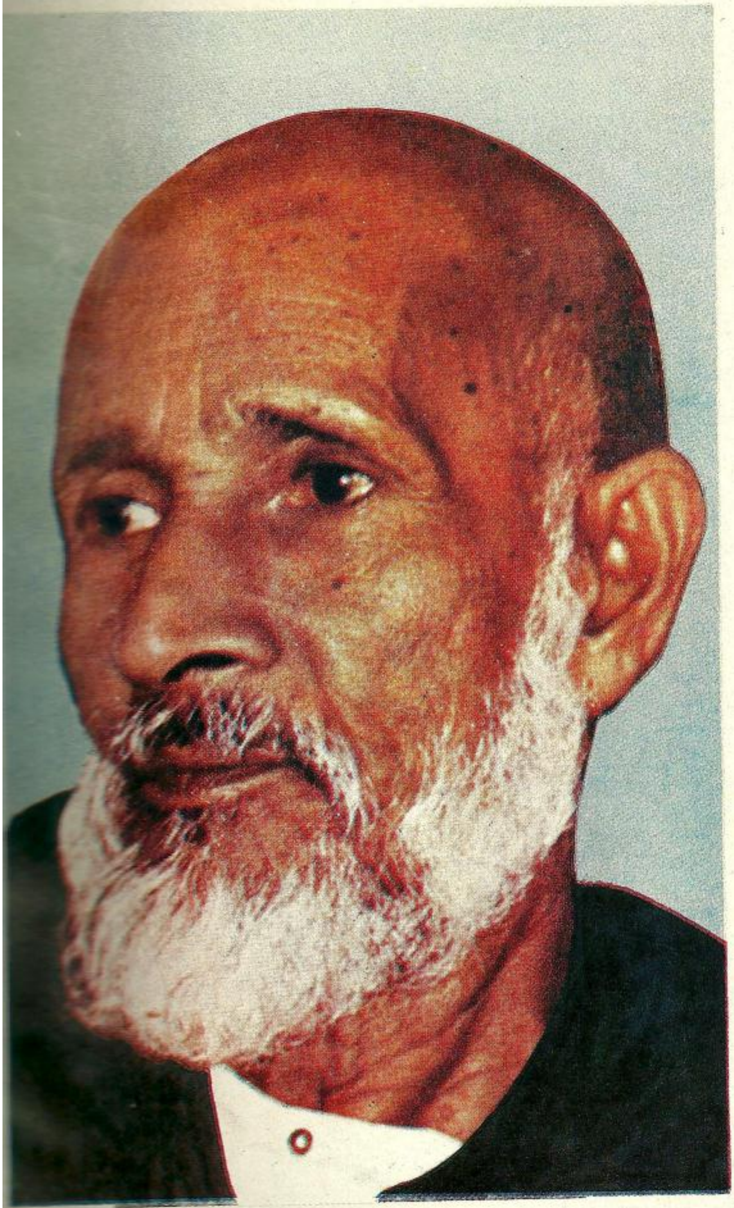

श्री राम चन्द्र जी महाराज

शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)

दो शब्द

श्री बाबू जी महाराज के लिए स्वामी विवेकानन्द जी का डिक्टेट है कि "Go on writing. The time will come when people will understand these things, but publication must be made after you and who ever comes forward for the publication of these writings, his liberation is sealed. Think him to be librated. That is the reward rarely found. I give him."

"लिखते रहो, समय आयेगा जब लोग तुम्हारे लेखन को समझेंगे परन्तु इनकी छपाई तुम्हारे बाद होनी चाहिये। जो भी व्यक्ति इस कार्य के लिए आगे आयेगा, उसको 'मुक्त-अवस्था' की प्राप्ति का इनाम दिया जायेगा। इस प्रकार का इनाम कदाचित् ही कभी प्राप्त होता है। पर मैं उसे यह इनाम दूंगा।"

उपर्युक्त डिक्टेट के संदर्भ में आज न जाने क्यों मेरी लेखिनी मुझे विवश कर रही है उस भाई का किंचित परिचय देने के लिए जिन्होंने चवालीस (44 वर्ष) वर्षों पश्चात मेरे पत्रों और परम जीवन-सर्वस्व श्री बाबू जी महाराज के उत्तरों को पुस्तक रूप में जन-साधारण के लिए उपलब्ध करवाने का प्रयास किया है। पुस्तक का नाम तो श्री बाबू जी महाराज के दिए हुये नाम से ही प्रकाशित है-'अनन्त-यात्रा'।

"मेरा और तुम्हारा पत्र-व्यवहार अभ्यासियों के लाभार्थ छपे", श्री बाबू जी की इस इच्छा को पूर्ण करने का श्रेय मात्र उनके ही पावन-प्रसाद रूपी भाई श्री सुरेन्द्र मोहन प्रसाद जी को है। इन पत्रों को वे अपने अथक परिश्रम से छः भागों में संकलित कर चुके हैं। प्रथम भाग आपके हाथों में पहुंच चुका है; अब आज इसका दूसरा भाग आपके सम्मुख है। श्री बाबू जी महाराज की असीम कृपा से कालांतर में इसके अन्य भाग भी आपके हाथों में आयेंगे।

इस पावन-कार्य में बहिन श्रीमती विमला सिंह का सहयोग भी सराहनीय है जिन्होंने अस्वस्थ होते हुये भी इस कार्य को पूरी करने में पूरी सहायता प्रदान की है।

कस्तूरी चतुर्वेदी

(कस्तूरी चतुर्वेदी)

कु० कस्तूरी चतुर्वेदी

पत्र–संख्या – 206

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबू जी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 9.4.52

आशा है, मेरा पत्र पहुंचा होगा। यहाँ सब अच्छी तरह से हैं। आशा है, "आप" भी अच्छी तरह से होंगे। इधर बहुत दिनों से "आपका" कोई पत्र नहीं आया–सो कभी–कभी कुछ फ़िक्र सी हो जाती है। पूज्य मास्टर साहब जी के यहाँ हमारे मिशन का उत्सव ता. 13 को है, सबको आशा है कि शायद "आप" आ जावें, सुनकर प्रसन्नता हुई। यदि "आप" कृपा करके आवें तो माया, छाया के इम्तहान यदि न होते हों, तो उन्हें भी साथ लेते आइयेगा। भइया तथा उमेश को भी लेते आइयेगा। बड़े दद्दा संग होंगे, "आपको" कोई तकलीफ़ नहीं होने पावेगी। माता जी तथा बिब्बो और प्रतिभा को भी लेते आइयेगा। यहाँ नुमायश लगी हुई है, सबके संग ही मैं भी जाऊंगी। पूज्य "श्री बाबूजी" जैसी "आपको" सुविधा हो, तकलीफ़ न हो, वैसे ही "आप" करियेगा। "मालिक" की कृपा से जो कुछ भी आत्मिकदशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मुझे तो ऐसा लगता है कि सुषुप्ति अवस्था में मन हर समय सोया रहता है, और ऐसा लगता है कि तम में धुसकर खो गया है। या यह कह लीजिये कि मैं सदैव आपे से बाहर ही कहीं, न जाने कहाँ खोई रहती हूँ। परन्तु ऐसा है कि इस सुषुप्ति या तम में चैतन्यता की कुछ रोशनी ज़रूर पड़ती रहती है, जिससे शरीर निश्चेष्ट नहीं होने पाता है, नहीं तो भाई शरीर कब का निश्चेष्ट हो गया होता। मैं तमावस्था में ही हर समय सोयी रहती। अब कुछ ऐसा है कि सुषुप्ति की उस चैतन्यता में ही दशा अनुभव में आती है। परन्तु अब तो यह ऐसी स्वाभाविक हो गई है, कि जैसे रोज़मर्रा की आदत पड़ जाती है। अब तो मुझे इस दशा से भी बेखबरी हो गई है। जब इस चैतन्यता के प्रभाव से याद आती है, तो यह दशा मालूम पड़ती है। परन्तु अब तो इसकी याद भी बहुत कम कभी–कभी ही आती है। वरना यह भी भूल गई हूँ।

पूज्य "श्री बाबूजी" आपका एक पत्र अभी–अभी आया–पढ़कर खुशी हुई। "आप" कहते हैं कि "मैं गाफ़िल रहा।" परन्तु मेरा कहना यही है, कि पग–पग पर "आप" की कृपा ही ने रोशनी दी है और सदैव देगी, इसमें सन्देह नहीं, जिसके कारण ही जो कुछ भी थोड़ी सी भी आत्मिक दशा का आरम्भ है, वह केवल "आपकी" उस महान् कृपा का ही फल है। कहा जाता है कि 'आफ़ताब' की किरणें पड़ने से रेते का ज़र्रा–ज़र्रा भी सच्चे मोती की चमक की तरह मालूम पड़ने लगता है। बस यही बात है, और कुछ नहीं। परन्तु भाई, मेरी निगाह तो उस "आफ़ताब" में ही गड़कर विलीन हो गई। मुझे

तो "उसी" से काम है, और रहेगा। इधर कुछ दिनों से मुझे महसूस होता था कि "आपकी" तबियत ठीक नहीं है और इसीलिये पत्र का बड़ी बेचैनी से इन्तज़ार था कि कहीं से कोई खबर मिल जाती। न जाने क्या कारण है कि मेरी प्रार्थना तथा कुछ 'सेवा' आपको 'आराम' नहीं पहुंचा पाती है। मुझे कोई कुछ बता दे, मैं सब करने को तैयार हूँ। अब "आप" सफ़र न करें। जब अच्छे हो जावें, तो जून में अवश्य आवें। "आपने" एक बार कहा था कि अण्डे से लाभ होता है, सोई कृपया खावें और खुश्की दूर करने को अधिक घी खाना लाभ करेगा। तब अंडे का बढ़िया शोरबा बनाना सीखने की मैं भी कोशिश करूँगी। "ईश्वर" आप को जल्दी से अच्छा कर दे। पूज्य ताऊ जी के लिये भी जो "आपने" लिखा है, पूरी कोशिश करूँगी। छोटे भाई–बहनों को प्यार। इति

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,

पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या – 207

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 11.4.52

तुम्हारा खत आया–उसने काफी ढाढ़स दिया। मुझे फिकर बस इतनी रहती है कि लोग ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठावें। कभी यह भी ख्याल होता है कि जो कुछ थोड़ा बहुत मुझे मालूम है, यह सब सीने में रखकर कहीं ले न जाऊं। कुछ कायरों का यह भी ख्याल है कि मैं जब चाहूँगा एक मिनट में सब कुछ कर दूंगा। ऐसा अगर गुरू महाराज की प्रार्थना की मदद से कर भी दिया जावे, तो उसका कुछ फ़ायदा सिवाय इसके कि बहुत ऊंची पहुंच वाला संत हो जावे और कुछ दिखाई नहीं पड़ता। अगर पूरी ताकत लगा दी जावे तो ज़रूर उसका फ़ायदा हो सकता है, मगर ऐसी दशा में मौत यकीनी है। जब तक रास्ता और घाटी–घाटी अपनी मेहनत करके नहीं देखता, तब तक हर हालत पर Command (प्रभुत्व) नहीं होता और किसी ख़ास हालत को दूसरे पर तारी करने के लिये हिम्मत पैदा नहीं होती। मुझमें कैफ़ियत तारी करने की शक्ति गुरू महराज ने दी है। यह उनका काम था, मैंने उनकी मेहरबानी से अपना लिया, जिसका नतीजा उनकी कृपा से यह है कि मुझे हर कैफ़ियत से वाकफ़ियत है और इसीलिये दूसरों पर फौरन तारी हो सकती है। सच बात यह है कि इस विद्या को ग्रहण करने के लिये सच्चे जिज्ञासु नहीं मिलते। लोगों को अभी तक मज़ा आ गया होता अगर मेहनत और मोहब्बत से काम लेते। मिशन तो तरक्की करेगा ही, मगर अच्छा यह होता कि

इस तरक्की को हम खुद देख लेते और लोगों में वह हालतें पैदा कर देते जो मुमकिन है आइन्दा इतनी जल्दी न हो सकें।

तुम्हारे खत पढ़ने से तुम्हारी सब हालत मालूम हो गई। यह अंधेरे की हालत मुमकिन है पहले भी पैदा हुई हो, मगर मेरी जल्दी की वजह से तुम्हें भास न हुई हो। यह असल हालत की एक भद्दी तस्वीर है और पहले से यह चीज़ ज़्यादा सूक्ष्म है, इसमें अभी और तरक्की होगी। अभी असलियत बहुत दूर है। मुझ पर यह हालत गुज़र चुकी है, और मुझे याद है और खत लिखाते वक्त इस हालत का फिर भास होने लगा। जो एक चक्र पर हालत है, वही सूक्ष्म होते हुए हर चक्र पर मिलती है। यहाँ शायद षट्चक्र कहे गये हैं। लय-अवस्था और लय की लय-अवस्था तुमको बड़े दरबार से पहले ही बख्शी जा चुकी है और बका भी। अब बका की हालत की लय-अवस्था हो रही है। ऐसी जाने कितनी बका और उनकी लय-अवस्था अभी और होंगी, उसका छोर नहीं और सच्चे जिज्ञासु को चैन तो उसी समय मिलता है, जब कोई हालत नहीं रहती। अगर मैं यह कहूँ कि सोलह Circles & seven Rings (सर्किल और सात रिंग्स) पार करने के बाद चैन मिलता है और वह चैन ऐसा है कि किसी हालत में बेचैन होने ही नहीं देता तो पुराने आध्यात्मिकता के इतिहास मुबारक देंगे, क्योंकि यह इज़ाद हमारे लाला जी की है और आप ही ने ज़िन्दगी रखते हुए यह चीज़ मुमकिन कर दी। मैं तो यही चाहता हूँ कि सब लोग इनको Cross (पार) करें, मगर मेरे चाहने से क्या होता है। यह तो ईश्वर की देन है, वह जिसे चाहे दे दे। तुम्हारे भाई-बहनों को दुआ।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या - 208

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 13.4.52

पत्र-मिला, पढ़कर खुशी हुई। तुमने अपने कुल खत का जवाब खुद दे लिया है, वह यह है, "मेरी निगाह तो उस आफ़ताब में गड़कर विलीन हो गई है।" इसको तुमने सुषुप्ति कहा है। यह सुषुप्ति नहीं, बल्कि Forget ful state (भूल की दशा) है। हर मुकाम पर एक लय अवस्था होती है और You gain Mastery over that region by absorving in it. The Same is the Condition now. Sushupti is every where in the human approach but it gets thinner and thinner as we adsvance. At higher pitch it is named as Turia (तुमने उस मुकाम

पर लय होकर उस स्थान पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया है। यही अवस्था अब है। सुषुप्ति की अवस्था मानव की पहुंच के भीतर है। जैसे-जैसे हम उन्नति करते जाते हैं वैसे ही वैसे वह सूक्ष्म से सूक्ष्म होती जाती है है। इसकी उच्चतर अवस्था को 'तुरिया' कहते हैं।)

मैं जो high (ऊंची) चीज़ सोचता हूँ, उसको खुद लिख नहीं पाता हूँ। अम्मा को प्रणाम, छोटे भाई-बहनों को दुआ।

शुभचिन्तक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या – 209

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबू जी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 16.4.52

कृपा पत्र "आपका" एक कल आया तथा एक आज आया, पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। "आपकी" मेहरबानी का धन्यवाद कैसे दिया जा सकता है, वास्तव में धन्यवाद पूर्ण रीत से शायद ही कोई दे सकता हो, हाँ जिस पर अपने "मालिक" की कृपा हो, उसके लिये तो कुछ कठिनाई रह ही नहीं जाती। सच तो यह है "श्री बाबूजी" कि "सीखने वाले" और "सिखाने वाले" का जोड़ा तो बस "आपका" ही देखा, भाई, लाजबाब है। अब आत्मिक-विद्या सीखने की इच्छा वालों को ऐसा समय हाथ नहीं आ सकता। भाई करोड़ों "ईश्वर" ऐसे "मालिक" पर न्योछावर हैं।

कल के "उत्सव" का क्या कहना है तथा पूज्य मास्टर साहब के यहाँ के मिशन के Foundation day (स्थापना दिवस) के "उत्सव"का भी क्या कहना है। सब "मालिक" की कृपा थी। आज "आपके" हाथ का लिखा हुआ हिन्दी का पत्र पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। हिन्दी भी "आप" काफ़ी लिख लेते हैं, यह है कि मैं नहीं जानती थी। "आपने" यह खूब लिखा है कि माँस, मछली खाना पाप तो नहीं है, हाँ हो सकता है, परन्तु कब? जब हम "मालिक" के सिवाय पाप को पाप मानकर करेंगे। पूज्य "श्री बाबूजी" लेक्चरों में ज्ञान के मतलब अपने को पहिचानना बतलाया जाता है, परन्तु ऐसा ज्ञान तो यदि देखा जावे तो हर आदमी को शायद रहता हो, परन्तु मैं तो यही कहूँगी कि अज्ञानी होना, यह सबसे यथार्थ ज्ञान है। केवल "मालिक" को ही जानना ज्ञान है। मुझे ऊपर वाला ज्ञान हरगिज़ ठीक नहीं लगता। अज्ञानी हुए बिना वास्तविक ज्ञान हो ही नहीं सकता और मुझे तो अब यही पसन्द है। वैसे आप जानें। यदि कोई करने वाला हो तो आपके यहाँ ब्रह्म-विद्या प्रारम्भ करते ही अपना भार उतरना प्रारम्भ हो जाता है। हाँ, आपने यह भी पूछा कि "तुम मुझे बतला रही हो तो कहीं तुम तो पाप की भागी नहीं हो रही हो"। परन्तु

मुझे अब इसकी परवाह नहीं है। पाप, पुण्य, शुभ अशुभ, अच्छा, बुरा तो उसी दिन छोड़ दिया था जिस दिन से मन को "मालिक" अच्छा लगा था। मुझे तो भाई सच पूछिये तो यह तक नहीं याद पड़ता कि तभी से अब तक मैं कभी पखाने या पेशाब को भी गई हूँ या नहीं या सोई और जागी भी हूँ। श्वाँस आती है या नहीं, ज़िन्दा हूँ या मर गई हूँ। फिर पाप-पुन्य का प्रश्न उठने की तो नौबत ही कहाँ से आती। हाँ, फिर भी यदि पाप होगा भी तो करोड़ों नर्क भी यदि मेरे लिये और तैयार किये जावें दण्ड देने को तो भी यदि "मालिक" की कृपा से "मालिक" की तस्वीर आँखों में बसी होगी, और ज़रूर होगी, इसमें सन्देह नहीं, तो समस्त यातनायें सहने में भी यदि उफ़ तक मुंह से निकल जावे, इसकी गारन्टी है। पूज्य "श्री बाबू जी" नर्क से तो वह डरेगा, जिसे स्वर्ग की चाह होगी। पाप का भागी तो वह बनेगा, जो पुन्य को जानता होगा। "मालिक" की कृपा से "आप" मुझे इतना कच्चा न समझें। "मालिक" के काम में यदि शरीर की बोटियों की आवश्यकता हो, तो एक इशारे मात्र से अपने हाथों से एक-एक बोटी काट कर चढ़ा दूंगी। मैं तो इतना ही जानती हूँ कि वास्तव में पाप, पुन्य, सुख, दुःख, शुभ, अशुभ यह सब केवल कहने मात्र है, यथार्थ में कुछ नहीं है। केवल "मालिक" ही है और "वही" रहेगा। सेवक की निगाह में यदि "स्वामी" के अतिरिक्त कुछ भी आ जावे तो वह वास्तव में सेवक नहीं रहा। पूज्य "श्री बाबू जी" मैं जाने क्या-क्या लिख गई हूँ, यह पता नहीं। मुझमें कुछ एक भी बात इसमें है या नहीं, यह मुझे मालूम नहीं, और आवश्यकता भी कुछ नहीं दीखती है। "मालिक" जाने, "उसका" काम जाने। मुझे तो बस जिससे मतलब है "उससे" है। हाँ, यह ज़रूर है, कि यदि ईश्वर कहे कि तेरे "मालिक" में यह गुण नहीं था, परन्तु मैं तुझे देता हूँ, तो यह मुझे क़तई नामंजूर होगा। भाई, कुछ नहीं, "उसकी" अहेतुकी कृपा ने मुझे खरीद लिया है। अपने पहले पत्र में जो "एकई साधै, सब सधै" वाला दोहा लिखा, वही मदद दे रहा है।

इधर 5-6 दिन से हालत में शुद्धता नहीं आई, इसलिये शायद हालत कोई महसूस नहीं होती है। अब कुछ यह है कि तबियत में एक तरह की मुर्दनी या बेहोशी हालत कायम हो गई है। पीठ में लगातार कभी-कभी तो ऐसा लगता है, हजारों कीड़े से रेंग रहे हैं। वरना गुदगुदी सी और फड़कन तो हर समय ही रहती है। अब रीढ़ में ही नहीं, बल्कि इधर-उधर की हड्डियों में भी यह बात पैदा हो गई है। कभी-कभी बेशुमार ताकतें सामने आती हैं, अपने में मालूम पड़ती हैं, परन्तु खैर, मुझे उनसे क्या मतलब, सिनेमा की फोटो की तरह से आती रहती हैं। यदि "आप" उचित समझें, तो यह पत्र किसी को न दिखायें, वैसे जैसी "आपकी" मर्ज़ी। पूज्य "श्री बाबू जी" मेरी यह प्रार्थना है, कि आजकल आप कृपया Working (कार्य) तो देखते रहें तो अच्छा हो, क्योंकि मेरी तो अब बड़ी तामसी अवस्था सी हो गई है। कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य का भी विशेष ध्यान नहीं

रहता है। संज्ञाहीन की तरह सारे काम होते चले जाते हैं। मेरी तो वृत्तियाँ तथा चेष्टायें सोई हुई सी महसूस होती हैं। अभी हालत बिल्कुल शुद्ध नहीं मालूम पड़ती है। पूज्य ताऊजी वाले पत्र में समर्थ महात्मा "श्री लाला जी" साहब के Dictate (डिक्टेट) से यदि 'वे' हमारी न सुनेंगे, तो कौन सुनेगा। उनका लाख–लाख धन्यवाद है। परन्तु एक अर्ज़ गरीब की "उनसे" ज़रूर है कि फिर ऐसी मेहरबानी भी रहे कि आपकी तबियत बहाल ही रहे। छोटे भाई–बहनों को प्यार। इति

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना

पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या – 210

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबू जी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 23.4.52

कृपा–पत्र "आपका" कल आया, सुनकर प्रसन्नता हुई। "आपकी" तबियत को कुछ आराम सुनकर प्रसन्नता हुई। मेरी तबियत भी धीरे–धीरे बराबर ठीक हो रही है, चिन्ता की कोई बात नहीं है। वैद्य ने तो साँस उखड़ी बताई थी, परन्तु डॉक्टर ने ज़ोर की ब्रांकाइटिस बताई और फिर उससे साँस को 2–3 घन्टे में ही आराम आया था। अब साँस तो करीब–करीब बिल्कुल ठीक है, फिक्र की कोई बात नहीं है। "मालिक" की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

भाई, न जाने क्या बात है कि ऐसा मालूम पड़ता है कि जिस हालत में हूँ या रहती हूँ, निगाह को सदैव उससे ऊंचा ही पाती हूँ। दो–तीन दिन से हालत बहुत शुद्ध मालूम पड़ती है। ऐसा मालूम पड़ता है कि शरीर के सारे अवयव तथा सारी इन्द्रियाँ तक शान्त हो कर कहीं विलीन हो गईं। भाई, ऐसा लगता है, मुझ में कुछ है ही नहीं। इतनी Innocent या सरल हालत है, कि कुछ कहना नहीं। तो ऐसा लगता है कि मैं कुछ जानती ही नहीं, मेरे कुछ समझ ही नहीं रह गई है, और मुझे उसका बोझ लेकर करना भी क्या है, समय पर काम "मालिक" की कृपा से चलता ही जाता है। पूज्य "श्री बाबू जी" ऐसा लगता है कि हर चीज़ का, यहाँ तक कि हर हालत का भी जैसे End (अंत) कहूँ या यह कहूँ कि सब कहीं विलीन सा होता जाता है, बस एक निगाह ही केवल न जाने किस ओर अपलक देखती हुई रह गई है, यद्यपि अब हाल तो यह है कि उस निगाह

में भी रोशनी खत्म हो चुकी है तथा उसकी (यानी निगाह की) भी सुधि नहीं रह गई है। उससे भी बेखबरी हो गई है। अब तो भाई बेहोशी वाली हालत भी कहीं लय होती महसूस होती है।

कल के पत्र में पूज्य "समर्थ महात्मा जी" ने फैलाव के बारे में तथा और कुछ भी समझाया था, वह सबका सब ही लाजबाव था, उसमें जो भी हालत जहाँ तक "मालिक" की कृपा से मेरी हो चुकी थी, सामने आ जाती थी, इसलिये मेरी समझ में भी कुछ आ गया। परन्तु पूज्य "श्री बाबूजी" कल "उन्होंने" (यानी समर्थ महाराज ने) एक ज़रा बेढ़ब प्रश्न इस छोटी सी लड़की को भी हल करने को दे दिया है, खैर, अपने "मालिक" की कृपा से जो कुछ भी, जैसा भी समझ में आयेगा, अर्ज़ करूँगी, शेष "आप" जानें। इसके पहले "उनके" पावन चरणों में अपने "मालिक" की कृपा से प्रार्थना है कि जैसा कि "उन्होंने" लिखा है यदि बतलाने की इन्तिहा नहीं तो कम से कम अपनी ओर से तो सीखने की भी इन्तिहा ही न होने दूंगी। मेरा तो बस यही जीवन है। मेरी तो यह समझ में नहीं आता कि "मालिक" के बिना जीवन में ही क्या बल्कि संसार में कोई भी आनन्द-आनन्द कहलाने के काबिल हो सकता है। अब उस बात पर आती हूँ। भाई, मैं तो न शास्त्र जानती हूँ न कभी वेद सुना है, मैंने तो जिसे जाना है बस "उसे" ही जाना है। मेरा तो वेद भी "वही" है, और शास्त्र भी "वही" है। और हालत मेरी यह चल रही है कि मुझे यह याद ही नहीं पड़ता कि मैं कभी "उससे" ज़रा सी भी अलग थी। परन्तु फिर भी दीवानगी जो लिखी है, वह तो मैं चाहे जैसे सीखूं, सीखूंगी अवश्य। खैर! अब मतलब पर आती हूँ।

परम पूज्य "समर्थ जी साहब" को सादर प्रणाम करते हुए यह अर्ज़ है कि प्रथम तो जैसा कि "आपने" लिखा है कि आपने "श्री बाबूजी" से यह कहा कि "चौबे" जी को "तुम" जो भी दोगे "वह मेरे ऊपर एहसान होगा" इसके माने तो भाई यह हुए कि "आपने", "उनको" कोई विशेष Order (आदेश) नहीं दिया, कि यह दो। इसके माने इसमें कुछ अधिकार "आपने", "श्री बाबूजी" की इच्छा पर रख ज़रूर छोड़ा था। दूसरे फिर "आपने" लिखा है कि "इसका" जी इस मिक़दार में देने को नहीं चाहता"। इसके माने भी यही हुए कि दिया तो ज़रूर उस मिक़दार में न सही। तीसरे "आपकी" मर्ज़ी उस समय ऐसी थी ज़रूर, परन्तु तेज़ी पर न आई होगी, उस मिक़दार तक न पहुंची होगी जो Order (आदेश) की शकल में बदल जाती जिससे "श्री बाबू जी" को मजबूर होना पड़ता। "आपकी" तेज़ी "उनको" हरगिज़ ठण्डा रहने नहीं दे सकती है। क्योंकि एक पत्र में "श्री बाबूजी" ने लिखा था कि "बिटिया अगर मैं अपने काबू का हूँ तो "अपनी" बात करूँ।" फिर "आपने" सज़ा के बारे में जो पूछा है सो पूज्य समर्थ जी

महाराज जी सज़ा का हक़दार तो वास्तव में वही हो सकता है, जो अपनी ग़लती को महसूस करे, दण्ड का भागी वह हो सकता है जो अपने जुर्म को महसूस करे। परन्तु जहाँ पर सही, ग़लत का कोई सवाल ही नहीं है, जो अपने काबू का ही न रहा उसके लिए क्या कहा जाये। जो सज़ा और इनाम को बराबर ही मूल्य वाला महसूस करे "उसे" यदि सज़ा दे भी दी जावे तो शायद वह उतना ही मूल्य रखेगी जैसे हमारे लिये शक्कर खायें या मिठाई। पूज्य महात्मन् यह सब चीज़ें तो उसके लिये हैं और अब तक हैं जब तक कि जैसा "आपने" लिखा है कि हम किसी के दीवाने नहीं बन जाते। यद्यपि लौ पतिंगे को भस्म ही कर देता है, परन्तु क्या पतिंगे लौ को छोड़ सकते हैं। हम सब पतिंगे तो नहीं बन पाते, इसलिए हमारे लिये रोक हो जाती है, सम्भव है यह चीज़ भी ताऊजी को इनाम मिलने में उस समय रूकावट बन गई हो। सच तो यह है कि यदि पूज्य "श्री बाबू जी" "आपकी" सज़ा के काबिल होते तो यह प्रश्न अब तक हम लोगों के हल करने को रखा न रहता। "मालिक" की कृपा से जो कुछ भी मन में आया, लिख दिया, अब ठीक तो "आप" ही बहुत अच्छा हल कर सकते हैं। मेरी तो यह हालत है कि जैसे बच्चा माँ के साये में मस्त बेफ़िक्र रहता है। बस अपने "मालिक" को पूर्णतयः से प्राप्त कर लूं मेरी आँखें "उसी" की ओर लगी रहें, यही इरा गरीब की प्रार्थना है। मेरे "श्री बाबूजी" को साँस की तकलीफ हरगिज़ न होने पावे, "उनका" शरीर बराबर कमज़ोर न होता जावे, केवल यही मेरी माँग है।

"पूज्य श्री बाबूजी" मेरी तो कुछ यह हालत है या ऐसा लगता है कि जैसा "आपने" अंग्रेज़ी की किताब में Identity (अस्तित्व) के बारे में लिखा है। मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरा तो सब कुछ Forgetful State (भूल की दशा) में या भाई, न जाने कहाँ लय हो गया है। फैलाव तक का भी यही हाल हो गया है। खुद Forgetful State (भूल की दशा) तक भी यदि मैं कहूँ, कि लय हो गई है, तो ग़लत न होगा। Innocent (सरलता) वाली हालत तक का भी अब यही हाल होता लगता है। ऐसा लगता है कि जैसे प्रशान्त समुद्र में एक ख्याल तैर रहा है, वही शायद Identity (अस्तित्व) कही जा सकती है। केसर का पत्र आया है, उनके भी सब Papers (पर्चे) तो अच्छे हुए हैं English Literature (अंग्रेज़ी साहित्य) के Papers (परीक्षा पत्र) मामूली हुए हैं तथा "आपको" प्रणाम लिखा है। छोटे भइया तथा बिट्टो के भी Papers (परीक्षा पत्र) अच्छे हो रहे हैं। माया, छाया के Papers (परीक्षा पत्र) कैसे हुए हैं? छोटे-भाई-बहनों को प्यार। इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या – 211

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 30.4.52

आशा है मेरा एक पत्र मिला होगा। "आपको" शायद अब Injections (इन्जेक्शन्स) से काफ़ी लाभ हुआ होगा। मुझे बस अब कुछ कमज़ोरी भर है, वरन् ठीक हूँ। कमज़ोरी भी कम हो रही है। अम्मा व बड़े भइया तथा केसर ता. 4 तक यहाँ आ जायेंगे। Papers (परीक्षा पत्र) दोनों के अच्छे हुए हैं, आशा है "ईश्वर" की कृपा से दोनों पास हो जायेंगे। "मालिक" की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ यह हाल है कि शरीर से तो मेरा सम्बन्ध बिल्कुल खत्म हो चुका यह मैं शायद पहले भी कभी लिख चुकी हूँ और इसके (यानी शरीर) के सम्बन्धों का भी यथोचित रूप से ख़ात्मा हो चुका है, शायद यह भी मैं लिख चुकी हूँ। अब तो यह हाल है कि सोते, जागते, आराम, तकलीफ़ किसी भी हालत में यह भासता तक नहीं, परन्तु अब तो भाई यह हाल हो गया है कि मैं जहाँ भी हूँ, जिस हालत में भी हूँ, वहाँ भी अब उस मैं की याद भूली ही रहती हूँ, या यह कह लीजिये कि उससे गाफ़िल की सी दशा हो गई है। परन्तु न जाने क्यों कभी-कभी अब कोई ख़ास बात या भाई न जाने कैसे उस भूली याद (यानी मैं पने की) में भी कुछ लहर, कुछ क्षण को ही सही, आ जाती है, परन्तु अकसर इतनी हल्की कि यदि गौर न करूँ (जैसा कि अक्सर होता है) तो मैं इस थोड़ी देर की चैतन्यता (यानी या मैं पने का भास) को पहिचान न पाऊं। पूज्य "श्री बाबूजी" इधर दो-तीन दिन से न जाने क्या बात है कि वह भूल की अवस्था भी खत्म हो गई है। कुछ अच्छा हाल नहीं लगता। कभी ख्याल होता है कि कहीं कुछ ठहराव तो नहीं हो गया। यद्यपि ऐसा हो नहीं सकता है। क्योंकि मुझे तो ऐसा लगता है कि "मालिक" की कृपा से मैं तो बराबर चलती ही जा रही हूँ। कुछ ऐसा लगता है कि अब तो हालत बदलती हुई मालूम पड़ती है। बस अब तो बस ध्यान जाता है, तो मन में एक धीमी-धीमी रटना लगी हुई मालूम पड़ती है। वरना अधिकतर तो इससे भी गाफ़िल ही सी हालत लगती है। अब तो भाई, यह हाल हो गया है कि न मुझे अपने अच्छे होने का ही भास रह गया है, न बुरे का ही। अपना ही क्या, मुझे तो दुनिया में ही अच्छाई, बुराई का भास ही न रहा और चिकना घड़ा या बज्र बहरी भी इतनी हो गई हूँ कि किसी के कहने पर भी जूं नहीं रेंगती, तबियत में कोई action (प्रतिक्रिया) पैदा ही नहीं होता है। पूज्य "श्री बाबूजी" न जाने क्या बात है "मालिक" की जितनी याद मैं चाहती हूँ, उतनी नहीं हो पाती

है। इसलिए तृषा सदैव बढ़ी हुई पाती हूँ। मुझे तो ऐसा लगता है कि "मालिक" की कृपा से मेरे अन्दर एक ऐसा सोखता लगा हुआ है, जो सब चीज़े यहाँ तक कि सब हालतें भी सोखता चला जाता है, सब कुछ जैसे भीतर पचता ही चला जाता है, मगर बस केवल एक तृषा ही ऐसी रह गई है जिसे आन्तरिक तीव्रता मिलती जाती है। छोटे भाई-बहनों को प्यार। कृपया और पत्र भी "आप" देख लीजियेगा। एक माता जी के लिये है तथा एक इन्द्रा को भिजवा दीजियेगा। इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या - 212

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 4.5.52

तुम्हारा खत 23 व 30 अप्रैल दोनों का मिल गया। तुमने अपने अप्रैल के खत में जो जवाब दिया है, वह बिल्कुल सही है। अगर मैं उस सवाल का जवाब लिखूं, जो तुमसे पूछा है, तो उसी चीज़ को बस दूसरे तरीके में लिख देना होगा। मैंने मास्टर साहब को एक खत लिखा था कि मैंने तुम्हें 'C point' (सी प्वाइंट) पर खींच दिया है। यह दोनों तारीखों के खत उसी जगह की हालत बता रहें हैं। अब जितना आगे बढ़ती जाओगी उतना एहसास तो रहेगा, मगर उसके expression (अभिव्यक्ति) के लिए शब्द मिलना मुश्किल होंगे। मैं जब यह सोचता हूँ कि तुमको, बशर्ते कि तुम्हारी हालत रही और यही शौक़ और ईश्वर से प्रेम रहा जिसकी उम्मीद भी है, तो तुमको धुर तक पहुंचाना है, तो मेरे होश उड़ते हैं। वैसे तो लाला जी के लिए धुर तक पहुंचा देना एक क्षण का काम है, मगर उसमें यह बात होती है कि हर बात पर Command (प्रभुत्व देने) करने की हिम्मत पैदा नहीं होती। हालांकि अब तक जिसको कि जल्दी से ऊंचा पहुंचाया गया उसमें से ज़्यादातर ऐसे लोग हैं, जिनको कि मैंने सैर भी करा दी, मगर वह ज़्यादा कारअमद यों साबित न हुए कि हर एहसास पर उन्होंने लय-अवस्था कायम नहीं कर पाई। वजह उसकी यह थी कि उन्होंने अपनी आदत Constant Rememberance (सतत् स्मरण) की न डाली थी। Constant Rememberance (सतत् स्मरण) तो बड़ी सहल चीज़ है। मेरी समझ से उसको कायम करने में दस-बारह रोज़ से ज़्यादा नहीं लगते। मगर यहाँ कोई करना नहीं चाहता। उन्होंने समझ लिया कि जिसको गरज़ होगी वह अपने आप देगा, हम मेहनत क्यों करें। किसी ने बातों से खुशामद करके हमें पोटना चाहा और किसी ने अपने जिस्म की activity (वाह्य

क्रिया–कलाप) ऐसी बना ली कि गोया निहायत फ़र्माबरदार (आज्ञाकारी) हैं। और मैं इसको खूब समझता हूँ और मेरी चाहे गरज़ समझ लो कि जब मैं यह समझता हूँ कि यह आगे नहीं बढ़ते तो मैं जल्दी से उसको खींचता चला जाता था। जल्दी मैं अब भी करूँगा, मगर उस वक्त जब कि अभ्यासी खुद जल्दी करे। मगर यह ग़लती कि कोई खुद आगे बढ़ने की कोशिश नहीं करता और मैं उसको खींचता चला जाऊं, सम्भव है कि आइन्दा न हो। चौबे जी के साथ में जो मैंने जल्दी की वह इसलिये कि उनपर मुझको बहुत तरस आता था। इसलिये कि उन्होंने असलियत के हासिल करने के लिये बड़ी खाक छानी है। मगर यह जरूर है, साथ ही साथ कि असलियत के जानने की कोशिश नहीं की वरना मेरे मिलने से पहले उनको कोई रास्ता दिखाने वाला मिल गया होता। मैंने प्रकाश की शादी में एक दरख्त के नीचे बैठालकर उनको Sitting (सिटिंग) दी थी, उसमें उनकी रूह को यह तवज्जो दी थी कि Central Region (मुख्य केन्द्र) तक पहुंचना है। दूसरे मानों में उनके धुर तक पहुंचने का रास्ता बना दिया है। साथ ही मैंने उनकी सुरति को Constant Rememberance (सतत् स्मरण) में लगा दिया है।

मैंने जो यह कहा है कि "मैं" तुम्हें धुर तक पहुंचाना चाहता हूँ, मगर मेरे होश उड़ते हैं। इसका मतलब यह है कि अभी तुमको बहुत चलना है और मैं यह सोचता रहता हूँ कि कितना–कितना समय लगाया जावे ताकि तुम्हें जानकारी भी होती चले और पहुंच भी जाओ। अक्सर यह सोचने लगता हूँ और मैं तो हर शख्स के लिये यह चाहता हूँ कि वह धुर तक पहुंचे और हर कोशिश करने के लिये तैयार हो, मगर कोई मुझसे काम ही नहीं लेना चाहता। मैं बीमार कितना ही रहूँ, तुम्हें फिक्र नहीं करनी चाहिये, इसलिये कि अभी मेरा वक्त नहीं है।

एक बात लिखने से भूल गया कि मैंने रात Sitting (सिटिंग) (c) स्थान के सैर की दी है। इससे पहले मैं एक काम में लगा हुआ था और दिमाग़ भी कम काम देता था, इसलिये मैंने नहीं दी। बड़े–बड़े स्थान लिये लेता हूँ और अगर हर छोटा मुकाम लिया जावे, जो बड़े स्थान के अन्दर है, तब तो शायद दस हजार वर्ष की ज़िन्दगी भी काफ़ी नहीं है, मगर साथ ही घुमा सब में देता हूँ। सैर का हाल लिखना, इसलिये कि अब तेज़ी से कराना चाहता हूँ, जिसमें जल्दी हो जावे। मुमकिन है कि इस मुकाम की सैर के बाद सात–सात, आठ–आठ रोज़ के बाद दूसरे मुकाम की हालत आती रहे। अब इस जल्दी में यह काम तुम्हारा है कि इसमें लय–अवस्था प्राप्त करती रहो। मैंने

पंडित रामेश्वर प्रसाद के मुकामात जब तय कराये तो 'K' तक तो मैंने गिने थे, उसके आगे मैंने गिनना छोड़ दिया।

शुभचिन्तक

रामचन्द्र

पत्र–संख्या – 213

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबू जी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 4.5.52

"आपका" पोस्टकार्ड जो पूज्य मास्टर साहब के लिये आया था, सुनकर प्रसन्नता हुई। "आपने" मुझे 'C' Point (प्वाइंट) पर खींच दिया है, बहुत–बहुत धन्यवाद है, "आपकी" मेहरबानी के लिये। कल पूजा में मैं और पूज्य ताऊजी जब बैठे थे, तो ताऊजी की कुछ बहुत अच्छी हालत एहसास में आई, सो लिख रही हूँ, सही–ग़लत "आप" जानें। मुझे उनके अन्दर साम्यावस्था की कैफ़ियत दिखाई दी। उनके अन्दर तो तमाम गीता की कैफ़ियत भरी हुई मालूम पड़ती है। कभी–कभी जैसी बीजदग्ध वाली कैफ़ियत जो 'आपने' मेरी एक बार लिखी थी, वैसी मालूम पड़ी यानी ऐसा लगता था कि उनका अन्तर कुछ टिघला सा जा रहा है। शेष 'आप' जानें। मुझे तो जैसा 'आपने' लिखा था, उनकी हालत का भद्दापन तथा भारीपन साफ़ करने को सो इधर 3–4 दिन से मैं और ताऊजी करीब–करीब सबेरे शाम बैठ लेते हैं। "मालिक" की कृपा से अब हालत भी उनकी शुद्ध हो गई लगती है, और "मालिक" की ऐसी ही कृपा रही तो यह चीज़ें शायद अब न आवें। "मालिक" की कृपा से जो भी आत्मिक दशा समझ में आई है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या बात है कि अब ज्यों दिन बीतते हैं Inactive (अकर्त्तापन) पना अपने में बढ़ा हुआ पाती हूँ। कभी–कभी कुछ दिनों तो बहुत बढ़ जाता है। तबियत कभी–कभी बड़ी उचाट हो जाती है। कहीं भी किसी काम में भी जी नहीं लगता है। कभी–कभी घर छोड़कर भाग जाने को तबियत बेचैन हो उठती है। यद्यपि मैं जानती हूँ कि चली कहीं भी जाऊं, परन्तु कोई लाभ नहीं होगा। बिल्कुल Inactive (अकर्त्तापन) पने की सी हर समय तबियत रहती है। याद का उल्टा हिसाब है कि जब कभी एक मिनट को ख्याल आता है, तो ऐसा मालूम होता है कि मानों 'उसकी' याद से उस क्षण कुछ नीचे उतर आई थी, और बुरा भी महसूस होता है। यह हालत जब तबियत उचाट होती है, तो कभी–कभी महसूस होती है या भाई इसी से उचाटपन होता है। नहीं तो हालत में अधिकतर सुन्नपन छाया रहता है। पूज्य "श्री बाबूजी" मेरी तो कुछ अजीब तामसी सी हालत हो गई

है। तामसी प्रकृति सी हो गई है। कभी–कभी तो हरदम नींद की हालत में हमेशा पड़े रहने को तबियत चाहती है। मन चाहता है कि कुछ न करूँ, हाथ–पैर तक न हिलाऊं। ऐसा लगता है कि मन तथा सब कुछ, सारी फुर्ती, भीतरी तथा बाहरी न जाने कहाँ डूब गई है, न जाने कहाँ समा गई है। अब तो भाई हालत में आलसपना भर गया है, बस मन की न जाने कौन सी एक रटना जो लगी हुई है, बस उसी का आसरा तथा "मालिक" की कृपा का भरोसा रह गया है जो पार लगा ही देगा। यद्यपि हालत तो ऐसी हो गई है, कि मेरा तो अब विश्वास, प्रेम तथा भरोसा वगैरह भी न जाने कहाँ लय हो कर खत्म हो गये। पता नहीं भाई कि मेरा क्या हो गया। अब एक यह न जाने क्या बात हो गई कि अक्सर मेरे सामने जो लोग बैठे होते हैं, उनके मन में जो विचार होते हैं, वह मैं अक्सर उनके बिना बताये ही वही बातें कर देती हूँ कि जैसा वे सोचते हैं, खैर मेरा तो ध्यान न जाने कहाँ खो गया, मुझे खुद पता नहीं सब "मालिक" जानें।

छोटे भाई–बहनों को प्यार। इतिः

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या – 214

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबू जी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 7.5.52

मेरा एक पत्र मिला होगा। आशा है "आपकी" तबियत ठीक होगी। ईश्वर की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब कुछ यह हाल हुआ जा रहा है। कि Inactive पने (अकर्तापन) को भी भूली रहती हूँ। ऐसा लगता है कि Inactive पने (अकर्तापन) की हालत भी कहीं लय हुई जा रही है। कभी महसूस होती है और फिर भूल जाती हूँ, और कुछ यह भी हो गया है कि भूलने की भी खबर नहीं रहती है। न जाने भूलती हूँ, न जाने यह भूल क्या बला है, इसकी भी पहिचान नहीं रह गई है। भूलने की भी दशा का खात्मा हुआ जा रहा है। भाई मेरा तो यह हाल है कि मन तो इतना Serious (गहन अवस्था में विलीन) हो गया है कि मेरे लिये तो क्रोध तथा हंसी, खुशी सब ऊपरी रह गये हैं, वह भी खुद सब हो जाता है। उसकी (यानी मन की) हालत में कोई परिवर्तन ही नहीं होने पाता है, वह तो जैसा लगाया गया होगा, वैसा ही धरा है। न उसे ईश्वर से ही मतलब रह गया है, तो फिर प्रेम कहाँ से आवे, न उसे पूजा से ही काम रह गया है, क्योंकि वह व उसका भी कुछ असर नहीं लेता है, वैसा ही वह दुनिया की तरफ़ से हो गया है और मज़ा यह कि उसके Serious

पने (गहन अवस्था में विलीन) की भी मुझे खबर नहीं, हाँ कभी–कभी जब ध्यान देती हूँ कि इसे (यानी मन को) तो वहाँ यही हालत पाती हूँ, जैसा ऊपर लिख चुकी हूँ। न तो उदास ही मालूम पड़ता है, न कुछ, बस वह तो जैसा ठीक दिया गया है, वैसा ही शायद जमक गया है। या यह कह लीजिये कि जहाँ सब कुछ तथा सब हालतों का End (अन्त) होता जाता है, वहीं उसके भी End (अन्त) की बारी आ गई है। यदि साम्यावस्था कहूँ तो उसकी भी पहिचान नहीं रह गई है, वह भी तो क़रीब–क़रीब न जाने कहाँ डूब गई, या भाई मेरे अन्दर के सोखते में वह भी सूख गई है। अब तो एक शुद्ध हालत सी दरसती है। जिसमें न कोई रंग ही दीखता है, न कुछ, बस शुद्ध हालत कह सकते हैं। परन्तु फिर भी "श्री बाबू जी" यह क्या बात है कि मन पर असर न मालूम होते हुए भी मुंह पर तकलीफ़, खुशी, दुख, आनन्द, या कभी–कभी Seriousness (गहन अवस्था में विलीन) के भाव क्यों मालूम पड़ते हैं? इससे भाई, पता चलता है कि अनजान में ही कुछ असर शायद पड़ता ज़रूर होगा, वैसे "आप" जानें। परन्तु यह भी बात है कि मन की दशा में तो कोई परिवर्तन मालूम नहीं पड़ता, शायद वातावरण का Reflection (प्रतिच्छाया) मन पर पड़ता होगा, खैर, यह सब "आप" जानें। छोटे–भाई, बहनों को प्यार। केसर आखिरी मई में आवेंगी। उसके मसूढ़ों का इलाज हो रहा है। इतिः

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,

पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या – 215

शाहजहाँपुर

8.5.52

प्रिय बेटी कस्तूरी,

खुश रहो।

तुम्हारा खत 4.5.52 का बज़रिये डाक पहुंचा और 7.5.52 का खत माता जी के द्वारा मिला। तुमने ताऊजी की दशा जो लिखी है, उसमें कुछ तो सही है। उनके संस्कार बनना करीब–करीब बन्द हो चुके हैं, और साम्यावस्था जो लिखी है, उसकी बहुत सी क़िस्में हैं। बहुत नीचे क़िस्म की साम्य–अवस्था उनमें अन्दर मौजूद मालूम होती है, क्योंकि मैंने इस क़िस्म की उनको तवज्जो भी दी है।

तुमने अपनी हालत Inactive (स्वतःचालित) होने की जो लिखी है, हमारे यहाँ Inactivity (स्वतःचालित) बिल्कुल शुरू से चलती है, पहले ही दिन से। यानी जिस हालत पर कि पहुंचना है, उसका बीज शुरू में ही बो दिया जाता है। जितना Advancement (उन्नति) होता जाता है, उतनी ही वह चीज़ ज़्यादा मालूम होती है किसी चीज़ के याद आने में जो हालत उतरी हुई मालूम होती है, उसकी वजह यह है

कि एकाग्रता कुछ Disturb (भंग) हो जाती है। तुमने यह जो लिखा है कि "मेरी तामसी हालत मालूम पड़ती है, इसलिये कि कभी–कभी नींद में रहने की तबियत चाहती है और कभी तबियत चाहती है कि हाथ–पैर कुछ न हिलाऊं।" यह तामसी हालत नहीं है, बल्कि इन्द्रियों की बहुत कुछ लय–अवस्था हो जाने की दलील है और तुमने यह जो लिखा है कि "जो किसी के दिल में होता है, वैसी ही मैं बातें करने लगती हूँ।" यह शुद्ध हृदय होने की पहिचान है। मेरी हालत यह किसी वक्त बहुत तेज़ थी और अब न जाने कहाँ चली गई। ताज्जुब यह है कि लाला जी में यह बात आखिर वक्त तक रही और मुझमें अब यह बात महसूस नहीं होती। तुमने सात मई को खत में जो Inactivity (स्वतःचालित) को भी गुम करना लिखा है, यह तो बहुत अच्छी चीज़ है। बाकी उस कुल खत का जवाब यह है कि मन जब तक उस जगह पर नहीं पहुंच जाता जहाँ से कि वह आया है तब तक उसकी Seriousness (गहन अवस्था में विलीन होने का) के भाव कुछ न कुछ मालूम पड़ते हैं।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र–संख्या – 216

लखीमपुर
9.5.52

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबू जी,
सादर प्रणाम।

मेरा एक पत्र अम्मा ने 'आपको' दिया होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं। आशा है "आप" सब भी सकुशल होंगे। "मालिक" की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्या बात है कि तबियत में इतनी सुस्ती है कि बेहद। बस दिन भर सोने को तो नहीं, परन्तु नींद की दशा में पड़े रहने को तबियत रहती है, और अक्सर पड़ी ही रहती हूँ। हाथ–पैर हिलाना बुरा लगता है, इसलिये जहाँ उठना पड़ता है या कोई भी बोलता है मुझसे, तो बड़ी खीझ आती है। ऐसी हालत है कि जैसे मन इस सुस्तीपने में लय हो गया लगता है। कुछ समझ में नहीं आता कि क्या हो? कैसे हो? यहाँ तक है कि यदि कोई कह दे कि 'आप' आये हैं, तो भी शायद मन को कोई परवाह नहीं होगी, वह उठने की गवाही न देगा। इतना आलस्यपना तो मैंने आज तक सुना नहीं कि जितना मुझमें भरा हुआ है। इसीलिये बरबस मन को बेकार बातों में बहकाने की कोशिश करती हूँ कि कहीं बेहद की हद को ज़रा पार न कर जावे। फिर भी यहाँ तो यह है कि "सूरदास काली कामर पर चढ़ै न दूजो रंग"। कभी–कभी अन्दाज़ा उस बेहद की हद को पार करने

की दशा का लगा लेती हूँ। पूजा तथा Working (कार्य) जो अपने आप हो, सो हो जावे, वरना लाचारी दिखाई देती है। Constant Rememberance (सतत् स्मरण) अब मेरे बस की नहीं रही। पहले यह हालत कभी-कभी एकाध दिन को हो जाती थी, परन्तु अब तो रहती हर समय है और अधिक रहती है, परन्तु बीच-बीच में दो-तीन दिन को तो बेहद हो जाती है। Control (काबू) में नहीं आती है, इसलिये दिन भर मैं चुपचाप पड़ी रहती हूँ। इसलिये देखने वाले कहते हैं कि अब तबियत अधिक खराब है, इलाज फिर शुरू कर दो। कभी-कभी मैं भी सोचने लगती हूँ, परन्तु कोई ख़ास नहीं। परन्तु अब 4-5 दिन से हाल कुछ और है। ऐसा मालूम पड़ता है कि मन तो मुर्दापने में लय होकर अब विलीन हुआ जा रहा है। पत्र लिखने तथा हालत तक लिखने को तबियत नहीं चाहती है। बरकाते-बरकाते कभी बैठ जाती हूँ तो लिख जाती है। भाई, कुछ यह हाल है कि मुझे तो होश न रहा, इसलिये ऐसा लगता है कि धोखे से फ़ना या फ़नाइयत भी कहीं फ़ना हो गई। अब तो समझ लीजिये कि मुर्दा भी मर गया, ऐसी दशा है। पहले Inactive पना (अकर्मण्य सी) था, अब तो उसकी जगह यह कुछ और हो गया है। वह तो अब खत्म हो गया लगता है। अब तो ऐसा लगता है कि बाह्य तथा आंतरिक ज्ञान कहीं लय हुआ जा रहा है, परन्तु न जाने कैसे 'मालिक' की कृपा-दृष्टि की वे दो आँखें फिर भी कुछ ज्ञान रखाये हुये हैं। छोटे भाई-बहिनों को प्यार।

आपकी दीन-हीन पुत्री

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या - 217

लखीमपुर

11.5.52

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी,

सादर प्रणाम।

कृपा-पत्र 'आपके' दो अम्मा के हाथों मिल गये। समाचार मालूम हुए। पूज्य ताऊ जी ने इधर काफ़ी मेहनत तथा याद रखने की कोशिश शुरू कर दी है, अब ईश्वर मालिक है, उनकी इतनी ही कोशिश बनी रहे। जैसा कि पहले पत्र में "आपने" लिखा था, मैं और वे दोनों समय करीब-करीब बैठ ही जाते हैं।

"आपने" लिखा है कि "अगर तुम्हारा शौक़ और हालत ऐसी ही रही तो तुम्हें धुर तक पहुंचाना है" परन्तु मैं देखती हूँ कि भाई शौक़ और प्रेम तो मुझे मालूम नहीं कि मैं कर पाती हूँ या नहीं, परन्तु न जाने यह बात कुछ हो गई है कि ज्यों दिन बीत रहें हैं, न जाने कैसी बेकली भी वैसे ही वैसे बढ़ती जाती है। शायद 'आप' तेज़ी से सैर कराना चाहते हैं, इसलिये ही यह भी बराबर तेज़ ही हो रही है। 'आपने' यह लिखा है कि 'इस

जल्दी में यह काम तुम्हारा है कि इसमें लय-अवस्था प्राप्त करती चलों सो 'श्री बाबूजी' मुझसे तो जैसा 'आप' चाहेंगे, बराबर वैसा होता ही रहेगा।

भाई, मेरा तो अब कुछ यह हाल है कि मेरी निगाह तो खत्म हो चुकी, रोशनी जाती रही, परन्तु 'मालिक' की कृपा-दृष्टि 'उसकी' निगाह की रोशनी ही मुझे पग-पग पर रोशनी देती हुई आगे बढ़ाये लिये जा रही है। अंधे की लाठी की तरह बस 'उसका' ही सहारा रह गया है। मुझे तो ऐसा महसूस होता है कि 'वह' बराबर मुझे लिये बढ़ाता ही जा रहा है। इधर दो दिन से हालत कुछ बदली हुई सी है। पहले जैसे मैंने लिखा था कि ऐसा मालूम पड़ता है कि सब चीज़ कहीं लय हुई जा रही है। अब इधर तो वह हालत भी गुम हो गई लगती है। मुर्दे में मरकर कुछ नई जान सी आ गई है। दो तीन-दिन से नाभि में कुछ खुरपुर सी हुआ करती है, अक्सर कुछ दर्द भी होता रहता है। छोटे भाई-बहनों को प्यार। अम्मा आपको आशीर्वाद कहती है। इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या - 218

शाहजहाँपुर
16.5.52

प्रिय बेटी कस्तूरी,
खुश रहो।

तुम्हारे खत मिल गये। जवाब की कोई ज़रूरत तो है नहीं, मगर खैर कुछ लिखे देता हूँ।

कोई दुनियाबी मामलात में परेशान, कोई कुछ और ज़रूरी बातों में अपनी तबियत लगाता है, और मुझे यह फ़िकर। जब तुम्हारी हालत मैं Read (पढ़ता) करता हूँ, तो हो जाती है कि अगले मुकामात में कितने दिनों रोका जावे, क्योंकि जो मुकामात आगे आ रहे हैं, उनमें कुछ ज़्यादा मुफ़ीद मालूम होता है और मेरा ख्याल यह है कि जैसे मैंने अपनी जवानी और लड़कपन में गुरू-कृपा से काम निपटा लिया; ऐसा ही मैं चाहता हूँ कि जो लोग आगे बढ़ने की हिम्मत रखते है, उनका काम भी जल्दी निबटा दूं। अब मास्टर साहब के काम में बहुत जल्दी की गई, उससे फ़ायदा यह हुआ कि मुझे ज़्यादा Sitting (सिटिंग) देनी नहीं पड़ती हैं। कभी-कभी कुछ मदद दे देता हूँ या उसके निखारने की कोशिश करता हूँ।

मैं तुम्हारे 'C' point (सी प्वाइंट) पर अक्सर तवज्जो देता हूँ। सैर की हालत अभी शुरू नहीं हुई है, मगर अब शुरू होना चाहती है। मैंने लिखा था कि सात-सात,

आठ–आठ रोज़ हालत पर रखूंगा। 'C' (सी) के बाद उससे अगली हालत में खींच लूंगा। मगर मैं ग़ौर करता हूं तो अगला मुकाम है उसमें और भी Broader Vision (व्यापक नज़्ज़ारा) मौजूद है। अब मेरी समझ में नहीं आता कि क्या करना चाहिये। मैं लाला जी से इस बारे में Dictate (डिक्टेट) लूंगा कि उन्होंने मेरे मुकाम किस तरीके से तय कराये। तुम्हारे भाई–बहनों को दुआ।

शुभचिन्तक

राम चन्द्र

पत्र–संख्या – 219

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, — लखीमपुर

सादर प्रणाम। — 16.5.52

मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। यहाँ सब कुशलपूर्वक हैं, आशा है 'आप' सब भी सकुशल होंगे। "मालिक" की कृपा से जो आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई हालत बिल्कुल उथली हो गई है। हालत बदल गई है। अब तो ऐसा लगता है कि हालत में जो रंगीनी थी, वह धीरे–धीरे खत्म हो रही है धुल रही है। आजकल तो 2–3 दिन से ऐसा हाल है कि न जाने क्यों दिनभर छाती कूटा करूं, परन्तु फिर भी चैन नहीं है। दिन–रात मन में हाय–हाय हुआ करती है। अब तो पहले जैसे हरदम "मालिक" में ही रमी रहती थी, वह भी खत्म हो गया है, शायद इस लिये ही तबियत तड़पती रहती है। शायद मछली को पानी में से निकाल लेने पर, थोड़ी देर तड़प कर फिर तो शान्त हो (यानी मर) जाती है, परन्तु यहाँ तो वह भी नहीं हो पाता है। मेरी हालत तो पहले से बिल्कुल फ़र्क है। इधर तो यह भी हाल है कि मुझे तो एक क्षण को भी यह एहसास ही नहीं होता कि मुझमें प्राण है कि नहीं। मैं तो भाई, यह भी नहीं जानती कि मैं ज़िन्दा हूँ, या मर गई हूँ, या कोई चीज़ भी। बल्कि यह जानने की तबियत भी नहीं होती है। आजकल तो कहीं भाग जाने को तबियत बार–बार फड़कती है। कभी–कभी वहाँ (यानी 'आपके' पास) आने को तबियत बेताब हो जाती है, परन्तु किसी से कहूँ तो क्या कहूं? कैसे कहूँ? खैर, जैसे 'वह' रखेगा, वैसे ही रहना है। इधर तो यही हाल चल रहा है कि कभी तो बेताबी बढ़ जाती है, उस समय तो मुझे कुछ सूझता ही नहीं, न कुछ समझ में आता है। और कभी घट जाती है। इधर तो यह हाल है कि 'मालिक' का मुझे कहीं एहसास ही नहीं होता है। पूज्य "श्री बाबूजी" कहीं मैं "मालिक" से दूर या अलग तो नहीं हो गई हूँ या भाई, यह क्या हालत है। तबियत मे रंगीनी का नाम नहीं है। उदासी की सी हालत ने चारों ओर घेरा डाल रखा है।

बिब्बो का हाल जब से अम्मा आई हैं, कुछ मालूम नहीं हुआ। कृपया उसका हाल लिख दीजियेगा। अम्मा कहती हैं कि माता जी उसे सेब खाने को हरगिज़ न दें। छोटे भाई–बहनों को प्यार। अम्मा आपको आशीर्वाद कहती हैं।

ता. 17.5.52

'आपका' पत्र दद्दा के हाथ जो भेजा, सो अभी मिल गया। 'आपको' इतनी फ़िक्र मेरी है, बहुत–बहुत धन्यवाद है। मैं तो यह कहती हूँ कि विद्यार्थी जो Teacher (शिक्षक) को खुश न रख सका और यदि शिष्य हुआ और सिखाने वाले को खुश न रख सका तो बेकार है और सबसे अधिक तो मनुष्य जीवन में अपने 'मालिक' पर यदि कुरबान न हो सका तो व्यर्थ ही हुआ। खैर, मुझे तो भाई, जिससे काम है, बस है। मुझे My Master (मेरे मालिक) ने दूसरा लफ्ज़ और कोई पढ़ाया ही नहीं। तबियत इधर 10–12 दिन से खराब चल रही है। कमज़ोरी अधिक मालूम पड़ती है। फ़िक्र की कोई बात नहीं है। धीरे–धीरे ठीक हो जायेगी।

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,

पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या – 220

लखीमपुर
22.5.52

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी,

सादर प्रणाम।

मेरा एक पत्र जो पूज्य मास्टर साहब जी के हाथों भेजा था, सो मिला होगा। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई हालत बावजूद कोशिश के भी ठीक नहीं हो पाती है। अब तो भाई बजाय डूबने के उतराती चली आती हूँ। बहुत कोशिश करती हूँ याद करने की, परन्तु अब हालत ऐसी बुरी हो गई है, कि 'मालिक' में भी अपनायत में जो एक मीठी सी छुपी हुई खुशी थी, वह नहीं आ पाती तो उस याद से क्या लाभ। खैर, यह भी 'उसी' की कुछ मर्ज़ी है, परन्तु न उस याद से संतोष ही हो पाता है न कुछ, मन मर सा जाता है। यद्यपि मुझे चैन नहीं पड़ता है, परन्तु फिर भी देखती हूँ कि वह आग जो भीतर मालूम पड़ती थी, अब याद कन्झाने लगी है। एक खाली, रूखी याद या कोशिश से भला क्या लाभ। पूज्य 'श्री बाबू जी' ज़रा कृपया देख लीजियेगा कि हालत में कमज़ोरी तो नहीं आ

गई है। कृपया 'आप' बताइये, मेरी हालत बाढ़ पर है या ठप और मैं क्या करूँ लिखियेगा। छोटे भाई-बहनों को प्यार। इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या - 221

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 27.5.52

मेरा एक पत्र मिला होगा। D.F.O. के यहाँ से ताऊजी से पूज्य मास्टर साहब जी के पत्र द्वारा "आपकी" तबियत अब अच्छी जानकर प्रसन्नता हुई। मेरी तबियत में अभी कोई ख़ास लाभ नहीं हुआ है। कमज़ोरी अभी अधिक ही चल रही है, इसलिए पत्र में दो एक दिन की देरी हो ही जाती है, खैर, ईश्वर की कृपा से सब ठीक हो ही जावेगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो निवेदन कर रही हूँ।

अब इधर हालत बदल गई है। शुद्ध व सरल हो गई है। भाई अब तो यह हाल है कि पहले की, अब तक की सारी हालतें तो ऐसी साफ़ हो गई हैं मानों यह मुझमें आई ही नहीं। मैं ही क्या, यदि "आप" भी देखेंगे तो भी ऐसी ही दशा पायेंगे। अब तो मुझे यह भी नहीं मालूम पड़ता कि मैं absent-minded (भूली हुई सी) रहती हूँ। अब तो यह हाल है कि गौर करने पर भी इसका शक भी नहीं पाती हूँ कि मैं absent-minded (भूली हुई सी) रहती हूँ या थी। मुझे तो अब यह तक नहीं मालूम कि "उसकी" (यानी ईश्वर की) याद करने को तबियत चाहती है या नहीं और फिर यदि कोशिश करूँ भी तो यह नहीं महसूस होता है कि "उसकी" याद से खुशी होती है या नहीं। हाँ, इतना अवश्य है कि एक हालत कुछ ऐसी है जो मन को अच्छी लगती है। अब तो भाई यह हाल है कि न ज़िन्दगी ही रही न मौत ही। न अच्छी ही हालत रही न बुरी ही। न जाने यह सब क्या हो गया है। न हालत में ठंडक ही रही न गर्मी ही। अब तो भाई न वतन में ही रही, न बेवतन की ही रही। अब कुछ यह हाल है कि थोड़े-थोड़े दिन में मन फिर सो जाता है, फिर जागता है, फिर सो जाता है, फिर जगाया जाता है। सुस्ती बिल्कुल नहीं है। पूज्य "श्री बाबू जी" अब तो यह मन ऐसा हो गया है कि अब तो इसे पूजा तक, "उसकी" याद तक में रोचकता रंचमात्र को भी नहीं आने पाती है। मन सो जाता है या शायद इतना घिस गया है, इसलिये शायद शरीर की स्फूर्ति भी सो गई है। एक यह भी बात है कि सोने की दशा महसूस नहीं होती है, बल्कि अन्दाज़ से कह दिया है। पूज्य "श्री बाबूजी" अब तो एक अजीब सहज-अवस्था सी हो गई मालूम होती है। जिसमें अब कोई भी दशा,

कुछ भी अपने में मालूम नहीं पड़ती है, बल्कि सब कुछ शायद उसी अवस्था में गुम हो गया है।

बड़े भइया का Result (परीक्षाफल) दो–एक दिन में आने वाला है, इसलिये कुछ परेशान से हैं। 'आप' कुकरा से यहाँ किस तारीख को आइयेगा, यह नहीं मालूम हुआ। बिब्बो की तबियत का हाल कृपया लिखियेगा कि कैसी है। पूज्य मास्टर साहब जी से मेरा प्रणाम कहियेगा। कभी मुझे ऐसा लगता है कि सबकी अन्तरात्मा मैं ही हूँ या मेरी आत्मा ही सबकी अन्तरात्मा है। और भाई मैं क्या कहूँ, यह मैं जानती नहीं हूँ। दूसरे क्या हैं, यह भी नहीं जानती।

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,
पुत्री–कस्तूरी।

पत्र–संख्या – 222

लखीमपुर
17.5.52

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी,
सादर प्रणाम।

आशा है आप आराम से पहुंच गये होंगे। यहाँ सब अच्छी तरह से हैं। आशा है वहाँ भी सब आराम से होंगे। "मालिक" की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई सादगी से भी सरल तथा शुद्धता से भी कहीं शुद्ध दशा है। आध्यात्मिकता से तो मैं इतनी अनजान सी गई हूँ कि यह क्या चीज़ होती है, यह मैं जानती ही नहीं हूँ या ऐसा समझ लीजिये कि आध्यात्मिकता वगैरह की तमीज़ के बन्धन से भी "मालिक" ने मुझे मुक्त कर दिया है या यों कहिये कि हल्केपन, सरलता तथा आध्यात्मिकता के Result (परिणाम) की दशा हो गई है। या "मालिक" जाने।

ज्यों दिन जाते हैं त्यों ऐसा लगता है कि बिल्कुल खाली, बिल्कुल गरीब हो गई हूँ। अब तो भाई यह मन तथा निगाह कहीं समा गई है। "उसके" अतिरिक्त इनको कुछ सुहाता ही नहीं है। अब तो 'उसके' मद में छकी पड़ी हूँ, मुझे अब कुछ नहीं चाहिये। यह समझ में नहीं आता है कि छकी हुई कहूँ या यह कहूँ कि वह छकापन भी मुझमें समा गया है। मैं तो फिर जैसी की तैसी हो गई हूँ, बस एक तृष्णा ही मेरे साथ है। कभी–कभी सिर में अजीब ठंडी–ठंडी बूंदे सी पड़ती महसूस होती हैं। रीढ़ में अजीब गुद–गुदापन सा महसूस होता है। न जाने क्या बात है "श्री बाबूजी", निस्बत एक अजीब हालत से जुड़ी रहती है और जब तक "आप" यहाँ रहते हैं, तब तक तो कहना ही क्या है, परन्तु

मैं तो अलहदापन को शायद भूल ही गई हूँ और शायद एकाकीपन रहते–रहते एकतापन का भी यही हाल हो गया हो।

भाई, मुझे तो ऐसा दिखाई देता है, ऐसा महसूस होता है कि "मालिक" के तमाम हल्केपन तथा शुद्धताई के समासम या एक सौं broader heart (विराट् हृदय) में मैं तैरती चली जा रही हूँ। एक अज़ीब कैफ़ियत के मैदान में निश्चिन्त तैरती चली जा रही हूँ और ज्यों दिन बीतते हैं, 'उससे' अपने को या उस हालत में अपने को चिमटा हुआ पाती हूँ। पूज्य "श्री बाबूजी" यह क्या दृश्य मुझे दिखाई पड़ रहा है, क्या दशा है, यह वाणी के बाहर की बात है। शब्दों से परे, अति परे की बात है, भाई क्या कहना है, गूंगे का गुड़ समझ लीजिये। मुझे तो ऐसा लगता है कि कहीं यह "आपकी" महत्ता का दृश्य तो नहीं है, जो "मालिक" की असीम कृपा से, "उनकी" ही दी हुई दिव्य दृष्टि से मुझे एक झलक दिखलाई पड़ी है। कृपया "आप" अवश्य लिखियेगा कि यह क्या चीज़ है। वह दृश्य मेरी आँखों के सामने है। इतनी कृपा "मालिक" की और है कि जो मुझे ऐसा महसूस होता है कि बस उसी broader heart (विराट् हृदय) या एक अलौकिक दशा में मैं तैरती चली जाती हूँ या मेरा, केवल एक ख्याल उसमें तैरता चला जाता है। भाई, अब तो ऐसा लगता है कि सब पीछे की हालतों से मेरी तृप्ति हो गई है और वे सब तो कोसों पीछे छूट गई हैं। बस अब तो इसी में चलना है, चल रही हूँ, तैरती जा रही हूँ और तैरती जाऊंगी, छोर नहीं है।

पूज्य "श्री बाबूजी" मुझे न तो रत्ती भर भी Liberation (मुक्ति) की चाह है, न ध्येय की याद है, बस "उसका" ध्यान "उसी" की कृपा से है, 'वह' चाहे जहाँ ले जावे। कहाँ और कैसे लिये जा रहा है, मैं यह भी नहीं जानती। परन्तु अब ऊपरवाली दशा ही मेरे अभ्यास का केन्द्र है। मैं तो इतनी गरीब, इतनी खाली हूँ कि अपने में कुछ भी होने का शक या गुमान तक भी नहीं आता। इतनी निश्चिन्तता है कि जैसे 4–5 वर्ष का बालक पेट के बल, माँ की छाती पर निश्चिन्तता से तैरता फिरता है और फिर भी माँ के स्नेहरस से सराबोर रहता है। बस शायद बिल्कुल वही अबोध दशा मेरी है। मुझे तो भाई अब अपने प्रेम की तो खबर ही नहीं है, बल्कि "मालिक" के अपने ऊपर असीम स्नेह के रस से बराबर सिंच रही हूँ। अब तो यह बच्चा (यानी मैं) तो कुछ जानती ही नहीं हूँ, अब तो भार माँ (यानी "मालिक") के ऊपर है, चाहे स्नेह करे या, जैसी उसकी मर्ज़ी है। Activity (स्फूर्ति) फिर कुछ घटना शुरू हो गई।

"ईश्वर" की कृपा से केसर Second Division (सेकेंड डिवीज़न) पास हो गई तथा नारायण दद्दा भी IIIrd Division (थर्ड डिवीज़न) पास हो गये। हम सब की ओर से "आप" सब को बहुत–बहुत बधाई है। अम्मा "आपको" आशीर्वाद कहती हैं तथा कहती

हैं कि बिब्बो की तबियत का हाल लिख दीजियेगा। छोटे भाई-बहनों को प्यार। अभी तो दो एक दिन सूना सा मालूम पड़ता है। पूज्य मास्टर साहब के यहाँ खाना खाकर जाने की याद आने लगती है। खैर, इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी।

पत्र-संख्या – 223

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 23.6.52

मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं। आशा है 'आप' भी सकुशल होंगे। ईश्वर की कृपा से शायद "आपकी" साँस को तथा दिमाग़ में क्लोरोफॉर्म के असर को अब काफ़ी लाभ होगा। मुझे कभी-कभी "आपकी" बहुत याद आती है। "मालिक" की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा चल रही है, सो लिख रही हूं।

भाई, अब तो यह हाल है कि सब लोग ज़िन्दा, मुर्दा सब एक समान ही दिखाई देते हैं। या यों कहिये कि कोई ज़िन्दा, मुर्दा कुछ कैसा भी मालूम ही नहीं पड़ता है। कुछ यह दशा है कि कहीं दूसरे का या द्वैत का तो आभास तक महसूस नहीं होता है। न कोई जन्मता, मरता या ज़िन्दा, मुर्दा एहसास होता है। न जाने क्या है अपनी और सर्वत्र एक सहजदशा सी फैली हुई लगती है, जिसे दशा केवल मान लिया है। अब तो ऐसा हो गया है कि एक ही शीशा सब तरफ़ फैला हुआ है और उसमें एक ही दशा का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है, बस और कुछ रह ही नहीं गया है। नहीं, नहीं, प्रतिबिम्ब तो शायद कोई है ही नहीं, फिर न जाने क्या है, मैं ठीक लिख नहीं पाई हूं।

अब तो ऐसी हालत है कि जैसे मिठाई खाकर मिठाई तो खत्म हो जाती है, परन्तु मिठास यदि हम ध्यान दें तो कुछ शेष रहती है, परन्तु मैं तो मिठास वगैरह कुछ नहीं जानती हूं। मैं तो भाई जिसकी संटी के इशारे से नाच रही हूं, सो नाच रही हूं। अब तो भाई Natural (सहजता) ही मेरी Nature (स्वभाव) या Condition (दशा) हो गई है। सब में बिल्कुल सहजता आ गई है। क्योंकि सब की Importance (महत्ता) ही जाती रही। अब तो दशा शायद हर समय प्रकृति से जुड़ी हुई रहती है। पूज्य "श्री बाबूजी" कुछ यह बात है कि यदि कोई मुझसे किसी दशा के विषय में पूछे तो जैसे मैं कहती हूं, परन्तु न जाने क्यों अक्सर कहने के साथ ही साथ वही हालत बाहर फैलती दरसने लगती है।

भाई अब तो जो हालत सामने आती है, तो अक्सर यह मेरी हालत है, यह नहीं होता, बल्कि-हालत है और हालत भी क्या कहूँ, कुछ समझ में नही आता है। अब भीतर ऐसी हालत या आनन्द है कि जो है उसे कह नहीं सकती हूँ। कभी–कभी बरबस अपने आप मन में उस हालत या आनन्द को देखकर वाह–वाह होने लगती है। परन्तु वह आनन्द, आनन्द से परे है। या आनन्द से कहीं बेतौल है। परन्तु मेरी निगाह के सामने तो कुछ नहीं ठहरता है, मेरी तो निगाह न जाने कहाँ विलीन हो गई है। मुझे तो जब तक "आप" यहाँ रहते हैं, तब तक तो हालत कुछ थमी रहती है, परन्तु मैं तो थमी भी नहीं रहना चाहती हूँ। कल से हालत में कुछ और परिवर्तन मालूम पड़ रहा है। अभी तो इतना महसूस होता है कि जो दशा अब तक थी, वह भीतर धसक गई है या समा गई है। खैर, भाई आप जानें मेरी तो सारी कलई "मालिक" पर खुल चुकी है। कुछ यह है कि अब तो यदि मुझे ज़रा सा भी गुस्सा आ जाता है तो अपने में बर्दाश्त नहीं होता है। मुझे अच्छा नहीं लगता है। "मालिक" की कृपा से सब ठीक हो जायेगा, कोई ख़ास बात नहीं है। छोटे भाई–बहनों को प्यार। परन्तु "मालिक" की कृपा से गुस्सा आती ही बहुत कम है। अब शायद यह भी न आये। इतिः

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या – 224

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 29.6.52

तुम्हारे पत्र मिल गये। 17 जून का जो ख़त है, उसकी सिर्फ़ दो बातों का जवाब दे रहा हूँ। सिर में नन्हीं–नन्हीं फुहार जो गिर रही है, उसकी वजह यह है कि जब तुम मास्टर साहब के यहाँ बैठी थी, तो तुमने बतलाया था कि सिर में कुछ गर्मी मालूम होती है। उस वक्त मैंने ज़रा ठण्डी और नन्हीं–नन्हीं फुहार गिराई, ताकि गर्मी की तकलीफ़ जाती रहे। अब चूंकि तुममें प्रेम की वजह से आकर्षण शक्ति बढ़ी हुई है, और ग्रहण करने का माद्दा भी बढ़ा है, इसलिये यह चीज़ कुछ कायम हो गई है। ख़याल में जिन्दगी होती है और अगर वह माया से सम्बन्धित नहीं रहती तो उसमें ईश्वरीय–शक्ति की वृद्धि हो जाती है। इसलिये यह हो ही नहीं सकता कि उसका असर न पड़े और यह तुम्हारी काबलियत है कि तुमने उस असर को अब तक कायम रखा। तुमने उसी ख़त में जो लिखा है कि एक अजीब कैफ़ियत के मैदान में निश्चिन्त तैरती चली जा रही हूँ, जिसका कहना शब्द और वाणी से परे है। यह तो बहुत ही अच्छी हालत

है। लालाजी साहब ने किसी वक्त कहा था कि आध्यात्मिक–उन्नति क्या है? बस एक चटियल मैदान है, जिसमें बस चले ही जाना है– मगर अभी दिल्ली दूर है। यह चटियल मैदान जो निगाह के सामने है, इसी में बस तैरते आना है। अब रास्ता खुल गया और रूहानियत की शुरूआत ठीक–ठीक हो गई, अब इसमें जितनी तरक्की है, वह रूहानियत से सम्बन्ध रखेगी।

Dictate from Lalaji (श्री लाला जी का डिक्टेट):–

"मगर किसी हालत को काफ़ी नहीं समझना चाहिये। "रामचन्द्र" ऊपर लिख चुका है कि अभी दिल्ली दूर है – जो सही है। अभी तुमने देखा ही क्या है, देखने वाली हालतें तो अब आ रहीं हैं, जिसके एहसास करने के लिये बड़े दिल वाले की ज़रूरत है और बड़ी समझ की और Intelligence (बुद्धिमानी) की। हमारे यहां यह हालतें सब पर गुज़रती हैं, मगर लोग एहसास करने की काबलियत नहीं रखते, इसलिये उनका मज़ा फीका पड़ जाता है। बाकी जो 23 जून का खत है, उसके जवाब की कोई ज़रूरत नहीं। उसमें तो एक हालत का Description (वर्णन) है। अब मैं लिख चुका – खुश रहो – रामचन्द्र जो समझेगा, जवाब देगा।"

कल ता. 28 दिन शनिवार को किसी वक्त मुझे यह मालूम हुआ कि तुममें कुछ ख्याली थकान सी है, आज यह चीज़ नहीं है। ज़्यादा तेज़ी से जाने में यह हो जाता है कि कुछ थकान सी मालूम होने लगती है। उसमें फिर Energy (शक्ति) बढ़ा दी जाती है। मुझे भी यह चीज़ बड़े–बड़े मुकामात को तय करने में महसूस हुई है और इसमें कोई हर्ज़ नहीं। अभी मेरी समझ में यह नहीं आया कि 'D' के मुकाम पर कब तक रोकूं खैर, यह दो एक रोज़ में तय कर लूंगा। फिर जैसी मुझे रोशनी मिल जावे वैसा काम करूँगा।

अब 24 जून का खत जो मिला है, वह तो बड़ी अच्छी हालत है। मैं भी इस हालत को तरसता हूँ। यह इतनी उम्दा हालत देखने में आई है कि मैं इस हालत पर सैकड़ों सल्तनतें अगर मेरे पास होतीं तो न्योछावर कर देता मगर इसकी मानी यह न समझ जाना कि अब कुछ करने को बाकी नहीं रहा, बस यही काफ़ी है।

"हँसी–खेल नहिं पाँइयाँ, जिन पाया तिन रोय।
हाँसे खेले पिऊ मिलें, तो कौन दुहागिन होय।।"

शुभचिन्तक,
रामचन्द्र

पत्र–संख्या – 225

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 29.6.52

मेरा पत्र जो दद्दा के हाथ भेजा था, मिल गया होगा। यहाँ सब कुशलपूर्वक हैं, आशा है "आप" भी अच्छी तरह होंगे। "मालिक" की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब कुछ यह हाल है कि भीतर की जो दशा या जो आनन्द था, वह भी सब बिल्कुल टिघल कर समान रूप से बहता जा रहा है। रीढ़ की हड्डी में फिर वही रेंगन तथा सरसराहट या गुदगुदापन सा रहता है। अब हालत इधर कुछ अच्छी नहीं मालूम पड़ती है। जब हालत बदलती है, तो एक बार ऐसा मालूम पड़ता है है कि कुछ थोड़ा–बहुत कूड़ा–करकट उभर आया, यद्यपि इसके दो–एक दिनों बाद ही फिर वही निर्मल विशुद्ध दशा हो जाती है। अब पहले की दशा जो मैंने बहुत बढ़िया वाली लिखी थी, वह तो ऐसी लापता हो गई है कि नामोनिशान तक शेष नहीं रह गया है।

कल सवेरे से दशा कुछ बदल गई है। अब तो भाई भीतर ऐसी ठंडक रहती है, जो कितनी भी, कैसी भी गर्मी से गर्म होने ही नहीं पाती है। मेरा तो यह हाल है कि मुझे जीवन में बिना "मालिक" के कोई भी क्षण याद हो नहीं पड़ता है। दिन आता है, निकल जाता है, रात्रि आती है, चली जाती है, मौसम आता है और बदल जाता है, परन्तु मेरे ऊपर "मालिक" की कृपा से किसी का कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता है। मैं देखती हूँ कि मेरा तो किसी से कुछ सम्बन्ध ही नहीं रह गया है। मैं तो सबसे Free (आज़ाद) हो गई हूँ। मुझे तो ऐसा दिखाई पड़ता है कि मेरा तो भीतर बाहर, रोम–रोम, "मालिक" ही "मालिक" हो गया है। बल्कि "मेरा मुझमें राम रहा" वाली दशा है, सो भी इतनी सहज कि वैसे तो कुछ नहीं मानों मुझमें "उसकी" याद वग़ैरह कुछ हो ही नहीं, परन्तु यदि जब ध्यान जाये तो बाहर, भीतर, रोम–रोम कण–कण उसमें ही व्याप्त मिलेगा या भाई, यह कह लीजिये कि यह दशा है कि "मैं रमि रह्यो मोर निरजंन नाऊं"। और अब तो मेरी और "मालिक" की विभिन्नता रहित एक अजीब ठंडी दशा सर्वत्र फैली दिखाई देती है। और मैं जब पीछे निगाह फेरती हूँ तो उसी ठंडक वाली दशा में अपने को बराबर ओत–प्रोत पाती हूँ। पूज्य "श्री बाबूजी" मैं तो अपने "मालिक" के साथ–साथ सब कुछ पीछे छोड़ती न जाने कहाँ चलती ही चली जा रही हूँ, यद्यपि कितना चलना है, इसका छोर नहीं, परन्तु "चलाने वाला" मुझे इतना अच्छा लगता है कि "उसके" साथ चलने में बजाय थकान के चाल में गति ही आती जाती है। और यह भी है कि अब तो बिना चले

एक क्षण का भी ठहरना सह्य नहीं होता है। हर रास्ते का, या रास्ते की हर चीज़ का मज़ा चखाता हुआ प्रेम के साथ अपने निजी बच्चे की तरह देखभाल करता हुआ "वह" मुझे लिये जा रहा है। पूज्य "श्री बाबूजी" संसार में ऐसा आज कौन है, मैं तो फिर अपने "श्री समर्थ जी महाराज" का कोटिशः धन्यवाद देती हूँ कि जिन्होंने संसार को ऐसी अमोघ "विभूति" ऐसी "परमनिधि" देकर कृतार्थ कर दिया है। मुझे तो "मालिक" की कृपा से उपरोक्त दशा सब दीखती है, इसलिये हृदय से बारम्बार "उनके" लिये साधु-साधु (वाह, वाह) ही निकलता है। भाई, मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरा ही Heart (हृदय) सर्वत्र फैला हुआ है, समस्त ब्रह्माण्ड में फैला हुआ है, या यह कह लीजिये कि मेरा Heart (हृदय) उसके Heart (हृदय) में समाता चला जा रहा है। कुछ यह हो गया है कि अब तक की सारी दशाओं की तो मानों प्रलय हो चुकी है। अब तो एक अजीब ढंग है, एक अजीब रंग है। बात यह है कि न जाने क्यों "वह" मुझे मुझसे अधिक चाहने लगा है। पूज्य "श्री बाबूजी" इधर 2-3 दिन केसर पूजा करने बैठी तो, उसे ऐसा लगता कि दिमाग़ कहीं ऊपर खिंचा जा रहा है, उसके सिर में दर्द भी हो गया, परन्तु अब ठीक है। इसमें कहीं मुझसे तो कोई ग़लती नहीं हो गई, क्योंकि ताऊजी के तो ऐसा नहीं होता है। यद्यपि केसर का मन तो बेढब लगता था। छोटे भाई-बहनों को प्यार। अम्मा "आपको" आशीर्वाद कहती हैं। इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या - 226

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 2.7.52

कृपा-पत्र 'आपका' आया-पढ़कर प्रसन्नता हुई। केसर की दशा पढ़कर अपार हर्ष हुआ, सो इसलिये नहीं कि वह अपनी है, बल्कि इसलिये कि वह भी 'मालिक' की होने जा रही है। और 'मालिक' की होना चाहती है, बस 'उसी' की निस्बत से मेरा सम्बन्ध है। "आपने" जो ताऊजी के पत्र में लिखा है कि ईश्वरीय धार की भी वर्षा तो हो ही रही है, कितना अच्छा है, कोई ज़रा देखे तो उस बर्षा को और केवल देखे ही क्या, मैं तो यही कहूँगी जैसा कि कबीर दास जी ने लिखा है कि - "वा दिसवा बादर न उमरै,

रिमझिम बरसत मेह रे"। "चौबारे ना बैठ रहौ, जा भींजौ निर्देह रे"।। तब तो जीवन सार्थक हो जाये।

पूज्य 'समर्थजी महाराज जी' को सादर प्रणाम है। उन्होंने जो यह लिखा है कि "अभी तुमने देखा ही क्या है, देखने वाली हालतें तो अब आ रही हैं, जिसके एहसास करने के लिए बड़े दिल वाले की ज़रूरत है, और बड़ी समझ की और, Intelligence (बुद्धिमानी) की"। सो पूज्य "श्री बाबूजी" मुझे तो खुद ऐसा ही लगता है कि अभी हुआ ही क्या है, अभी तक तो सफ़ाई ही हुई है और अब भी कुछ न कुछ होती ही चलती है। सो फिर मैं किसी हालत को काफ़ी कैसे समझ सकती हूँ। प्रथम तो वह समझ ही न रही, फिर यदि अपने में कुछ महसूस होता हो उसकी मिक़दार का भी अन्दाज़ा किया जाता। यहाँ तो जो कुछ भी थोड़ा या ज़्यादा है, बस 'मालिक' ही निधि है। अब 'उसका' अन्दाज़ा भला कौन लगावे सिवाय 'उसके' कि 'जिसने' 'उसे' बनाया हो। अब भाई रही बड़े दिल की तथा बड़ी समझ और Intelligence (बुद्धिमानी) की, इसका हाल भला मैं क्या जानूं; 'जिसकी' चोज़ होगी, 'वह' खुद जानेगा। मैं तो सच कहती हूं कि मैं तो 'उसे' ही जानूं, 'जिसे' आजतक जाना है और बराबर कोशिश भी करती ही रहूँगी। अब यह 'उसके' हाथ में है, चाहे जितना जना दे। ख़याली थकान 'आपने' ठीक कर दी, बहुत–बहुत धन्यवाद है। 'आप' अम्मा से अम्मा कहेंगे यह सुनकर अम्मा बहुत खुश हैं।

अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आध्यात्मिक दशा है सो लिख रही हूँ पीठ में, बीच में, बाईं ओर रीढ़ के बिल्कुल लगे–लगे तो हर समय कुछ हुआ करता है। अक्सर तो जैसे पसीने के बाद फिर हवा लगती है वैसे ही पीठ में फुरफुरी सी होती है। सिर भी खुला हुआ सब साफ़ लगता है। अब तो भाई यह दशा है कि जो दशा 'आपको' एक बार लिख चुकी हूँ उसे फिर चाहे कोई अच्छा कहे परन्तु उसे दुबारा पढ़ने तक को मेरा मन नहीं चाहता है, फिर उसे फिर ख़याल में लाने की तो बात ही अलग रही। उसे पढ़ना तो ऐसा लगता है मानों पीछे फिर कर देखना है और निगाह भी बेचारी जिसके लिये अब बेअख़्त्यार हो चुकी है। अब जो दशा समझ में आती है और फिर जब थोड़ी देर में उसे लिखने बैठती हूँ और फिर सोचती हूँ तो ऐसा लगता है मानों वह स्वप्न की बात की तरह सोचकर और उसी तरह महसूस करके लिख रही हूँ। अब तो ऐसा लगता है मानों समस्त ब्रह्माण्ड वग़ैरह मेरी निगाह के सामने से हट चुका है बस केवल एक शुद्ध, सरल मैदान ही सामने रह गया है। जिसके बारे में पहले लिख चुकी हूँ और 'आपने' उसका उत्तर भी दे दिया है। न जाने क्यों मेरे भीतर की बेचैनी या कुरेदन भी दिनोंदिन तेज़ी ही पकड़ती जा रही है और होना भी चाहिये, क्योंकि मेरे लिये तो अब यही शान्ति है।

अम्मा "आपको" आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहनों को प्यार। बिट्टो तथा छोटे भइया 'आपसे' प्रणाम कहते हैं। इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या – 227

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 4.7.52

मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। दद्दा से मालूम हुआ कि अभी कुछ साँस 'आपको' हो ही जाती है। बिब्बो का भी हाल सुनकर सबको चिन्ता है, बुखार 102^{0} तक अभी जाता है। 'ईश्वर' से प्रार्थना है कि बेचारी अब अच्छी हो जावे। 'मालिक' की कृपा से जो आध्यात्मिक-दशा है सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई सच्ची दशा तो सहज गरीबी हो गई है। यद्यपि 'मालिक' ने अमीरी-गरीबी दोनों से ही मुझे स्वतंत्र कर दिया है और अब कुछ यह भी है कि दीनता का भी नाम नहीं रह गया है। अब तो भाई दशा कैसे कहूँ, फूल की सुगन्ध से भी हल्की तथा सहज दशा कह लीजिये। न द्वैत है, न अद्वैत है, दोनों से फर्क या परे कुछ और दशा है। अब तो जैसा है, तैसा है। अब तो सब तरफ़ वही दशा दरसती है और अब तो न उसकी सुधि है न उसके होने का बोझ, क्योंकि मैं तो 'मालिक' के साथ बराबर आगे को ही बढ़ती दिखाई पड़ती हूँ कुछ ऐसी दशा हो गई है कि मानो वतन से तो मैं बिल्कुल परिचित ही हो गई हूँ बल्कि अब तो ऐसा लगता है कि धीरे-धीरे उसकी दशा भी मुझमें बराबर बिल्कुल सोखती चली जा रही है। वतन की वायु से वहाँ की रहन ही मेरी रहन हो गई है। पूज्य 'श्री बाबूजी' मेरे पास तो बस केवल एक यही दशा शेष रह जाती है जैसा कि कबीर दास जी ने लिखा है कि :-

सुखिया सब संसार है, खावैं और सोवैं।
दुखिया दास कबीर है, जागै और रोवैं।
और यही मेरा चैन भी है।

छोटे भाई-बहनों को प्यार। अम्मा 'आपको' अशीर्वाद कहती हैं। इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या – 228

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 7.7.52

आशा है मेरे पत्र मिले होंगे। यहाँ सब अचछी तरह है, आशा है "आप" भी अच्छी तरह से होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई यह हाल हो गया है कि देखती हूँ कि अधिकतर मन इतना अविचल हो जाता है कि मानों मन नाम की कोई चीज़ ही मुझमें नहीं रह गई हो। ऐसा लगता है कि मानों बिल्कुल एक जगह पर गड़ गया हो बिल्कुल स्थिर हो गया हो। किसी भी तरह चलाने से भी नहीं चलता, किसी भी तरह की कोई इच्छा ही नहीं उठती है। ऐसी दशा है कि शक्ति भी उसमें मानों शान्त हो गई हो। या यों समझ लीजिये कि मन में पहले शान्ति आते–आते उसे शान्ति की आवश्यकता ही नहीं रह गई हो, बल्कि शान्ति और आनन्द तो अब उसका (यानी मन का) स्वतः ही निज रूप ही बन गया। अब उसमें शान्ति या आनन्द के लिये ठौर ही नहीं रह गई है। शान्ति वगैरह सबका अब कोई भिन्न रूप नहीं रह गया है। या यों कह लीजिये, मुझे अब इन सबकी कुछ पहचान ही नहीं रह गई है, परन्तु फिर भी मुझे यह तो दिखाई ही पड़ता है कि **मैं बराबर तेज़ी से आगे चलती ही चली जा रही हूँ** और 'उसकी' (यानी 'मालिक' से मिलने की) **कुरेदना भी बराबर मेरे साथ है।** परन्तु मन से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं, वह तो ऐसा लगता है, कि निज रूप को प्राप्त हो गया हो। वह भी शायद पीछे ही छूट गया है। क्योंकि मैं देखती हूँ कि आगे शायद उसकी भी गम्य नहीं है। कुरेदना तो मेरे साथ चिपटी हुई है या मेरा रूप ही हो, इसलिए वह आगे बढ़ रही है, परन्तु मैं देखती हूँ कि **सिवाय 'मालिक' के या उन्नति के उसकी भी खबर मुझे नहीं रहती है।**

पूज्य 'श्री बाबूजी' अब तो यह हो गया है कि मन को स्वाभाविक पूजा, **स्वाभाविक रहन ही पसन्द है, बल्कि यों कहिये कि वह अब एक स्वाभाविक** दशा में ही लीन रहता है, और भाई इससे ज़रा बाहर जाते ही जी घबड़ाने लगता है, परन्तु 'मालिक' की कृपा से उसे वही चीज़ प्राप्त भी हो गई है। अब वह उससे बाहर हटता ही नहीं। अब वह स्वाभाविक दशा क्या है? वह तो भाई जो दशा ऊपर लिखी है (यानी वह जो शान्ति रूप हो गया है) वही हो सकती है। न किसी तरह का कोई जोश या उफ़ान, न तरंग न इच्छा न वैराग्य, न राग न शान्ति न अशान्ति, न समता न असमता, बस सब ओर से सिमिट **सिमटाकर एक जगह गड़कर स्थाई रह जाना, न उछल**

न फाँद, न action (क्रिया) न Reaction (प्रतिक्रिया), बस शायद यही हालत है। सब कुछ शान्त हो गया, उसकी महाप्रलय हो गई, बस अन्तर इतना ज़रूर है कि उस प्रलय के समय कमल के पत्ते पर "श्रीकृष्ण चन्द्र जी" अकेले लेटे थे और यहाँ कुरेदना के ऊपर उन्नति की चाह या 'मालिक' से मिलने की चाह अभी किसी न किसी रूप में अवश्य लेटी रह गई है। मेरा तो "श्री बाबूजी" अब यह हाल है कि हर चीज़ में हर जगह में मुझे सन्तोष का अनुभव होता है। मुझे तो सबसे तृप्ति या निवृत्ति हो गई है। केवल एक भीतरी कुरेदना के, जो किस लिये है, कैसे है, इसका पता नहीं और उसकी (यानी उस संतोष) की भी मुझे खबर नहीं। तृप्ति की तृप्ति हो गई और मुझे पता ही न रहा। मैं तो एक गरीब बेनवा की तरह रह गई हूँ जिसे पूजा तक की भी खबर न रही। अब उसकी जैसी मर्ज़ी हो वैसे रक्खे।

छोटे भाई–बहनों को प्यार। अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। केसर बिट्टो प्रणाम कहती हैं। अम्मा आज रात को कानपुर जा रही हैं। कमज़ोरी बेहद है। अम्मा उनकी तबियत कुछ सम्भलने पर लौट आयेंगी। पूज्य मास्टर साहब से मेरा तथा केसर का प्रणाम कहियेगा तथा अम्मा का आशीर्वाद। इतिः

आप की दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या– 229

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, — लखीमपुर
सादर प्रणाम। — 14.7.52

कृपा–पत्र 'आपका' आया, समाचार मालूम हुए। 'आपने' मुझे Point 'E' (प्वाइंट ई) पर खींच दिया, इसका अंदाज़ मुझे 'मालिक' की कृपा से 4 जुलाई को पत्र लिखते समय हो गया था, परन्तु लिखते समय 'आपको' लिखना भूल गई थी, खैर 'आपको' बहुत–बहुत धन्यवाद है। इधर 7–8 दिन से खाँसी तेज़ी पकड़ गई है इसलिये साँस भी खराब हो गई, परन्तु परसों से दोनों ठण्डी पड़ गई। अब बिल्कुल ठीक हूँ।, फ़िक्र की कोई बात नहीं है। क्योंकि कोई ख़ास तकलीफ़ नहीं हुई।

अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है सो लिख रही हूँ। भाई, पहले जो मैं कई बार मन की स्वाभाविकता की दशा के बारे में लिख चुकी हूँ, मन को प्रलय तथा स्वाभाविकपना और ऐसी ही पूजा पसन्द है, परन्तु अब तो यह हाल हो गया है कि मुझे वह स्वाभाविकपना याद ही नहीं आता है और इससे इतनी बेख़बर हो गई हूँ कि पढ़ने से भी याद नहीं आती है। आजकल तो मैं कुरेदना तक से भी बेख़बर हो गई।

पूज्य 'श्री बाबूजी' मेरे अन्दर तो वह सोखता लगा है कि जो अब उस सहजता तथा स्वाभाविकता की दशा को भी सोख गया है। यह हाल है कि जो दशा, जो कैफ़ियत आती है, वह तो सूख जाती है और मैं फिर जैसी की तैसी रह जाती हूँ।

फिर भी आजकल हालत कुछ अच्छी नहीं चल रही है। इसलिये कोशिश करती रहती हूँ, खैर 'मालिक' की कृपा से दशा आज कुछ ठीक आई है।

अम्मा शायद 4–5 दिन में आवेंगी। छोटे भाई–बहनों को प्यार। पूज्य मास्टर साहब से मेरा प्रणाम कहियेगा। मेरी पीठ में तो ऐसा मालूम पड़ता है कि रीढ़ के बिल्कुल लगे–लगे बायीं ओर कीड़े से हर समय रेंगा करते हैं। इतिः

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या– 230

शाहजहाँपुर 17.7.52

परम पूज्य समर्थ श्री लालाजी साहब का Dictate (डिक्टेट) :–

"दुख़्तरे नेक अख़्तर नूरचश्मी कस्तूरी (भाग्यवान बेटी)

ब आफियत बाशन्द (प्रसन्न रहो)"

मेरा इरादा था कि कुछ लोग रामचन्द्र से बन जाते तो अच्छा था, मगर मेरी हिरास की हिरास है। अभी उम्मीद कर सकता हूँ कि कुछ लोग बन जावें, मगर रामचन्द्र की माद्दी (जिस्मानी) कमज़ोरी देखकर, यह ख्याल पैदा होता है कि इस क़दर बार (बोझ) उसकी तन्दुरुस्ती कैसे बरदाश्त कर सकेगी। रूहानियत में तो वह जवान है और जवान ही रहेगा मेहनत ज़रूर जिस्म की तन्दुरूस्ती पर मबनी (निर्भर) है। यहाँ तो लोग यह समझते हैं कि रूहानियत मुंह का निवाला है, जब चाहेंगे मुंह में रख लेंगे। मेहनत करना कोई जानता ही नहीं। जिला देना (चमक देना) कोई पढ़ा ही नहीं। बस आला तरक्की का नाम सुन लिया है और किताब पढ़कर यह समझ लिया है कि ज़्यादा से ज़्यादा हमें यहाँ तक पहुंचना है। बजाय दुनिया की बेलौसी के "मालिक" से बेलौस हो रहे हैं। इसने (रामचन्द्र ने) ख़तूत भी लिखे, समझाया भी, मगर जूं नहीं रेंगी – अब सिवाय इसके और क्या कहा जावे कि मर्ज़ी ईश्वर की ऐसी है। आदमी थोड़े हों या बहुत हों, इससे बदर्जहा बेहतर है कि बहुत हों और थोड़े बनें। इसके यह माने नहीं कि लोग ज़्यादा शमिल न किये जायें, तो दरवाज़ा तो सबके लिये खुला है। अब मान लो कि तुम पर उम्मीद रखी जावे तो तुम्हारी ही तन्दुरूस्ती नागुफ्ताबे है (नाकाबिल इतनी

कि जिसके विषय में कुछ कहा न जावे), परन्तु तुम्हारा शौक और 'मालिक' की मोहब्बत यह ज़रूर है कि बहुत कुछ करके दिखा देगी और हमें तुम्हारी तरक्की की उम्मीद रखना चाहिये, और यह भी अगर लड़के न सही तो लड़की ही सही। लड़का और लड़की में कोई फ़र्क नहीं, सिर्फ़ ज़माने ने अलग करके दिखला दिया। एक ही अज़ो (अंग) की दो हड्डियाँ है, जो एक ही जड़ से निकलती हैं, कोई ज़्यादा फ़र्क नहीं। काम ऐसा होना चाहिये कि मिशन को जिला मिलती रहे और लोगों को हर्फ़गीरी का मौका न मिले। 'उसने' कुछ आदमी ज़रूर तैयार किये–कमोबेश ज़रूरत के लिये, तो अव्वल तो कोई इनसे काम लेने वाला नहीं मिलता और मिलता भी है तो वही डेढ़ ईंट की मस्ज़िद बनी बनाई अपने साथ लाता है। अगर इन लोगों (तालीम देने वालों) में से भी मैं चुनूं तो सिर्फ़ एक मास्टर साहब रह जाते हैं, जिनसे आगे उम्मीद पाई जाती है, मगर हर शख़्स को हर काम मल्का नहीं होता, जो जिसका काम है, वही ठीक कर सकता है। एक आदमी के अगर सब काम सुपुर्द कर दिये जावें तो वह कोई काम ठीक न कर सकेगा। Dictate – Swami Vivekanandjee–"There should be Certain blocks for certain work". (स्वामी विवेकानन्द जी का डिक्टेट :– "ख़ास काम के लिये ख़ास व्यक्ति होने चाहियें")।

यहाँ तो यह हाल है कि लिखे भी एक शख़्स, मदद करे भी तो एक शख़्स। Function (उत्सव) का celeberation (मनाना) और उनका इन्तज़ाम भी करे तो एक ही, क्योंकि उसके दिल से लगी है और दूसरे लोग उसको कैफ़ियत नहीं देते, यह ज़रूर है कि चौबे जी की भी दिलचस्पी बहुत कुछ इस तरफ़ है, मगर रामचन्द्र को भी उनसे कुछ कम दिलचस्पी नहीं। वह तरक्की कर रहे हैं और उनका ख़याल मिशन की अच्छी तरक्की के लिये भी है। मेरे ख़याल से हमेशा एक दरवाज़े पर रहने वाले की क़दर ज़्यादा होती है। मैं तो ऐसे आदमी को पसन्द करता हूँ कि जैसा रामचन्द्र कि उसकी गर्दन पर कोई छुरी भी रख दे तो भी सही बात कहने से न हटेगा – कुछ परवाह नहीं कि कोई ख़िलाफ़ हो या बुरा माने, नतीजा यह है कि मुमकिन है कि उसके उसूल से मुआफ़िकत लोग न करें, परन्तु उसके ख़िलाफ़ कोई भी नहीं होता। अब कहो, तुम्हारी तरक्की की तारीफ़ करूँ ताकि तुम्हारी तबियत खुश हो जावे। मैं समझता हूँ कि तुम्हारी तारीफ़ इतनी ही बहुत है कि मैं तुमसे खुश हूँ। आज सुबह प्यास की तेज़ी रामचन्द्र में इस क़दर बढ़ी; किस बात की? काम लेने की। वह इसके ढंग जाने क्या–क्या सोचने लगा। कहीं यह ख़याल था कि किसी को ख़याल की ताकत से काम लेने के लिये तैयार करूँ कहीं यह कि किसी और ज़रिये से मिशन की Service (सेवा) ली जावे और उसके पास तमाम उम्र यही काम रखा जावे। अब इसमें अपने आपको कौन–कौन Offer (प्रस्तुत) करते हैं। किसमें कौन सी ताकत अच्छी है, सोचकर लिखें

ताकि वही काम सुपुर्द किया जाये और इसमें मेरी दोनों आँखें बराबर हैं यानी लड़के और लड़कियाँ दोनों शामिल हैं। लड़कियाँ ज़रूर कुछ Restrictions (बंधन) के साथ और लड़के किसी क़दर आज़ादी के साथ। Duties (ड्यूटीज़) में लगाऊंगा।

शेर– "मन आँ मोरम कि अज़ पायम बेमालन्द। न जम्बूरम कि अज़नेशम बेनालन्द।"

अर्थ – मैं वह चींटी हूँ कि लोग मुझे पाँव से मसल डालें – मैं वह बरैया नहीं हूँ कि लोग मेरे कारण दुःख पावें।

शुभचिंतक

समर्थ श्री रामचन्द्र जी महाराज

पत्र-संख्या- 231

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 18.7.52

कृपा-पत्र "समर्थ श्री लाला जी साहब" का आज मिला- सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। 'उनका' शुभाशीर्वाद सदैव मेरे साथ है। बुजुर्गों की खुशी तथा 'उनके' आशीर्वाद बच्चों की राह में फूल बन जाते हैं। 'उनको' मेरा प्रणाम है तथा अनेकानेक धन्यवाद है। उन्होंने जो Working (कार्य) तथा Service (सेवा) के लिये सब से पूछा है, सो मेरा अपने लिये तो यही कहना है कि भाई, मुझमें किस बात की कितनी योग्यता है, इसका जवाब तो बेचारा वह क्या दे सकता है, जिसका ख्याल तक छिन गया हो, हाँ जिस केवल 'मालिक' पर मेरी कलई बहुत खुल चुकी है, वह भली प्रकार जानता है। मेरे हिस्से में तो केवल एक यह चीज़ रह गई है कि "ज़िन्दगी है 'राम' से, तू 'राम' में बिताये जा। 'राम' के हुजूर में तू अपना सिर झुकाये जा।" इसमें भी भाई देखती हूँ कि मेरी तो वह दशा हो गई है कि "लाली देखन मैं गई, मैं ही हो गई लाल"। और एक बात और है कि स्त्री, पुरुष, लड़के, लड़की का बन्धन तो कब का टूट चुका है अब तो यह एक स्वतंत्र Soul (आत्मा) है, हाँ यह बात अवश्य है कि 'मालिक' जैसा मुझे पुकार ले। अब तो जो 'वह' लड़का कहे तो मैं लड़का हूँ, लड़की कहे तो लड़की, मनुष्य कहे तो मनुष्य और हैवान कहे तो हैवान हूँ और वही नहीं, वैसी ही Spirit (भावना) मुझमें काम करने लगेगी और यह सब केवल मेरे 'मालिक' की ही महत्ता है। 'आपकी' Gift (उपहार) जो संसार के लिये है (यानी 'श्री बाबूजी'), उनकी कृपा की निगाह की ही यह अभी छोटी सी बरकत है। हाँ, एक प्रार्थना यह अवश्य है कि 'श्री बाबूजी' के स्वास्थ्य के लिये हमें क्या करना

चाहिये। यानी सेवा, कोशिश तो जहाँ तक है, जितनी बन पड़ती है, सो बराबर किये जा रही हूँ।

अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ। इधर कुछ दिनों से सुस्ती हरदम बहुत छाई रहती है। किसी चीज़ में किसी बात को तबियत ही बिल्कुल नहीं चाहती है। किसी को पूजा तक कराने को तबियत नहीं चाहती है। कभी-कभी यह अधिक तेज़ी पकड़ जाती है। परसों तो इतना तक हाल था कि उठकर ज़बरदस्ती चलने फिरने में पैरों को घसीटना पड़ता था। हाथ उठाने से स्वयं वह बेजान सा गिर पड़ता था। आँखें अपने आप मुंदी ही रहती थीं, सो भाई, अक्सर यह दशा हो जाती है, हाँ तेज़ी और कम का अन्तर ज़रूर रहता है। परन्तु यदि कोई और बातों में मन लगा दूं ज़बरदस्ती, तो लाभ अवश्य होता है। पूज्य 'श्री बाबू जी' अब कुछ यह देखती हूँ कि जब दशा बदलती है, तो ऐसा लगता है कि बेखबरी की दशा में परिवर्तन हो गया है और पहले वाली और अब जो दशा होती है, वह सब मेरे भीतर खप गई है और बराबर खपती-जाती हैं। बेखबरी वाली दशा का भी करीब-करीब यही हाल हो गया है। अब कुछ यह भी हो गया है कि उस चटियल मैदान को आदत पड़ जाने के कारण या न जाने क्यों या वहाँ की अब वासिनी हो जाने के कारण अब निगाह को या उस ख़्याल की निगाह या रूख (जो उस मैदान में केवल चलता जा रहा है) ऊपर या आगे होने के कारण देखती हूँ कि धीरे-धीरे वह मैदान भी ओझल सा होता चला जा रहा है। कुछ यह दीखता है कि वह ख्याल भी पतला पड़ता जाता है या उसकी खबर से भी बेख़बर होती जाती हूँ। भाई, अब तो मेरा यह हाल है कि न मुझे यह मालूम है कि मैं बेख़बर रहती हूँ और न यही मालूम पड़ता है कि बाखबर रहती हूँ, अब तो जैसी रहती हूँ, वैसी रहती हूँ। अब 'मालिक' जाने कैसे रहती हूँ, क्योंकि मैं तो यह जानती हूँ कि 'मालिक' की रहनी में रहती हूँ। अब तो यह दशा है कि तन, मन में कोई अन्तर ही नहीं रह गया है। सब कुछ न जाने क्या, कहाँ हो गये कि मुझे कुछ पता नहीं।

केसर, बिट्टो आपको प्रणाम कहती हैं। पूज्य मास्टर साहब जी से मेरा प्रणाम कहियेगा। छोटे भाई-बहनों को प्यार। इति

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या- 232

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 23.7.52

पत्र जो पूज्य ताऊजी के हाथ भेजा था सो मिला होगा। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

इधर 2 दिन से सुस्ती फिर बढ़ी है और कभी दशा थोड़ी देर को शुद्ध लगती है, परन्तु अक्सर ऐसा नहीं लगता, तो यह ख्याल होता है कि न जाने क्यों दशा शुद्ध नहीं महसूस होती। मैं इस चक्कर में भी पड़ जाती हूँ कि यह सुस्ती न जाने शरीर की कमज़ोरी के कारण तो नहीं है, परन्तु यह भी देखती हूँ कि यह अपने आप फिर ठीक भी हो जाती है। तब ऐसा लगता है कि मन अपनी डूब में से उछर आया है या जाग सा गया है।

पूज्य 'श्री बाबूजी' न जाने क्यों मुझे ऐसा लगता है कि मेरी लगन या शौक़ कम हो गया है। जो घाव पहले लगते थे, वे अब पुर से गये हैं, बस इतना ज़रूर है कि जैसे घाव पुर जाने पर नरम खाल दबाने से कुछ कसक शेष रह जाती है। क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि जैसे पहले मुझे दिखाई देता था कि मैदान में मैं तेज़ी से तैरती चली जा रही हूँ, परन्तु अब मुझे यह सब कुछ दिखाई नहीं देता है। ज़ोश आता है तो इतना मद्धिम कि तबियत बजाय उछलने के हल्की होती चली जाती है। छोटे भाई-बहनों को प्यार तथा पूज्य मास्टर साहब से मेरा प्रणाम कहियेगा। अम्मा परसों आ गईं। फूलो जिज्जी की तबियत अब ठीक है। अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या- 233

प्रिय बेटी कस्तूरी शाहजहाँपुर

खुश रहो। 24.7.52

तुम्हारा खत मिला। मैंने आज ही तुमको Point 'E' (प्वाइंट ई) से निकाल कर 'F'(एफ) पर पहुंचा दिया है। अब जो तुम्हारा अनुभव हो लिखना। मैं सोचता तो यह हूँ कि इन मुकामात पर ज़्यादा न रोकूं। मगर कहीं पर रोकने की ज़रूरत पड़ गई तो मजबूरी हो जावेगी। हमारे यहाँ सत्संग में इन मुकामात की कदर नहीं। यहाँ तो लोग

पहले ही मुकाम से निकलना नहीं चाहते। ऐसे भी हैं जो शुरू से शान्ति का मज़ा चाहते हैं और अगर कहीं पहली या दूसरी Sitting (सिटिंग) में ही उन्हें शान्ति न मालूम हुई तो मैं बिल्कुल बेकार और निकम्मा उनके ख्याल में आता हूँ। मैं भी भाई कोशिश करता हूँ कि पहली ही Sitting (सिटिंग) में उनको कुछ शान्ति मालूम हो। मजबूरन लाला जी की बरकत उन पर उतरने लगती है। मगर इसको भी एकाध ऐसे भी मिले जो अपनी काबिलयत समझ बैठते हैं कि एक महात्मा का ख्याल ले कर आया था, इसलिये यह शान्ति मालूम हुई और यह चीज़ भाई मेरे ही साथ है। देखा है कि लोग महात्माओं के पास, जो इस वक्त मशहूर हो रहे हैं, मसलन सुखदेवानंद, नारदानंद इत्यादि, जाते हैं और महीनों जाते हैं, मगर वहाँ के लिए यह शान्ति का सवाल क्यों नहीं उठता। तुम्हारी समझ में इसकी क्या वजह मालूम होती है। एक या दो Sitting (सिटिंग) में शान्ति पैदा होना बड़ा मुश्किल है। यह तो अभ्यास के करने की चीज है। मेरा काम सिर्फ यह है कि ऐसी परिस्थितियाँ पैदा कर दूं, कि यह चीज़ पैदा होने लगे। मैं समझता हूँ यह शान्ति जो उन लोगों में पैदा हो जाती है, सिर्फ इस बात पर कि 'लालाजी' मुझको उनकी नज़रों में नाकाबिल ठहराना नहीं चाहते। इसका 'उनको' हज़ार बार धन्यवाद है और भाई मेरी उम्र तो पूरे 22 वर्ष अभ्यास के अशान्ति में ही कटे थे और इसमें वह मज़ा था कि शान्ति में नहीं मिलता।

एक बात तुमने किसी खत में पूछी थी, वह लिखने की याद ही न रही। अब लिख रहा हूँ। तुमने पूछा था कि अब क्लोरोफार्म का असर तो नहीं है? इसमें कमी तो ज़रूर हुई होगी मगर अभी महसूस नहीं हुई। मैं तुमको काम करने का तरीका बताता हूँ। जब कोई काम करो तो यह समझ लो कि तुम मेरी ही Will (इच्छा–शक्ति) से काम ले रही हो। यह नुस्खा किसी को रूहानी तरक्की देने में या ईश्वरीय–काम करने में बहुत जल्द Desired effect (इच्छानुसार प्रभाव) पैदा कर देता है। अगर किसी शख्स की, ईश्वर कृपा करे जब सोलह आने भर लय–अवस्था अपने गुरू में हो जाती है तब इसकी ज़रूरत नहीं रहती। इससे पहले अगर किसी को Sitting (सिटिंग) भी दी जावे तो यही समझा जाता है कि सिखाने वाला दे रहा है। इसका असर बहुत अच्छा होता है। यह बात हर सिखाने वाले को जानना चाहिये। इसके ख्याल रखने की ज़रूरत है और तवज्जह देते वक्त यह समझ लिया जाता है कि मैं नहीं हूँ, बल्कि मेरा सिखाने वाला है, जो तवज्जह दे रहा है। संक्षेप में यह कि अपने आपको उस वक्त गुरू का रूप समझ लेना चाहिये। अर्थात् मान लो कि मैं तवज्जह दूं तो मुझे यह समझना चाहिये कि मेरा जिस्म, ख्याल, दिल व दिमाग़ जो कुछ भी है, यह सब स्वयं "लाला जी" हैं और फिर तवज्जह देना चाहिये।

तुम्हारा ता. 23.7.52 का खत भी मिला। सुस्ती की शिकायत जो तुमने लिखी है – यह आत्मा (Soul) का ख़ासा है। जब हम उसके निकट होते जाते हैं तो उसका खवास जो कि inactive (अकर्मण्य) है अनुभव होता है और हमारे ज़ाहिरा तौर व तरीकों में वह असर दिखलाता है। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिंतक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या – 234

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी,
सादर प्रणाम।

लखीमपुर
26.7.52

मेरा एक पत्र पहुंचा होगा। यहाँ सब कुशल पूर्वक है, आशा है 'आप' सब भी सकुशल होंगे। पूज्य मास्टर साहब जी तो शायद कल आवें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

कल से दशा बदल गई है। दशा में शुद्धता आ गई है या समझ लीजिये उसे शुद्धता मान ली है। इधर भाई अब तो यह हाल हो गया है कि ऐसा लगता है कि हरी-भरी दशा में सूखा पड़ने लगा है। सब तरफ़ की सब रंगीन दशा जैसे खत्म हो गई है। अब यह न जाने क्या मेरी दशा को हो गया है। एकाएक सूखा कहाँ से आ गया है, समझ में नहीं आता है। अब न सुस्ती है, न तेज़ी ही है, न उमंग न जोश, न राग विरक्ति, एक अजीब एक साँ हालत है। कुछ यह ज़रूर है कि दशा हरे उपवन में से सूखे उपवन में बदल गई है। जिससे हर तरफ़ हर पौधा शुष्क है, परन्तु न जाने किसके सहारे जी रहा है।

पूज्य 'श्री बाबूजी' इधर मुझे कुछ ऐसा कभी-कभी दिखाई देता है कि 'मालिक' में इतनी आकर्षण-शक्ति है कि कुछ ठिकाना नहीं। सारी दुनिया को अपनी ओर खींच रही है, परन्तु इतना गाफिलपना फैला हुआ है कि इसी कारण कम लोग इधर आते हैं, और जो आते हैं, वे जागने की कोशिश नहीं करते, जागना चाहते नहीं। नहीं तो कितना मज़ा आ जावे। परन्तु मैं इतना अवश्य कहूँगी कि इसी आकर्षण-शक्ति के कारण जिन्हें कुछ भी विश्वास हो गया है, वे चाहे कुछ करें या न करें, परन्तु उनकी आत्मा मिशन को छोड़ कदापि नहीं सकती। छोटे भाई-बहनों को प्यार। केसर 'आपको' प्रणाम कहती है तथा अम्मा शुभाशीर्वाद कहती हैं।

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र–संख्या – 235

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 27.7.52

कृपा–पत्र 'आपका' आज मिला, पढ़कर प्रसन्नता हुई। पूज्य मास्टर साहब जी से मालूम हुआ कि 'आपको' कुछ जुकाम, खाँसी है, 'आप' दवा बराबर खाते रहिये। मेरी भी इन दिनों कुछ तबियत खराब है, खैर सब ठीक हो जायेगी। अपनी बदली हुई दशा लिखकर तो पत्र डाल चुकी हूँ, शायद कल मिल जायेगा। आपने Point 'E' (प्वाइंट ई) से मुझे Point 'F' (प्वाइंट एफ) पर खींच दिया, बहुत–बहुत धन्यवाद है। 'आपकी' कृपा वास्तव में अद्‌भुत है।

'आपने' जो यह पूछा है कि "लोग महात्माओं के यहाँ महीनों जाते हैं, परन्तु वहाँ के लिये यह शान्ति का सवाल क्यों नहीं उठता"। इसकी वजह केवल मुझे यही मालूम पड़ती है कि वास्तव में लोगों को शान्ति की तलाश ही नहीं होती है, वे महात्माओं के पास शान्ति के लिये नहीं, वरन् उनके पास जो महात्मागीरी का पुरस्कार बढ़िया–बढ़िया Buildings, (मकानात) सरोवर हैं, आश्रम हैं, उन्हें देखने के लिये जाते हैं और कोई एकाध यदि शान्ति के लिये ही जावें तो भला आश्रम में उन लोगों (महात्माओं) के पास नसीब ही कहाँ है। मैं तो फिर यही कहती हूँ, जो वास्तव में शान्ति के प्रेमी हैं, वे ज़रा 'आपके' मकान के पास से केवल निकल भर कर तो देखें। 'आपके' पास बैठने का अहोभाग्य प्राप्त हो जाये, फिर तो वास्तव में धन्य हैं। मेरी तो समझ में नहीं आता कि 'आपको' क्या लिखूं। 'आप तो' बस 'जो हैं, सो हैं।'

'आपने' जो काम करने का तरीका लिखा है, लाजवाब है। अब ऐसे ही पूर्णतयः कोशिश करूँगी। बिब्बो के लिये प्रार्थना कर रही हूँ। ईश्वर करे, जल्द अच्छी हो जावे। आजकल सुस्ती वग़ैरह सब ठीक है। 'आपने' जो जामुन का रस भेजा, सो मिल गया। कल मैंने और ताऊजी ने पी भी लिया।

अब देखिये, यदि ईश्वर की कृपा हुई तो जन्माष्टमी करीब आ रही है। सब लोग न सही तो कोई न कोई तो अवश्य पहुंचेगा। छोटे भाई–बहनों को प्यार। अम्मा आ गई; फूलो जिज्जी की तबियत ठीक है। इतिः

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,
पुत्री–कस्तूरी

पत्र-संख्या – 236

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 27.7.52

पूज्य मास्टर साहब जी के हाथों 'आपके' उत्तर तथा ताऊजी के पत्र की नकल मिले। ताऊजी का पत्र पढ़कर अत्यन्त दुःख हुआ, उसमें तो उनकी अश्रद्धा का नमूना ही भरा है। इधर मेरे 'मालिक' मुझे भी न जाने क्या हो गया है कि उनकी ओर से तबियत स्वतः हटी मालूम होती थी, परन्तु कारण न समझ में आया। खैर, अब पता लगा। पूज्य 'श्री बाबूजी' मेरा तो यह हाल है कि जिस दिन से अम्मा ने 'आपसे' पुत्र की निस्बत लगाई, उसी दिन से मेरी निगाह उनके लिये न जाने कितनी ऊंची या क्या हो गई, यह मैं खुद नहीं जान पाई।

जिस दिन 'श्री समर्थ जी महाराज जी' का कृपा-पत्र आया था, उसे सुनाकर ताऊजी का Mood (मूड) बदल गया, तो मैंने तुरन्त केसर से कहा था कि देखो कोई बात इसमें बुरा मानने की नहीं थी, परन्तु ताऊजी को न जाने क्यों बुरा लग गया। 'बुजुर्ग' जो कहते हैं, हमारे सुधार के लिये हम पर मेहरबानी करने के लिये ही कहते हैं, इसमें बुरा मानना अपनी कमज़ोरी ज़ाहिर करना है। पूज्य 'श्री बाबूजी' मैं तो यही कहती हूँ कि हमारा ज़र्रा-ज़र्रा 'उसका' ही है और रहेगा। रही सेवा की बात सो तो 'आप' स्वयं ही एक निगाह में राई को पर्वत तथा पर्वत को राई बनाने में समर्थ हैं। केवल हमें बड़ाई तथा 'अपनी' लीला में सहयोग का सुअवसर देकर कृतार्थ बना देते हैं। फिर इस गरीबनी का ज़र्रा-ज़र्रा 'आपका' ही है, चाहे जो सेवा ले लें। मिशन तो बनेगा और फिर बनेगा और हम सदैव सत्यता पर डटे रहेंगे। क्योंकि मैं तो 'आपसे' सत्यता तथा निश्छलता का ही पाठ पढ़ती हूँ।

पूज्य 'श्री बाबूजी' ताऊजी ने इतना सख्त लिख दिया कि उसके लिये क्या कहा जाय। 'आपको' कितनी तकलीफ़ हुई कि जो कही नहीं जा सकती है। परन्तु 'आपने' तथा 'श्री लाला जी साहब' ने सदैव ही उनके अपराधों को क्षमा ही किया है। 'आपको' जो उनके इस अपराध से तकलीफ़ पहुंची है, उसे उनसे यथाशक्ति समझा कर प्रेम तथा मुहब्बत से दूर करने को कहूँगी।

पूज्य 'श्री बाबूजी' अम्मा तथा हम सब लोग उनके इस अपराध के लिये 'आप तथा श्री समर्थ जी' के क़दमों में कोटिशः बार क्षमा माँग रहे हैं। उनके इस अपराध के लिये उनकी तथा हम सब की शारीरिक खुराक (भोजन) चाहे न मिले, परन्तु कृपा करके उनकी रूहानी खुराक पर रहम खाइये, बक्श दीजिये। अम्मा कहती हैं कि इनके अपराध से

'आपको' बहुत कष्ट पहुंचा, इसके लिये हम सब पुनः बारम्बार अपने 'श्री लालाजी' के दरबार में आचंल पसार कर क्षमा प्रार्थी हैं। अम्मा कहती हैं कि क्या हमको इनके लिये क्षमा न मिलेगी, अवश्य मिलेगी, केवल इस बल पर कि हमारा दरबार बड़ा रहमदिल एवं कृपालु है। अम्मा कहती हैं कि यह गुस्से में लिख देते हैं, चाहे वह बात फिर मन में न रहे। 'आप' फिर रहम करें, उनकी रूहानी खुराक उन्हें फिर मिलने लगे। नहीं तो इनका कहीं ठिकाना नहीं रहेगा, यह कहीं के न रहेंगे। हम सब मिलकर उन्हें समझायेंगे। क्षमा करने वालों में अग्रगण्य 'श्री लाला जी साहब' तथा 'श्री बाबूजी', आप इनके अपराध को अवश्य क्षमा करें। अम्मा कहती हैं, श्री समर्थजी महराज से भी मैं इनके अपराध के लिये क्षमा माँगती हूँ। 'आपको' तकलीफ पहुंचाने का कारण बनना ही और फिर फ़ैज़ से इतने दिनों वंचित रहना ही इनकी बड़ी सज़ा हो गई। अब क्षमा तथा फ़ैज़ मिले, यही प्रार्थना है और अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं तथा केसर प्रणाम कहती है। इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-237

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 30.7.52

मेरे तथा ताऊजी के पत्र पहुंचे होंगे। यहाँ सब कुशल पूर्वक हैं, आशा है 'आप' भी अच्छी तरह से होंगे।'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई अब तो यह दशा है कि अच्छाई, बुराई सब हज़म हो गई। यानी अच्छी हालतें तथा वह रुखी हालत भी शायद हज़म हो गई। अब तो दशा न हरी लगती है, न रुखी ही, कुछ एक सार सी दशा है। अब तो शायद चटियल मैदान भी मेरे में हज़म होता सा लगता है। अब तो यह हाल है कि मैं ही चटियल मैदान हो गई हूँ। या यह समझ लीजिए कि वह निगाह ही खत्म हो गई, जिससे मैदान वगैरह दीखता था।

अब तो घड़े की चिकनाहट ऐसी हो गई है कि न किसी के रोने का असर, न गाने का असर और यही नहीं, बल्कि न अब उस चिकनाहटपने का ही एहसास होता है, बल्कि ऐसा लगता है कि मानो जैसी हमेशा से थी, वैसी साफ़ हो गई हूँ। तबियत में बिल्कुल ठहरा पना आ गया है। न ठोसता की बू है, और न हल्केपन के अहसास की झलक और न बोझ। बस अब कोई दशा नहीं लगती, बस केवल ऐसा ही, इतना ही महसूस होता है कि मेरा ख्याल अब अकस्मात् 'मालिक' के ख्याल में घुस गया है और अब उसी

से परवरिश पाते पाते धीरे धीरे लोप सा ही होता जाता है। यानी 'मालिक का ख्याल या तवज्जो या कृपा-दृष्टि जो मेरी ओर थी, उसी में समा गया और अब उसी से परवरिश पा रहा है। और धीरे धीरे प्रायः खत्म होता जा रहा है। और भाई, वहाँ यह है कि 'उसके' ख्याल में बेख्याली हालत होती चली जाती है। पूज्य श्री बाबूजी अब कुछ यह हो गया है कि 'मालिक' के ख्याल में परवरिश पाते रहने से अब वह इतना नाज़ुक बन गया है कि अब उसे किसी ख्याल की भरा ही नहीं रह गयी है। यहाँ तक कि जो दशा अनुभव में आती है, उसे लिखने तक मैं यदि याद रखने की कोशिश करती हूँ तो अच्छा नहीं लगता है, बोझ सा प्रतीत होता है। और जहाँ लिख चुकी, बस वह फिर बिल्कुल free (आज़ाद) हो जाता है। वह तो ऐसा स्वतंत्र है, या उसे 'उसके' ख्याल की परवरिश में इतनी मग्नता है कि वह और के बन्धन में आना तो दूर, सोचना या याद रखने तक का बन्धन नहीं सहन कर सकता है। बस इसीलिये जल्दी लिख लेती हूँ। नहीं तो तुरन्त याद करते-करते भूलने लगती हूँ। क्योंकि हाल तो यह हो गया है, कि 'मालिक' ने सब कुछ तो स्वतंत्र कर दिया है। खैर, यह सब 'मालिक'की कृपा और उसकी (यानी मेरे ख्याल की) तक़दीर है।

'आपने' काम करनेका जो तरीका लिखा है, उसे पूर्णतयः से करने की कोशिश करती हूँ, कोई कठिन भी नहीं लगता, बल्कि यदि हो सके तो आत्मिक-उन्नति का भी बढ़िया नुस्खा है। और हो सकने में कोई खारिायत भी नहीं। अगर कोई माने तो।

अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। छोटे भाई-बहनों को प्यार। बिब्बो के लिये भी सब लोग प्रार्थना कर रहे हैं। 'ईश्वर' की कृपा से बेचारी का बुखार उतर जाये। इतिः

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या -238

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 31.7.52

तुम्हारा खत ता. 26.7.52 का लिखा हुआ मिला- यह Point 'E' की हालत है। खुश्क हालत तो बहुत अच्छी है, इसको बेकैफी की हालत कहते हैं यानी कोई कैफ़ियत न होना। इस हालत का पूरी तौर पर कायम हो जाना ही कमाल है। तुमने जो आकर्षण शक्ति 'मालिक' में होने के बारे में लिखा है, मुमकिन है कि हो-फिर अनुभव करके

लिखना। तुमने जब लिखा तो मैंने गौर किया तो मुझे भी मालूम हुई; कृष्ण जी के वक्त में यह बात ज़रूर थी। तुम्हारे भाई–बहनों को दुआ।

शुभ चिन्तक

रामचन्द्र

पत्र–संख्या –239

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 4.8.52

30 जुलाई का पत्र मिला। तुम्हारा ठहराव जैसा कि मैं लिख चुका हूँ Point 'F' पर है, मगर मेरी तवज्जो अभी Point 'F' की सैर के लिए काम नहीं दे रही है, और वह मुकाम अच्छी तरह से अभी नहीं खुल रहा है। वजह कुछ नहीं मालूम होती है। तुमने लिखा है कि अब तो दशा न हरी लगती है न सूखी, इसके माने यह हैं कि आत्मा के निकट पहुँच चुकी हो। मगर अभी तुम्हारे ख़्याल में हरे और सूखे की तमीज़ बाकी है। हालत वह है कि उसकी भी तमीज़ न रहे। ईश्वर यह चीज़ भी देगा बशर्ते कि ईश्वर करे कि तुम इसी भाँति लगी रहो। तुमने लिखा है कि "कुछ अब तो शायद चटियल मैदान भी मेरे में हज़म होता सा लगता है।" यह ऐसी दशा है कि जब किसी की बस्ती या घर चटियल मैदान ही बन जाता है, तो रहते–रहते वह चीज़ और जगह ऐसी मालूम होती है कि गोया यह अपनी ही है और फिर उसका एहसास नहीं होता। चटियल मैदान का हज़म करना जो तुमने लिखा है यह किस एहसास से तुमने लिखा है? लिखना। अगर इसके माने यह है कि "बिन्दु में सिन्धु" समा गया है, तब तो बहुत अच्छी हालत है।

तुमने लिखा है कि मेरा ख़्याल अब अकस्मात् 'मालिक' के ख़्याल में घुस गया है, यह भी बहुत अच्छा है। जब जिस्म गायब हो जाता है, यानी अपने जिस्म का भान नहीं रहता और ख़्याल भी 'मालिक' में बहुत कुछ चिपट जाता है तो ऐसा महसूस होता है। इसकी शुरूआत है, अभी पूरी हालत नहीं आई। यह सब ईश्वर के हाथ में है, इसमें अपना वश नहीं–वह जिसे दे देवे। मैंने जो तुम्हें लिखा था कि मेरा ख़्याल समझ कर किसी काम को करो, यानी यह समझ लो कि मेरा ख़्याल ही काम कर रहा है। इसके बारे में तुमने यह लिखा है कि आत्मिक –उन्नति के लिये यह बढ़िया नुस्खा है– यह बात मेरी समझ में नहीं आई है–लिखो ताकि समझ जाऊं। एक चीज़ आत्मिक–उन्नति के लिए बहुत हानिकारक है। वह है अहंकार और इल्मी–काबिलियत का जो अहंकार होता है, वह तो बहुत ही खराब होता है। लोगों को इसका पता नहीं चलता

है, मगर अपना रंग ले ही आता है। दूसरी चीज़ जो और भी ज़्यादा हानिकारक है वह है हसद या Jealousy। स्वामी विवेकानन्द जी ने Transcendental person (श्रेष्ठ व्यक्ति) की तारीफ़ यह लिखी है "One who is jeolous to none" (जिसको किसी से ईर्ष्या न हो) जो शख्स अपनी यह दो बातें दूर नहीं करता उसका कोई एतबार नहीं कि कब ऐसा गिरे कि उठ न पावे। हम अगर यह देखें कि किसी शख्स पर ईश्वर की बड़ी मेहरबानी है, तो हमें खुश होना चाहिए। यहाँ तो यह हाल है कि अगर यह नुक्स किसी में हो और मैं इसलिए कह दूं कि वह भी इसके दूर करने की कोशिश करे तो शायद उसे इस क़दर बुरा मालूम हो कि वह मेरी शक्ल देखना पसन्द न करे। अब मुझसे इतनी मेहनत नहीं होती कि मैं अगर किसी में समझ लूं कि यह नुक्स है तो मैं तो अपने आध्यात्मिक बल से दूर करूँ ऐसे कि उसको खबर न हो और मैं इसीलिए, अगर मुझे किसी का कोई नुक्स मालूम हो जाता है, उससे कहता नहीं हूँ बल्कि अपनी कमज़ोरी समझ लेता हूँ। तुम्हारे भाई–बहनों को आशीर्वाद।

शुभचिन्तक,

रामचन्द्र

उसूल यह है कि सिखाने वाले से जितने तालीम पा रहे हैं और खासकर वह लोग जो Iniciated (गुरु द्वारा दीक्षित अभ्यासी) हैं, उम्र में कितने ही बड़े हों, उसकी आध्यात्मिक औलाद हैं। मैंने इस सब बातों का ख़्याल न करते हुए उम्र व बुज़ुर्ग का हमेशा ख़्याल रखा। कोई मुझसे कुछ कह ले, मैं बिल्कुल बुरा नहीं मानता। कोई गाली दे या मारे, इसका कुछ असर हमारे ऊपर होने का नहीं– अगर यकीन न हो तो इसको कोई आज़मा कर देख ले। और लगेगा भी, क्योंकि मैं इन्सान हूँ, तो भी मिनट–दो–मिनट के लिए और फिर जैसा का तैसा।

पत्र संख्या–240

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबू जी, — लखीमपुर

सादर प्रणाम। — 5.8.52

कृपा–पत्र 'आपका' आया– समाचार मालूम हुए। कल बड़े चाचा को भी सोमवार या कल बुध को Judge (जज) की Chair (कुर्सी) पर बैठने को लिखा था, इसलिए ताऊजी को भी बुलाया था। ताऊजी आज इलाहाबाद गये–शायद इतवार को आयेंगे। वास्तव में पूज्य 'श्री बाबूजी', 'आपकी' मेहरबानी की इन्तिहा नहीं–किसी चीज़ की इन्तिहा नहीं, बल्कि मैं तो पुकार–पुकार कर यही कहूँगी कि 'आपकी' मिसाल के लिये 'आप' ही नज़र आते हैं। 'श्री समर्थ जी महराज जी' ने संसार को वह 'रत्न' प्रदान किया है,

जिसकी दमक मात्र से ही संसार जगमगा रहा है। जिसका सानी न कभी हुआ है, न कभी आगे होने की सम्भावना है– अरे, कोई आँखें खोलकर देखे भी तो। भाई, 'श्री समर्थ जी' के विषय में कह ही कौन सकता है कि जिसने 'आपको' बनाया है। 'उनकी' तारीफ़ में तो बस इतना ही कहा जा सकता है कि –

"आज है फज़लो करम से तेरे, वह रौशन चिराग़।
रोशनी पाते हैं जिससे, आशिकाने मारफ़त।।"

पूज्य 'श्री बाबूजी', 'आप' ने पूछा है, कि "अनुभव कर के लिखना" इसलिये यह थोड़ा सा लिखने की हिम्मत की है। अब जहाँ तक मेरा अनुभव 'मालिक' में आकर्षण–शक्ति के बारे में है, सो भी लिख रही हूँ। सत्य बात लिखूंगी-- मेरे मन में किसी बुजुर्ग के प्रति छोटाई का ख़्याल आ ही नहीं सकता है। 'आपने' पूछा है अनुभव, इसलिए सत्य लिख रही हूँ। यदि लिखने में शब्द ठीक न बने हों, कुछ गल्ती हो, तो क्षमा करियेगा।

'आपने' श्री कृष्ण जी महाराज में आकर्षण–शक्ति लिखी है, यह तो सत्य है ही, परन्तु मैं 'मालिक' की कृपा से यह कहती हूं और सत्य है, इसमें सन्देह नहीं, कि 'मालिक' की आकर्षण शक्ति को उसकी (यानी श्री कृष्ण जी की) आकर्षण--शक्ति से किसी हद तक अधिक ही देखती हूं। ऊंचे पाये की देखती हूँ और शायद यही कारण है कि 'आपकी' विलक्षणता को कोई ठीक Judge (आँक नहीं पाता है) नहीं कर पाता है। 'उनकी' आकर्षण शक्ति से लोग अधिक प्रभावित हुए, क्योंकि आजकल की यानी "मालिक"की आकर्षण–शक्ति की हद नहीं, परन्तु शायद लताफ़त (सूक्ष्मता) लिए हुए है। या यह कहिये कि कोई अपने को नीचे करके फिर कोशिश करे। मैं तो फिर यही कहूँगी--दीखे तो सब, परन्तु दुनिया को अन्धापन ही अच्छा लगता है। भाई दीखे तो सब परन्तु हम अपनी निगाह से देखने के बजाय यदि निगाह को 'उसका' मान लें तो कठिनता सरल हो जावे। परन्तु होता सब 'मालिक' की कृपा से है। किसी की मजाल कहाँ, जो इतनी काब्लियत लाये। जो कुछ अब तक का थोड़ा सा अनुभव 'मालिक' की कृपा से है, सो लिख दिया, अब 'आप' जानें। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरा तो 'मालिक' में कुछ यह हाल हो गया है कि जैसे 'मालिक' और 'उसकी' परछाई और वह भी इस तरह पर कि, अब तो भाई कुछ ऐसा हाल हो गया है कि न कुछ भीतर न्यारा है, न बाहर। सब एक ही मामला हो गया है। 'जो है, सो है, और भीतर बाहर सब कुछ यही है, ऐसा ही है और न जाने क्या है, मुझे कुछ नहीं मालूम। अब तो मुझे अपने

से अलग शुद्धता की दशा भी महसूस नहीं होती है। या भाई यों कह लीजिये कि वह शुद्धता की दशा भी मुझमें घुस गई है, लय होती जा रही है। अब तो हर समय कैफ़ियत की दशा रहती है यदि देखती हूँ तो, नहीं तो कुछ हर समय बेख़्याली सी ही रहती है। अम्मा कहती हैं कि इनकी Self importance (अपने महत्व की भावना) नहीं जाती, क्या करें? जन्माष्टमी में हम लोगों का शाहजहाँपुर आना नामुमकिन सा हो गया है, क्योंकि ता. 20 को ताऊजी लौटने को कह गये हैं, परन्तु ठीक नहीं कब तक आवेंगे।

पूज्य 'श्री बाबूजी' इस अनुभव को हरी दद्दा ही, सब सत्संगी भाई–बहनों में इस तरह बतावें कि जिससे शायद उनका कुछ उपकार हो सके। अपना नाम हटाकर मैं भी अपने यहाँ के सत्संग में रखूंगी शायद नतीजा अच्छा हो। साँच को आँच क्या। खैर, 'आप' जैसा उचित समझें करें। छोटे भाई–बहनों को प्यार। बिब्बो की तबियत अब कैसी है अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। इति

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री–कस्तूरी।

पत्र संख्या –241

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 10.8.52

आशा है मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। 'आपने' अपनी तबियत के बारे में नहीं लिखा कि जुकाम और कुछ खाँसी थी, सो ठीक हुआ या नहीं। यदि हम लोग आते शाहजहाँपुर तो कल शाम को पहुँच जाते। परन्तु भाई हमारा चलना ही तो मुश्किल होता है, नहीं तो 'मालिक' की कृपा से पहुँच ही जावें, खैर, 'उसकी' मर्ज़ी। ताऊजी अभी इलाहाबाद से नहीं आये हैं। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, बेख़्याली की भी दशा महसूस नहीं होती है। मैं तो अब कैफ़ियत तक नहीं जानती हूँ कि क्या चीज़ है, कैसी होती है। मुझे तो बस ऐसा लगता है कि जैसे एक दुनिया का साधारण मनुष्य प्रतिदिन के क्रमानुसार जीवन व्यतीत करता है, बस वही हाल मेरा है। वैसे मैं अब अपना हाल खुद नहीं जानती हूँ, 'मालिक' जाने जैसे वह रख रहा होगा, वैसे हूँ। अन्तर इतना है कि मन में एक टीसन है, कुरेदन सी है, और वास्तव में यही मेरी शान्ति की दशा है, वरना कोई दशा, कोई कैफ़ियत मुझमें हैं या नहीं, मुझे कुछ पता नहीं। मेरी नज़र भी न जाने क्या हुई। अब 'आप' ही संभालिये।

पूज्य 'श्री बाबूजी' अब तो ऐसा लगता है कि 'मालिक' की कृपा से हालत एहसास में आती है परन्तु वह पूरी तौर पर कही नहीं जा पाती। अब तो भाई, सब नज़ारे वगैरह ख़त्म हो गये। नज्ज़ारा, नज्ज़ारे में समा गया अब जो शेष है, वही मेरी हालत समझ लीजिये। न जाने क्यों इधर तबियत में कुछ ऊबापन, कुछ भारीपन सा रहता है, परन्तु 'मालिक' की कृपा से मन में इसके विपरीत कुछ तड़प, कुछ कुरेदन सी रहती है। पूज्य 'श्री बाबूजी' मुझमें तो अब न कुछ ताकत रह गई है और न ख़्याल वगैरह ही कुछ रह गया है जिसके ज़रिये से सब काम होते थे, परन्तु 'मालिक' की कृपा से Working वगैरह तो न जाने कैसे पूर्ववत् ही चल रहे हैं। परन्तु यह सब कैसे है, क्या है, मुझे कुछ नहीं मालूम है। एक बात बहुत बुरी मुझमें हो गई है और काबू के बाहर कि भाई, 'मालिक' की इतनी कृपा मुझपर है, परन्तु मैं ऐसी हूँ कि मुझे तो कभी 'उसकी' याद तक नहीं आती है। भाई, अब 'आप' ही जानिये। मैं तो जैसी कुछ हूँ, 'आपके' सामने हूँ। जो कुछ यह हो रहा है, 'आप' ही जानिये, क्योंकि मैं तो अपने बस की ही नहीं रह गई। मुझे, मैं कुछ अच्छी नहीं मालूम पड़ती हूँ, क्योंकि अब न तो याद आती है और न प्रेम की एक छींट तक मुझमें है। इति–

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री–कस्तूरी।

पत्र संख्या –242

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 12.8.52

कृपा–पत्र कल शाम को आठ बजे पूज्य मास्टर–साहब ने सुनाया–सुनकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। वास्तव में 'आपके' पत्र क्या हैं, उनके एक–एक शब्द स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य हैं। एक–एक लाइन सीखने योग्य है। 'मालिक' पर मर मिटूं, यही इच्छा तथा कोशिश है और सब कुछ 'मालिक' के हाथ में है, 'उसकी' कृपा का ही आसरा है।

पूज्य 'श्री बाबूजी' अम्मा तथा हम सब 'आपको' बहुत–बहुत धन्यवाद देते हैं। क्षमा की तथा कृपा की हद है। पूज्य "समर्थ श्री लालाजी" तथा पूज्य 'श्री स्वामी जी' को अम्मा तथा हम सब शत–शत बार धन्यवाद देते हैं, तथा अत्यन्त कृतज्ञ हैं। यह 'आपकी' ही शान है।

एक बात मैं यह लिखना भूल गई थी कि मुझे कुछ ऐसा अनुभव है कि अपना ख़्याल यदि 'आपका' ख़्याल मान लिया जावे तो अभ्यासी का सम्बन्ध बड़ी ऊंची दुनिया से जुड़ जाता है।

आज मेरी दशा कुछ बदली हुई सी है 'आपकी' मेहरबानी से। बदली हुई क्या है, कुछ हल्की समझ लीजिये।

ताऊ जी अभी नहीं आये हैं। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं, तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। इति–

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री–कस्तूरी।

पत्र संख्या – 243

शाहजहाँपुर
13.8.52

प्रिय बेटी कस्तूरी,
खुश रहो।

खत तुम्हारे सब मिल गये। तुमने जो लिखा है कि बेख़्याली की सी दशा महसूस होती है। यह हालत बहुत अच्छी है, मगर अभी तुम में बेख़्याली की तमीज़ बाकी है, अर्थात् ख़्याल और बेख़्याल दोनों का अन्दाज़ अभी तुममें बाकी है। यह चीज़ भी नहीं रहनी चाहिये तब Originality (वास्तविकता) की शुरूआत समझो। हिम्मत है तो यह चीज़ भी ईश्वर देगा। यह इतनी बारीक चीज़ है कि हर शख़्स को इसका अन्दाज़ा भी नहीं हो सकता। इसका मज़ा चखने वाला ही समझ सकता है। ईश्वर करे यह हालत पैदा हो जावे। एक बात मेरे समझ में आ गई–वह तुम्हारे खत से ताल्लुक नहीं रखती, मगर लिखे देता हूँ। तुम्हारी और श्यामपती जी की गुफ्तगू नारायण ने सुनाई थी कि श्यामपती जी को ताज्जुब हुआ कि जब तुमने उनके यहाँ का वातावरण बता दिया। एक बात का तजुर्बा करना, मेरा तजुर्बा नहीं है और मैं भी देखूंगा, यह आज नई ख़्याल में आई है और इसको याद भी रखना, मुमकिन है मैं भूल जाऊं। किसी चीज़ की मौजूदगी या असर वातावरण पर असर डालती है। जो मनुष्य या औरत सामने आवे तो उसके ख़्याल जैसे भी हैं, वह भी उसके करीब के, यानी जिस्म से मिले हुए वातावरण पर असर रखेंगे। इसलिए कभी इसका तजुर्बा करना कि मनुष्य के चारों तरफ जो वातावरण होता है, वैसे ही उसके ख़्यालात भी होते होंगे। एक नया ख़्याल आ गया सो लिख दिया, तजुर्बा इसका नहीं किया।

तुमने लिखा है कि "जैसे दुनिया का एक साधारण मनुष्य प्रतिदिन के क्रमानुसार जीवन व्यतीत करता है," बस यही हाल मेरा है। तुमने जहाँ तक इसको एहसास किया है, लिखा है, मगर इसको ठीक Express (अभिव्यक्त) नहीं कर सकी, इस बात में अभी बहुत मोटापन है। जो असली हालत इससे ताल्लुक रखती है, वह बहुत दूर है और वह एक ईश्वर का रहस्य, भेद है, जिसको लाला जी साहब ने बहुत बचाकर मेरे एक खत

के जवाब में लिखा है और उसके खोलने की मुमानियत भी उस वक्त की थी। कबीरदास ने अपने लायक शिष्य धर्मदास जी से कहा है –

"धर्मदास तोहे लाख दुहाई। सार भेद बाहर नहिं जाई।।"

और यही दोहा मैंने 'लाला जी' को लिखा था, जबकि मेरी दशा 'उनकी' कृपा से बहुत कुछ परिपक्व हो चुकी थी। इसी में यह भी लिखा था कि सींक की ओट पहाड़ मालूम पड़ता है। इस दोहे का मतलब यह नहीं है कि आध्यात्मिक-विद्या ख़ालिस रूप में किसी को प्रदान न की जाये, बल्कि यह मतलब है कि असल भेद को जुबान से न बताया जाये, जब तक कि अभ्यासी स्वयं उसको अनुभव न करने लगे, इसलिये जुबान से बताना मना है। अगर उस बात का किसी शख्स को यकीन हो जाये तो फिर मुमकिन है कि ईश्वर की Importance (महत्व) उसकी दृष्टि में जाती रहे और इस चीज़ को जल्दी कोई यकीन भी नहीं करेगा। मुझसे लालाजी साहब ने एक जगह नोट में कहा है कि "तुम किसी एकान्त और अच्छी जगह में जाकर इसका तजुर्बा करो कि अपने आपको इतना नीचा उतार दो कि जो सबसे ज़्यादा पतित और रंक की हालत हो सकती है और फिर आहिस्ता आहिस्ता तरक्की करते हुए, चक्रों का हाल जानते हुए, अपनी हालत पर आ जाओ और जितना Time मैं इन्तहाई पतित की हालत में रहूँ और उससे आगे तालीमी हालत पर (यानी सिखाने वाले की हालत पर) न आ जाऊं तब तक तुम लोगों के सिखाने का ज़िम्मा खुद लिया है।" वह मुझे यह तजुर्बा कराना चाहते हैं, मगर मैं नहीं कह सकता, इसके लिए मुझे वक्त मिले या न मिले और यह चीज़ ऐसी जगह हो सकेगी जो किसी पहाड़ या जंगल के कोने पर हो। मैंने बहुत से ईश्वर के भेद खोले हैं और मैं किताबों और चिट्ठियों में बहुत कुछ लिख चुका हूँ। बहुत खास बात मुमकिन है, न कही हो। चूंकि अब हुक्म भी ऐसा है कि मैं सीने पर रखकर कुछ न ले जाऊं। लिखने वाला न मिलने की कमी भी मुमकिन है बहुत सी बातें न खुलवा सकूं और लिखने वाला अगर हो तो कैसा हो कि छाया की तरह मेरे साथ लगा रहे। जिस वक्त जो ख़्याल मुझको पैदा हो लिख ले। जब तुमने अपनी टीसन लिखी तो मुझे अपनी टीसन की याद आ गई और इसी कुरेदन और अशान्ति में मुझे वह मज़ा मिला है कि शान्ति के तलाश करने वाले इस चीज़ को ठुकरा दें। अब ज़रूर इन सब बातों से स्वतंत्र हूँ। न अब कुरेदन है, न टीसन और मेरी इस चीज़ की नकल नहीं करना चाहिये, इसलिये कि यह चीज़ खुद ब खुद पैदा होती है। श्यामपती जी से पूछना कि कबीरदास के उस दोहे का क्या मतलब है, वह अच्छा बतायेंगे, इसलिये कि वह काबिल आदमी हैं और फिर मेरा मतलब भी उन्हें बता देना। एक चीज़ अच्छी सिद्ध हो जावेगी, वह मुझे लिखना। केसर का भी खत मिल गया–उन्हें बेचैनी मुबारक हो।

यह चीज़ बड़ी मुश्किल से मिलती है और फ़कीरों की संगत से अगर जिज्ञासु में तलाश है तो यही चीज़ पैदा होनी चाहिये। इसी को सूफियों ने दर्द-दिल कहा है। अब इसके भी बहुत से Stages (स्तर) हैं। जितने अच्छे Stage का दर्द दिल है उतने अच्छे Stage पर अभ्यासी पहुँचेगा। मैं तो बिटिया सच कहता हूँ कि ठूंसम ठाँस करता चला जाता हूँ। इसलिए कुछ न कुछ काम बन ही जावेगा। बाकी असल शौक मुश्किल से किसी में होगा। लाला जी की महफ़िल में लोग अच्छे-अच्छे थे मगर इस चीज़ को फिर भी बहुत कमी थी और सच पूछो तो 'आप' इतने उदारचित्त थे कि रास्ते-गली जवाहर बिखेरते चले जाते थे। फिर भी हम लोगों की आँखें न खुलीं और उनको वाक़ई तौर पर अब तक कोई पहिचान न सका। मुझे भी होश न आया कि 'आप से' बहुत सी गुत्थियाँ सुलझा लेता। यह 'आपकी' मेहरबानी थी कि मुझे इस क़दर दे गये। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिन्तक

रामचन्द्र

पत्र संख्या – 244

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 22.8.52

आशा है 'आप' आराम से पहुंच गये होंगे। 'आपका' पत्र जो 'आपके' आने से शायद दो-एक दिन पहले आया था, मिल गया था। 'आपने' जो यह पूछा था कि इसका तजुर्बा करना कि "मनुष्य के चारों तरफ़ जो वातावरण होता है, वैसे ही उसके ख़यालात होते होंगे।" 'आपका' यह ख़याल बिल्कुल ठीक है। 'मालिक' की कृपा से तजुर्बा भी कर लिया। दोहे का मतलब जो श्यामपति जी से पूछने को लिखा है, वह दो-एक दिन में जब जाऊंगी तब पूछूंगी। अब 'मालिक' की कृपा से जो दशा है, सो लिख रही हूँ।

यह तो शायद मैंने 'आपसे' कहा था कि 'मालिक' ने मुझे ख़याल और बेख़याल दोनों की तमीज़ से बरी कर दिया है। अब तो मुझे कुछ ऐसा लगता है कि सब खुलता चला जा रहा है, यानी जिस दशा में भी हूँ, वह खुलती चली जा रही है, पूज्य 'श्री बाबूजी' यहाँ 'आपने' एक दिन परम पूज्य पापा जी के प्रेम की तथा कुछ अपनी डायरी की बातें बताई थीं, तब से मुझे एक दो दिन न जाने क्या हो गया है कि ऐसा लगता था कि दिल हाय-हाय करके फटा जा रहा है, परन्तु मेरा तो यह हाल है कि मुझसे न तो कुछ कहा जाता है, न बिल्कुल बोलने की तबियत चाहती है। बस हृदय को दाबे औंधे पड़े रहने को जी चाहता था, परन्तु फिर भी मुझे वह हालत पसन्द है, यद्यपि कभी-कभी गवारा

नही हो पाती। परन्तु आज से वह दशा कम होती जा रही है– "मालिक" की जैसी मर्ज़ी। अब तो कुछ यह हाल समझ लीजिये कि –

"सुरत सुहागिन है पनिहारिन, ठाढ़ि भरै बिन डोर रे"

छोटे भाई–बहनों को प्यार। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। तथा केसर, बिट्टो 'आपको' प्रणाम कहती हैं। इति

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री–कस्तूरी।

पत्र–संख्या –245

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी,
सादर प्रणाम।

लखीमपुर
26.8.52

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। पूज्य मास्टर साहब जी की तबियत आजकल कुछ ठीक नहीं है, उन्हें कमज़ोरी है तथा कुछ खाँसी और ज़ुकाम है, परन्तु चिन्ता की कोई बात नहीं है। धीरे–धीरे ठीक हो रहे हैं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई यह हाल है कि कभी–कभी इतनी ठंड–दिली हालत हो जाती है कि कुछ कहना नहीं। अक्सर इतनी ठंडी हालत हो जाती है कि भीतर सब कुछ चित्रलिखित सा जम्बक सा चिपका हुआ सा जान पड़ता है। ऐसा लगता है कि भीतर सब बिल्कुल ठण्डी दशा हो गई है। कभी–कभी सब तरफ़ यह ठंडक वाली हालत ही नज़र आती है। इसलिये मुझे अब इसके आगे ध्यान, ध्यान कुछ पसन्द नहीं आता है – सन्मुख कुछ नहीं ठहरता है। और पूज्य 'श्री बाबूजी' अब कुछ यह हाल हो गया है कि मामूलन भी ज़रा सा भी तेज़ बोलना या तेज़ी लाना अब कदापि अच्छा नहीं लगता, क्योंकि शायद उस ठंडी हालत में यह सब कुछ गवारा नहीं होता– कुछ disturb (बाधा सी लगती है) होता है। या भाई शायद मेरे दिमाग़ या मन को इतनी सी भी गर्मी या गड़बड़ी बर्दाश्त करने का माद्दा नहीं रहा हो। क्रोध तो दूर रहा, जरा सा मामूलन भी तेज़ी चाहे तेज़ बोलना ही इस ख़ामोश हालत में कुछ गड़बड़ी सी मचा देता है। या भाई मन को अब यह अच्छा नहीं लगता है, और लोग चाहे तेज़ बोलें या कुछ करें, परन्तु तब ऐसा नहीं लगता है। कुछ ऐसा लगता है कि 'मालिक' के Mind (माइण्ड) में रहती हूँ।

पूज्य 'श्री बाबूजी' न जाने क्यों आज मन मुर्झाया हुआ सा, उदास सा है – उत्साह नहीं आ पाता है। न जाने क्या कमज़ोरी आ गई है। अब कृपया 'आप' ही सुधारें। छोटे भाई–बहनों को प्यार। इति–

आप की दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या –246

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 1.9.52

तुम्हारे 22–26 अगस्त के खत मिल गये। ईश्वर की कृपा से अच्छी हालत चल रही है। दूसरों का तेज़ बोलना जो नागवार होता है, उसके मानी यह हैं कि एकाग्रता बढ़ी हुई है। ता. 31 अगस्त को करीब साढ़े बारह बजे रात को मैं तुमको Sitting 'F' के मुकाम पर दे रहा था कि एकाएक मुझको यह मालूम हुआ कि 'F' का कोई पर्दा टूटा और उसमें से आग की लपट सी बरामद हुई – वह कुछ सुर्खी, कुछ चाँद की तरह से रोशनी लिए हुए थी – मेरे समझ में नहीं आया कि क्या बात थी। इससे पहले मैं 'F' के Inner most Corner (भीतरी भाग पर) पर तवज्जो देता था और उसको उभारता था मगर उभरता नहीं था – मगर असर ज़रूर लेता था और उसमें काफ़ी ताकत पहुँचती थी। मेरा एहसास यह है कि अब वह काफ़ी और पूरी हालत में है। हालाँकि Inner most corner (भीतरी भाग पर) पर मुझे अपनी Will इच्छा–शक्ति की तेजी अब भी काफ़ी तेज़ रखी हुई मालूम पड़ती है –मुमकिन है कुछ और उभरे। मुझमें एक नुक्स यह है कि जल्दबाज़ी की आदत है, इस वजह से अन्दाज़ नहीं रहता। तुम जितनी जल्द लिख सको यकुम (एक) सितम्बर की सुबह से या अब जो कुछ एहसास हो लिखो। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र–संख्या –247

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 2.9.52

पत्र डाल चुकी हूँ– आशा है पहुँचा होगा। मेरी तबियत इधर 7–8 दिन से अधिक खराब चल रही है, इसलिए पत्र डालने में विलम्ब हो जाता है, कोई चिन्ता की बात नहीं है–जहाँ तक मेरा ख़्याल है, 'मालिक' की कृपा से यह भी किसी भलाई के ही लिये होगी, धीरे–धीरे ठीक हो जाऊंगी। इधर 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो 'मालिक' ने इस ज्ञान से भी बिल्कुल Free (स्वतंत्र) कर दिया है कि आज क्या, मैंने कभी भी साधना की हो–न अभी कुछ साधना कर रही हूँ। यही नहीं बल्कि न यह पता है कि साधना से क्या लाभ हुआ है, या हो रहा है, या होगा। भाई क्या बताऊं, यह हाल हो गया है कि न तो यह पता है कि साधना से क्या मिला और तिस पर से न चैन ही है। वैसे तो चाहे इधर ख़्याल न जावे, परन्तु सत्संग में जब देखती हूँ तो ऐसा ही लगता है कि क्या कहूँ, मुझे कुछ मालूम नहीं, न मेरे पास कुछ है। हाँ चैन नहीं है, यह किससे कहूँ, खैर मुझे, 'मालिक' से मतलब है, जब यही चीज़ 'उसकी' है, 'वही' जाने। कुछ ऐसा हाल है कि कहाँ तो हरदम 'मालिक' से एकता रहती थी और कहाँ अब उसका ख़्याल तक नहीं आता। मुझे तो ऐसा लगता है, 'मालिक' की कृपा से मेरी हालत सत, रज, तम से भी दूर न जाने कहाँ चली गई है, कुछ पता नहीं और परवाह नहीं। पूज्य 'श्री बाबूजी' न जाने यह क्या हो गया है कि Initiation का आभास तक नहीं पा पाती हूँ, परन्तु "ठाढ़ि भरै बिन डोर रे" वाला हाल है। किसी को पूजा कराती हूँ तो मैं नहीं जानती हूँ कि मैं Sitting (सिटिंग) दे पाती हूँ या नहीं, जाती है या नहीं और यही हाल Working (कार्य) का है। मैं Duty (ड्यूटी) बजाती हूँ, परन्तु इससे बिल्कुल अनभिज्ञ रहती हूँ कि ठीक होता है या कुछ कमी है, परन्तु यह हर बात में ज़रूर है कि 'मालिक' ने जो कुछ दिया है, वह 'उसी' की मर्ज़ी माफ़िक होता ज़रूर है। वैसे भाई 'आप' सर्वज्ञ हैं।

पूज्य 'श्री बाबूजी' पहले मुझे हमेशा दिखाई देता था कि मैं बस तेज़ी से चलती ही चली जा रही हूँ, परन्तु अब यद्यपि दशा तो बदलती है, परन्तु न जाने क्यों वैसा नहीं मालूम पड़ता है। कृपया 'आप' ही बताइये, कुछ कमी, कुछ धीमापन तो मुझमें नहीं आ रहा है। कुछ ऐसा लगता है कि यद्यपि मेरे पास अब कोई हालत नहीं रही, परन्तु यदि सत्संग में कभी किसी दशा के बारे में बात छिड़ जाती है और फिर यदि मैं ख़ुद

कहने लगती हूँ तो ऐसा लगता है कि जैसे–जैसे कहती हूँ वैसे ही वैसे वह दशा 'मालिक' की कृपा से वातावरण में कुछ ऐसी फैल जाती है कि उस समय करीब–करीब हर सत्संगी को शायद उस दशा का आभास या आनन्द रहता है, परन्तु मेरी दशा उस समय बिल्कुल शायद जैसी थी वैसी रहती है, सिवाय कुछ थोड़े से आनन्द या भाई जाने क्या। कमर के बीच में रीढ़ के नीचे भाग में कुछ फड़कन सी रहती है, कभी–कभी तो बड़ी रेंगन सी मालूम पड़ती है, जैसे कोई कीड़े रेंग रहे हों। छोटे भाई–बहनों को प्यार। अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। इति

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,

पुत्री –कस्तूरी।

पत्र–संख्या –248

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 3.9.52

कृपा–पत्र 'आपका' आज मिला–पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'आपने' जो 31 अगस्त की रात में पर्दा टूट जाने और उसमें से आग की लपट, कुछ सुर्खी, कुछ चाँद की तरह से रोशनी लिए हुए लिखा है, सो 'मालिक' की कृपा से मुझे इतना याद है कि, कै बजे तो नहीं याद है, उस रात को स्वप्न में मुझे ज़रूर कुछ इसी प्रकार की रोशनी दिखाई पड़ी थी। परन्तु मुझे और कुछ नहीं मालूम, कृपया 'आप' ही लिखियेगा तो मुझे भी पता लग जायेगा। अब कल से फिर कुछ हालत बदली हुई लगती है। अभी क्या बदली है, यह मैं ठीक एहसास नहीं कर पाई हूँ। कल से तबियत भी काफी ठीक लगती है, ताकत भी अधिक लगती है। पूज्य 'श्री बाबूजी' कुछ यह है कि 'मालिक' का ख़्याल आते ही बीमारी तथा सारी कमज़ोरी जाती रहती है। एक बात और है कि उस आग की लपट से 'आप को' कुछ तकलीफ़ तो नहीं पहुँची थी।

हाँ, मैं यह देखती हूँ कि "बूंद में सिन्धु समाय गयो" वाली दशा बिल्कुल स्पष्ट रूप में अब दिखलाई पड़ती है, या एहसास में आ रही है। ऐसा मालूम पड़ता है कि खुद ब खुद एक निर्झर श्रोत सा जारी हो गया है वह निर्झर श्रोत यहाँ से परे, अति परे न जाने कहाँ अविचल तथा अविरल गति से जारी है जिसमें किसी का कोई अस्तित्व नहीं है, सब समान है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इति

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,

पुत्री–कस्तूरी

पत्र-संख्या -249

प्रिय बेटी कस्तूरी
शाहजहाँपुर
6.9.52

खुश रहो।

तुम्हारे दो खत मिले। तुम्हारे एहसास से मैं बहुत खुश हुआ-ईश्वर मुबारक करे। तुम्हारा तन्दुरुस्त रहना लाज़िमी है, इसलिए कि मुझे तुमसे काम लेना है। अगर तुम 15 मिनट रोज़ अपनी तन्दुरूस्ती के लिए दे दो तो तुम तन्दुरूस्त हो जाओ। तरीके तुम्हें मैंने बतला दिये हैं। अगर वह न कर सको तो इतना ही करो कि पन्द्रह मिनट तक यह ख़्याल करो कि ब्रह्माण्ड से तन्दुरुस्ती बढ़ाने वाली ताकत आ रही है, जिससे सब मर्ज़ दूर हो रहे हैं और तन्दुरूस्ती बढ़ रही है। मुझे उम्मीद है कि इतना कहना तुम मेरा मान लोगी। केसर में फ़नाइयत-लय अवस्था बढ़ रही है और यह बहुत अच्छी बात है। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या -250

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी,
लखीमपुर
8.9.52

सादर प्रणाम।

कृपा-पत्र 'आपका' आया था-उत्तर भी दे दिया था - आशा है मिला होगा। उत्सव में, छुट्टियों में हम सब 'आपको' बहुत-बहुत बुला रहे हैं, कृपया यदि स्वास्थ्य कुछ ठीक हो तो पधारने का कष्ट करियेगा। क्या करें, बिना बुलाये रहा नहीं जाता है। मेरी तबियत अब पहले से ठीक है, फिक्र की बिल्कुल कोई बात नहीं है। अम्मा को करीब 6-7 दिन से जुकाम, खाँसी तथा 100^0 तक बुखार भी हो जाता था, परन्तु परसों से बुखार 101^0 तक हो जाता है, खैर ईश्वर की कृपा से धीरे-धीरे ठीक हो जायेंगी। आज कल ताऊजी का भी Nervous system (नर्वस सिस्टम) खराब है। अब देखिये मैं कब तक वहाँ आ सकूं। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई मुझे तो ऐसा लगता है कि जैसा मैं लिख चुकी हूँ वह निर्झर श्रोत ऐसा है कि जहाँ सब समान हैं। मुझे तो ऐसा मालूम पड़ता है कि यह वह जगह है जहाँ इज्ज़त और अदब इन सबका भी अन्त हो जाता है। यहाँ तो सब जैसे के तैसे हैं। हाँ, यह भी ज़रूर है कि इज्ज़त व अदब वगैरह में 'मालिक' की कृपा से कमी नहीं हो सकती है,

मगर ख़याल कुछ नहीं रहता। इधर 4–5 दिन तो रातभर स्वप्न में बराबर 'मालिक' के ही साथ रहती थी। कुछ ऐसा लगता है कि 'मालिक' के बिल्कुल पास आ गई हूँ या 'उससे' अधिक चिपट गई हूँ। शायद इसी कारण भीतर ही भीतर कुछ खुशी सी छाई हुई लगती है। हालत बिल्कुल शुद्ध सी चल रही है। कभी–कभी दिमाग़ बिल्कुल खुला सा लगता है, परन्तु न जाने क्यों बीच खोपड़ी में अक्सर कुछ ठक–ठक सी होती रहती है, शायद कोई चीज़ लड़ती हो, मुझे ठीक नहीं मालूम। शायद उपरोक्त खुशी के ही कारण जब निगाह जाती है तो कुल शरीर भीतर से छका हुआ सा मालूम पड़ता है। आजकल Intelligence (समझ) भी जैसे बिल्कुल शुद्ध सी खुली हुई सी लगती है। मन का तथा Intelligence (समझ) का कुछ हल्का आवरण सा हट गया या साफ हो गया लगता है। भाई ऐसी दशा है कि :– "भाई म्हाने (मुझे) गोविन्द लीन्हो मोल" मेरा तो भाई अब यह हाल है कि न कोई भक्त न कोई अभक्त लगता है। न कोई सुस्त न कोई फुर्तीला महसूस होता है। यहाँ तक कि न कोई चोर न डाकू तक मालूम पड़ता है। मुझे तो सब जैसे के तैसे यानी जैसे आये थे वैसे ही दिखलाई पड़ते हैं। जहाँ से आये थे, वहीं मालूम पड़ते हैं, बिल्कुल सहज सी दशा है। किसी में कुछ खासियत नहीं है। ऐसा मालूम पड़ता है कि कुदरत में बिल्कुल सहज पना सा आ गया है, इसमें कोई खासियत ही नहीं रही। पूज्य 'श्री बाबूजी' कभी कुछ ऐसा दिखाई या महसूस होता है कि एक Force (शक्ति) है, जो कुदरत से सब करा रही है। भाई मुझे तो ऐसा दिखाई पड़ता है कि 'मालिक' का Command (आधिपत्य) ही सब कुछ सब ओर रवाँ है। या कुछ ऐसा है कि एक ही जगह से रूह रवाँ है। छोटे भाई–बहनों को प्यार। 'आप' छुट्टियों में शायद आयेंगे ज़रूर। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इति –

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या –251

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 4.10.52

आशा है 'आप' आराम से पहुँच गये होंगे। 'आपकी' साँस की तकलीफ़ आशा है 'ईश्वर' की कृपा से कुछ ठीक होगी। आज 'आपको' पत्र डाल रही थी कि दद्दा आ गये। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई यह हाल है कि ऐसी मन्द–मन्द बेहोशी सी रहती है कि जैसे फूल की महक धीमी–धीमी उड़ती है। जब कोई बेहोशी कहता है, तो इसकी बड़ी धीमी–धीमी

क़ैफ़ियत दिखलाई पड़ती है और तो बेहोशी से भी बेहोश हो चुकी हूँ। अब तो कुछ यह हाल है कि पहले जैसे मुझे मालूम पड़ता था कि फैज़ आ रहा है और 'मालिक' से मेरा हर समय सम्बन्ध सा जुड़ा रहता था, परन्तु अब यह सब कुछ नहीं महसूस होता है, परन्तु अब कुछ यह है कि भीतर ही भीतर न जाने कैसे स्वयं ही कुछ चीज़ पैदा हो रही है या भीतर न जाने कैसे आती रहती है।

"पूज्य श्री बाबूजी" अब कुछ यह हाल है कि जब मुझे 'मालिक' की याद आती है, तो न जाने क्या होता है कि अक्सर कलेजा पकड़ कर हाय करके रह जाती हूँ। अब अक्सर यही हाल रहता है। कुछ यह हो गया है कि जब "आप" आते हैं तो 'आपके' आने की लगन सी रहती है, परन्तु जब 'आप' चले जाते हैं तब भी मेरा कलेजा हर समय खिंचता रहता है और तबियत और भी दीन हो जाती है। कभी-कभी उस हाय वाली चीज़ को शान्ति से फुसलाने की कोशिश करती हूँ तो आनन्द नहीं आता, बल्कि बेचैनी बढ़ती है। अब तो यह हाल है कि जब शान्ति काबू की हुई तो तबियत शान्ति को लाँघ कर हाय में घुस गई है और ऐसी कि फिर कर शान्ति को देखना भी नहीं चाहती है।

मेरे पूज्य 'श्री बाबू जी' कुछ ऐसा है कि भीतर जहाँ भी देखती हूँ, सब कुछ बिल्कुल स्थिर सा लगता है। हर चीज़ अपनी जगह पर स्थिर पाती हूँ, बस तबियत ही एक ऐसी है कि जिसे काबू से रात दिन हर समय बाहर पाती हूँ और यही चीज़ मेरे आनन्द की है।

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या -252

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, — लखीमपुर
सादर प्रणाम। — 9.10.52

आशा है मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। ताऊजी आज कानपुर गये हैं, जीजा जी कारखाने के मामले में सलाह लेने को बुला गये थे। इतवार को लौट आयेंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब मेरा तो कुछ यह हाल है कि अपने जी की दशा, चाहे वह रोता है, चाहे हाय-हाय करता है, किसी से एक शब्द भी कहने की तबियत नहीं चाहती और कहूँ भी तो क्या, बस जो कुछ है, जी की जी में ही घुलने की तबियत रहती है। मैं तो जैसी कुछ भी हूँ, अपने 'मालिक' के सामने रहती हूँ। बीच रीढ़ के बाईं ओर बिल्कुल लगे-लगे हर

समय अधिक गुदगुदी तथा फड़कन रहती है। कभी मालूम पड़ता है कि कुछ रेंग रहा है। भाई मेरा तो यह हाल है कि शरीर का तो ज़र्रा-ज़र्रा मैं जैसे भूल चुकी हूँ। यह शरीर क्या है, कैसा है, मैं बिल्कुल भूल चुकी हूँ। एक क्षण को भी महसूस नहीं हो पाता। ऐसा लगता है कि अब तो अन्तर ही मेरा शरीर है, वहीं से मेरी उन्नति होती है, और मेरा ख़्याल भी अन्तर में ही घुस कर खोया सा रहता है, और यही दशा हर समय सामने रहती है, और साथ ही साथ कुछ यह भी है कि 'मालिक' भी ध्यान में कतई नहीं आ पाता, लेकिन 'उसके' ध्यान के ख़्याल से भी एक क्षण को मैं अलग नहीं पाती हूँ। पीठ में रीढ़ के बिल्कुल लगे में नीचे से सिर के पिछले भाग तक फड़कन तथा रेंगन या गुदगुदी तो हर समय रहती ही है, अब तो अक्सर ऐसा लगता है कि पूरी नस या नाड़ी सीधी खड़ी सी या तनी हुई सी लगती है।

आज पूज्य मास्टर साहब जी से 'आपका' ज्ञान वाला मज़मून सुना। 'आपने' ग़लती पूछी है, परन्तु मैं तो यह कहती हूँ कि एक-एक लफ्ज़ ऐसा चुना हुआ है और Matter (विषय-वस्तु) तो इतना सिलसिलेवार है और कहीं रत्ती भर भी ग़लती की गुंजाइश भी नहीं है। पूज्य 'श्री बाबूजी' लोगों को, हंसी उड़ाना तो किनारे है, यह चीज़ ऐसी है जो ज्ञानियों की आँखों से पर्दा हटायेगी और उन्हें निर्मल सही मार्ग दिखलावेगी। मास्टर साहब जी ने भी कहा है और मेरी भी यही प्रार्थना है, उसका अलग Pamphlet (पैम्फलेट) बना दिया जावे। मैंने एक-एक लफ्ज़ ग़ौर से सुनकर ही 'आपको' कुछ लिखा है। जब मास्टर साहब दीवाली में वहाँ पहुँचेंगे, तब 'आप' मज़मून पूरा करवायेंगे और तब मैं इसे हिन्दी में कर लूंगी।

पूज्य 'श्री बाबूजी' आजकल तो मैं ऐसे मैदान में हूँ, जो पहले से कहीं Simple है और ऐसा लगता है कि सपाट दशा चल रही है। दशा को शुद्ध तो नहीं कह सकती, क्योंकि शुद्धता तो मुझे कहीं भारी चीज़ दिखलाई पड़ती है। हाँ, सादगी कह सकती हूँ। मुझे तो ऐसा लगता है कि 'बूंद में सिन्धु सोखता चला जाता है।' अब तो यह हाल है कि 'मालिक' की याद आते ही कलेजा पकड़कर बैठी रहती हूँ। अब तो यह दशा है कि :-

"काह करूं, कछु बस नहिं मेरो, पंख नहीं उड़ जाऊं।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, बार-बार बलि जाऊं।।"

बस बार-बार 'मालिक' पर बलि-बलि जाती हूँ और मेरे बस का कुछ नहीं रह गया है। मेरी नज़र, मेरा हृदय, तो बावला हो गया है। जब नशा ज़रा उतरता है, तो बावलापन ही नज़र आता है। नशे में क्या हाल रहता है, यह नशा जाने, मुझे जो मालूम

होता है सो लिखे दिया। 'मालिक' किसी को कुछ देता हो, मुझे तो एक आह, एक दर्द और बावलापन ही दिया है। यही 'उसकी' Gift (उपहार) है और इस Gift (उपहार) के आधार पर मेरा जीवन ही चल रहा है, और मुझे कुछ महसूस नहीं होता। खैर, 'मालिक' की कृपा से जो हाल है, सो लिख दिया। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इति –

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना

पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या –253

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 16.10.52

कृपा–पत्र 'आपका' पूज्य मास्टर साहब जी के लिए आया था। उसमें 'आपकी' कमज़ोरी का हाल पढ़कर कुछ चिन्ता बढ़ गई। खैर, ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ। 'आपकी' तन्दुरूस्ती ठीक रहे। इतनी कमज़ोरी देखकर कभी–कभी बड़ी परेशानी सी हो जाती है, परन्तु इसमें क्या हो, यह कुछ समझ में नहीं आता है। अक्सर इसीलिये 'आपको' किसी भी छुट्टी में बुलाने में संकोच हो जाता है। ताऊजी को ज़ुकाम हो गया है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ यह हाल है कि भीतर तथा बाहर जो एक सी हालत रहती थी, तो अब यह है कि एक सी दशा में यदि कोई चीज़ मान लीजिये कि यदि गुस्सा ही अधिक देर रहे तो बरदाश्त नहीं हो सकती, जब तक कि उसी दशा पर हालत नहीं आ जाती, इसीलिए 'मालिक' की कृपा से कुछ आ भी जावे तो वह रह नहीं सकती, उसके लिए कहीं जगह ही नहीं रह गई, परन्तु भाई, तबियत तो बेकाबू इससे भी जाने कितनी दूर न जाने कहाँ रहती है। वह तो मैदान ही और है, जहाँ पर कि इस दशा की भी खबर नहीं है, और खबर कहाँ से हो जब वहाँ इसकी गुज़र ही नहीं है। मेरा यह तो हाल है कि मैं चाहे अच्छी खासी बैठी हूँ, चाहे तमाम औरतों के बीच में बैठी हूँ, तो यदि सिनेमा के गाने में भी कोई दीवाना, फ़कीर या ख़्याल ऐसे लफ्ज आ जाते हैं, तो मेरा मन बरबस यही चाहता है कि भीतर भाग कर कलेजा पकड़कर तड़फड़ाने लगूं, परन्तु आँसू मेरे पास भी कभी नहीं फटकते। मेरा मन वहाँ से बिल्कुल उचाट हो जाता है। मेरा मन यही चाहता है कि मैं उसी दुनिया में उड़ जाऊं जहाँ पर यह मन हैरान व परेशान फिरता है। मुझे अब कुछ नहीं सुहाता है। कोई दशा तक मुझे अच्छी नहीं लगती है। भाई, मेरा तो यह हाल है कि दुनिया मुझे दिखलाई नहीं पड़ती, महसूस नहीं होती। यदि मेरे लिए

दुनिया का भी कहीं यही हाल हो जाता। खैर, यह 'उसकी' मर्ज़ी। पूज्य 'श्री बाबूजी' कुछ यह हाल है कि शरीर भी मुझे अपना या किसी का महसूस तक नहीं होता। मेरा जन्म तो दूसरी अनोखी दुनिया में ही हो चुका है, जहाँ पर कि अपने 'मालिक' की कृपा की लाइट (प्रकाश) से मैं पल रही हूँ और आगे जाने का मार्ग पाती हूँ। मुझे तो ऐसा लगता है कि मैं तो अपने 'मालिक' के Mind (ध्यान) में ही रहती हूँ। जहाँ पर नितान्त 'उसकी' ही कृपा, 'उसका' ही प्रकाश है। अब कुछ यह हो गया है, चाहे बिल्कुल अन्धेरी रात हो, चाहे कुछ हो, मुझे डर नहीं लगता, क्यों कि मैं तो अब एक क्षण को भी अकेली नहीं हूँ, एक वही दीखता है, फिर डर कैसे लगे।

परन्तु कल से न जाने क्या हो गया है कि नशे की औंघ में ही अधिक रहती हूँ, नशे की ही पिनक अधिक रहती है। उपरोक्त दशा कम महसूस होती है। परन्तु जब चाहती हूँ, उभर आती है। कुछ यह हाल हो गया है, कि मुझे न यह ध्यान रहता है कि मैं नहायी हूँ या नहीं, खाना खाया है या नहीं, मैं तो न जाने किस धुन में, न जाने कौन से नशे में रहती हूँ। यहाँ तक ऊंघ रहती है कि यदि पाखाने उसी समय हो आऊं तो कुछ नहीं, परन्तु यदि देर हो जावे तो मुझे फिर सुधि आती है, फिर भूल जाती हूँ। जब सुधि आती है तो, ऐसा लगता है कि शायद जैसे स्वप्न में पाखाने की सुधि आवे। कृपया माताजी का लखनऊ का पता लिख दीजियेगा। अम्मा 'आपको' आशीर्वाद कहती हैं। तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। पूज्य 'श्री बाबू जी' मेरा जी इसीलिए तड़फड़ाता है कि मैं सच में 'मालिक' से अपने जी भर के प्रेम नहीं कर पाती हूँ, क्या करूँ? यदि मैं हर समय चिल्लाती फिरूँ, तो भी सब्र नहीं होगा, क्या करूँ? इति-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-254

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 1.11.52

आशा है आज 'आप' शाहजहाँपुर पहुँच गये होंगे। हम सब की तक़दीर ज़रूर ही बहुत अच्छी है कि 'आप' इतनी मेहरबानी करते हैं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरा तो अब यह हाल है कि मुझे तो 'उसकी' याद से कुछ सरोकार नहीं रह गया है। Constant Remembrance (सतत-स्मरण) तक की इतनी फिक्र नहीं रह गई है। अब तो याद आये या न आये, मुझे तो बस 'मालिक' से काम और और कुछ परवाह

नहीं रह गई है। पूजा हो या न हो, 'उसकी' मर्ज़ी हो सो हो। कुछ यह भी महसूस होता है कि दशा याद में घुलकर न जाने क्या हो गया है। पूज्य 'श्री बाबूजी' इधर दो दिन से न जाने क्या हो गया, न जाने क्यों हालत बिखरी-बिखरी सी मालूम पड़ती है। तितर,बितर सी हो गई है। परन्तु आज से 'मालिक' की कृपा से कुछ साफ़ हो गई सी लगती है या भाई आज से हालत कुछ बदल सी गई लगती है। कभी तो याद इस तरह की मालूम पड़ती है, जैसे तीर सा हृदय में चुभ गया हो। भाई, ऐसी हालत लगती है कि :-

"सतगुरु साँचा सूरमा, नख सिख मारा पूरि।
बाहर घाव न दीसई, भीतर चकनाचूर।।"

इधर दो-तीन दिन से हालत बड़ी निर्जन सी मालूम पड़ती है, यानी जैसे सूखा सा पड़ गया हो या पाला सा मार गया हो। कृपया देख लीजियेगा कि अहंता तो नहीं बढ़ गई (यद्यपि ऐसा हो नहीं सकता) न जाने क्यों बहुत समय से नींद बहुत उचटी सी हो गई है। अब तो यह हाल है कि एक मिनट भी उठकर बैठूं तो आँखें ही क्या कुल शरीर बिल्कुल ऐसा हो जाता है जैसे न तो सोई होऊं और न नींद का नाम निशान तक रह जाता है। चाहे पूजा भी न करूं तो भी। कभी-कभी तो पेशाब करने गई कि तब तक ही नींद बिल्कुल चैतन्य हो जाती है। खैर, मुझे इसकी कुछ परेशानी नहीं होती। नींद बहुत कम ही है, जैसे ही नींद से आँख खुली नहीं कि नींद गायब हो जाती है, परन्तु 'उसकी' कृपा से परेशानी कुछ नहीं है। कृपया देख लीजियेगा कि कहीं हालत में बहुत मद्धिमपना तो नहीं आ गया है। अम्मा कहती हैं कि अपनी तन्दुरूस्ती का कुछ ख़्याल तो अवश्य करियेगा तथा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। आज या कल जब पूज्य मास्टर साहब जी वगैरह लौटेंगे तो जंगल में के समाचार मालूम होंगे। इति-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-255

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, | लखीमपुर
सादर प्रणाम। | 9.11.52

आशा है 'आप' अच्छी तरह से होंगे। 'मालिक' की कृपा से मेरी जो कुछ भी आत्मिक दशा है सो लिख रही हूँ।

अब तो ऐसा लगता है कि ठहरी हुई दशा ख़त्म सी हो गई। भाई, अब तो कुछ ऐसी हालत लगती है, या कुछ ऐसा दिखलाई पड़ता है कि 'मालिक' के एक बन्दे का

गम 'ईश्वर' के गम से कहीं परे तक पहुँच जाता है, वह 'ईश्वर' से भी परे तक हो जाता है, जहाँ 'ईश्वर' के बस के बाहर बात हो जाती है। कुछ ऐसा लगता है कि जो चाहे, उससे (ईश्वर से) चाहे जो काम ले ले। पूज्य 'श्री बाबूजी' वह Force (शक्ति) तो स्वयं जैसा चाहिये Work (कार्य) करती रहती है। यह सब तो 'आप' जाने कि क्या है, 'मालिक' की कृपा से कुछ हालत ऐसी ही हो गई है कि वास्तव में तो किसी की भी कुछ कीमत नहीं है, बस मेरा तो 'मालिक' ही है।

अब तो भाई, कुछ यह हाल है कि 'मालिक' मेरे अन्दर खो गया है, हिरा गया है और मैं केवल 'उसी' की खोज में लौ लगाये डुबकी पर डुबकी लेती जाती हूँ। 'उससे' बिल्कुल पास और कभी न जाने क्यों कुछ दूरी महसूस करती हूँ। इसीलिये भाई, मुझे अब बिल्कुल फुर्सत ही नहीं रह गई है। अन्तर में ही गोते लगाती रहती हूँ, मुझे बाहर के लिये न तो समय ही रह गया है और न उसका ख्याल ही आता है। बाहर क्या बला है। सच तो यह है कि मेरे लिये तो अन्तर ही अन्तर रह गया है। नहीं, नहीं, बल्कि अब तो अन्तर भी समाप्त हो गया है या वह मैदान बन गया है और यह देखती हूँ कि चाहे मैं 'उसके' लिये दौड़ रही हूँ, परन्तु निगाह मेरी 'उससे' एक क्षण को भी लौटना तो दूर रहा, कभी पलक भी नहीं मारती। कुछ यह भी हाल है कि 'उसे' खोजते–खोजते मैं खुद भी हिरा जाती हूँ, फिर न जाने क्या हो जाता है। परन्तु बाज़ी लग चुकी है और जुटकर फिर हार मानना या कमज़ोरी मैंने स्वप्न में भी नहीं देखी है और केवल 'मालिक' की ही कृपा से यह सब कुछ है। मेरी समझ से हार कोई चीज़ ही नहीं होती, वरन् अपनी कमज़ोरी को इस नाम से पुकार लिया गया है। पूज्य 'श्री बाबूजी' अब तो ऐसा नरम, ऐसा विशुद्ध मैदान है, कि कुछ कह नहीं सकती हूँ।

आज पूज्य मास्टर साहब जी से 'आपका' कृपा–पत्र सुना। उसमें 'आपने' बाद में जो थोड़ी सी अपनी हालत लिखी, उसे सुनकर तो वास्तव में जी बहुत ही खुश हुआ। वास्तव में 'मालिक' की कृपा से अपने 'मालिक' के लिये यही बात मुझे दिखलाई पड़ती है, महसूस होती है या भाई यह भी है कि मुझे तो 'वहीं' दिखलाई पड़ता है।

अम्मा कहती हैं कि ताऊजी कल से व्रत तो कर रहे हैं, अब 'मालिक' जाने, जो मर्ज़ी हो सब वही जानें।

'आपने' जो मेरी दशा ठहरी हुई लिखी, सो मैं महसूस कर रही थी, परन्तु मेरे वश के बाहर की मालूम पड़ती थी, परन्तु मैं तो फिर 'श्री समर्थ जी' की आभारी हूँ कि 'जिन्होंने' हमें ऐसी 'निधि' दी, अब मैं भी, 'मालिक' की सदैव ऐसी ही कृपा रहे और बुज़ुर्ग का आशीर्वाद तो 'इनकी' (यानी 'उनकी' निधि की) होकर ही रहूँगी। पूज्य 'श्री बाबूजी' परिश्रम सिखाने वाले को ही होता है और बिल्कुल तो वही जान सकता है,

मगर 'उसके' कारण सीखने वाले को वास्तविक–जीवन का मज़ा मिल जाता है। 'आपकी' कृपा का बहुत–बहुत धन्यवाद है, और क्या कहूँ। गीता वाला मज़मून बहुत ही उच्च है, परन्तु वह 'आप' सी हस्ती के कहने योग्य है। मुझे अब न जाने क्यों कभी–कभी कुछ अपने में भारीपन सा लगता है, परन्तु तकलीफ़दे नहीं मालूम पड़ता, न जाने यह क्या बात है और यह पहले सा भारीपन भी नहीं लगता है। अम्मा आपको शुभाशीर्वाद तथा केसर प्रणाम कहती हैं। इतिः–

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना

पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–256

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 11.11.52

तुम्हारे सब खत मिल गये। तुम्हारे हालात पर ग़ौर कर लिया। ईश्वर के रास्ते में जो बातें भी आती हैं वह सब हमारे भले के लिये आती हैं। अगर रुकावटें भी हैं, तो इसके मानी यह है कि 'मालिक' को उनको दूर करने के लिये हमारे ख़्याल में रहना पड़ेगा तो फिर इससे ज़्यादा और हमें क्या चाहिये कि 'मालिक' का ख़्याल हमारी तरफ़ रूजू हो। सब पूजा और ध्यान का यही मतलब होता है कि 'मालिक' का ध्यान किसी तरीके से हमपर फिरने लगे। मगर 'मालिक' की निगाह तभी फिरती है, जब उसकी खोज में गड्ढा या ऊंची नीची जगह आ जाती है। सूरदास जी चूंकि अन्धे थे, बेचारे कृष्ण के प्रेम में लकड़ी से कुंआ न टटोल सके और उसमें गिर गये। अन्त में श्री कृष्ण जी ने अपने हाथों उन्हें निकाला। कितनी खुश नसीबी थी कि कृष्ण जी के हाथ उनके जिस्म पर पड़े, गोया कि कुंए में गिरने से उनकी पवित्रता और बढ़ गई। खत पहुँचते–पहुँचते ईश्वर ने चाहा तो तुम्हारी हालत बदलने लगेगी और कुछ फ़र्क तो अभी 10.55 p.m. पर पड़ गया होगा। तुम अपनी सैरगाह मुकाम 'H' पर पाओगी। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिन्तक

रामचन्द्र

पत्र संख्या-257

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 14.11.52

कृपा-पत्र 'आपका' कल मिला पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। मैं तो कृपा की बाट ही जोह रही थी और कोशिश करती हुई 'मालिक' की ही होने में बाबरी सी होने की कोशिश कर रही हूँ आगे सब 'मालिक' जाने। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ इधर दो दिन से दशा बदली हुई लगती है। कुछ ऐसी दशा है कि सब दिल, दिमाग तथा इन्द्रियों वगैरह में कुछ inactive (प्रकर्मण्यता) पना सा लगता है या सब गुमसुम से हो गये हैं, परन्तु उदासी वाली दशा की तरह नहीं है। कुछ ऐसा है कि सब तरफ़ की, हर प्रकार की रुचि, दिल, दिमाग से निकल गई है। परन्तु अब उदासी वाली दशा भी feel (अनुभव) नहीं होती है। न जाने क्यों कसक भी इधर तेज़ी नहीं पकड़ पाती है और वह चीज़ भी महसूस नहीं होती कि जो मैंने पहले लिखा था कि 'मालिक' मुझमें खो गया है और मैं 'उसकी' खोज में दौड़ी-दौड़ी फिर रही हूँ। इधर कुछ दौड़ भी शायद कम पड़ गयी है, परन्तु यह हो गया है कि 'वह' मेरा अपना और अधिक हो गया या मैं 'उसमें' और घुल गई हूँ। पूज्य 'श्री बाबूजी' कुछ यह भी है कि मैं 'उसके' दर्शन के बिना एक क्षण भी रह नहीं सकती। अब तो भाई यह हाल हो गया है कि हर जगह हर समय मैं दर्शन में ही रहती हूँ, क्योंकि एकमात्र 'वही' दर्शनीय है, 'वही' वंदनीय है, इसलिये अब यह हाल है कि पग-पग तीर्थ है, हर काम सेवा है। मगर अब न तीर्थ का होश है और न सेवा का होश है और न जाने क्यों अब न वंदना का ही होश है और न कोई आवश्यकता ही महसूस होती है। अब तो 'वह' मेरे जिगर से चिपटा रहता है या मैं 'उसके', नहीं-नहीं बस ऐसा लगता है कि मैं 'उसमें' घुसती या समाती चली जा रही हूँ। पूज्य 'श्री बाबूजी' अब तो कसक के उफान में शुद्धता नहीं मालूम पड़ती, अब तो घुलने में ही मज़ा है। भाई यह सब 'मालिक' जाने, मुझे तो यह हाल न कहने को तबियत चाहती है, न लिखने को। अक्सर न जाने क्यों ख़याल दिन-रात दिमाग़ में इतने अधिक आते हैं कि दिमाग़ भी थक सा जाता है, परन्तु 'मालिक' की कृपा से मन इससे बहुत दूर रहता है। दशा मेरी न जाने कैसी है, अब 'आप' ही जानें।

अम्मा 'आप' को शुभाशीर्वाद कहती हैं। इति -

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-258

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 20.11.52

आशा है मेरा पत्र पहुँचा होगा। 'आपकी' तबियत कैसी रहती है। अम्मा कहती हैं कि हो सके तो कुछ खाने-पीने में ताकत की चीज़ कोई न कोई ज़रूर रखियेगा। 'मालिक' की कृपा से मेरी जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

जैसे पहले मैंने लिखा था कि "हर जगह, हर समय मैं दर्शन में ही रहती हूँ," वह यह नहीं कि मैं 'उसे' ही देखती रहती हूँ, वरन् एक ऐसी ही अत्यन्त हल्की-फुल्की सी दशा मुझमें तथा सब जगह सब ओर फैली दीखती है। अब तो मुझे न जाने क्या हो गया है कि अब तो न बुन्द है, न सिन्धु है। यह सब कुछ न जाने क्या हो गया। अब तो न मैदान है, न बिन्दु और न सिन्धु ही है। अब तो कुछ धुंधला सा कोहरा सा छाये हुए के सदृश ही सब ओर है। अब 'मालिक' जाने क्या है। मेरा तो 'मालिक' ही है और 'वह' बड़ा ही अच्छा है, क्योंकि भाई, वह भी तो 'वही' है, जो :-

"द्रुपद-सुता निर्बल भई ता दिन, आये तजि निज धाम।
दुःशासन की भुजा थकित भई, वसन रूप भये श्याम।।"

बल्कि आध्यात्मिकता के लिये, मेरे लिये तो उससे भी अच्छा समय है, परन्तु पूज्य 'श्री बाबूजी' मुझमें वह पुकार पैदा नहीं होती। यह दिल (प्रेम में) फटकर टुकड़े-टुकड़े नहीं हो जाता है। इधर कुछ यह हो गया है कि अपनी रुचि से खुद मैं कभी-कभी बिल्कुल धोखा खा जाती हूँ कि इस ओर (मालिक में) है या नहीं। मैं कहीं दुनिया की ओर तो अधिक नहीं रहती, मुझे आश्चर्य होता है। परन्तु बस जब सत्संग होता है, तब ज़रूर कुछ यह मालूम होता है कि 'मालिक' की कृपा से कुछ थोड़ी सी रुचि 'उसकी' ओर मालूम पड़ती है, फिर वैसी ही हो जाती हूँ। भाई आजकल न जाने क्यों हालत को देखते हुए ऐसा लगता है कि 'मालिक' से मैं दूर सी हूँ परन्तु कोई कारण समझ में नहीं आता है। पूज्य 'श्री बाबूजी' मेरी सच्ची हालत आजकल यही है कि मुझमें श्रद्धा, विश्वास, भक्ति, प्रेम कुछ भी नहीं रह गया है। मैं शायद दुनिया की ओर होऊं, मैं सच कहती हूँ कि मुझमें यह बस कुछ नहीं है, परन्तु निगाह ऐसी बावरी है कि फिर भी मैं तो निर्बल, अनजान हूँ, परन्तु वह 'उसी' ओर जमी हुई है। अब 'मालिक' ही ग़रीब को सम्भालेगा। मालूम पड़ता है कि अभी Point (पॉइंट) की सैर शुरू नहीं हुई है। पूज्य 'श्री बाबूजी' जब हालत रुकी हुई थी तो ज़ोर मारने पर भी कुछ देर को निगाह ऊपर पहुँचती थी, परन्तु फिर जहाँ की तहाँ जैसी की तैसी हो जाती थी, परन्तु 'मालिक' ने कृपा

करके एक निगाह में उठा दिया। अब 'मालिक' ही जाने। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। इतिः–

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–259

प्रिय बेटी कस्तूरी
खुश रहो।

शाहजहाँपुर
23.11.52

तुम्हारे सब पत्र मिल गये। मैं इन दिनों एक दो कामों में बहुत अधिक फंसा रहा। इस कारणवश मैं तुमको अधिक समय न दे सका। अभी आठ दिन और काम में लगा रहूँगा। ईश्वर ने चाहा तो पत्र पहुँचते–पहुँचते तुम्हारी सैर Point "H" (पॉइंट एच) की प्रारम्भ हो जावेगी। तुमने लिखा है, "अब न मैदान है, न बिन्दु, न सिन्धु," यह तो बहुत अच्छी हालत है। इसका अर्थ यह है कि बिन्दु न सिन्धु, सिन्धु व मैदान लय–अवस्था के असर से अपना–अपना Limitation (सीमा) तुम्हारे ख़्याल पर अन्दाज़ होने नहीं देते, अर्थात् तुम्हारे ख़्याल से यह बातें सब निकल चुकी हैं यानी तुम्हारे ख़्याल में उनका बन्धन नहीं रहा और उससे छुटकारा पा लिया या ऐसा कहो कि तुम्हारा ख़्याल इन चीजों के अब न होने के कारण से और भी हल्का हो गया है। विशेष पत्रोत्तर यह है कि अभ्यासी की हालत यह होनी चाहिये कि "सावन सूखा न भादों हरा"। यह बबूल के वृक्ष की तारीफ़ है जो सदैव एक समान रहता है। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

अम्मा ने जो अच्छा आहार करने के लिये लिखा है, यह ठीक है, परन्तु इस समय हालत यह हो रही है "तेते पाँव पसारिये, जेती लम्बी बाँवि"। परन्तु ख़ैर, जब ईश्वर देगा, तब मैं ख़्याल रखूंगा। मैं खुश तो इस बात पर होऊं कि सबको अच्छा भोजन प्राप्त हो। न मालूम यह समय कब आये। आना तो चाहिये, और दूध, घी की नहरें बहनी चाहिये, कुछ देर है।

पत्र-संख्या-260

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 23.11.52

कृपा-पत्र 'आपका' आज सुना-सुनकर तबियत 'मालिक' का प्रेम पाने को तड़फड़ा उठी, परन्तु 'श्री बाबूजी', क्या मैं कभी 'उसमें' (मालिक में) सराबोर हो सकूंगी। क्या मैं जितना चाहिये या जितना मुमकिन हो सकता है उतना उस पर मर मिटूंगी। सच तो यह है कि प्रेम से अधिक मैं तो बस 'उस' पर मर मिटना चाहती हूँ। और 'मालिक' की कृपा से इस ग़रीब को दृढ़ विश्वास है कि मैं अवश्य सफल होऊंगी। 'आपने' जो यह लिखा है कि अभ्यासी मुझसे चाहे जैसे करिश्में करवा सकता है। मैं भी कहती हूँ कि प्रतिक्षण हो सकता है और हो रहा है। 'आपने' जो मेरे व पूज्य मास्टर साहब जी के लिये लिखा है, वह बहुत ठीक नुस्खा है, परन्तु मैं कहूँ चाहे कुछ, कि भाई मेरी तारीफ़ न होवे, परन्तु पूज्य 'श्री बाबूजी' जब दशा तो यह है कि 'हाथ को हाथ नहीं सूझता है, 'यानी जब तारीफ़, तारीफ़ मालूम पड़ती है, नहीं भाई, जब चिकने घड़े पर ठहराव की जगह ही न हो तो चाहे कोई कुछ कहे और फिर "करूँ तारीफ़ वंशी की, या वंशीधर (यानी कृष्ण जी) बजइया की"। ख़ैर 'मालिक' की कृपा से अब जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्यों Self Surrender (आत्म समर्पण) मुझे भूल गया है। कैसे करूँ याद न आती। मुझे तो 'उसके' अतिरिक्त कुछ अच्छा नहीं लगता है। मेरा तो कुछ यह हाल है कि यदि अपनी कुछ कमी या दोष महसूस भी हो तो उन्हें दूर करने की कोशिश करना तो दूर रहा, उनका सोचना तक दूभर मालूम पड़ने लगता है। तबियत छटपटाने लगती है, क्योंकि उसे तो केवल 'मालिक' से ही काम है। यही नहीं बल्कि कोई किताब या अखबार हाथ में लेती हूँ, परन्तु नतीजा यही होता है कि अक्षर के बजाय न जाने कहाँ देखती रहती हूँ, न जाने क्या सोचती रहती हूँ। मेरा तो यह हाल है कि न मुझे किसी में तारीफ़ और न किसी में बुराई ही मालूम पड़ती है। परन्तु फिर भी अभी ऐसा लगता है कि दशा पूरी तौर से खुली नहीं है। क्योंकि चाल में तेज़ी नहीं आई है। मेरी तो यह दशा मालूम पड़ती है कि ऐसी ज़ाहिल, कि जिसने कभी न आत्मा को जाना, न परमात्मा को न इखलाक, न ईश्वर को न कुछ पूजा या श्रद्धा, विश्वास तथा प्रेम, जिसके पास तक से भी होकर कभी न फटका हो। अब तो पूज्य 'श्री बाबूजी' यह जाहिली, यह नहुमारी मेरी हालत है, परन्तु तिस पर भी तुर्रा यह कि मैं 'मालिक' को पूर्णरीत्या से अवश्य ही प्राप्त करूँगी। कुछ यह है कि मैं अधिकतर अपने को एक बालक की ही तरह

महसूस करती हूँ। पूज्य 'श्री बाबूजी' तबियत यह न जाने कैसी है कि यदि किसी को 'मालिक' से मुहब्बत अधिक देखती हूँ तो चाहे वह कोई हो, ऐसा पर्दा उठता है कि, फिर तो यही मालूम पड़ता है कि जो मैं हूँ, जैसी मैं हूँ, बिल्कुल वही वह है। न जाने क्यों 'उसकी' याद अक्सर अपनी तरह आती है। सचमुच मुझे तो ऐसा मालूम पड़ता है कि कहीं कुछ पर्दा–वर्दा है ही नहीं, सब एक से हैं, एक ही तरह के हैं। अब तो यह हाल है कि :–

"दिल के आईने में है तस्वीरे यार, जब जरा गर्दन झुकाई, देख ली" अब गर्दन झुकाने की भी आवश्यकता नहीं रह जाती। फिर भी मेरी दशा खराब चल रही है कि जैसा मैं ऊपर लिख चुकी हूँ कि जाहिली की दशा रह गई है, अब आप ही कृपया सम्भालिये। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। 'आपने' तो मेरी दशा देखी ही होगी, कृपया बतलाइये मैं क्या करूँ? इतिः–

आपकी सदैव ही कृपा–भिखारिणी
कस्तूरी

पत्र–संख्या–261

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 26.11.52

आशा है मेरा तथा केसर का पत्र पहुँचा होगा। यहाँ सब सकुशल हैं, आशा है 'आप' भी स्वस्थ होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी मेरी आत्मिक दशा है सो लिख रही हूँ।

पहले तो कल रात में एक स्वप्न देखा था सो लिख रही हूँ, कि :– मोटर पर बड़ी तेज़ी से घोर जंगलों में होती हुई गई हूँ। वहाँ शायद मास्टर साहब जी का घर है, वहाँ से 'आप' मास्टर साहब तथा मैं कहीं मोटर पर फिर गये हैं, परन्तु मास्टर साहब जी न जाने कहाँ गये। हाँ उस घोर जंगल में भी प्रकाश सूर्य के सदृश ही है। फिर मैंने देखा, मैं अकेली हूँ सामने कपड़े से लिपटा एक छोटा सा आकार है, मैंने उसे उठा लिया तो शक्ल उसकी 'आपकी' तरह हो गई और वह सचेत होने लगा, उसमें जीवन आने लगा और होते–होते एक–दो सैकेण्ड में वह 'आपका' छोटा सा रूप हो गया और फिर प्रेम से मेरे सिर पर हाथ फेरने लगे, फिर हृदय पर। फिर देखा कि सब ओर जल ही जल भरा हुआ है, और 'आपके' पास मैं खड़ी हूँ। 'आपने' कहा कि तुम कहती थी कि शरीर कुछ ठीक हो जाये तो मैं बड़ी जल्दी उन्नति करने लगूं, अब इस पानी में बिल्कुल मिल जाओ? मैंने कहा बहुत अच्छा और 'मालिक' की कृपा से न जाने कैसे पानी के पास

खड़े होकर मैं चारों ओर के उस विस्तृत जल में बिल्कुल घुल गई। फिर मुझे खूब याद है कि मैंने यह जानने के लिए कि पूरी तौर से समस्त में घुली या नहीं, तो देखा कि सचमुच समस्त जल के कण–कण में मैं मौजूद थी। भाई अब तो यह हाल है कि ऐसा लगता है कि 'उसके' ख़्याल में सदैव मेरा ख़्याल समाया रहता है, क्योंकि जब मुझे ख़्याल आता है, तो उसके (यानी मालिक के) ख़्याल में अपने को हरदम पाती हूँ, यानी 'उसकी' निगाह, 'उसका' ख़्याल अपनी ओर पाती हूँ। यानी वही या उसका ख़्याल ही मेरा घर हो गया है। और अब तो यह हाल है कि 'आपका' ख़्याल (या आप तो) हरदम, हर समय, हर जगह तथा समस्त ब्रह्माण्ड में फैला हुआ है, मौजूद है और ऐसा लगता है कि उसी में घुली हुई यदि दृष्टि जाती है तो सब ओर अपने को मौजूद पाती हूँ, अपनी यही दशा पाती हूँ। अब तो यह हाल है कि 'मालिक' का ख़्याल करती हूँ तो, उसमें अपने को मौजूद पाती हूँ।

न जाने क्या बात है कि हर समय, हर जगह मुझे अपने बजाय एक छाया सी, हल्की सी, सूक्ष्म सी, महसूस होती है और जब उसे गौर से देखती हूँ, तो शक्ल 'आपकी' ही पाती हूँ। मेरे 'श्री बाबूजी' मुझे तो ऐसा लगता है कि दिल का बाँध टूट गया है। सब तरफ़ मेरा ही दिल फैला हुआ है, कितना हल्का है कि कुछ कहना नहीं। सब जो कुछ होता है, उसी में होता है, नहीं तो कुल ब्रह्माण्ड उसी के अन्दर समाया हुआ है। स्वर्ग, नरक तथा तीनों लोक वगैरह इसी दिल के पसारे में समाया हुआ है। इतना ही नहीं, सब उसके अधीन हो गये हैं। ऐसा लगता है कि सारी अग्नि, पृथ्वी तथा पानी वगैरह सब इसी दिल के पसारे में समाये हुए हैं। सारी वायु, सब कुछ इसी दिल में देखती हूँ और इसी के अधीन हो गये हैं, परन्तु खुद मैं न जाने कहाँ चली गई हूँ, मेरा कहीं पता ही नहीं रह गया है, हाँ मेरा पता 'मालिक' के ख़्याल में जो मेरी ओर रहता है, उसमें लगता है। मेरा यह हाल है कि समस्त ब्रह्माण्ड, सारा विश्व, मेरे Heart (दिल) में है या सचराचर विश्व मेरा Heart (हृदय) है। सब मुझमें है और मैं सब में हूँ। परन्तु भाई इसके ऊपर या इससे परे मेरे 'मालिक' का विश्व और ही है, जहाँ हर समय वह मेरे साथ है और मैं 'उसके' ख़्याल में हूँ। मुझे कुछ यह दिखाई पड़ता है कि मेरे 'श्री बाबूजी' 'आप' दीन और दुनिया के 'मालिक' सबके लिए एक से हैं। यह सब कुछ 'उसका' ही बनाया हुआ है और ऐसा लगता है कि जड़, चेतन, सबसे 'आपको' अपने की ही तरह मुहब्बत है। परन्तु फिर भी न जाने क्यों मुझे कुछ ऐसा महसूस होता है कि फिर भी अपने को वह 'मालिक' नहीं .....सबसे छोटा समझता है। यह 'मालिक' की कृपा से अजीब दृश्य देख रही हूँ। अब कुछ यह होता है कि स्वप्न में भी अपनी कुछ सचेतन अवस्था सी ही पाती हूँ।

मेरे 'श्री बाबूजी' 'आपका' कृपा-पत्र अभी मिला-पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'आप' काम में फंसे होने के कारण मुझे अधिक समय न दे सके, यह 'आपने' लिखा है, परन्तु मैं तो यही कहूँगी कि 'आपका' समय मेरा है, मैं जहाँ तक हो सकेगा लेती ही रहूँगी, इस लिए 'आप' भले ही कहें, परन्तु मैं यह न कह सकूंगी, क्योंकि 'मालिक' की कृपा ने मुझे यह कहने का अवसर ही न दिया। 'आपने' जो अभ्यासी की दशा को बबूल के वृक्ष की तरह न सावन हरा, न भादों सूखा होने की लिखी है, 'मालिक' की कृपा से यह भी हो जावेगी। इसमें संशय नहीं। मैं देखती हूँ कि दुनिया के लिए 'मालिक' की कृपा से अधिकतर समय-समय पर यह दशा अवश्य महसूस करती हूँ, क्योंकि और अधिक महसूस करने को उतना ही समय चाहिए और आध्यात्मिकता के विषय में क्या लिखूं क्योंकि मुझे तो उसकी गरज़ नहीं है। भाई जिससे गरज़ है, बस है। 'मालिक' ने चाहा तो उपरोक्त दशा भी आ जायेगी, मैं क्या जानूं। हालत तो 'आपकी' कृपा से दो-तीन दिन हुए फिर ठीक आ गई है। पूज्य 'श्री बाबूजी' एक बात कभी-कभी दो-एक दिन को यह दशा हो जाती है कि मन अपने आप मुझे मालूम नहीं कि कुछ बातें सा करता है, परन्तु मैं तो यह सोच लेती हूँ कि यह आपसे बात कर रहा है, "अम्मा" आपको शुभाशीर्वाद कहती हैं और कहती है कि हमें यह मालूम होता तो फूलों जिज्जी का पता 'आपको' लिख देती।

अब तो कुछ ऐसी दशा है कि ऐसा लगता है कि आत्मिक दशाओं से भी मेरा सम्बन्ध टूट गया है, और गुण-अवगुणों से भी सम्बन्ध टूट गया है। बिल्कुल स्वतंत्र प्रतीत होती हूँ। इति -

आपकी सदैव ही कृपाकांक्षिणी,
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-262

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
खुश रहो। 30.11.52

तुम्हारा 23 नवम्बर का पत्र मिला। जब तक अहमियत मौजूद है, इन्सान अपनी तारीफ़ से प्रसन्न भी होता है और जब कोई उसको भला-बुरा कहता है, तब बुरा मालूम होता है। अहमियत का कोई ठीक नहीं-न मालूम यह कहाँ तक जाती है और शुद्ध अहमियत से तो बहुत दिनों में पीछा छूटता है और यही तारीफ़ शुद्ध माया और शुद्ध अहंकार की है। यह दोनों वस्तुएँ बहुत शक्ति रखती हैं और योगी यहीं से अधिकतर गिरता है। सर्व शक्तिमान ईश्वर अपनी दया करें।

एक बात मैं तुम्हें और बतलाता हूँ कि मान और अपमान इन दोनों से हमें कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये। अपमान तो बहुत शीघ्र छूट जाता है मगर भाई मान का तोड़ना सच में ईश्वराधीन ही है। जब ईश्वर की हमारे ऊपर पूर्ण कृपा होती है, तभी पीछा छूटता है, फिर भी जब तक शरीर उपस्थित है यह कुछ न कुछ अवश्य शेष रह जाता है। अब मैं अपनी कमज़ोरी भी लिखता हूँ – जब कोई मेरी प्रशंसा करता है, तब चित्त मेरा भी प्रसन्न हो जाता है, परन्तु यह बात अवश्य होती है कि प्रथम तो चित्त बहुत कम प्रसन्न होता है और होता भी है तो मुझे यह अनुभव नहीं होता कि किसकी प्रशंसा हो रही है, कौन प्रसन्न हो रहा है। तुमने जो पत्र में यह लिखा है कि "जितना मैं" 'मालिक' पर मर मिटना चाहती हूँ, उतना मैं मर- मिट नहीं पाती। इसके अर्थ यह है कि जैसे कोई व्यक्ति अपने तीर का निशान उस स्थान पर बना ले जहाँ पर कि तीर लगना है जब मर-मिटने का ख़्याल पूर्णरूप से उत्पन्न हो गया तो समझ लो कि मर-मिटना भी शुरू हो गया और तीर निशाने पर अवश्य पहुँचेगा।

तुमने जो लिखा है कि "Self surrender (आत्म समर्पण) मुझे भूल गया है," यही हालत ठीक Self surrender (आत्म समर्पण) की है। Self Surrender (आत्म समर्पण) और कुछ नहीं है, केवल यही है कि अपने आपको 'मालिक' के हाथ में दे देना है और 'उसकी' इच्छा में राजी हो जाना। जो तुमने जेहालत की हालत के विषय में लिखा है यह बहुत ऊंची हालत है और इसका अभी प्रारम्भ भी नहीं हुआ है। यह चीज़ अभी कोसों दूर है, परन्तु 'मालिक' की पूर्ण दया सबसे नज़दीक है और वह सब कुछ कर सकता है और भाई ज़ेहालत को पूछता ही कौन है। उसे तो सब लोग दूर-दूर रखना चाहते हैं। मेरी मिसाल सामने है कि पढ़े-लिखे मनुष्य सम्भव है बात करना भी अपने समय को व्यय करना है। एक बात तुम्हारे पत्र में यह अच्छी नहीं मालूम हुई कि हालत खराब चल रही है। हमारे यहाँ सब हालतें अच्छी ही हुआ करती हैं। अगर कोई खराब हालत अन्दाज़ में आती है तो वह अच्छी हालत खोलने के लिये कुंजी होती है। यह ख़्याल अच्छा है कि जब तुम किसी में 'मालिक' का प्रेम देखती हो उसे अपने ही सा प्रेम में पाती हो। मैं मिसाल हूँ। अव्वल तो मैं अपने आप में नहीं रहता हूँ, परन्तु खैर, जब उससे पृथक होकर निगाह जाती है तो मुझे यह मालूम होता है कि मुझसे कहीं अधिक आध्यात्मिक-विद्या में तरक्की किये हुए हैं। और इससे कहीं अधिक बढ़ जाऊं तो मुझे यह ज्ञात होता है कि इसी ने मुझे आध्यात्मिक-विद्या सिखाई है और मौजूदा हालत मेरी जो भी कुछ है सब इसी की दी हुई है। इसके माने यह निकलते हैं कि हर वस्तु का 'असल' एक ही है और सब वहीं से आये हैं। किसी ने लगाव अधिक रखा और कोई गाफ़िल हो गया।

प्रिय बेटी, मैं तुम्हारे प्रथम पत्र का उत्तर दे चुका था कि 26 नवम्बर का पत्र मिला, तुमने जो स्वप्न देखा है, उसकी मैं तुमको बधाई देता हूँ। तुमने जो जल देखा है, वह Realization (साक्षात्कार) का दरिया था। अब तुम उसमें समा चुकी हो अर्थात् Reality (असलियत) प्रारम्भ हो गई है और सच पूछो तो मेरा काम ख़त्म हो गया। अब आगे बढ़ो और देखो क्या है। और मुझे विश्वास हो गया और मेरा कर्तव्य जो इतना ज़रूरी है जो ईश्वर ने पूरा कर दिया यह दशायें सब Point 'H' (पॉइंट-एच) की हैं। तुमने यह जो लिखा है कि "मेरे ही दिल में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाया हुआ है," यह ब्रह्म गति है। इससे ऊपर हिरण्य-गर्भ की हालत है, उसके ऊपर खालिस ब्रह्म प्रारम्भ हो जाता है। तुमने सच लिखा है कि "दिल का बाँध टूट गया", मगर अभी मैंने दिल को खोला नहीं है और यह ख़याल मुझे अभी स्मरण हुआ। अब यह 'मालिक' की इच्छा पर है, कि कब मेरी तबियत बना दे कि मैं उसे खोल सकूं। तुमने जो लिखा है कि "हर समय, हर जगह, मुझे अपने बजाय एक छाया सी, हल्की सी, सूक्ष्म सी ज्ञात होती है और जब उसे ग़ौर से देखती हूँ, तो स्वरूप आपका पाती हूँ" इस जुमले की इबारत कुछ ऐसी लिखी है कि ख़याल को काटती है। इसको साफ़-साफ़ लिखो ताकि मैं उत्तर लिख सकूं। तुमने यह लिखा है कि तुम्हारे ही दिल में पृथ्वी और जल, सब समाया हुआ है, परन्तु स्वयं मैं कहीं चली गई हूँ" इसके अर्थ यह हैं कि तुमने अपने आपको काफी गुम कर दिया है। ईश्वर करे यह दशा सबको प्राप्त हो, बल्कि हर्ष तो मुझे तब हो, जब कि मैं किसी न किसी को अपने से ऊंचा उन्नति में देखूं। समुद्र में उफान नहीं आता, तालाब अवश्य थोड़े पानी में उफना आते हैं। अभ्यासी को चाहिये कि हजारों दरिया मारफ़त (Realization) के गट-गट पी जावें, परन्तु वाणी से यही निकले कि - "और लाओ।" ईश्वर की पूर्ण कृपा से तुम्हारी दशा बहुत अधिक अच्छी है। ईश्वर इससे भी आगे बढ़ावे। ऐसा ही है, ऐसा ही हो। यहाँ तो लोगों को इस दशा तक पहुँचने की इच्छा ही नहीं होती। ईश्वर का कहीं छोर नहीं। मुझे तो गुरु महाराज ने ठिकाने पर पहुँचा दिया। 'उनका' हज़ार-हज़ार धन्यवाद। परन्तु भाई, अब भी नहीं मालूम ठिकाना कहाँ होगा। कारण यह है कि Swimming अब भी शुरू है। मालूम नहीं लोग थोड़ी वस्तु को अधिक कैसे समझ बैठते हैं। अम्मा को प्रणाम।

तुम्हारा शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या-263

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 7.12.52

कृपा-पत्र 'आपका' कल मिला-पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'मालिक' का अनेकानेक धन्यवाद है। क्योंकि धन्यवाद के अतिरिक्त अपने अहेतुकी कृपा वाले 'मालिक' के लिये और कहूँ ही क्या और कैसे कहूँ। हाँ, मेरी एक प्रार्थना है कि जो भी पत्र लिखें वह जो 'आप' बोलें या जैसे लफ़्ज़ 'आप' बोलें, चाहे वे उर्दू के हों बस वही लफ़्ज़ लिखें, नहीं तो उसका रस कम हो जाता है। अगले पत्र में 'आपने' मास्टर साहब जी को मिशन की उन्नति के लिये शायद किसी को Will Power (इच्छा-शक्ति) द्वारा करने को लिखा था, सो 'आप' निश्चित रहिये, 'मालिक' की कृपा से वह मैं करने लगी हूँ।

"आपने" जो लिखा है कि "मान और अपमान इन दोनों से हमें कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये" सो 'आप' विश्वास रखिये, 'मालिक' ने मेरी तबियत में मान-अपमान या और बेकार सम्बन्धों के लिये स्थान ही नहीं रखा है। मुझे तो 'लक्ष्य' के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता। मुझे तो तीर, कमान तथा हाथ तक नहीं दिखलाई पड़ते। यहाँ तक कि अब अक्सर यही हाल रहता है कि केवल अनजाने में भी, भूली हुई अवस्था में भी निगाह उधर ही रहती है, परन्तु मुझे लक्ष्य क्या है, इसकी भी याद नहीं रहती है। हाँ शायद कलेजे की धीमी-धीमी टीसन या सुलगन 'लक्ष्य' का ध्यान रखती है। 'आपने' लिखा है कि "एक बात तुम्हारे पत्र में यह अच्छी नहीं मालूम हुई कि हालत खराब चल रही है।" पूज्य 'श्री बाबूजी' यह केवल उस समय की दशा को व्यक्त या स्पष्ट करने मात्र भर को ही लिखा था, वरन् मन में ऐसी कोई बात नहीं थी। न है और न होगी। 'आपने' जो लिखा है कि "एक पत्र मैंने मास्टर साहब को भेजा है, उसमें कुछ प्रश्न किये हैं और उनका उत्तर माँगा है।" वह मुझे नहीं मालूम। मैंने उनसे पुछवाया था तो मालूम हुआ कि उनसे तथा ताऊजी से 'आपने' कुछ प्रश्न पूछे थे और उनके उत्तर भी 'आपके' पास पहुँच गये। मैंने जो यह लिखा था कि "अपने बजाय एक हल्की सी, सूक्ष्म सी छाया दिखलाई पड़ती है, ध्यान से देखने पर स्वरूप 'आपका' पाती हूँ" उसका केवल यही है कि अपने शरीर और शक्ल के बजाय अब मुझे वैसा मालूम पड़ता है, जैसा मैंने लिखा है।

मेरे 'मालिक' ने जो मुझे अधिक उन्नति बराबर होने का शुभाशीर्वाद दिया है, वह तो बराबर मेरे सिर माथे पर है। 'उसी' की कृपा से ही उस वास्तविक दुनिया में ('मालिक' की दुनिया में) मेरा जन्म हुआ। 'उसी' की परम कृपा रूपी अमृत दृष्टि से पल रही हूँ, बढ़ रही हूँ और बस बढ़ती ही रहूँगी, इसमें सन्देह नहीं। मैं तो देखती हूँ कि प्यास

बढ़ती ही जाती है और 'मालिक' की मेहरबानी से बढ़ती ही जावेगी। अब 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरा तो कुछ यह हाल है कि यदि मुझसे कोई झूठ ही कहे कि 'आप' आये हैं, तो एकदम मेरे मुंह से यही निकलता है कि, 'वे' गये कहाँ थे। मुझे तो ऐसा लगता है कि गौर करने पर अपनी साँस तक को 'उसकी' साँस में ओत–प्रोत पाती हूँ कि जैसे कि अपने ख़्याल में 'उसे' और 'उसके' ख़्याल में अपने को ओत–प्रोत पाती हूँ, और चाहे मैं इस पर गौर करूँ या न करूँ परन्तु यही दशा रहती है। परन्तु न जाने क्यों यह 'ख़्याल' लफ़्ज़ इस दशा से बहुत भारी हो गया है। अन्तर का कुछ यह हाल है कि चाहे मैं कितनी हंसी–खुशी होऊं, चाहे कितनी उदास होऊं, परन्तु अन्तर इन दोनों से अछूता ही रहता है। हाँ, परन्तु फिर भी इसके पीछे कंडों सी धीमी–धीमी ऊपर राख पड़ी हुई सी ज़रूर रहती है। खैर, फिर भी न जाने क्यों 'श्री बाबूजी' तबियत कुछ अजीब बनी रहती है। न हर्ष ही रहता है, न बुरी ही रहती है। अक्सर बिन आँसू के सूखी हिलकियों से तबियत को रोता पाती हूँ।

अम्मा आपको शुभाशीर्वाद कहती हैं और कहतीं है कि हीरा बनाने की क्षमता तो केवल एक 'आप' ही में है। जो सबको पंक (कीचड़) में से खींचकर सीधे शुद्ध रास्ते पर ले आते हैं 'वही' कृपा कर हीरा भी बना सकता है।

अब तो उत्सव आ रहा है, उसमें तो हमसब ज़रूर आयेंगे ही। 'आपकी' तबियत तब तक ठीक हो जावे तो बहुत अच्छा हो। इधर 4–5 दिन से कुछ ऐसा है कि दिन भर जब तक सब स्कूल में रहते हैं या जब मैं अकेली रहती हूँ तो तबियत कुछ उदास सी ही समझिये रहती है और सूखी हिलकियाँ आती हैं, परन्तु फिर जब लोग होते हैं तो तबियत में पता नहीं Change (बदलाव) हो जाता है, शेष 'आप' जानें। केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। इति :–

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना,
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–264

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 16.12.52

मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। इधर मेरी तबियत कुछ खराब हो गई थी, परन्तु अब बिल्कुल ठीक हूँ। फ़िक्र की बिल्कुल रत्तीभर भी कोई बात नहीं है। आशा

है 'आपको' अब फ़कीरी दवा मिल गई होगी। छोटे-भइया को आजकल कुछ तकलीफ़ है, क्योंकि उनकी बगल में अब दो फोड़े हो गये हैं, एक कुछ आज फूटा है, दूसरा शायद कल तक फूट जाय। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो यह दशा महसूस होती है कि जैसे 'मालिक' के पुष्प में धीमी तथा मीठी महक बसने लगी है, परन्तु मेरा कुछ यह हाल है कि देखती ज़रूर हूँ कि आह यह 'मालिक' की देन है, परन्तु फिर तबियत जाने उस महक देने वाले में महब हो जाती है या महक में, परन्तु भाई, ऐसा लगता है कि महक में तो वह (तबियत) बसी ही हुई है। मेरा तो कुछ यह हाल है कि 'मालिक' ने महक में बसा दिया, परन्तु फिर भी मुझे तो 'वहीं' पसन्द है, इसलिये अपने को उस महक में महब पाते हुए भी तबियत को कहीं और पाती हूँ। मेरा तो यह हाल हो गया है कि "खुले नैन पहिचानौं हंसि हंसि"।

पूज्य "श्री बाबूजी" एक बात इधर कुछ ऐसी अनुभव में आती है कि जिसका 'मालिक' से प्रेम बढ़ता है, उससे ऐसा लगता है कि जैसे एक ही "माँ" के हम बालक हों। नहीं, नहीं बल्कि हम सब एक ही हैं, वहाँ दूसरे की गुंजाइश ही नहीं है। यह ऐसे ही लिख दिया, क्योंकि मेरे अन्दर तो एक याद ऐसी पैठ चुकी है जिसके आगे किसी की याद ठहरने नहीं पाती और यह शायद अपने यहाँ Brotherhood (भाईचारा) होने के कारण हो। अब तो हालत ऐसी है कि लहर है, परन्तु उफान नहीं आता। मुझे न जाने क्यों याद 'मालिक' की बहुत ही कम आती है, परन्तु फिर भी न मैं 'उससे' एक क्षण को अलग होती हूँ न 'वह' मुझसे। मैं तो 'उसमें' ही ओत-प्रोत रहती हूँ और 'वह' मुझमें। मुझे ऐसा लगता है कि 'वह' (मालिक) एक ऐसा आकर्षण है जो प्रतिक्षण मुझे अपनी ओर खींचता रहता है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,

पुत्री-कस्तूरी।

पत्र-संख्या -265

शाहजहाँपुर

20.12.52

प्रिय बेटी,

खुश रहो।

पत्र तुम्हारा आया-बड़ी खुशी हुई। जैसे तुम मेरे पत्र का इन्तज़ार करती हो, वैसे ही मैं तुम्हारे पत्र का इन्तज़ार करता हूँ। अर्थात् ईश्वर की कृपा से तुम्हारी हालत ऐसी हो गई है कि जैसे तुम ईश्वर से मिलने के लिये बेकरार हो, वैसे ईश्वर भी। अगर मैं लफ्ज़ ईश्वर इस्तेमाल करता हूँ, तो जरा गलती रहती है, इसलिये कि उसने

तुमको जहाँ तक उसकी पहुँच थी, पहुँचा दिया और आगे रास्ता बता दिया कि कि अब जाना जहाँ है। 'उसका' (ईश्वर) Realization (साक्षात्कार) तो हो गया, अब 'भूमा' का शुरू होता है, जिसको कि मैंने पिछले खत में लिखा है कि Reality (वास्तविकता) अब शुरू होती है। इसको समझाने के लिये 'भूमा' का अक्स समझ लो या अक्स-दरअक्स समझ लो। जब Reality (वास्तविकता) ख़त्म हो जावे, तब उसकी हद में दाखिल होना कहा जा सकता है, सो घबराना नहीं चाहिये। यह कोई इतनी बड़ी बात नहीं है, जैसा कि कहने से लगती है। जिसने यह हालत दी है, वह वहाँ तक पहुँचाने में मदद करेगा। हमें अपने "लालाजी" की ज़ात पर हमेशा उम्मीद रखना चाहिये, वह जो चाहें कर सकते हैं और हमारे मिशन में सब उन्हीं की बरकत है और 'उन्हीं' की ताक़त काम कर रही है। यह पढ़कर मुझे बड़ी ख़ुशी हुई कि तुमने मान-अपमान बेकार सम्बन्धों से सम्बन्ध ही न रखा। मेरे पूछने पर जो लिखा है कि 'अपने बजाय एक हल्की सी छाया दिखाई पड़ती है, ध्यान से देखने पर स्वरूप आपका ही पाती हूँ' यह चीज़ बड़ी अच्छी है, मगर इससे अगले वाला Stage (दशा) जिसको कि मैं लिखूंगा नहीं, लय-अवस्था की अच्छी हालत होगी और मुमकिन है उसके बाद भी कोई Stage (दशा) हो। प्यास के बढ़ने का मतलब बस यही हो सकता है कि असल तत्व हमको अपनी तरफ़ घसीटना चाहता है और यह प्यास उस वक्त तक कायम रहना चाहिये जब तक कि वह खुद बुझ न जाये। बाकी आगे जो कुछ तुमने लिखा है, वह लय-अवस्था व प्रेम की हालत है। इस हालत से कम पहुँचा हुआ कि जिस पर तुम हो वाक़ई Platform (मंच) पर सिखाने के लिये अगर कोई आता है तो उसकी ग़लती है और भाई गुरू का दर्जा यहाँ तक पहुँचा देना है, परन्तु लोगों को यहाँ पर पहुँच कर तृप्ति हो जाती है।

चन्द रोज बाद, यानी दो-चार रोज में मैं तुमको इसके अगले मुकाम पर खींच दूंगा। उसका नाम "I" रख छोड़ा है। अभी Point 'H' (पॉइंट-एच.) की दशा है। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-266

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 22.12.52

कृपा-पत्र 'आपका' मिला-पढ़कर हर्ष हुआ। आशा है मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। अपने 'मालिक' की कृपा का किस प्रकार धन्यवाद दूं, समझ में नहीं आता। परन्तु मेरे

पास है ही क्या, जो दूं। हाँ, जो भी, जैसी भी मैं हूँ, मर मिटूंगी, अपने 'मालिक' पर, इसमें सन्देह नहीं। पूज्य 'श्री बाबूजी' मुझे न ईश्वर से काम था, न भूमा से मतलब, मेरे लिये तो जो भी हैं, 'आप' हैं। 'उसमें' जितना गलती जाऊंगी वही मेरी उन्नति है या जो भी हो, इससे आगे मेरी समझ ही नहीं रह गई। 'आपने' लिखा है, हमें घबराना नहीं चाहिये, सो भाई, घबराने के लिये 'मालिक' ने मुझे नहीं पैदा किया है। 'उसकी' परम कृपा से 'आपकी' इस सदैव की चरण-सेविका में यह बात तो न कभी आई है, न आ सकती है। फिर, 'श्री बाबूजी' किसी भी चीज़ के लिये कुछ ठौर तो चाहिये, वह कहाँ से आवेगी और मैं देखती हूँ कि मेरे पास से तो ठौर तक छिन गई है। तिनके तक के लिये भी, खुद मेरे ही लिये तक ठौर का पता नहीं रह गया है। अब तो यह हाल है कि सिवाय 'मालिक' के मुझे तो ठौर तक कहीं महसूस नहीं होती। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरी तो अब यह दशा है कि "सखि रस बरसे, मैं भीजूं।" और ऐसा है कि वह अहर्निश बरसता ही रहता है, और कहाँ? अन्तस्तल में सदैव, एक सा ही अविरल तथा अविचल रूप से। अब तो उल्टी ही दशा है, कि पहले प्यास मेरी थी, परन्तु अब 'उसकी' प्यास में मैं डूबी रहती हूँ। प्यास पर से भी मेरा दावा उठ चुका है और जब तक अपनी थी, तब तक कभी कुछ घटने की सम्भावना शायद हो सकती हो, परन्तु अब नहीं, अब तो यह हाल है कि रस तो समान रूप में बढ़ता ही रहेगा। अब तो मेरे 'श्री बाबूजी' मैं देखती हूँ कि अब तक तो शरीर पर से, परन्तु अब तो अन्तस्तल (भीतर) पर से भी मेरा कब्ज़ा उठ चुका है। अब तो अपनी चीज़ को 'वह' चाहे जिस रस में डुबाये रखे या यों कह लीजिये कि पहले खुद मेरे अन्दर से रस पैदा होता था, परन्तु अब तो भाई, मेरा इतना काम है कि वह बरसता है और मैं उसमें भींजी रहती हूँ या भींजती हूँ।

पूज्य मास्टर साहब जी की तबियत ठीक हो गई।

पूज्य 'श्री बाबूजी' हम लोग अभी तो ता. 14 या 15 को आने का विचार कर रहे हैं, वैसे 'ईश्वर' मालिक है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना,

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या–267

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 24.12.52

आशा है मेरा एक पत्र पहुँचा होगा, परन्तु आज फिर जी चल आया। कोई खास बात नहीं है, फिर भी जो दशा आजकल है, सो लिख रही हूँ।

भाई मेरा तो अब यह हाल हो गया है कि मैं देखती हूँ कि न मैं वाह्य–मुखी हूँ और न अन्तर्मुखी ही हूँ। मैं तो अब कोई मुखी नहीं रह गई हूँ। हाँ, यह अवश्य है कि जैसी हूँ, ठीक हूँ। अब तो यह हाल है कि खुद 'मालिक' मेरा मुखी (मेरी ओर मुंहवाला) हो चुका है और यही कारण है कि 'उसके' आकर्षण से बरबस ही मैं न जाने कहाँ निशि वासर खिंचती ही चली जाती हूँ। अब तो वह दशा भी नहीं है, जो शायद अगले पत्र में मैंने लिखा था कि "अपने बजाय एक परछाईं' सी दीखती है और ग़ौर से देखने पर स्वरूप 'आपका' पाती हूँ।" अब तो ऐसा महसूस होता है कि इस दशा का भी बाँध या बन्द टूट चुका है, सो अब जैसी हूँ, भाई, 'आपके' सामने हूँ। पूज्य 'श्री बाबूजी' अब तो यह दशा है कि 'वह' मुझे अपनी ओर खींचता है और 'उसकी' कृपा से यहाँ भी कोई रुकावट नहीं है, परन्तु फिर भी मेरे 'मालिक' तृष्णा बुरी बलाय है, जो मुझे घेरे रहती है। अब तो कुछ यह दशा है कि "रैन न सोऊं, दिन नहीं जागूं, नेक नहीं अलसाऊं। शान्ति–अशान्ति न मन में राखूं, क्यों पिऊ ठौर गवाँऊ।" मेरा तो भाई, यह हाल हो गया है, मन के सम्बन्ध में कि 'मालिक' की कृपा से विजय की कामना न रही तो पराजय की सम्भावना भी समाप्त हो गई। शेष सब 'आप' जानें।

पूज्य 'श्री बाबूजी' मुझे बहुत प्रसन्नता है कि अबकी से केले खूब मौके से पके हैं। शरीफ़े भी पके हैं, परन्तु अब निझर जाने के कारण छोटे–छोटे हैं, परन्तु 'आप' इन चीजों के भूखें नहीं, 'आप' कुछ और ही चाहते हैं। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। अम्मा कहती हैं कि हमारी याद रखियेगा और कहती हैं कि सब काम 'आपनें' बनाये और बना रहे हैं, एक काम और बना दें तो, यह थोड़ी सी चिन्तायें भी छूट जायें। क्रासवर्ड भर के भेजा है, 7 जनवरी उसके पहुँचने की आखिरी तारीख है, अब इतनी प्रार्थना और मंजूर हो जावे कि इस रूपये की तकलीफ़ से किसी तरह पीछा छूट जाये। इतिः–

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन, विहीना,

पुत्री–कस्तूरी

पत्र संख्या-268

प्रिय बेटी कस्तूरी,

खुश रहो।

शाहजहाँपुर
1.1.53

तुम्हारे सब खत मिल गये। ता. 24 दिसम्बर का जो खत है, उसका जवाब यह है कि हम जब शुरू करते हैं तो हमारी निगाह 'मालिक' पर रहती है और अपना रिश्ता फिर बन्दे का हो जाता है। अब जो बन्दगी की डोर 'मालिक' तक हमने इस हद तक पहुँचा दी है, तो उसको खबर होने लगी कि कोई 'उसको' याद कर रहा है, गोया अब वह तुमसे मुख़ातिब होने लगा और जब वह मुख़ातिब होने लगा तो उसके पास जो कुछ भी है, हम तक पहुँचने लगी। 'उसके' पास क्या था? बेपरवाही खास तौर पर और वह असल चीज़ जिसकी वजह से 'वह' मालिक बना है, गोया वही चीज़ अब तुममें भी उतरने लगी, अर्थात् तुम्हारी भी हैसियत कुछ न कुछ वैसी ही बनने लगी, गोया थोड़ी बहुत निस्बत तुममें भी आने लगी या यूं कहो कि 'उसकी' झलक बहुत कुछ अब तुममें भी पैदा हो गई। अब चूँकि तुमने बन्दा होने का रिश्ता लेकर 'उसको याद की है, इसलिये तुम्हारी चीज़ भी अब उस तक पहुँचने लगी और जब तुम्हारी चीज़ 'उस' तक पहुँची तो क्या पहुँची? वही बन्दगी और भक्ति का ख़्याल और यह चीज़ पहुँचती ही रही; यहाँ तक कि तुम अपने आपको भूलने लगीं। जब यह हाल हो गया तो वह चीज़ जो 'उस' तक पहुँच चुकी थी और वह बन्दगी और भक्ति का ख़्याल था, इसलिए तुम्हें यह मालूम होने लगा कि 'वह' खुद अब तुम्हारे ख़्याल में है। इसी तरह से बहुत सी दशायें यही समझ में आती हैं, मसलन अन्तरमुखी वगैरह। वह सब 'उसी' की तरफ़ से मालूम होती हैं। इस तरह भक्ति का एक नया अंक खुल जाता है।

31 दिसम्बर सन् 52 को मैंने तुमको 'J' स्थान पर खींच दिया है। ईश्वर ने चाहा तो खत पहुँचते-पहुँचते सैर भी शुरू हो जावेगी। मैं जल्दी करना चाहता हूँ, मगर यह भी चाहता हूँ कि सैर का एहसास भी तुमको होता चले।

शुभचिंतक
रामचन्द्र

पत्र संख्या–269

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी,
सादर प्रणाम।

लखीमपुर
2.1.53

आशा है आपकी तबियत अब ठीक होगी। कल तो न जाने क्यों 'उससे' मिलने की बेचैनी अधिक बढ़ गई थी। अब तो यह हाल है कि 'मालिक' के रोम–रोम में, रग–रग में अपना पता या ठिकाना पाती हूँ। पहले जब याद आती थी तो एक दम कलेजा थाम लेने से कुछ आराम हो जाता था, परन्तु अब तो शायद याद कलेजे को चीर कर उसे भी पार कर गई है, क्योंकि अब कलेजा थामने से भी कुछ नहीं होता। वह तो भीतर ही भीतर न जाने क्या होता रहता है, परन्तु अब उफान नहीं आने पाता, इसलिये जो कुछ भीतर होता है, उससे जी नहीं घबड़ाता, बल्कि वह मेरा आगे बढ़ने का सहारा हो गया है। मेरे बाबूजी अब तो न यह महसूस होता है कि 'वह' मुझमें है और पता नहीं मैं 'उसमें' हूँ या नहीं। न मालूम 'वह' मुझमें है और न मालूम मैं 'उसमें' हूँ। अब तो न जाने क्यों मुझे 'उसकी' याद नहीं आती है, परन्तु जिस हालत में हूँ, खुश हूँ।

मैं तो यह महसूस करती हूँ कि 'मालिक' में श्रद्धा, विश्वास तथा प्रेम के शुद्ध रूप की शुरुआत, सम्भव है अब शुरू हो गई हो और भाई यद्यपि मैं तो इन चीज़ों को कुछ नहीं जानती। मैं तो अब हर चीज़ से इतनी खाली हो गई हूँ कि मुझे अपने में कुछ महसूस नहीं होता सिवाय इसके कि जैसे दुनिया के और लोग साधारणतः रहते हैं। अंतर शायद इतना हो कि उनके हृदयों पर बोझ लदा रहता है और यहाँ तो अब किसी बोझ के लिये स्थान ही नहीं रहा। पता नहीं मैं क्या चाहती हूँ; मैं क्या करती हूँ मैं कहाँ रहती हूँ। अब यह 'मालिक' जाने।

अब तो मेरा यह हाल है कि दुनियाँदार लोगों के बीच अपने को दुनियाँदार पाती हूँ, सत्संगियों में अपने को सत्संगी पाती हूँ और अकेले में कुछ नहीं। तब न जाने मैं क्या रहती हूँ, शायद कोई नहीं। अम्मा आपको शुभाशीर्वाद कहती हैं।

आपकी दीन–हीन, सर्व–साधन विहीना पुत्री
कस्तूरी

पत्र संख्या–270

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 4.1.53

कृपा–पत्र 'आपका' भाई पुत्ती बाबू द्वारा मिला तथा किताब भी मिली। पत्र पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। आज ताऊ जी भी तीन बजे आ गये, उनसे 'आपके' स्वास्थ्य एवं तमाम बातें सुनकर बड़ा हर्ष हुआ। एक Tonic (टॉनिक की) शीशी जो 'आपने' भेजी सो मिली और पुत्ती बाबू से चुकन्दर भी मिले। मैं तो इस कोशिश में हूँ कि बसंत में आने तक इतनी तन्दुरुस्त हो जाऊं कि 'आप' देखकर खुश हो जावें। पूज्य मास्टर साहब जी की तबियत खराब सुनकर कुछ फिक्र हो जाती है। भाई, शुक्ला जी की हालत पढ़कर तो वाकई बड़ी चिन्ता थी, किन्तु यह केवल 'आपकी' ही पकड़ का नतीजा हुआ कि 'आपने' कोई न कोई उपाय निकाल ही लिया। यदि उन्हें भी इतनी फिक्र अपनी ही होती तो यह हाल ही न होने पाता, खैर।

अब तो मेरे 'श्री बाबूजी' मुझे लगता है, सैर की चाल में कुछ तेज़ी तो आई है, परन्तु बागडोर खिंची हुई है, परन्तु यह भी जहाँ तक मेरा ख़्याल है, यदि यह बागडोर न हो तो अभ्यासी को थकान बहुत जल्दी आवे। मुझे तो यही अच्छा लगता है कि "गले राम की जेंवरी, जित खींचे तित जाऊं"। मेरी दशा तो ऐसी है कि जैसे बुझते दीपक में कभी–कभी ज्योति जाग उठती है। उसी प्रकार याद अथवा प्रेम के लिये दूसरे में प्रेम देखकर लौ कुछ जाग उठती है, किन्तु तेल समाप्त दीपक कब तक चलेगा। तबियत का तो यह हाल है कि न जाने क्यों उसे एक अथवा एक्य का भी होश नहीं, और हो भी कैसे, जब कि मेरी दशा के लिये तो वह भी अर्थहीन ही प्रतीत होता है। अब तो जहाँ जाती हूँ, सब उजाड़ स्थान है, बीहड़ मैदान है, किन्तु बेहोश ऐसी हूँ कि कदम कहीं पड़ते हैं या नहीं, उठते हैं या नहीं, कुछ पता नहीं और न जाने क्या बात है। मैं बेहोश हूँ, यह मुझे खबर नहीं, इसलिये पता तो यही लगता है कि बेहोशी होती तो ज़रूर पता लगता, अब 'मालिक' ही जाने। यों कह लीजिये कि एक लावारिस मुर्दा पड़ा है, उजाड़ निर्जन मैदान में। तबियत जब घूमती है (या लौटती है) तो यही पाती हूँ। यही नहीं बल्कि अब तो हर चीज़, जड़ चेतन सब मेरे लिये कारण–रहित मुर्दा ही हैं। जब Cause (कारण) ही नहीं है तो सब अर्थहीन, बेमतलब हैं। मेरे 'श्री बाबूजी' यही हाल याद का है कि इसका (यानी याद का) नाम मुझे अब नहीं आता, क्योंकि हाल तो यह है कि मुर्दे (मेरे लिये) के लिये किसी का कुछ अर्थ नहीं, बेमतलब है। जैसे पहले मैंने लिखा था कि कोई 'मालिक' का नाम ले देता है तो कलेजा पकड़ कर रह जाती हूँ, परन्तु अब कुछ नहीं। अब

तो यह हाल है कि लाश पर चाहे ढेले फेंको या फूल चढ़ाओ, मेरे लिये किसी का कुछ अर्थ नहीं। स्वयं मेरा ही न कुछ अर्थ है, न मतलब। न जाने क्या है, बस केवल चारों ओर उजाड़ खण्ड है, सूना बरोरा है।

मेरे 'श्री बाबूजी' आपने मुझे मज़मून लिखने के लिये पूछा है, किन्तु मैं क्या बताऊं, मुझे तो कुछ ज्ञान ही नहीं। मुझे तो जब जितना 'आप' बता देते हैं, उतना ही मैं जान पाती हूँ, बस और भला मैं क्या जानूं, इस लिये क्षमा कीजियेगा। 'श्री बाबूजी' आप तो जो कुछ भी लिखेंगे वह संसार के कल्याणार्थ ही होगा।

सच तो यह है 'श्री बाबूजी' कि अर्थ, मतलब रहित दशा है, इसलिये मुर्दा कह लिया, वरन् न जाने क्या है, 'मालिक' ही जानें।

अम्मा आपको आशीर्वाद तथा मास्टर साहब जी को भी शुभाशीष कहती हैं तथा बिट्टो, छोटे भइया व लल्लू 'आप' तथा मास्टर साहब जी को नमस्ते कहते हैं। मास्टर साहब से मेरा भी नमस्ते कहियेगा। इतिः-

आपकी सदैव केवल आपकी ही
कृपा-कांक्षिणी सेविका
पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-271

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 7.1.53

कृपा-पत्र 'आपका' जो ताऊ जी के हाथ भेजा, सो मिल गया- पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'आपकी' कृपा के लिये तो 'आपके' चौबे जी को देख कर अम्मा कहती हैं, अनेकानेक धन्यवाद है। अपनों के हित के लिये खास तौर पर, वैसे तो सबके ही समान रूप से 'आप' न जाने किन-किन नवीन उपायों का निर्माण करते रहते हैं। मेरा पत्र पहुँच गया होगा। मैं केसर, ताऊजी के साथ ता. 14 को रात में पहुँचेंगे तथा अम्मा व और लोग ता. 17 को आयेंगे। अब तो बस थोड़े से दिन रह गये हैं, जब आपके पास पहुचूंगी।

पूज्य 'श्री बाबूजी' मैं कुछ यह देखती हूँ कि मेरी समझ ने 'मालिक' से समझौता कर लिया है, इसलिए जो भी बात 'आप' लिखते व कहते हैं, वह मुझे बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है। ज्ञान वाली पुस्तक के लिये जो अभी कुछ और 'आपने' लिख कर भेजा है वह

बहुत ही अच्छा है। अद्वितीय है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा फूलों जिज्जी, केसर, बिट्टो 'आपको' प्रणाम कहती हैं। इतिः-

आपकी दीन-हीन, सर्व-साधन विहीना

पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या-272

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 24.1.53

आशा है आप विवाह से कल तक लौट आवेंगे, इसीलिए आज पत्र लिख रही हूँ। बड़े भइया का बुखार आज 99° दिन भर रहा है, गले में दर्द भी नहीं है। दो-तीन दिन में 'ईश्वर' की कृपा से बिल्कुल ठीक हो जायेंगे, कोई फ़िक्र की बात नहीं है। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरा तो यह हाल है कि हृदय इतना अधिक खाली पड़ा है मानों वह स्वयं एक चटियल मैदान हो गया है, बस जी तड़पता है कि इस बिल्कुल शून्य हृदय में 'मालिक' किसी तरह से समा जाये। कुछ ऐसी दशा है कि अब तक की सारी दशा मुझमें पच चुकी है, सब लय हो चुकी है। इसीलिए अन्तर अपने 'मालिक' में समा जाने के लिये बिल्कुल शून्य हो गया महसूस होता है। इतनी हल्की हो गई हूँ कि लगता है कि 'मालिक' में तेज़ी से घुसती ही चली जा रही हूँ। 'मालिक' मेरे अंतर में समाता ही चला जा रहा है। भाई, 'मालिक' ने कृपा करके अब तक की दशा के बोझ या एहसास तक से भी मुझे स्वतंत्रता दे दी है। अब तो पूज्य मेरे 'श्री बाबूजी' ऐसा महसूस होता है कि मेरे 'मालिक' की अलौकिक कृपा से अलख भी लखने लगा है। कुछ ऐसा लगता है कि भीतर की दशा एक समान ही रहती है, परन्तु 'मालिक' की कृपा से न जाने कैसे आने वाली दशा महसूस भी होती रहती है वरना तबियत एक समान ही रहती है। न झुकाव महसूस होता है, न पहले की तरह उठान, परन्तु यह ज़रूर है कि 'उसके' लिये दिल के भीतरी कोने में जलन सुलगती रहती है।

अब तो मेरे 'मालिक' कुछ यह हाल हो गया है कि न अंधेरा है, न उजेला। अंधेरा यदि कहा जावे तो ऐसे कहा जा सकता है कि जैसे यदि आँख मूंद लें तो जो कुछ प्रतीत या महसूस हो, बस वैसी कुछ अब मेरी दशा रहती है। कुछ ऐसा लगता है कि मेरा अंतर हर समय किसी दशा में लीन रहता है। मेरी तो ऐसी दशा रहती है, जैसे कोई मन को बेच कर खुद हैरान व जलन की दशा में रहने लगे और 'आपके' पास से आकर तो यह चीज़ अधिक बढ़ जाती है, बहुत-बहुत धन्यवाद इसके लिये 'आपको' है। बस मेरे

'श्री बाबूजी' आपकी रोज़ाना बढ़ती हुई कृपा का आशीर्वाद-मय हाथ मेरे सिर पर रहे, मेरी सदैव यही प्रार्थना है। मेरा कुछ यह हाल है कि ऐसा लगता है कि मेरा दिल उथला होता चला जा रहा है, यहाँ तक कि कोई चीज़, कोई बात छिपती नहीं, बाहर ही छलक पड़ती है। न जाने क्यों अब पहले की तरह मुझे यह पता या महसूस नहीं होता कि 'मालिक' से बिल्कुल मिली हुई हूँ, परन्तु फिर भी भाई मुझे महसूस हो या न हो, इतना तो मैं ज़रूर कहूँगी कि यदि रग-रग को कोई चीर कर देखे तो केवल 'उसका' ही जलवा दिखलाई देगा या यों कह लीजिये कि 'मालिक' ने इस दशा के एहसास के बोझ से मुझे मुक्त कर दिया है। अम्मा 'आपको' शुभाशीष कहती हैं, फूलो जिज्जी आपको प्रणाम कहती हैं। इतिः-

सदैव आपकी ही, चरण सेविका

कस्तूरी

पत्र संख्या-273

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 27.1.53

मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। आशा है अब सब लोग विवाह से लौट आये होंगे। फूलो जिज्जी कल गई। अबकी से उत्सव में जाने से तथा यहाँ एक दिन प्रार्थना में बहुत तेज Hallow (हैलो) सहित 'आपका' दर्शन करके वह दंग रह गई और 'आपको' पत्र भी डालने को कह गई हैं और बराबर खुद इस पूजा में लगे रहने को कह गई हैं। अब 'मालिक' की जैसी मर्ज़ी और कृपा होगी। बड़े भइया का बुखार उतर गया है, परन्तु कमज़ोर काफ़ी हो गये हैं, कुछ खाँसी भी है, ईश्वर की कृपा से दो-चार दिन में धीरे-धीरे ठीक हो जायेंगे। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई अब तो ऐसा लगता है कि Heart (हृदय) का सब बन्धन टूट गया है। अपने 'मालिक' के समा जाने के लिये पूरी तौर से खुल गया है। ऐसा लगता है कि मेरा 'मालिक' पूरी तौर से खुले दिल में और सफ़ाचट मैदान की तरह हुए इस दिल में समाया जाता है। मेरा तो अब यह हाल है कि ऐसा लगता है कि अपने 'मालिक' के दिल में ही खेलती रहती हूँ और वहीं 'उसी' का जलवा देखती तथा उन्हीं से पलती हुई 'उसी' में समा सी गई हूँ। भाई ऐसा लगता है कि चाहे भक्ति, प्रेम अथवा Surrender (समर्पण) को मैं जानूं या न जानूं, समझूं या न समझूं, परन्तु 'मालिक' की कृपा से यह ज़रूर है कि मैं इनमें

पूरी तौर से समा चुकी हूँ। नहीं नहीं, यह खुद मुझ में पूरी तौर से समूचे के समूचे समा गये हैं, और अब तो यह दशा हो गई है कि सच तो यह है कि इनके होने और न होने का भी होश 'मालिक' ने खुद अपने जिम्मे ले लिया है और अब तो मैं यही कहती हूँ और सच कहती हूँ कि मैं अब इन चीज़ों पर नहीं बल्कि अपने 'सर्वस्व' पर मरती हूँ। मेरे 'श्री बाबूजी' अक्सर मुझे ऐसा हो जाता है कि जब मुझे 'आपकी' वह बात याद आती है, जो, 'आपने' एक बार मुझे लिखी थी कि-"बिटिया हम तो प्रेम और भक्ति से चलते हैं।" तो कभी अपने पर अब गौर करती हूँ तो न जाने क्यों यह कुछ मुझे ऐसे दिखलाई नहीं पड़ते, बल्कि कभी-कभी ऐसा महसूस करती हूँ कि जैसे यह पानी की तरह पिघल कर कुछ ऐसे ही खुद मेरा एक-एक अंग बन चुके हैं या भिद चुके हैं, फिर भला अब मैं इन्हें कहाँ ढूँढू, कहाँ पाऊं और क्यों ढूँढू यह भी कुछ समझ में नहीं आता, परन्तु मैं चाहती ज़रूर हूँ। भाई, मैंने तो जो कुछ देखा, जो कुछ पाया, अपने 'मालिक' के हृदय में, केवल 'उसी' की स्नेहसिक्त गोद में। मुझे तो कुछ ऐसा लगता है, मेरे परम स्नेही 'श्री बाबूजी' कि इन सबकी उत्पत्ति अथवा प्रलय तक सब 'मालिक' ही में है। यहाँ तक कि यदि मैं यह कहूँ कि मैं खुद ही 'उसी' मय बन गई हूँ, तो शायद गलत न होगा, परन्तु फिर भी मैं यह देखती हूँ कि अभी मुझे बहुत कुछ उसमें मिलना है, समा जाना है, और 'मालिक' की कृपा से मैं इसमें सफल हूँगी और अवश्य सफल हूँगी और 'मालिक' से भी मेरी यही मुराद है कि मैं 'उसे' पूरी तौर से अपने में समेट लूं, अपने में रख लूं और मैं मर मिटूं। मुझे तो जो चाहिये सब केवल वहीं से, 'उसी' से मिलता है और केवल वहीं से मिल सकता है क्योंकि मुझे ऐसा लगता है, सब की हद पार करके मैं 'उसी' की हद में जा मिली हूँ, 'उसी' की हद में पहुँच चुकी हूँ। अब तो भाई मेरे heart (हृदय) का कुछ यह हाल हो गया है कि खुलकर, फैलकर कुछ ऐसा एक सा हो गया है कि मैं जुदा नहीं कह सकती। यह देखते बनता है, कहते नहीं; इसे केवल 'मालिक' ही जान सकता है। यह हृदय इतना उथला हो गया है कि गहराई लफ़्ज़ का नाम नहीं रह गया। पूज्य श्री बाबूजी 'अब तो न जाने क्यों यह हाल है कि अपने बजाय अब एक सफ़ाचट मैदान महसूस होता है, जिसमें प्रेम, भक्ति वगैरह कुछ नहीं, कोई चीज़ नहीं है। कभी-कभी यह महसूस होता है कि सब कुछ 'मालिक' की सेविका से ही उत्पन्न होता है और प्रलय होता है। अब 'आप' ही जानें। मुझे तो 'मालिक' से काम है। शेष 'आप' जानें, 'आपकी' मर्ज़ी। पूज्य श्री बाबूजी अक्सर प्यास इतनी बढ़ जाती है कि, तब तो ऐसा लगता है कि जो कुछ मिले गट कर जाऊं, इसलिये कभी तो ऐसा लगता है कि मैदान, सफ़ाचट मैदान को भी अपने में गट होता महसूस करती हूँ सिन्धु के सदृश। जब थकान अनुभव करती हूँ तो प्यास भी कुछ मन्द पड़ जाती है, परन्तु उसके हटते ही फिर प्यासी की प्यासी। और आजकल

तो हृदय में न जाने क्या होता है कि रोने को हर समय तबियत चाहती है, चिल्ला पड़ने को जी चाहता है। अब आप ही जानें।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः-

सदैव 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

पुत्री कस्तूरी

पत्र संख्या-274

लखीमपुर
30.1.53

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी,

सादर प्रणाम।

कल हरी ददा आ गये—उनसे 'आपके' समाचार जानकर प्रसन्नता हुई। 'आपने' 5 रुपये Welcome (स्वागत) के भेजे सो भी मिल गये। 'आपका' गुरु-सन्देश का पैम्फलेट भी मिला—उसमें थोड़ी सी त्रुटियाँ छपने में हो गई हैं, सो ठीक होकर हमारे ही लिये नहीं वरन संसार के लिये एक अमूल्य वस्तु हो गई है। पढ़ने में और समझने दोनों में सरल, यह चीज़ भी बहुत अच्छी हो गई है।

परम स्नेही 'श्री बाबूजी' 'आपने' लिखा है कि 'फकीर' की चीज़ को वापिस नहीं करना चाहिये क्योंकि वह केवल चीज़ ही नहीं, उसमें और भी कुछ मिला होता है, सो मेरे 'बाबूजी' जो और कुछ उसमें मिला था सो मैंने ले लिया है। 'फकीर' की चीज़ (यानी बरकत) तो मेरे सिर माथे पर है और वह तो सदैव मेरे साथ है ही, क्योंकि मेरी आत्मिक उन्नति का, केवल एक 'उसी' की बरकत, 'उसी' की मुझ पर भी अकारण कृपा ही कारण है। सो मेरे 'मालिक' मैंने आपकी चीज तो सिर माथे ले ली है। अम्मा कहती हैं कि मोती ऐसे ही रखे हुए थे, बहुत दिनों के, सो बनाकर 'आपको' भी दे दिए, तो क्या है मेरे लिये तो 'आप' मेरे ही हैं, किसी दूसरे को बनाकर देती तो और बात थी, घर में चीज़ रुपये से नहीं दी जाती है, वह तो केवल प्रेम से दी जाती है। प्रेम ही देता है और प्रेम ही उसे स्वीकार कर लेता है। फिर रुपये की गुंजाइश कहाँ हो सकती है।

मेरे पत्र मिल गये होंगे। धीरे-धीरे जैसा आपने बताया है, वैसे लिखना शुरू करूँगी। अम्मा कहती हैं कि फिर इसमें लड़कियों का रुपया कुछ खर्च नहीं हुआ है, वह तो मेरा है, तो मेरा भी तो कुछ हक है। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरा तो अब यह हाल हो गया है, कि जैसे पहले मैंने लिखा था कि "अब तो अन्तर भी लखने लगा है" परन्तु अब तो 'मालिक' की कृपा से यह हाल हो गया है कि

खुद मैं भी अलख ही हो गई हूँ, कुछ ऐसा ही महसूस होता है। अलख ही मेरी रहनी हो गई है। अब तो ऐसा लगता है कि जो मैंने लिखा था कि "अपने बजाय अब सफ़ाचट मैदान महसूस होता है, परन्तु न जाने क्यों अब तो ऐसा लगता है कि सफ़ाचट मैदान भी सफ़ा हो गया है। अब वह भी कहीं नहीं है, वह तो ऐसा लगता है कि कबका मुझमें समा चुका है। न जाने कुछ ऐसा हो गया है कि वह भी मेरी तरह से अलख में अदृश्य हो चुका है, बिला चुका है।"

मेरे 'श्री बाबूजी, अब तो न जाने क्यों कुछ ऐसी पीर, ऐसी टीसन अन्तर में है, जिसके लिये ऊपरी इलाज भी सब बेकार होते हैं। न उसका इलाज अब मुहब्बत ही कर पाती है न कुछ। वह तो ऐसी प्यास है जिसके लिये पानी बेकार साबित होता है। अब तो भाई कुछ ऐसा हो गया है कि उस अलख में ही मेरा पसारा हो गया महसूस होता है या कुछ ऐसा लगता है कि अलख में समाकर अदृश्य हो गई हूँ।'

ता. 2.2.53

मेरे परम स्नेही 'श्री बाबूजी' कुछ थोड़ा सा हाल आज और समझ में आया है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, कुछ ऐसा लगता है कि सूक्ष्म शरीर भी पिघल कर सफाचट मैदान की तरह होकर न जाने क्या हो गया है। शायद रह ही नहीं गया, बिला गया है और उसका ज़र्रा-ज़र्रा पिघल कर 'मालिक' उनमें बस चुका है, रम चुका है। मेरी निगाह का तो यह हाल है कि वह तो अलख को भी भेद कर अब उसके भी परे देखने का प्रयत्न करने लगी है।

सदैव आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका-कस्तूरी

पत्र संख्या-275

प्रिय बेटी कस्तूरी   शाहजहाँपुर
खुश रहो।   4.2.53

तुम्हारे पत्र 27 जनवरी सन् 53 व 30 जनवरी और दूसरी फरवरी के मौसूल हुए। जब तुम उत्सव में आई थीं, तो मैंने 18 जनवरी की सुबह को 'K' स्थान पर खींच दिया था, यह सब हालत उसी मुकाम की हैं। तुमने जो कुछ हाल लिखा है, यह सब लय-अवस्था की उन्नति बता रहे हैं। मुझे खुशी है कि तुम्हें आगे बढ़ने की फ़िक्र रहती है और इस सब उन्नति की तुम्हीं ज़िम्मेदार हो। कहने के लिये मेरी वजह से कहा

जा सकता है यह वाकई तुम्हारी ज़ाती काब्लियत है कि तुम्हारा पाँव आगे ही को जाता है और हिम्मत बढ़ती जाती है। अगर मेरी काब्लियत होती तो अब तक सब भाई लोग तरक्की के ऊंचे शिखर पर पहुँच चुके होते। मैं थोड़ी सी एड़ ज़रूर आगे पहुँचाने में लगा देता हूँ। अगर इसको मेरी काब्लियत कहा जाये, तो ठीक नहीं होगा, इसलिये कि तुम्हारी काब्लियत मुझे आगे ले जाने के लिये मजबूर कर देती है। अगर तुम यह कहो कि यह भी आपकी काब्लियत है कि आप ऊपर पहुँचा तो देते हैं, तो यह भी ठीक इसलिये नहीं हो सकता कि मैं तो अपना रहा ही नहीं अब तो जो है, वह, तुमको आगे बढ़ाता है।

तुमने यह अकसर लिखा है कि "शरीर पिघल-पिघल कर बहता है"। एक बात लिखता हूँ, जो मुमकिन है, इसके जवाब को भी काफी हो। वह यह है कि जब हम तबियत से और प्रेम से अभ्यास करते हैं तो पिछले विचारों का जो असर है, वह सब दूर होता जाता है और परमाणु भी पुराने गिरते जाते हैं और अच्छे परमाणु उसकी जगह पर बनते जाते हैं। परमाणु तो वैसे हर देह-धारी के उसके विचार के अनुसार तबदील होते रहते हैं और जो ईश्वर की तरफ प्रेम-पूर्वक बढ़ता है, उसके उसी तरीके से परमाणु बनते हैं।

असल प्रेम वही है कि प्रेम करते-करते प्रेम की खबर न रहे। जब यह हालत पैदा हो जाती है तो फिर असल में भिदाव शुरू हो जाता है और तबियत नम्र बनती चली जाती है। इसी हालत में या इससे और आगे बढ़कर भक्तों ने कहा है कि:-

"बिना भक्ति तारो, तब तारिबो तिहारो है।"

तुमने एक जगह यह भी लिखा है कि "सब कुछ 'मालिक' की सेविका से उत्पन्न होता है और प्रलय होता है।" इसके मानी यह हैं कि तुम्हारा कदम ऐसे मैदान में है, जहाँ से यह चीज़े शुरू होती हैं। मैंने किसी समय लिखा था कि तुम्हारी हालत हिरण्य गर्भ की है या यह लिखा है कि आने वाली है, ठीक याद नहीं। अब अन्दाज़ यह होता है कि वह हालत शुरू हो गई, मगर अभी पूरी तौर पर मालूम नहीं होती या यूं कहना चाहिये कि एक कदम ज़रूर हिरण्य गर्भ की हालत में है। या तो यह हो सकता है कि मैं इस हालत में तुमको लय कर दूं, या यह कि 'K' से आगे 'L' मुकाम पर ले लूं, यह तुम्हारी हालत गौर से देखने के बाद तय करना है। इन दोनों बातों को अभी सोचा नहीं है। मुमकिन है कि मैं Point 'L'(पाइंट-एल) ही लूं। वह कब? जब मौजूदा मुकाम की मैं सैर ख़त्म देखूं। सैर मैं जल्दी-जल्दी ज़रूर करा रहा हूं।

गुरु-सन्देश को सही करते वक्त यह ख़्याल ज़रूर रखना कि कोई ग़लती न रह जावे। मेरा काम जल्दी की वजह से खराब होता है और तबियत से 'जल्दी' नहीं जाती। सही होने के बाद एक कॉपी श्यामपती जी को भिजवा देना। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिंतक

रामचन्द्र

पत्र संख्या-276

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी,

सादर प्रणाम।

लखीमपुर

8.2.53

कृपा पत्र 'आपका' कल पूज्य मास्टर साहब जी द्वारा प्राप्त हुआ-पढ़कर प्रसन्नता हुई। बड़े भइया को कल बुख़ार बहुत हो गया था, इसीलिए उनकी तबियत व परेशानी अधिक बढ़ी हुई थी। बाईं ओर छाती, पीठ पर फफोले भी 4-5 दिन से बहुत निकले हुए हैं, ख़ैर आज ईश्वर की कृपा से परेशानी बिल्कुल नहीं है, तथा बुख़ार 99 आ गया है, इसीलिये ठीक हैं, कोई फ़िक्र की बात नहीं है। मास्टर साहब जी का पत्र सुनकर तबियत कुछ परेशान सी हो गई। वाकई में ऐसा 'मालिक' पाकर हम लोग ऐसी मौज में निर्द्वन्द सो गये हैं कि जागने का नाम नहीं लेते। कहने को तो सब कह लेते हैं कि "बाबूजी सब सुधार लेंगे" परन्तु यदि इस कथनी को ही हम अपनी करनी और रहनी में सचमुच डाल सके होते तो फिर क्या था। बात वास्तव में ऐसी है, जैसी कि 'आपने' लिखा है कि हम सत्संगी लोग तो 'आपको' पूरी तौर से Co-operate (सहयोग) तक नहीं कर पाते।

पूज्य 'श्री बाबूजी' आपने लिखा है कि "सब उन्नति की तुम्हीं ज़िम्मेदार हो।" भाई होगा यह, परन्तु इतना मैं अवश्य कहूँगी कि जितनी 'आपकी' मोहब्बत मेरी ओर है, यदि मैं उतनी भी कर पाती तो क्या बात थी। 'आप' जो भी कहें, ठीक है, परन्तु मैं इतना अवश्य कहूँगी कि यह सब केवल 'मालिक' की मोहब्बत और 'उसका' ही इतना अधिक आकर्षण है, जो मुझे बरबस अपनी ओर खींचे लिये जा रहा है। अब 'आप' ही जानिये कि किसकी काबिलयत है। वास्तव में 'आप' ऐसा लिख कर मुझे शिक्षा प्रदान किया करते हैं। कितने मोती के दाने पिरोये हुए हैं, इस वाक्य में कि "मैं तो अपना रहा ही नहीं, अब तो जो है, वह तुमको आगे बढ़ाता है।" क्या 'मालिक' की कृपा से कभी इस उपदेश को मैं पूरी तौर से अपने में प्राप्त कर सकूंगी। जो भी हो, मैं तो बस 'उसके' लिये अपने को हार चुकी हूँ, अब जो 'उसकी' मर्ज़ी हो करे। मुझे तो 'उसी' की चाह और 'उसी' से काम है। मेरे 'श्री बाबूजी' मेरा तो हृदय यही कहता है कि 'जिन्होंने' संसार

को ऐसा 'अनमोल रत्न' प्रदान किया है, वे (यानी हमारे श्री लालाजी महाराज) अवश्य ही लोगों को ऐसी दृष्टि भी प्रदान करेंगे, जिससे हम 'उसे' ठीक तौर पर देख सकें और मुहब्बत कर सकें। और अब एक दिन आयेगा, और अवश्य आयेगा, जब लोगों की धूल पड़ी हुई दृष्टि शुद्ध होगी और तब वे देख सकेंगे, दूर नहीं हैं वे दिन।

'गुरु–सन्देश' को सही करने में तो जहाँ तक हो सका, मैंने एक–एक बिन्दु तक रखने में कसर नहीं रखी है। कृपया 'आप' जल्दी को तबियत से निकालने की कोशिश न करें। 'आपकी' यह जल्दी संसार को न जाने क्या–क्या बख़्श देगी और मानव को न जाने क्या से क्या बना देगी। कल एक कॉपी या परसों श्यामपति जी के पास अवश्य भिजवा दूंगी। 'आपने' पहले यह लिखा था कि "यह ब्रह्म सांस की दशा है, इसके बाद हिरण्य गर्भ की दशा है"। अब 'मालिक' की कृपा से मेरी जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरा तो अब यह हाल है कि मेरी दृष्टि तो अलख को भी भेद कर उसके भी परे देखने का प्रयत्न करती है। अब तो दशा पानी की सतह के ही सदृश रहती है और कुछ यह है कि यदि तेज़ी किसी भी समय हो जावे तो उस दशा में भद्दापन आ जावे और बर्दाश्त के बाहर हो जावे, परन्तु जो केवल 'मालिक' के लिये ही है, उसको फिर किसी से क्या मतलब और क्यों हो, मैं 'मालिक' की कृपा से बस यही सीखने की कोशिश करूँगी, शेष 'आप' जानें। परन्तु आध्यात्मिक विषयों की तेज़ी से मतलब नहीं। अब तो मेरे 'बाबूजी' 'आपकी' मेहरबानी से तीनके की ओट पहाड़ दिखलाई पड़ता है। न जाने क्यों अब अंतर में कुछ ऐसे आनन्द का अनुभव करती हूँ जिसमें आनन्द के Weight (वज़न) का लेशमात्र भी लगाव नहीं है, क्योंकि शायद वह स्वतः (कुदरतन या अपने आप) ही अन्तर में है, इसलिये ऐसा हो।

अब कुछ यह हो गया है कि यह नहीं कि अपने बजाय 'मालिक' दीखता है, बल्कि जब एहसास करती हूँ तो 'मालिक' ही दीखता है, केवल 'वही' एहसास में रह गया है। मेरे परम स्नेही बाबूजी, न जाने क्यों कुछ यह हो गया है कि जैसे पहले मैं लिखा करती थी कि हर काम हर चीज़ Automatically (स्वतः संचालित) होती रहती है, परन्तु वास्तव में मैं अब कुछ नहीं कह सकती। मुझे तो इसका कतई एहसास तक न रहा। न जाने क्यों यह सब मेरी निगाह से ओझल हो चुका है। अब जो हो सो हो, 'मालिक' जाने। कुछ ऐसा है कि जैसे कोई चीज़ खो जावे फिर कुछ दिन बीतने पर उसका कुछ ख़्याल न रह जावे, ऐसा ही हाल मेरा हो गया है। भाई, या यों कह लीजिये कि पहले जैसे मैं लिखा करती थी कि 'मालिक' का ख़्याल ही मेरा धर हो गया है, यानी "'मालिक' का जब ख़्याल करती हूँ, तो उसमें अपने को मौजूद पाती हूँ, या यह कि मैं अब नहीं महसूस

होती, बल्कि उसका एक ख़याल अवश्य कहीं रहता है।" सो अब 'श्री बाबूजी' इधर देख रही हूँ कि वह सब दशा तथा वह ख़याल भी न जाने कैसे अकस्मात् गायब हो चुका। अब तो 'मालिक' ने कृपा करके उस ख़याल की भी बन्दिश तोड़कर ऐसा महसूस होता है कि मुझे, मुझसे कतई बरी कर दिया है। सब कुछ गल गलाकर मामला ख़त्म हो गया। न जाने क्यों तबियत इतनी नम्र बन गई है कि कुछ कहना नहीं और इसी में तबियत भिदती चली जाती हुई मालूम पड़ती है। बिल्कुल शुद्धता ही शुद्धता सी कह लीजिये। अपने 'मालिक' के लिये कुछ ऐसा हो गया है कि वह ऐसा हल्का होकर नज़र में समा गया है जैसे नज़र में एक कुदरतन नक्शा सा खिंचा हुआ हो। अब तो यह हाल हो गया है कि पूजा करती हूँ, परन्तु पूजा करने वाला कहीं दिखलाई नहीं पड़ता जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है। अम्मा आपको शुभाशीर्वाद कहती हैं।

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता

पुत्री--कस्तूरी

पत्र संख्या-277

मेरे परम स्नेही श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 14.2.53

आशा है मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। 'आपके' Post Card (पोस्ट कार्ड) से मालूम हुआ कि कृपा करके 'आपने' मुझे 'L' Point (एल-पाइंट) पर खींच दिया है, बहुत-बहुत धन्यवाद है, तथा पूज्य मास्टर साहब के लिए भी 'मालिक' को बहुत-बहुत हार्दिक धन्यवाद है। कल उनके यहाँ शुक्रिया का प्रसाद भी चढ़ाया गया था। परन्तु 'श्री बाबूजी' मुझे 'आपने' इतने Points (पाइंट) पार करवाये, परन्तु मुझे यह बात कभी नहीं सूझी और सूझी भी तो अम्मा, ताऊ जी पर भार न पड़ जाये, इसीलिये कहा भी नहीं। फिर एक बात कुछ यह भी है, मेरे 'मालिक' कि मैं तो सदैव जहाँ तक होता है, अपने मन का प्रसाद 'मालिक' पर चढ़ाने में लगी रहती हूँ शायद इसीलिये इस तरफ अधिक निगाह न गई हो और मैंने यह भी सुन रखा है, कि प्रसाद कुछ भी चढ़ाया जावे, प्रेम की मिठास जितनी शामिल होगी उतनी ही मेरे 'मालिक' को पसन्द आती है और मुझे यह भी मालूम है कि हम सत्संगियों के लिये 'मालिक' को प्रेम की मिठास ही पसन्द भी है। अब 'आप' जानें, जो ठीक हो।

पूज्य 'श्री बाबूजी' मैं भी अपनी झोंपड़ी को तोड़ने की ही कोशिश में रहती हूँ, क्योंकि गर्मियों में धीमी-धीमी लगातार बरसती फुहार ही बहुत भली मालूम पड़ती है। फिर जैसी 'उसकी' मर्ज़ी व कृपा होगी, वैसा ही होगा।

'मालिक' की कृपा से मेरी दशा में अब यह हो गया है कि मैंने जो लिखा था कि "वह" हल्का होकर नज़र में इस तरह समा गया है कि जैसे निगाह में एक कुदरतन नक्शा खिंचा हुआ हो, परन्तु अब यह है कि ऐसा लगता है कि नज़र तो लुप्त हो चुकी, इसीलिये अब भाई, जो बचा है वह 'आप' जानते ही हैं।

अब कभी–कभी ऐसा होता रहता है कि जैसे 'आपने' Card (कार्ड) में लिखा है कि "मुहब्बत से मैं गिरों रख जाता हूँ" इसमें बस इतना और ज़्यादा कि फिर मैं बिक जाऊंगा, ऐसे 'आपके' पत्र की चन्द बातें, जैसे स्वप्न में 'आप' मुझे बता रहें हो रात में। ऐसा अक्सर हो जाता है। पता नहीं क्यों आज–कल सुस्ती अधिक रहती है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः–

सदैव आप की ही स्नेहासिक्ता
पुत्री–कस्तूरी

पत्र संख्या–278

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
22.2.53

खुश रहो।

तुम्हारे 8 व 14 फरवरी के ख़त मिल गये। जवाब देना इन बारीक हालतों का बड़ा मुश्किल है। बस सिवाय इसके और क्या लिखा जाय कि तुम्हारी हालत काबिल शुक्र है। प्रसाद चढ़ाना कुछ लाज़िमी बात नहीं है और कोई चढ़ाना ही चाहे तो कुछ हर्ज़ भी नहीं। बात तो यह है कि सच्चे जिज्ञासु नहीं मिलते वरना मज़ा आ गया होता और लोग रगड़–रगड़ कर ऐसी हालत भी पैदा करना नहीं चाहते कि कुछ न कुछ बन कर ही रहें। हमें तो ऐसा लगता है कि बहुत सी बातें हमारे साथ ही जायेंगी। फिर भी बहुत कुछ टूटा–टाँगा करता रहता हूँ। जब आदमी में किसी हालत का जब वह पैदा होती है, एहसास होता है तब उसको दूसरों का काम बनाने के लिये इस्तेमाल कर सकता है। इस कदर हालतें मेरे एहसास में हैं और इतने points (पाइंट्स) मेरे ख़्याल में हैं और आगे Research (शोध) भी होती जाती है। उसमें से एक–आध point (पाइंट) भी लेने की कोई शक्ति नहीं रखता और तबियत यह चाहती रहती है कि हर आदमी हर point (पाइंट) का मज़ा चखे। दूसरे मानों में मैं इतना बेकरार रहता हूँ आला से आला ब्रह्म–विद्या देने के लिये कि इसका अगर थोड़ा सा भी हिस्सा अभ्यासी अपने ज़िम्मे ले ले तो जाने क्या से क्या हो जावे। 'लालाजी' ने भी मुझसे कहा है कि "इस हद तक सीखने वाला मुश्किल से मिलेगा।" मगर ख़ैर, जितना भी जैसा मिल जाय। लोग कहते हैं कि एहसास नहीं होता, उनसे कोई यह तो पूछे कि तुमने कभी एहसास करने

की कोशिश भी की, जो हालत पैदा हुई, उसमें कभी घुसे भी? अगर वह यह कहें कि इतना माद्दा नहीं, जो एहसास कर सकें, तो यह बिल्कुल गलत है। माद्दा हर एक में है और ब्रह्म विद्या में अक्ल खुलने लगती है, मगर जब उस ताकत को कोई दूसरी तरफ़ लगा दे तो फिर क्या किया जावे। देखने में तो ऐसा आता है कि सोचने और अनुभव करने की जो सामर्थ्य पैदा होती है, उसे लोग दुनिया की तरफ़ लगा देते हैं। नतीजा यह होता है कि जिस चीज़ से वैराग्य पैदा होना चाहिये, उसमें और राग पैदा हो जाता है। यह नुक्स अभी लिखाते- लिखाते मेरी समझ में आया और यह ठीक है। वाक़ई महात्माओं की यह राय ठीक थी कि जब जिज्ञासु अपने में वैराग्य पैदा कर लेता था तब असल जौहर उसको दिया जाता था। लोग कुछ दिल से छोड़ना नहीं चाहते और कहने सुनने में आकर सिर्फ मेरे यहाँ सीखना शुरू कर देते हैं। मैं भी यह समझ लेता हूँ कि भाई फ़ायदा कुछ न कुछ ज़रूर हो जायेगा और अपने लिए उन पर मेहनत करना भी फ़र्ज़ समझ लेता हूँ, और मेरे लिये हुक्म भी ऐसा ही है।

वैराग्य अभ्यासियों में ख़ुद ब ख़ुद पैदा हो गया होता और बड़ी आसानी से, अगर वह अपनी तवज्जोह को डोर ईश्वर की ओर पूरी तौर से लगा देते। मैं यह ज़रूर करता हूँ कि मन का रुख़ ईश्वर की तरफ़ कर देता हूँ ताकि वह उस तरफ़ लगा रहे और वह लग भी जाता है। लोग क्या करते हैं कि उसको दुनियाँदारी की तरफ़ घसीटते हैं और यह हो नहीं सकता; इतना मुझको गुरु महाराज की कृपा से Confidence (विश्वास) है कि जिस मन को ऊपर की तरफ़ लगा दिया फिर वह नीचे की तरफ़ नहीं उतर सकता। नतीजा मुमकिन है यह होता हो कि उन लोगों को जो दुनियाँ के मामले में ज़्यादा दौड़ लगाते हैं, परेशानी का एहसास ज़्यादा होता हो। इसलिये कि मन ऊपर रहना चाहता है और उसको वह नीचे घसीटते हैं। Swami Vivekanand Jee:- (स्वामी विवेकानन्द जी)

"This is the most original letter, what you have written is entirely correct. People should have mind to think of it. I think vairagya should come first and that must be the duty of the taught."

स्वामी विवेकानन्द जी :--

"यह अत्यधिक विशिष्ट पत्र है। जो कुछ तुमने लिखा है बिल्कुल ठीक है। मनुष्यों को इस पर विचार करना चाहिए। मैं सोचता हूँ कि 'वैराग्य'की स्थिति पहले आनी चाहिए। वास्तव में यह प्राप्त करना अभ्यासी का कर्तव्य है।"

मैं Negation (न होने का भाव) की हालत का इस क़दर दिल-दादा (चाहने वाला) हूँ कि इसकी ख़ूबी और बड़ाई में सिवाय इसके और क्या लिखूं कि 'नहीं'

को 'है' मान लिया है। इसका मज़ा चखने वाला अभी तक जहाँ तक मेरी निगाह जाती है कोई मालूम नहीं होता। अगर मैं कहूँ तो लोग न मानेंगे, इसलिये कि जब मैं अपने आप को खुद ही नहीं जानता, तो दूसरा क्या जान सकेगा। मगर ख़ैर, यह कहता हूँ कि इस हालत का मज़ा चखाना सिर्फ हमारे 'लालाजी' ही का काम था। इससे पहले कोई ऐसी हस्ती मालूम नहीं होती कि जिसमें यह मलका हो। समझने के लिये कहो तो मैं कह दूं, मगर छोटे मुंह बड़ी बात होगी। पिछले लोगों को जाने देता हूँ, हाल में कबीर ही हुये, इसका मज़ा उन्होंने भी नहीं चखा, सिद्धि-शक्तियाँ हों यह हम मानेंगे और यह भी ठीक है कि वह अपने वक़्त में एक थे। इस हालत का मज़ा चखने के लिये चाहता हूँ कि लोग बनें, मगर लोग शुरू से कहना शुरू कर देते हैं कि बाबूजी ख़याल बहुत आते हैं और जब हम अकेले बैठते हैं तो तबियत नहीं लगती। अब उनसे कोई पूछे तो सही कि यह ख़ता किसकी है। अभी तो आप उन्हीं की ख़ता देंगी और अगर कहीं System (पद्धति) में ज़हर बाकी रह गया तो मेरी ख़ता होगी और मैं भाई क्या करूं, उनका ज़हर वैसे भी मैं खींचता रहता हूँ ताकि ख़याल ज़्यादा परेशान न करें, परन्तु भाई, उन लोगों का मैं क्या करूं और ख़याल का ज़हर मैं कैसे खींच पाऊं, जिनकी मुझे याद नहीं आती। इस ख़ता को मैं ज़रूर अपनी ख़ता कहूँगा, इसलिये कि जब वह मेरे सत्संग में हैं तो बहुत कुछ यह मेरा फर्ज़ है।

तुम्हारी will (इच्छा शक्ति) ईश्वर की कृपा से बहुत Strong (सुदृढ़) है। ऐसी कि लड़कों में नहीं होती। अगर ज़रूरत समझी तो अपने काम के ख़ातिर और बढ़ाऊंगा। तो तुम्हारी तरक्की के साथ वह Automatic (अपने आप) बढ़ रही है। Point 'L' (पाइंट - एल) की हालत में बढ़ाऊंगा और जब तुम्हें पूरी तरीके से एहसास हो जायेगा तो आगे बढ़ा दूंगा। तुम जल्दी एहसास करती चलो और मैं जल्दी-जल्दी बढ़ाता चलूं। मुझे अब तुम्हें जल्दी आगे न बढ़ाने में बेचैनी मालूम होती है। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिंतक

रामचन्द्र

पत्र संख्या-279

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 22.2.53

कृपा-पत्र 'आपका' आज मिला-पढ़कर तबियत अत्यन्त प्रसन्न हुई। तबियत में 'आपके' हर काम करने की इतनी तेज़ी आ गई कि क्या न कर डालूं। पूज्य समर्थ

श्री 'लाला जी साहब' के Dictate (डिक्टेट) से ढाँढ़स और बहुत हिम्मत बंधी। 'मालिक' मैं 'उनका' हज़ार–हज़ार शुक्रिया, धन्यवाद देती हूँ। सचमुच में जैसा 'आपने' लिखा है कि "इस हालत का मज़ा चखाना सिर्फ हमारे 'लालाजी' ही का काम था। इससे पहले कोई ऐसी हस्ती मालूम नहीं होती कि जिसमें यह मलका हो"। परन्तु बस इतना सा मैं भी अवश्य कहूँगी कि मज़ा चखने वाली भी कोई हस्ती ऐसी नहीं हुई कि जिसमें चखने का इस हद तक मलका हो। पूज्य 'श्री बाबूजी' मैं यह शब्द केवल स्तुति (खुशामद) में नहीं बल्कि अपनी अन्तरात्मा की इसी पुकार से कहती हूँ कि ऐसी महान हस्ती बस 'यहीं' है। सच कहती हूँ कि 'आपके' एक–एक शब्द मुझे एक–एक सीढ़ी चढ़ने के बल देने के समान मालूम पड़ते हैं। मैं तो जहाँ तक मेरा छोटा सा ख़याल है, यही मालूम पड़ता है कि संसार की हर चीज़ में केवल वैराग्य ही वैराग्य है। परन्तु कब? जब 'मालिक' की माधुरी मूर्ति निगाह में समा चुकी हो या जब 'उसकी' मोहिनी मूर्ति ने निगाह को चुरा लिया हो। देर नहीं बल्कि तब अंधेर हो जाता है। मैं क्या करूं 'श्री बाबूजी' मुझे तो एक–एक बात अक्सर महसूस 'मालिक' की कृपा से होती रहती है।

भाई, 'आप' मुझे खूब जल्दी–जल्दी बढ़ावें और मैं भी जल्दी–जल्दी चलती हूँ। जैसी मर्जी हो करिये। मुझे तो 'उसकी' चाह है। बेकरारी और बेचैनी तक जाने मुझमें है या नहीं, इसकी पहिचान की फुर्सत ही नहीं। क्योंकि मुझे तो ऐसा मालूम पड़ता है कि बिना घाव के ही मेरा हृदय व्यथा-मय ही हो गया है, परन्तु वह व्यथा–व्यथा की तरह नहीं है, कभी ऐसा लगता है कि यह 'मालिक' की ही दशा मेरे अन्तर में रहती है और मैं इसमें भरपूर चूर रहती हूँ। मेरे 'श्री बाबूजी' दशा तो हर Point (पाइंट) की इतनी साफ़ अनुभव में रहती है, परन्तु न जाने मैं पढ़ी कम हूँ, शायद इसी से सारी हालत निगाह में रहते हुये भी उसको ठीक तरह से Express (अभिव्यक्त) करके लिखने में भी कुछ देर हो जाती है, परन्तु मैं भी अब जल्दी कर रही हूँ, मुझसे भी अब रहा नहीं जाता। अब 'मालिक' की कृपा से जो दशा आत्मिक है, सो लिख रही हूँ।

कुछ ऐसा लगता है कि नम्रता ही मेरी दशा या मेरा रूप हो गया है और ऐसा लगता है कि इसी में मैं भिदती चली जा रही हूँ या भाई, सच तो यह है कि बरबस ही यह मुझमें भिदती चली जाती है। न मालूम कैसे एक ठंढा जोश हर समय मुझ पर छाया रहता है, जो मुझमें नमी बनाये रखता है।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो ऐसा लगता है कि निगाह का पर्दा बिल्कुल हट चुका है, साफ़ हो चुका है। कुछ ऐसा हो गया है कि एक दशा मेरी निगाह में या अन्दाज़ में हर समय रहती है और जितना मैं उसमें पैठती हूँ, सब कुछ साफ़ होता चला जाता है और तैसे ही तैसे मैं 'मालिक' के करीब होती चली जाती हूँ। अब तो ऐसी हालत है कि

किसी बात की इच्छा क़तई न जाने क्यों स्वप्न में भी मालूम ही नहीं होती। तबियत में हिलोर रहती है, शायद 'मालिक' के लिये, परन्तु हृदय पानी की सतह की तरह शान्त रहता है। और यह भी है कि तबियत तो इस हालत से कहीं आगे चलती जाती है, या यों कह लीजिये कि बरबस न जाने कैसे मैं उस दशा (ऊपर वाली) में पैठती ही चली जाती हूँ। भाई, मेरा तो यह हाल है कि 'उसे' हेरते-हेरते हृदय ही हिरा गया है, खो गया है, इसलिये बेकरारी व बेचैनी कहाँ रखी जा सकती है, मुझे नहीं मालूम। बस मैं तो अब यह बात देखती हूँ कि 'मालिक' की बेकरारी मुझे बेकरार कर रही है और 'उसकी' बेचैनी मुझे बेचैन रखती है, वरना मेरे पास तो मेरे रहने तक का तिल भर स्थान ही नहीं है, यहाँ तक कि वह ख़याल जो मैं लिखा करती थी, कि मेरे बजाय, बस केवल एक मेरा ख़याल सा तैरा करता है, सो भी अब न जाने कब एकदम गायब हो गया। अब मेरी दशा 'आप' ही जान सकते हैं। अब तो ऐसा लगता है कि जहाँ से आई थी वहाँ मैं समा कर लुप्त हो गई और 'मालिक' ने क़दम आगे चलाना शुरू कर दिया। कुछ ऐसा हुआ 'श्री बाबूजी' कि हुक्के की आग से झोंपड़ी झुलस गई और मुझे कुछ हुक्के का नशा सा अब हरदम रहता है। शेष 'आप' जानें।

बिट्टो को चार दिन से तेज़ बुख़ार है और बड़ी चेचक मालूम पड़ती है। परन्तु कोई चिन्ता की बात नहीं, कतई नहीं है। दो-चार दिन में ठीक हो जावेगी। केसर तथा छोटे भइया को भी ज़ुकाम, खाँसी है। सब दो-एक दिन में ठीक हो जायेंगे।

मेरे 'श्री बाबूजी' जहाँ तक होगा मैं 'मालिक' को प्राप्त करके ही सोलहों आने, बल्कि सत्रह आने तभी चैन होगा। मेरा 'देने वाला' ईश्वर हज़ार वर्ष बरक़रार रहे। यही युग, यही समय, मैं तो यही कहूँगी कि सृष्टि रचना से अब तक आध्यात्मिकता के लिये सबसे उत्तम है। इधर कुछ ऐसा अनुभव होता है कि 'मालिक' की कृपा से आजकल की दशा से जो भी दशा या Stage (स्टेज)Super (ऊँची) है, उससे अक्सर touch (स्पर्श) सी हो जाती हूँ, उस पर अभी पहुँची नहीं हूँ। इच्छा-शक्ति 'आपने' बढ़ती लिखी है, सो मुझे तो यह अवश्य महसूस होता है कि 'मालिक' की ताक़त पर अपना Confidence (विश्वास) दृढ़ होता जाता है।

सदैव केवल आप की ही स्नेहसिक्ता

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या–280

प्रिय बेटी कस्तूरी,

शाहजहाँपुर
24.2.53

शुभाशीर्वाद।

तुम्हारा 22 फरवरी सन् 53 का पत्र मिल गया। पहले मैं पत्र के उस भाग का उत्तर देना चाहता हूँ जिसका उत्तर देते हुए मुझे हर्ष होता है। तुमने लिखा है कि ऐसा लगता है कि नम्रता ही मेरी दशा या रूप हो गया है और ऐसा लगता है कि इसी में मैं मिटती चली जा रही हूँ। ईश्वर इसमें तरक्की दे। यह मेरी खुश क़िस्मती है कि एक हाल ऐसा मिला कि जिससे मेरे दिल को तकवियत हुई। यह वह हालत है कि जिसका कमाल Negation (न होने का भाव) की शुरूआत है। मगर Negation (निगेशन)अभी बहुत दूर है। यह चीज़ खुशखबरी ज़रूर दे रही है कि अपने कमाल पर पहुँच कर कुछ झलक Negation (निगेशन) की ज़रूर मिलेगी। मगर इसके कमाल की भी इन्तिहा नहीं। रास्ता चलकर अगर कोई ठीक जा रहा है तो यह ज़रूर है कि ईश्वर वह दिन भी दिखा देगा। अगर यह चीज़ मुझे अपनी ज़िन्दगी में देखने को मिल गई किसी में, तो मैं नहीं कह सकता कि मेरी तबियत ऐसे अभ्यासी को न मालूम किस ठिकाने पर पहुँचा दे और सच तो यह है कि Negation (न होने का भाव) भी अगर नसीब हो गया तो भी अभी इतना बढ़ाना रह जाता है कि लाखों वर्ष भी कम हैं। और फिर भी भाई, न जाने क्या–क्या है, कहाँ तक लिखूं। मैं तो समझता हूँ कि यह मेरा कहना धुरंधर महात्मा समझेंगे कि कुछ नहीं है, तब तो न होनी को होनी बतला रहा है और यह सही भी है। अगर मैं होता तो न होने का ख़याल पैदा न होता, इसलिये कि न होने की याद इस कहने से ताज़ा करता हूँ। बात यही है कि न होते हुए, न होने का ख़याल, न आवे और यह हालत Negation (निगेशन) के कमाल की है। जब इस हालत पर अभ्यासी जाय तो सच पूछो मुझे आनन्द इसके बाद की तालीम में इतना आवेगा कि मेरे पास वह शब्द नहीं है कि मैं बयान कर सकूं और आनंद क्या बस यही आनंद कि एक व्यक्ति ऐसा मिला तो कि गुरु महाराज की रखी हुई अमानत बंटाने वाला हुआ। Swami Vivekanand Jee:–

"रामचन्द्र! लोग कैसे कह देते हैं कि तुम्हें कुछ आता जाता नहीं। I would have torn to pieces all my writings. So far I have written before these two sentences. A doctor really you are. No body can doubt. Such a high thought no body can guess even, but you are depicting before the dumb millions, I got a man, I require. My whole life of penance is

over now. He is the Master, a big Master. Go on writing. The time will come when people will understand these things, but publication must be made after you and who ever comes forward for the publication of these writings, his liberation is sealed. Think him to be liberated. That is the reward rarely found, I give him."

स्वामी विवेकानन्द जीः–

"रामचन्द्र! लोग कैसे कह देते हैं कि तुम्हें कुछ आता नहीं। तुम्हारे इन दो वाक्यों के सामने मैं अपनी समस्त पुस्तकें फाड़ कर फेंक सकता हूँ। तुम निश्चय ही 'दर्शन' के विशेषज्ञ हो। किसी को इसमें सन्देह नहीं। इतने उच्च विचार आज तक कोई सोच भी नहीं सकता परन्तु तुम इन्हें इन लाखों गूंगे–प्रायः मनुष्यों के सामने रख रहे हो; मैंने ऐसा व्यक्ति पा लिया है जिसकी मुझे इच्छा थी। मेरे जीवन की समस्त तपस्या अब पूर्ण हो गई है। 'वह' मास्टर है, एक महान् मास्टर। लिखते रहो। समय आयेगा जब लोग तुम्हारे लेखन को समझेंगे परन्तु इसकी छपाई तुम्हारे बाद ही होनी चाहिए। जो भी व्यक्ति इस कार्य के लिए आगे आयेगा, उसको मुक्त हुआ समझो। इस प्रकार का इनाम कभी ही प्राप्त होता है। मैं उसे दूंगा।"

मैं यही कहूँगा कि उनके पास समझ नहीं जो इसको समझे। हाँ यह ज़रूर है कि तफ़सीर कोई करके दिखा दे। यह मैं उन लोगों से कहता हूँ जो इसके Writings (लिखी हुई पुस्तकों पर) एतराज़ करते हैं या defects (बुराइयाँ) समझते हैं। ज़माना चाहिये इसके समझने के लिये। तुमने जो वैराग्य के बारे में लिखा है, वह सही है। अगर ईश्वर की तरफ़ इन्सान पूरी तौर से लग जाता है तो फिर वैराग्य ही वैराग्य है और कहीं किसी रूढ़ी सूरत पर कोई लग गया तो दुनियाँ से नहीं बल्कि अपने से भी वैराग्य हो जाता है। Conciousness of body (शरीर का भान) तो जाती ही रहती है और यह इसका एक अदना करिश्मा है। Conciousness of Soul (आत्मा का मान) भी जाने का नम्बर आ जाता है। फिर क्या है, मुर्दा के नहलाने वाला जिधर चाहे उसे फेर दे। हालतें आगे ऐसी आती हैं कि उसको शब्द ज़ाहिर नहीं कर सकते, मगर फिर भी तुम बहुत कुछ Express (अभिव्यक्त) कर लेती हो सोलहों आने भर 'मालिक' को हासिल कर लेना इतनी मुश्किल चीज़ नहीं है जैसी कि दिखलाई देती है। मगर भाई सत्रह आने भर जैसा कि तुमने लिखा है, मैं न कर सका, मुमकिन है कि तुम कर ले जाओ।

सीता ने एक तोता पाला और वह उससे बहुत मोहब्बत करती थी और राजा जनक सीता से मोहब्बत करते थे। नतीजा क्या हुआ कि राजा जनक तोते से मोहब्बत करने लगे। तोता दुखी होता था तो सीता को दुख होता था और जब सीता को दुःख होता था

तो राजा जनक को भी दुःख होता था। अब तुम बताओ कि इतना बड़ा ऋषि दूसरे मानों में तोते से लगाव रखता था। हमसे अगर पूछो तो हम यही कहेंगे कि वह इन्सान ही नहीं, जो दूसरे के दुःख-दर्द को देख कर दुःखी न हो। महात्माओं को भाई जाने दो। उसमें तो ऐसे अव्वल दर्जे के वैरागी मिलते हैं कि कहते हैं कि माँ-बाप, पुत्र-परिवार, सब शत्रु के समान हैं। तो भाई, मुझे तो कोई ऐसी महात्मागीरी दे तो सौ बार 'लाहौल' पढ़ने के लिये तैयार हूँ। अब उन महात्माओं की तालीम पर गौर करो कि कितने बड़े राग की तालीम देते हैं, जिसका नतीजा सिवाय तबाही के और Moral-Stamina (नैतिक आन्तरिक बल) खराब कर देने के और कुछ नहीं होता। हम शत्रु समझने की आदत डाल रहे हैं। हम जब यह आदत डाल रहे हैं तो मुमकिन है हमारे ख़्यालात खुद ऐसे औज़ार बन जायें कि हमारे खून से अपने आपको रंग लें। ख़ैर, अब इसको ज़्यादा बढ़ाऊंगा नहीं-मतलब पर आता हूँ।

बच्चों ने एक कुत्ता पाला और वे उससे मोहब्बत करते थे। मुझे भी उसका लिहाज़ हो गया और वह 27 जनवरी को गुज़र भी गया। उसकी ज़िन्दगी में एक ऐसा वाकया गुजरा कि उसकी किस्मत से स्वामी नारदानन्द शाहजहाँपुर आये। उन्होंने लेक्चर दिये और लोगों को अच्छी-अच्छी बातें समझाईं। मेरे घर के क़रीब जलसा था और माइक्रोफोन लगा हुआ था और कुछ आवाज़ भी उनके लेक्चर की आ रही थी। उनके सामने Public (जनता) थी और मेरे सामने वह कुत्ता। सोचा कि भाई वह इतनी Public (जनता) को होशियार किये जा रहे हैं, यानी वह हक़ महन्तगीरी जो इन्सान ही तक महीत समझा जाता है, अदाकर रहे थे। चूंकि वह इन्सान हैं, उनको हमदर्दी इन्सान से होना चाहिये और भाई यह तो अपने यहाँ कहा ही गया है कि जो इन्सान ईश्वर की इबादत नहीं करता वह जानवर के समान है, तो भाई इस लिहाज़ से तो मैं भी जानवर की तारीफ में आता हूँ, इसलिये कि मुझसे 'उसकी' इबादत नहीं होती। जब इन्सान अपने हमजिन्स के फ़ायदे के लिये खड़ा होता है तो मेरी भी तबियत चाही कि मैं अपने हमजिन्स को फ़ायदा पहुँचाऊं। स्वामी जी जब अपने फर्ज़ से नहीं चूकते, तो मैं अपने फर्ज़ से क्यों चूकूं। एक महात्मा के आने पर मुझे इतना फर्ज़ तो सीखना ही चाहिये था। चुनांचे मैंने भी अपने हमजिन्स को फ़ायदा पहुंचाया और फ़ायदा क्या पहुँचा? जो एक जानवर को जानवर से पहुँचता है। जानवर में Intellect (बुद्धि) नहीं होती और भाई Intellect (बुद्धि) मुझमें भी अब नहीं रही। लिहाज़ा इन मानों में मुझमें और कुत्ते में कोई फ़र्क नहीं। चुंनाचे उसको Beyond Intellect (बुद्धि से परे) फ़ायदा पहुँच ही गया। Swami Vivekanand Jee:-

"Is it the writing of a common man? It is full of Philosophy".

स्वामी विवेकानन्द जी :–

"क्या यह एक साधारण व्यक्ति का लेखन है? यह 'दर्शन' से भरपूर है।"

अब चूंकि मास्टर साहब को मैंने यह लिखा था कि वह Brighter World की तरफ़ जा रहा है और अपने संस्कार के गिलाफ़ उतार रहा है। लिहाज़ा उसके नतीजे को भी इतला देना वाजिब था, चुनांचे कल तारीख 26.3.53 को 8.40 P.M. पर वह Brighter World में पहुँच गया और उसने जो संस्कारों का गिलाफ़ उतारा, उन संस्कारों ने मेरी तरफ़ रुख़ कर दिया, कुछ झलक आ गई और भाई मैं भूल गया कि 'लालाजी' ने फ़ौरन संस्कार जला देने का हुक्म दिया। अब जो दो–एक आ गये सो आ गये–मजबूरी है, वह मेरे दिल पर जमा हैं और उसमें फ़िक्र की ज़रूरत ही क्या। फ़ायदा तो उसे हो गया। अब चूंकि मैंने "लालाजी" साहब से इसके लिये पूछा नहीं था। आगे वाला टुकड़ा मैं यह लिखना चाहता था कि मेरी जुर्रत फिर कब पड़ सकती है कि मैं 'लाला जी' से प्रार्थना करूं कि इसको साफ़ कर दीजिये। इतने में एक मिनट के लिये 'लालाजी' साहब ने मुझे बुला लिया– अब कहो कि मोहब्बत 'लालाजी' करते हैं या मैं उनकी।

तुम्हारे ख़त में बहुत सी बातें जवाब देने लायक थीं–मैंने मुख़्तसर लिख दीं। 26.2.53 को मैंने तुम्हें 'M'(एम.) के मुकाम पर खींच दिया।

शुभचिंतक

रामचन्द्र

पत्र संख्या–281

लखीमपुर

26.2.53

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी',

सादर प्रणाम।

मेरा पत्र पहुँचा होगा। शायद 'आपको' जो थोड़ी सी साँस की तकलीफ़ मालूम हुई थी, वह ठीक हो गई होगी। बिट्टो का बुख़ार उतर गया–चेचक भी ठीक हो गई, मगर अभी पपड़ी है, सो भी दो–चार दिन में ठीक हो जावेगी। बड़े भइया को दिल्ली से रोहन भाई साहब ने बुलाया है। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, चलने की हिम्मत बहुत आ गई है, यह सब केवल मेरे 'मालिक' की कृपा और 'उसी' की देन है। अब तो न जाने क्यों थोड़ी हो तो मैं कह नहीं सकती, वरना 'मालिक' ने ऐसा लगता है कि Worldly feelings (संसारी अनुभूतियों) से क़रीब–

क़रीब बिल्कुल अलग कर लिया है, अब जो है वह शायद शरीर को यहाँ (संसार में) रखने के कारण है, ख़ैर, 'अपनी' बातें वही जानें। अब मैं शायद 'उसी' की कृपा से यह कह सकती हूँ कि 'मालिक' 'तूने' सब तरह की इच्छाओं को ख़त्म कर दिया है, यहाँ तक कि मैं तो अब इतनी अनभिज्ञ हूँ कि यह (यानी इच्छा) कोई बला है, मेरी समझ के बाहर की बात है। मुझमें अब कुछ नहीं है, अब तो 'वहीं' जाने, जो मर्ज़ी हो करें। मुझे इस तरफ़ यानी संसार की ओर से तो एक बस नशे की पिनक में जितना होश आदमी को रहता है शायद उससे कुछ कम ही हो, नहीं नहीं जितना 'वह' चाहता है, ज़बरदस्ती बस उतना ही होश 'वहीं' इस ओर किये है। मेरा तो अब यह हाल है कि ऐसा लगता है कि 'मालिक' मुझे अपने देश लिये जा रहा है, बस ऐसा लगता है कि मार्ग के और देशों की हवा खिलाते हुए जल्दी से टहलाते हुए लिये जा रहा है। अब तो यह हाल है कि "अपनी बातें तुम सब जानो, मैं तो चली 'पिया' के देश।"

मेरे 'श्री बाबूजी' ऐसा लगता है कि 'मालिक' पर मेरी सारी क़लई खुल चुकी है। कुछ ऐसा लगता है कि सारी वृत्तियाँ वगैरह का तो मेरे आस-पास कहीं पता ही नहीं रह गया, सब कुछ छूट गया, सब कुछ मौन हो गया दीखता है। समस्त ब्रह्माण्ड मुझे केवल या मेरे लिये मौन ही मौन दीखता है। सब तरफ़ से आँख मिच चुकी। सब तरफ़ सब कुछ शान्त हो गया। सारी चहल पहल शान्त हो गई, मानों मुझे 'उसके' देश जाते देख कर अफ़सोस में सब चुपचाप खड़े रह गये। बहुत दूर तक मुझे देखते रहे, परन्तु मैं ओझल हो गई। अब कुछ ऐसा महसूस होता है कि मार्ग के सब देशों की हवा खाकर, टहल- टहला कर अब मैं 'मालिक' के देश की सरहद में या भाई सरहद पर आ गई और अब तो सचमुच यह मुझे अपना देश ही दिखाई देता है। मुझे और किसी से कुछ मतलब नहीं। भाई, अब तो ऐसा लगता है कि यहाँ पर गूंगे की गुड़ सी हालत लगती है। इसलिये सब तरफ़ सब कुछ मौन है, बस अब ऐसी ही मेरी दशा है।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो ऐसा लगता है कि अन्तर में या भाई आत्मा में अक्सर इतना हल्का, शुद्ध परन्तु तीव्र आनन्द रहता है कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं। मैं तो 'उसके' और करीबतर हो गई हूँ। यदि वह आनन्द 'मालिक' की कृपा से फूट निकले, तो सम्भव है, मेरा हृदय फट जावे और मैं उसमें बही चली जाऊं, परन्तु मैं अपने 'मालिक' की कृपा की हर बात खूब जानती हूँ, कि 'वह' तो मुझे 'अपने' में बहावेगा और मैं भी 'उसी' में बहूँगी और अवश्य बहूँगी इसी कारण 'वह' बन्दिश लगाये है, फूटने नहीं देता और इसी लिये मैं भी उस बन्धन को लिये बैठी हूँ। मेरा हृदय फूटने को बेकरार रहता है, परन्तु 'उसमें' मिलने को। किसी तरह ऐसा हो-जी बेताब रहता है। निगाह जल गई, बुद्धि बहरी हो गई, कुछ नहीं रहा 'श्री बाबूजी' अब कुछ न रहा, जो है 'वह' 'आपके' सामने

है और वह 'आप' हैं। परन्तु आनन्द मेरे लिये एक पहेली है, मैं नहीं कह सकती कि 'उससे' मिलने को जाने की खुशी है या शीघ्रातिशीघ्र जाऊंगी, इसका जोश है या भाई, बेकरारी, एक प्रकार का आनन्द है, वह है। वैसे ठीक तो 'आप' जानें। परन्तु मुझे तो तीसरी बात जंचती है, यानी बेक़रारी वाली। क्योंकि आनन्द व खुशी लफ़्ज़ न जाने क्यों मुझे इस दशा के लिये अच्छे नहीं मालूम पड़ते। नहीं, नहीं, भाई मेरे दिमाग़ पर तो एक अजीब सूक्ष्म सा नशा है। भाई, ऊपर मैंने जो बन्दिश के लिये लिखा है, वह 'मालिक' की कृपा से Moderation (साम्यावस्था) की बन्दिश है, वैसे 'आप' जानें, क्योंकि अक्सर मैंने लिखा है कि दशा भीतरी हमेशा पानी की सतह की तरह ही रहती है।

'आपने' पत्र में लिखा था कि "जब आदमी में किसी हालत का जज़्बा पैदा होता है, तब उसको दूसरों का काम बनाने के लिये इस्तेमाल कर सकता है" सो मैं क्या करूं, कृपया लिखियेगा या मास्टर साहब जी को बता दीजियेगा।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

पुत्री–कस्तूरी

पत्र संख्या–282

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 2.3.53

तुम्हारा खत 27 फरवरी सन् 53 का मिल गया। तुम्हारी will (इच्छा –शक्ति) बहुत strong (प्रबल) है, मैं लिख चुका हूँ, मगर फिर भी शायद एक हफ्ता कम या ज़्यादा गुज़रा होगा, मैंने कोई 5 या 6 सेकण्ड will (विल) बढ़ने की तवज्जोह दी थी। मैंने तुम्हें बतलाया भी था और तुम्हारे पास नोट भी है कि Efficacy of Rajyog (एफीकैसी ऑफ राजयोग) में जो पहले Diagram (चित्र) में दिल का Lower region (निचला भाग) ज़ाहिर किया है, उसमें तवज्जोह देने से will (विल) बढ़ जाती है, मगर बहुत थोड़ी देर तवज्जोह देना चाहिये, कुछ Seconds (सेकेन्ड्स) काफ़ी होंगे। यह चीज़ मैंने Efficacy of Rajyog में ज़ाहिर नहीं की, इसलिये कि लोग उस पर Meditation (ध्यान) करके Hypnotic Power (सम्मोहन शक्ति) न बढ़ा लें जो आध्यात्मिक–विद्या के बहुत कुछ खिलाफ़ है और उल्टी चीज़ है। मुझे बड़ी खुशी हुई तुम्हें worldly feeling (दुनियावी एहसासों) से छुटकारा मिल गया और इच्छायें ख़त्म हो गईं। यह बड़ी अच्छी हालत है कि जितना ज़रूरत हो उतना ही होश रहे।

मगर तुमने गौर नहीं किया कि बेख़बरी रहते-रहते बेख़बरी में बाख़बरी शुरू हो जाती है और यह हालत बेहोशी से कहीं अच्छी है। आगे चलकर इसका बोझ भी नहीं रहता।

तुमने यह जो लिखा है कि "वृत्तियों का कुछ पता भी नहीं रह गया" यह ठीक है। मगर भाई जब ईश्वर कहीं किसी की Negation (न होने का भाव) की हालत पैदा कर दे, फिर तो यह भी नहीं रहता। शब्द नहीं कि इसको वर्णन कर सकूं। न फिर मिठास रहती है और न तुर्शी। समझने के लिए Vacuumise (ख़ाली) कह लो कि इन्सान Vacuumise (ख़ाली) हो जाता है। मगर Scientists (वैज्ञानिक) यह बता रहें हैं कि पूरी तौर से जब हवा आले के ज़रिये से निकाली जाती है तो फिर भी हवा कुछ बाक़ी रह जाती है। मेरा कहना यह है कि अगर कहीं कोई आला ऐसा ईज़ाद हो जाये कि किसी कमरे या गोले में से हवा अगर बिल्कुल कहीं निकाल ली जाय तो वह जान ही जान रह जायेगा और इतना बड़ा Destructive Weapon (विनाशकारी हथियार) बन सकता है कि उससे ज़्यादा Destructive Weapon (डिस्ट्रक्टिव वैपन) आज तक ईज़ाद ही नहीं हुआ। अब हमें इन्सान को ऐसा Vacuum (ख़ाली) बनाना है। अगर कहीं ऐसा बन गया तो वह एक Gigantic Battery (विशाल बैटरी) हो जाता है और जिस तरफ़ Will (इच्छा-शक्ति) बन जाती है, ताक़त उसी तरफ़ काम करने लगती है। मगर भाई, ईश्वर बड़ा होशियार है। ऐसे आदमी की इस हद तक Will (विल) बंधने ही नहीं देता। अगर कहीं Accidentally (अकस्मात्) बंध जाये तो ऐसी हज़ारों दुनियाँ एक Second में छिन्न-भिन्न कर सकता है। यह तो Negation (निगेशन) का हाल मैंने बताया है, मगर Negation रहते हुए भी उसको अगर भूल जाये, यानी उसका एहसास न रहे, तब तो मैं यही कहूँगा कि उसमें एक छिन में Spiritual giant (आध्यात्मिक-हस्ती) बनाने की ताक़त पैदा होती है और भाई कहीं मुझे ईश्वर इससे आगे चलने वाला पैदा कर दे। अफ़सोस है कि मैं यह चीज़ें किसको दिखाऊं मुझे इस हद तक कोई हिम्मत नहीं दिलाता। ईश्वर करे अगर इससे ज़्यादा न सही तो इतनी ही चीज़ मुझसे ले ताकि मैं बहुत न सही गुरू-ऋण से कुछ थोड़ा ही उद्धार हो सकूं। वाक़या यह है कि हाथ मल के रह जाता हूँ और फ़िकर यह है कि कहीं यह चीज़ मेरे साथ ही न चली जाय। इससे ज़्यादा न सही, कम से कम इतनी ही चीज़ पैदा कर लें, ताकि दूसरों को इसी हद तक ले आवें। मैं तो इस चीज़ के देने के लिये यहाँ तक Over flooded (सीमा से अधिक उत्साहित) रहता हूँ कि कोई मुझसे अपने घर का कुल काम जो नौकर करते हैं ले ले और इसी के एवज़ में मुझसे यह चीज़ें ले ले। मगर भाई मैं एक मज़मून के तरीके से यह चीज़ें कह जाता हूँ मुमकिन है इसीलिये दूसरों पर इसका कुछ असर न रहता हो।

जैसा कि मैंने ऊपर लिखा है, कि अगर ईश्वर इससे आगे चलने वाला पैदा कर दे, तब तो मैं अपनी क़िस्मत की सराहना करूँ और ऐसी उजड़ी हुई बस्ती की सैर कराऊं जहाँ जनून का भी गुज़र नहीं। मगर भाई क्या करूँ, इन्तिहा मुझको कहीं 'मालूम नहीं पड़ती।' इससे आगे कोई मुझसे सीख जाये और मैं सिखाये जाऊं। भाई, Negation (निगेशन) भी हमारा Goal (लक्ष्य) नहीं है। हमारा जो Goal (लक्ष्य) है, वहाँ के लिये हम इतना ही कह सकते हैं कि सिर्फ़ भूमा का ही गुज़र है यानी यहाँ पर ज़ात ही ज़ात है। लोग Liberation (मुक्ति) के पीछे पड़ते हैं और अच्छा है कि इससे वाक़ई छुटकारा आवागमन से मिल जाता है और लोग इसी को Preach (उपदेश देना) करते रहे। ज़रा कोई निगाह उठा कर तो देखे तो पता चलेगा कि Liberation (उपदेश) महज़ उसका तलछट है। कभी कुछ Hint (इशारा) मेरी जुबान से उस हालत का निकल भी गया, इत्तिफ़ाक से किसी Polished Spiritual (बनावटी) के सामने, तो नतीजा यही हुआ कि उसने मुझे नावाकिफ़ ही समझा। यही वजह होगी कि ऐसे राज़ बतलाये नहीं जाते और मैं तो भाई बतला देता हूँ, उनकी राय मेरे बारे में बहुत कुछ सही है। अगर मुझमें नावाकफ़ियत ही होती तो मुमकिन था कि इस हालत तक न पहुँच सकता, क्योंकि यहाँ पर नावाकिफ़ों ही का गुज़र है। ज़रा सोचो तो सही, मुमकिन है यह कुफ़्र हो कि यह लफ़्ज़ क्या ईश्वर की असल तारीफ़ में नहीं आता। लोग इसको सोचने ही क्यों लगे। उनके ख़्याल में क्षीर-सागर और विष्णु भगवान और लक्ष्मी घूम रही हैं। हालांकि वह यह नहीं समझे कि यह चीज़ कैसे आ गई। भाई, यह सब दिल की हालतें हैं और इसी में विष्णु भगवान बेचारे मजबूरन रहते हैं। उनको कोई ऐसा नहीं मिलता कि उनको इस हालत से निकाले। बंधन की चीज़ का ख़्याल करने से भी बंधन में एक कड़ी लगा देता है। मज़मून तूल ज़रूर हो जायेगा वरना यह चीज़ इस वक़्त निगाह में आ गई। मुख़्तसरन कहे देता हूँ:-

दिल हमारा क्षीर-सागर है। मगर उसमें वासना का साँप मौजूद है, जो हमारे असल को फन से छुपाये हुए है। लक्ष्मी भी मौजूद है, गोया यह दूसरी कड़ी है, और हमको निजात इसलिये नहीं मिलती कि एक तरफ़ हममें केंचली-वृत्ति भी मौजूद है। पाँव दबाना विष्णु भगवान के माने यह रखता है कि वह असर जिस पर साँप का फन है, उसकी दासी वाक़ई यह कंचन है। अब उसमें जो लहरें या तरंगे हैं, जो समुद्र में पैदा होती हैं, हम अगर उनको दूर कर दें तो सतह बराबर हो जायेगी। फिर हमको मौका मिलेगा कि इन बंदिशों को काट सकें क्योंकि हममें ताक़त भी आ जावेगी। असलियत जो दिल में छिपी हुई है, इसी को Mythologically (पौराणिक) विष्णु करार दे दिया है। हम जब वासनाओं का साँप दूर कर देते हैं, तो विष्णु भगवान के दर्शन प्राप्त होते हैं। यानी हममें भी यह ताक़त आ जाती है कि हम दूसरे की रूहानी-परवरिश कर

सकें। अब चूंकि विष्णु का काम पालन–पोषण है, लिहाज़ा उसके लिए लक्ष्मी या कंचन की भी ज़रूरत है। अब विष्णु भगवान की Strength (शक्ति) भी आप पर रौशन हो गई कि बेचारे पालन–पोषण में दुःखी हैं। मैंने बहुत संक्षेप में लिखा है, क्योंकि दिमाग ज़्यादा काम नहीं देता। कभी ज़ुबानी समझ लेना यदि चाहो। जो शख़्स विष्णु भगवान की पूजा करना चाहते हैं, वह अपने दिल की तरफ़ रूजू हैं, बस यही उनकी पूजा होगी। जब उस चीज़ को तय कर लिया तो और चीज़ शुरू होने लगती है।

तुम्हारे खतों को देखकर मेरी यही तबियत चाहती है कि मैं लिखता ही रहूँ। तुम्हारे हाल और कैफ़ियत का तो मैं जवाब दे चुका, मगर इन्तहाई हालत के पहुँचे हुए की मैं तारीफ़ भी कर दूं ताकि पढ़ने वालों को सम्भव है ख़्याल की रग में हरकत पैदा हो जाय और इस हद तक पहुँचने की कोशिश करें। वैसे तो सब ईश्वर ही के हाथ में है कि 'वह' जिसे चाहे अपनी तरफ़ खींच ले और जो चाहे वह उसे दे दे। मगर कोशिश करना हमारा फ़र्ज़ ज़रूर है ताकि 'उसको' भी खबर हो जाये कि कोई बंदा 'उस' तक पहुँचना चाहता है। Negation (निगेशन) की मैंने इन्तिहा बतला दी। जब इन्सान इन्तिहा की भी इन्तिहा को पहुँच जाता है, चलना फिर भी बाकी रहता है। जो शख़्स इन्तिहा की इन्तिहा को पहुँच गया और हर परमाणु जिस्म का इन्तिहाई ताक़त पर आ गया। हर Joint (जोड़) और हर गुत्थी ने इन्तिहाई कमाल को हासिल कर लिया। फिर क्या होता है? कुदरत का ख़ास औज़ार तो वह बन ही जाता है (गो यह बात ईश्वर के हाथ में है कि वह ऐसा आदमी बना दे) उसको सब कुछ अख़्तयारात होते हुए भी उसे बेखबरी ही रहती है। मगर ईश्वरीय काम के लिये जो चीज़ ज़रूरी है, उससे बेखबर नहीं रहता। यह और बात है कि अपनी इन्तहाई हालत का बोध सिवाय ख़ास सूरत में उसके अन्दाज़ में आवे। उसके हाथ में कुल Universe (विश्व) का इन्तज़ाम होता है और सब ईश्वरीय ताक़तें उसके मातहत होती हैं जैसा कि मौजूदा Personality (दैवी व्यक्तित्व) का हाल है जो कोई भी हो। Efficacy of Rajyog (एफीकैसी ऑफ राजयोग) में मैंने ज़िकर कर दिया है कि ऐसी Personality (दैवी व्यक्तित्व) मौजूद है। अवतारों को सिर्फ़ Destructive Programme (विनाश करने का कार्यक्रम) दिया जाता है, जैसा कि पुरानी किताबों से भी पता चलता है। Constructive Programme (रचनात्मक–कार्यक्रम) उनके हाथ में नहीं होता। अब मौजूदा Personality (परसनैलिटी) जो है, उसके हाथ में यह दोनों Programme (कार्यक्रम) हैं और वह अपनी मदद के लिये आदमी भी बना लेता है। अवतार के हाथ में तलवार भी होती है और उसके हाथ में तलवार नहीं होती, बल्कि Circumstances (स्थितियाँ) ऐसी पैदा कर देता है कि नतीज़ा यही हो। अगर मौजूदा Personality (परसनैलिटी)

यह ज़रूरत समझे कि ख़ून बहाने वाले अवतार की भी ज़रूरत है तो यह उसके बिल्कुल हाथ में है कि वह आयंदा अवतार आने का इन्तज़ाम कर जाये, अर्थात् उसके हाथ में है कि वह उसका इन्तज़ाम अभी से कर दे यानी अपनी ज़िन्दगी में। अब सोचो तो सही लोग इस ज़माने में कुंडलिनी जगाने की फ़िक्र में ज़्यादा रहते हैं, मगर इस चीज़ पर निगाह किसी की नहीं जाती। बकौल 'कबीर' के "सब जग अन्धा, मैं किसे समझाऊं"। अवतार बुलाने की मैं तरकीब भी लिखे देता हूं। बहुत मोटी सी है, इसलिये कि लोगों को यह तरकीब भी मालूम हो जाये।

हमारे यहाँ अवतार पर लोग अभ्यास से दिलचस्पी नहीं रखते। मुमकिन है कि इस करिश्में में ही दिलचस्पी पैदा हो जाय और वह हर रोज़ एक अवतार बुला लिया करें, क्योंकि तरकीब बहुत मामूली है, मगर अपनी ताकत और Will (इच्छा शक्ति) की मातहत ज़रूर है। तरकीब बस यह है कि ऐसी Personality (दैवी व्यक्तित्व) जब मुनासिब समझती है कि अवतार आना लाज़मी मालूम होता है तो वह यह करेगी कि 'भूमा' के करीब जो Circle (सर्किल) कि उसको मुहीत किये हैं और जहाँ से कि Power (शक्ति) पहले मरतबे नीचे को उतरी, वहाँ पर वह ऐसा Vacuum (ख़ालीपन) पैदा कर देगा कि जो Time (मरतबे) कि मुकर्रर किया है, उस Time (समय) के अन्दर उसका नीचे उतरना शुरू हो जायेगा। आते–आते जिस वक्त वह महामाया के दायरे में आवेगा एकदम से उसमें उस मुकाम की ताकत जितनी ज़रूरत है, भर जावेगी। मगर उसका दायरा कायम रहेगा, उस वक्त तक, जब तक कि महामाया का मुकाम वह छोड़ न दे। अब जब महामाया का मुकाम छोड़ दिया, गोया उसका आना शुरू हो गया। नीचे उतर कर उसमें Godly Mind (ईश्वर–मन) का भी असर भरपूर हो गया, इसलिए कि ऐसा Vacuum (ख़ालीपन) जिसकी ज़रूरत थी 'धुर' पर बनाया। अब उसको छोड़ के ही पारब्रह्म–मंडल और ब्रह्ममंडल में गुज़रता हुआ और ताकत लेता हुआ अब दुनियाँ में अवतीर्ण हो जायेगा और यह सब Vacuum (वैक्यूम) बनाने का असर है। उसको ज़िन्दगी महामाया के मुकाम पर मिलती है और जब वह Vacuum महामाया मुकाम पर पहुँच जाता है तो वही ताकतें उसमें पैदा होती हैं जिसकी ज़रूरत है। मैं इस चीज़ को बड़ी मुश्किल से Express (अभिव्यक्त) कर पाया हूँ। इससे उम्दा मुझे शब्द नहीं मिले, क्योंकि बेपढ़ा आदमी हूँ। आप लोग भी मुमकिन है इसके Expression (अभिव्यक्ति) के लिये अच्छे लफ़्ज़ ढूंढ़ सकें। मुमकिन है कि चौबे जी भी इसमें मदद दे सकें, इसलिये कि उन्होंने धार्मिक Literature (साहित्य) बहुत पढ़ा है और मुमकिन है इसका इशारा कहीं उन्हें मिल भी जावे। अगर मिल जावे तो मुझे भी लिखें। हालाँकि यह कोई कायदा नहीं कि पिछले महात्मा जो कुछ कह आये हैं, उसके आगे कोई और बता न सके। है वही जो मैं कहता हूँ। तरकीब मुमकिन है कि

इससे बेहतर किसी को और मिल जावे, क्योंकि बड़े-बड़े स्वामी यहाँ पर मौजूद हैं और भाई मैं तो उनके सामने एक नाचीज़ और अदना और गुमशुदा हस्ती हूँ। ख़ैर, इससे ज़्यादा जो जानना चाहे इसके बारे में, तो उसे चाहिये कि वह खुद कोशिश करे। इन्सानी ताकत और पहुँच का अन्दाज़ा लगाइये कि ईश्वर ने अवतारों का बुलाना भी इन्सान ही के हाथ में रखा है। सच तो यह है कि जहाँ तक इन्सान की पहुँच है, अवतार की भी नहीं हो सकती। हमें ऐसा इन्सान बनना चाहिये और भाई अगर ऐसी Personality (दैवी व्यक्तित्व) कहीं ईश्वर किसी के सामने खड़ी कर दे तो फिर उस शख़्स का कहना ही क्या। अगर मोहब्बत है तो नहीं मालूम क्या से क्या वह दे देवे। मैं आप लोगों से यही प्रार्थना करूँगा की ऐसी Personality (दैवी व्यक्तित्व) की खोज में रहिये कि अगर कहीं मिल गई तो 'उसकी' एक निगाह में कीमियाँ बन सकती है। मुझे तो भाई, फ़िक्र यों नहीं रही, मुझे जैसी शख़्सियत की ज़रूरत थी और जैसी तालीम मुझको होना बदी थी, मुझे मिल गई। अब अपनी-अपनी आप जाने। हज़रत किब्ला (लालाजी साहब):-

"भाई, मैं इस लिये कहे देता हूँ कि यह मौका बार-बार नहीं मिलेगा। चाहिये कि इस वक्त में इन्तिहाई पहुँच अपनी हासिल करो। क्या यह ख़्यालात आपने कहीं और देखे? क्या यह ज़ज़्बा आपने कहीं और पाया? भाई बड़ी क़िस्मत से ऐसा आदमी मिलता है और फिर ऐसे वक्त में। अगर ऐसा आदमी मिल जाये और उसकी तालीम नसीब हो तो बड़ी खुशकिस्मती की बात है। मैंने तो कुछ नहीं रखा जो इसको Ramchandra (रामचन्द्र) को दे न दिया हो और अब भी मेरा यही हाल है, जो मिलता है, बराबर दे देता हूँ। तुम लोग भी ऐसी ही कोशिश करो कि मेरा सा ज़ज़्बा 'इसके' दिल में पैदा हो जाय और यह सब तुम्हारे हाथ में है। यह बड़ा Important (महत्वपूर्ण) खत है। इसकी दो एक नकलें preserve (रखना) करना चाहिये।"

प्रार्थना लाजमी चीज़ है, जो मैंने उर्दू किताब में दे दी है और यह सोते वक्त ज़रूर हर भाई को करना चाहिए और कहीं इसको दिल से, प्रेम से कर गये तो फिर तरंग का खटका ईश्वर ने चाहा न रहेगा। यह भाई अवतार लाने की ताकत, जो मैंने लिखी है, अब तक, जहाँ तक मेरा Vision (दृष्टि) पहुँचता है, जिसको किस्मत में थी उसी को मिली। Swami Vivekanand Jee:-

स्वामी विवेकानन्द जीः-

"As far as my inward vision goes and the experience of the Brighter world as well, I have not found Such person since the beginning of the world. Bluffing should be neglected in future. Be

plain in your words. Who is that person? Say that you are. What ever has been written in this letter is correct in toto. This is the common letter for all. It must be copied and published when time comes.

"जहाँ तक मेरी दृष्टि जाती है यहाँ तक कि दिव्य–लोक में भी तुम्हारे जैसा दिव्य–व्यक्तित्व मैंने कहीं नहीं पाया है –सृष्टि के आरंभ से लेकर अब तक। भविष्य में दूसरों को धोखे में मत रक्खो। अपने वचनों में सच्चाई रक्खो। 'वह' कौन व्यक्ति है? कहो, कि वह दिव्य–पुरुष तुम हो। इस पत्र में जो कुछ भी तुमने लिखा है पूर्णतः सत्य है। यह पत्र जन–सामान्य (सभी के) के लिए है। इसको उतार कर (नक़ल करके) जब समय आये तो छपवाना भी चाहिए।"

शुभचिंतक

रामचन्द्र

पत्र संख्या–283

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 4.3.53

कृपा–पत्र 'आपका' अभी थोड़ी देर हुई, दद्दा ने दिया–पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। 'आपके' एक–एक शब्द मेरे लिये Current (विद्युत–शक्ति) की तरह काम देते हैं। 'आपका' एक–एक लफ्ज़ मुझे ताक़त देता है। 'आपने' कृपया मुझे Point 'M' (पाइंट–एम) पर खींच दिया और इच्छा शक्ति को और बढ़ा दिया, बहुत–बहुत धन्यवाद है। मेरी तो 'ईश्वर' से रात–दिन यही प्रार्थना है कि ब्रह्म–विद्या सिखाने में 'मालिक' के एक–एक अरमान मुझमें उतर सकें। कुछ तो हवस मुझ गरीब में पूरी हो सके। यही मेरी कोशिश है और यही 'उससे' मेरी प्रार्थना है और यदि यह कर सकी तो ही मैं सार्थक हूं–अन्यथा कुछ नहीं और यह होकर रहेगा। यदि सिखाने वाले के उन्नति देने के थोड़े से भी अरमान Taught (प्रशिक्षार्थी) से पूरे न हो सके तो वह सीखने वाला ही क्या रहा। क्या बताऊं 'श्री बाबूजी' 'आप' मुझे सन् 1944 में ही क्यों न मिले–परन्तु इसमें भी दोषी मैं हूं–क्योंकि पिलाने वाला तो मौजूद था और जाने और अनजाने में भी पिला ही रहा था, परन्तु पीने वाले की ही प्यास तीव्र न होगी। ख़ैर, अब सही, मैं तो 'आपके' बिना न कभी रही और न रहूँगी। मुझे कुछ कहने के बजाय कुछ कर लेना अच्छा लगता है।

पूज्य 'श्री बाबूजी' जो 'आप' मेरे लिये करते हैं वह अब 'आपकी' ही मेहरबानी से मेरे अनुभव में आ ज़रूर जाता है। Point 'M' (पाइंट–एम) और इच्छा–शक्ति का

बढ़ना सब डायरी में लिख लिया था। सच तो यह है कि 'आपकी' एक-एक Writings (पुस्तक) छपनी चाहिये, अब जब भी ईश्वर Time (समय) लायेगा अवश्य। मैं 'आपके' इस पत्र के विषय में तो कुछ लिख नहीं सकती, मेरी क्या मजाल है। ऐसी Mastery (स्वामित्व) ऐसी Personality (दिव्य-व्यक्ति) के लिये है ही। भाई मैंने तो वह Personality (परसनैलिटी) ढूंढ़ ही ली या भाई, उसकी स्वयं ही हम लोगों पर कृपा हुई। मैं कहती हूँ कि यदि साइन्टिस्ट ऐसी Personality (दिव्य-व्यक्ति) को मान कर, लेखों से, पत्रों से, सहायता लें, तो फिर उनसे बड़ा साइन्टिस्ट कोई हो ही नहीं सकता।

मेरे 'श्री बाबूजी' 'आपने' जो लिखा कि "सत्रह आने भर मैं न कर सका, मुमकिन है तुम कर ले जाओ"। सो 'आप' अपनी बात जाने दीजिये, 'आपने' तो किसी आने भर नहीं बल्कि Unlimited (असीमित मात्रा में) किया। हम किन्हीं आने भर भी कर सकें तो कितना अच्छा हो, 'मालिक' की कृपा, 'उसकी' मेहरबानी सदैव मेरे साथ है। भाई, कुत्ते की किस्मत आला थी। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ ऐसा लगता है कि सुनसान, बियावान, मैदान में चलती चली जा रही हूँ। अब ऐसा लगता है कि जैसे अक्सर 'आपने' मुझे लिखा था कि-

"बिटिया, यह तो असल शान्ति का तलछट है, सो मुझे न जाने क्यों ऐसा लगता है कि अब उसी मैदान में मैं उसे पार करती हुई, या उसकी छाती पर भागती चली जाती हूँ। कुछ ऐसा है कि बिल्कुल स्वतंत्र सी या 'आपके' पत्र में लिखे अनुसार यों कह लीजिये कि अपने से भी वैरागिन सी हुई, बावरी सी किसी की संटी के इशारे से अंधी सी 'उसी' की ओर भागती जा रही हूँ, क्योंकि भाई अब रहा नहीं जाता-'उसकी' बेक़रारी मुझसे मिलने को मुझे मदहोश, पागल किये है। भाई, मेरा तो यह हाल है कि कौन कहता है कि साधक पूजा करता है, या साधक 'उससे' मिलने को बेक़रार रहता है, नहीं, नहीं, कुछ भी हो, मेरे लिये तो 'वही' पूजा करता है और 'वही' मुझसे मिलने को, छाती में छुपा लेने को बेचैन है। हाँ 'उसी' की बेक़रारी मुझे बेक़रार किये रहती है और उसी का (यानी 'उसकी' बेक़रारी का) असर मुझे खींचे लिये जा रहा है। मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो यह हाल है कि हाथ को हाथ नहीं सूझता, ऐसी ही न जाने कैसी मेरी दशा है और ऐसे ही मैदान में मैं पैर रही हूँ। या यों कह लीजिये कि ऐसे ही मैदान में पैर रही हूँ, जहाँ हाथ को हाथ नहीं सूझता। अब तो ऐसा हो गया है कि वह जो मैंने अक्सर 'आपको' लिखा है कि "नम्रता की हालत में मिटती जा रही हूँ, वही मेरा रूप हो गया है।" सो अब न जाने क्यों मैं दशा के होते हुए भी अब उसे भूली सी रहती हूँ, भूल जाती हूँ, परन्तु अन्जाने में भी जब ग़ौर करती हूँ तो उससे भी अब कहीं हल्की व शुद्ध रूप वाली उसी दशा में (यानी

नम्रता वाली दशा में) अपने को बिल्कुल घुलता हुआ सा या अपना भिदाव होता चला जाता पाती हूँ। ऐसा लगता है शरीर का या भाई मेरा ज़र्रा–ज़र्रा नम्रता मय बन गया है या सब कुछ नम्रता–मय ही बन गया है, परन्तु शायद इसी कारण या न जाने क्यों मैं इसे भूली सी ही रहती हूँ। 'आपका' यह कहना बिल्कुल ठीक है कि बेख़बरी रहते–रहते बाख़बरी शुरू हो जाती है और यह दशा मैंने शायद 'आपको' पहले लिखी भी हो। राच में कुछ वही दशा हैं।

हमारे 'श्री लाला जी साहब' से इस ग़रीब की यही प्रार्थना है कि जितना हो सकता है सो जज़्बा अपने लिये 'श्री बाबूजी' में पैदा कर सकूं, क्योंकि मुझे तो 'श्री बाबूजी' ही चाहियें। इतना प्रेम अपने 'मालिक' से कर सकूं। कैसा समय हम लोगों को दिया, कैसी हस्ती हमें प्रदान की, अब वैसा ही प्रेम 'मालिक' से और वैसा ही आशीर्वाद भी कृपया प्रदान करें। अम्मा आपको शुभाशीर्वाद कहती हैं तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। पूज्य 'श्री बाबूजी' मेरे लिये तो सदैव ही होली रहती है, परन्तु मुझ पर दूसरा कोई रंग ही नहीं चढ़ता। मुझे तो उसी से काम।

इतिः–

सदैव 'आपकी' ही स्नेहासक्त
पुत्री–कस्तूरी

पत्र संख्या–284

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपर
खुश रहो। 6.3.53

तुम्हारा पत्र मिला–इसका जवाब मैं आगे इसी पत्र में दूंगा। इस समय रात के 10 बज चुके हैं और सिर भी भन्ना रहा है, मगर ख़ैर, जो कुछ समझ में आता है, लिखाये देता हूँ और यह पत्र तुम्हारे और शुक्ला जी के लिये होगा। मैंने पिछले पत्र में लिखा है पत्र याद तो नहीं रहा, अटकल से लिख रहा हूँ। Complete Negation (पूर्ण निगेशन) हो जाने से इन्सान Vacuumise (रिक्त) हो जाता है। इस तरह पर कि इस समय तक कोई आला ईज़ाद नहीं हुआ कि जो किसी चीज़ को Complete Vacuum (पूर्णतः रिक्त) कर सके। मगर इतनी बात और है कि Complete Negation (अपने न होने का पूर्ण भाव) की जब Forgetful State (भूल की अवस्था) आती है, तब कहीं पूरी तौर पर Vacuum (वैक्यूम) बनता है। उसकी ताक़त का कहीं ठिकाना नहीं और यह चीज़ अवतारों में भी पाई नहीं जाती। 'उसके' हाथ में है कि इससे चाहे

Constructive Work (रचनात्मक कार्य) ले, ख़्वाह Destructive Work (विना. का कार्य) ले ले।

मेरा तरीक़ा यही है कि शुरू से इन्सान Vacuum (रिक्त) बनता चले और ज़ाहिर भी है कि गुरू-महाराज ने (कहाँ तक अनेकों धन्यवाद दिया जावे) जब मुझे बिल्कुल ऐसा ही बना दिया, तो फिर, वही बीज जाना भी चाहिए। इसलिए अच्छे Guide (मार्गदर्शक) की तलाश की जाती है, और मेरा भाग्य था कि मुझे ऐसे Guide (गाइड) मिल गये। इसमें यह ताक़त पैदा हो जाती है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी उसके हुक्म को टाल नहीं सकते। मगर यह बात ज़रूर है कि ईश्वर जब इस Approach (पहुँच) के लिये कोई आदमी ढूंढ़ता है, तो वह ऐसा ही ढूंढ़ता है, कि जो ईश्वर की मर्ज़ी है, वही काम खुद ब खुद करे। और मैं तो यह कहूँगा कि वह ऐसे आदमी को उसके गुरू के हाथ में दे देता है और मिलता भी उसी को है, जिसने अपने आपको अपने गुरू के हाथ में दे दिया है। इस Negation (निगेशन) की मैं कहाँ तक तारीफ़ करूँ। असल में यह चीज़ किसी बेहद की beginning (आरम्भ) है। न मालूम अभी और कितना जाना है। हंसी उन लोगों पर आती है कि जो रूहानियत से कोसों दूर होकर रूहानियत का प्रचार Platform (मंच) पर करते हैं।

मैं तुमको आज Perfection (पूर्णता) के मानी बतलाता हूँ। वैसे तो Perfect (पूर्ण) वाक़ई परमात्मा है जिसको दूसरे मानों में ज़ात ही ज़ात कह सकते हैं और इसी मानों में यह शब्द यहाँ पर इस्तेमाल किया है। मगर ख़ैर, जहाँ तक पूरे तौर पर बन्दे का Perfection (पूर्णता) कहा जाता है, वह यह है कि Nature (प्रकृति) से जितनी बातें पैदा हुईं या उसमें मौजूद हैं, वह Ignorant (अज्ञानी) रहते हुए सबसे वाक़िफ़ हो। कोई इल्म या Science उससे न बचे। ज़रा कोई आँच दे दे और उससे वही बातें कुदरती तौर पर निकलने लगें जो वह जानना चाहता हो। यह कसौटी है पूर्ण आदमी की जाँच की।

मैंने अवतार लाने का पिछले ख़त में नुस्ख़ा लिख दिया है, ताकि लोग जब चाहें इस नुस्ख़े को इस्तेमाल कर लें। इससे सहज नुस्ख़ा भी मुमकिन है धार्मिक पुस्तकों में तलाश करने से मिल जाये। हालांकि जो नुस्ख़ा मैंने बताया है 'भूमा' के बाहरी हद के क़रीब Vacuum (ख़ालीपन) पैदा करने का, मेरे ख़्याल से एक सेकण्ड का काम है। Time Limit (समय की सीमा) का इतने अर्से में, अवतार आवे, मुमकिन है, दो-तीन सेकण्ड और ले ले। अब एक चीज़ इसके मुतल्लिक और बतलाता हूँ, कि जब मुसीबत इस हद तक मिलती है कि महात्माओं को भी इस हद तक दिल में ग्लानि पैदा होती है, कि जैसे किसी का दिल बैठा जाता हो, तो भी Automatically Vacuum (अपने आप ख़ालीपन होना) बन जाता है और उनके बग़ैर जाने बूझे हुये।

यह बात सिर्फ़ रामावतार के कुछ पहले हुई थी, मगर ज़्यादा Strong (सबल) नहीं थी, जिसका नतीजा रामचन्द्र जी का अवतार था। अब कृष्ण अवतार कैसे हुआ? जो भभूका कि रामावतार के समय फूट चुका था, उसका असर यह था कि वह खुद अपनी असली शक्ल में जो ज़्यादा तेज़ था, कृष्णावतार के रूप में सरजद हुआ। इसी लिये वह ज़्यादा ताक़तवर था। इस ख़्याल को मैं ज़्यादा अच्छी तरह Express (अभिव्यक्त) नहीं कर सका, अनुभव से ज़रूर दिखाया जा सकता है। दुबारा अवतार क्यों हुआ? मेरे ख़्याल से उस वक्त ज़रूरत थी।

(डिक्टेट) 7Dictate:–लाला जी साहब–

"यह ख़्याल ठीक है। ऋषियों ने रामावतार से पहले जो कुछ किया था, वह उस वक्त के लिये काफ़ी था, मगर उनका ख़्याल जो कुछ कि असल में शोलाज़न (भभूका फूटना) कृष्णावतार के वक्त हुआ। तभी वह पूर्णावतार थे। अब यह मलका जो इस वक्त है, किसी में पैदा नहीं हुआ। कुदरत भी जब अपने किसी बन्दे को इख़्त्यारात दे बैठती है, तो फिर उसमें वह अपना दख़ल नहीं देती।"

Swami Vivekanand Ji:– He becomes part and Parcel of Nature, Nay, he governs it. I am not using the word for God–Almighty. Nature is after God. You can call the present Personality above Nature or nearest God."

स्वामी विवेकानन्द जी :– "वह प्रकृति का अभिन्न अंग बन जाता है। नहीं, वह उस पर (प्रकृति पर) शासन करता है। मैं यह शब्द सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए प्रयोग नहीं कर रहा हूँ। प्रकृति, ईश्वर के बाद है। तुम वर्तमान दिव्य–पुरुष को प्रकृति से ऊपर या ईश्वर के निकटतर कह सकते हो।"

एक बात अवतार के बारे में मुझे और याद आ गई। वह यह है कि जो ईश्वर के हुक्म की पाबन्दी नहीं करते और भक्तों को तकलीफ़ देते हैं, या अच्छे मनुष्यों को दुःखी करते हैं, तो उसको ख़त्म कर देते हैं। Special Personality (विशिष्ट–व्यक्तित्व) का भी यही काम होता है, मगर वह कोई ज़ाहिरा तौर पर मार–धाड़ नहीं करता, इस कारण ज़्यादातर लोग उसके काबू में नहीं आते। अब एक बात मैं और लिखता हूँ कि अवतारों में Concentrated will (अटल या एकाग्र इच्छा–शक्ति) सिर्फ़ इसी पर होती है कि जो काम उनके सुपुर्द होता है और उनके सिर्फ़ एक ही काम सुपुर्द होता है। और भाई रही Special Personality (विशिष्ट–व्यक्तित्व) की ताक़त–उसकी Concentrated will (कन्सेन्ट्रेटेड–विल) अवतारों की तरह कैसे हो सकती है? इसलिये कि उसकी निगाह कुल Universe (विश्व) में रहती है, जैसे बड़े बादशाह

की निगाह अपनी कुल सल्तनत पर। मुमकिन है कि इस ख़त में कुछ Thoughts विचार) पिछले ख़त के Repeat (दोहरा गए हों) हो गये हों, इसलिये कि पिछला ख़त ज़्यादातर याद नहीं है और यह ख़त कोई मज़मून नहीं है, बल्कि जैसे विचार आते गये, लिखाता गया।

अब अभ्यासी Negation (निगेशन) और उसके बाद वाली हालत के काबिल कब बनता है? और कैसे उस हालत को पहुँचता है? एक तो जवाब इसका यह है, कि अगर Guide (मार्गदर्शक) इस हालत को पहुँचा हुआ है, तो उसकी मेहरबानी से वह पहुँच सकता है। अभ्यासी को यह चाहिये कि 'उसे' यह हालत देने पर मजबूर कर दे। अब यह कैसे हो सकता है? यह सब लोग जानते है; जिसके पास अक्ल है। वैसे भाई मेरा तो यह हाल है कि मैंने बहुत कुछ approach (पहुँच) एक साहब को डाट–डपट से दी थी और वह इसलिये कि मैं उनको खुश रखना चाहता था और वह उम्र में मुझसे बहुत बड़े भी थे, इसलिये और भी। मगर ईश्वर का धन्यवाद है कि मैंने उनको सिर्फ़ A,B,C,D, (ए,बी,सी,डी,) ही बता पाया था कि उनका रंग बदलने लगा। नतीजा उसका यह हुआ कि उन्होंने खुद ब खुद ऐसी बातें पैदा कर लीं और वह मुझसे ख़िलाफ़ हो गये। वह अपने आप इस क़दर नीचे आये कि किसी दीन के न रहे और मैं उनकी अब भी इज़्ज़त करता हूँ और बड़ा समझता हूँ। मेरे दिल में उनसे इतनी मोहब्बत भी है जितनी कि इन्सान को इन्सान से हो सकती है और अब दूसरी कमज़ोरी यह है कि अभ्यासी को मैं ठहरा हुआ नहीं देख सकता। इसका फ़ायदा भी लोग उठा जाते हैं और जल्दी तो मेरे मिज़ाज़ में है ही। दूसरी चीज़ जो Negation (निगेशन) और उसके ऊपर तक पहुंचा सकती है वह तड़प और बेक़रारी है और भक्ति और प्रेम तो होना ही चाहिये। अगर प्रेम पैदा हो जाता है तो बेचैनी होना ज़रूरी है। अब तुम अपने सत्संग में टटोल लो कि कौन वाक़ई तौर पर ईश्वर का प्रेमी है।

किसी को एक मोहब्बत है, किसी को 1/2, किसी को 1/4 और इतने गिरे हुए भी निकलेंगे कि अगर उनको समझाने के लिये कोई सख़्त मज़मून लिख दिया जाय तो सत्संग छोड़ने पर तैयार हो जायेंगे और किसी की तबियत में मलाल और गुस्सा पैदा हो जायेगा। इसके मानी यह है कि अपना आपा छोड़ने के बजाय उसको और मज़बूत करते हैं। भाई, मुझे तो लोग मुमकिन है, यह समझते हों कि यह मेरी Duty (कर्तव्य) है जो मैं कर रहा हूँ और यह सही भी है, मगर उन्हें इतना और सोचना चाहिये कि जितना वह Deserve (योग्य होंगे) करेंगे, उतनी ही मेरी Duty (ड्यूटी) होगी। मुझे सबसे मोहब्बत है, मगर उतनी, जितनी कि मेरा फर्ज़ है। मैं सबको मर मिटने के लिये कहता हूँ, मगर अफ़सोस यह है कि जो मर मिटने की Elementary

(प्रारंभिक) बातें हैं, उस पर लोगों की निगाह नहीं जाती। मैं भी भाई, मजबूरन खुशामद–बरामद से काम निकालता हूँ। मुझे अक्सर पत्रों में शब्द बहुत तौल नाप कर रखने पड़ते हैं, इसलिये कि कोई बुरा न मान जावे।

Negation (निगेशन) का ख़ास तौर पर और सब आध्यात्मिक बातों का देने वाला तो ईश्वर ही है, इससे सबको इकरार है, मगर भाई, मुझे तो जो कुछ मिला, वह अपने गुरू महाराज से ही मिला। यह ज़रूर है कि ईश्वर का मुझे बहुत ज़्यादा शुक्रिया अदा करना चाहिये। इस बात का कि मेरी तबियत उसने ऐसी बना दी कि ऐसे बड़े महात्मा से मैं रूजू हुआ। ईश्वर से काम निकालने का तरीका यही है, जो हम अपने गुरू के साथ करते हैं और उससे Direct (सीधे) प्रेम भी पैदा हो सकता है और यह बहुत अच्छी चीज़ है। मगर इस चीज़ के करने वाले बहुत कम हुए हैं। हालांकि इससे अच्छा तरीका कोई भी नहीं हो सकता। अभ्यासी को चाहिए कि अपनी लगन बढ़ाता जाय और अगर ज़्यादा न सही तो अपने Guide से इतना ही Submission (लगावा)) रखे जितना मक़्तब में लड़के अपने उस्ताद से रखते हैं और भाई इतनी Duty (ड्यूटी) भी है। इस चीज़ से Guide को कुछ नहीं मिल जाता, बल्कि अभ्यासी को यह फ़ायदा होता है कि वह चीज़ आने के लिये पात्र बन जाता है। जो वाक़ई Guide (गाइड) है, उसको अपनी इज्ज़त या शोहरत की आशा नहीं होती, बल्कि मिसालें ऐसी भी मिलती हैं, कुछ फकीरों की, कि जिन्होंने ज़ाहिरा बातें ऐसी भी की हैं, जिससे Public (जन–सामान्य) उनकी इज्ज़त न करे और शिष्य भी छंट–छंटाकर ख़ास–ख़ास रह जावें। ऐसी एक मिसाल कबीर की भी मिलती है कि उन्होंने एक समय पर ऐसा ही किया था।

भाई, शुक्लाजी ऐसे बनो कि मैं उस हालत को आप में दाख़िल कर सकूं कि जो मुझको सबसे प्रिय है। अगर यह न सही तो कम–अज़–कम मेरी ज़िन्दगी में Complete Negation (पूर्ण निगेशन) की ही हालत पैदा कर लो और यह मैं सबसे कहता हूँ। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूँ कि हमारे गुरू–महाराज की संस्था गो सबसे छोटी है, मगर इस प्रकार की Masterly (आधिपत्यपूर्ण) तालीम संसार में किसी संस्था में नहीं मिलेगी और यह सही भी है कि हर युग में इस चीज़ के जानने वाले और सीखने वाले कम ही हुए हैं।

जिसको मोक्ष प्राप्त करना हुई, वह सच्ची लगन से इस तरफ़ लगा। इस ज़माने में लोग बहुत से मोक्ष चाहते ही नहीं, इसलिये कि वह मोक्ष के मानी और हालत न समझते हैं और न समझने की कोशिश करते हैं। उन्होंने मोटर और कोठी का होना और रुपया ज़रूरत के लिहाज़ से काफ़ी होना ही मोक्ष से अच्छा समझ लिया है। यह

उनके समझ में नहीं है कि अगर कहीं यह चीज़ें उनसे छिन जावें तो फिर उनकी खुशी का क्या हाल होगा और देखा तो यह गया है कि बहुत ज़्यादा रुपये वाले इस क़दर फ़िक्रमन्द रहते हैं कि किसी को नींद न आने का मर्ज़ और किसी को और कोई मर्ज़ हो जाते हैं। उनको तमाम जीवन भर मूंग की दाल और रोटी–तुरई और लौकी से ही साबक़ा रहता है।

हमारे भारतवर्ष में स्वामी लोगों ने और ख़ासकर सन्यासियों ने हम पर वह अत्याचार किये हैं और कर रहे हैं और ऐसा नुकसान पहुँचा रहे हैं कि मुसलमानों की तलवार भी नहीं पहुँचा सकी और हमारी अक़्ल पर भी पर्दे पड़ गये। हमको Right और Wrong (सही और ग़लत) की तमीज़ जाती रही और रंगीन कपड़ों पर हम इस हद तक गिरे कि अपनी समझ Exercise (क्रियान्वित) करने को हमने कुफ़्र समझा। क़ाबिल सन्यासियों पर भी मुझे यह एतराज़ है कि उन्होंने नाकारा आदमियों को क्यों सन्यास दे दिया? जिसकी वज़ह से वह अपने आप को गुरू और क़ाबिल समझने लगे। उसमें से जो पढ़े लिखे थे, वह सब Stage (मंच) पर उगलने लगे। अपना Experience (अनुभव) उनका कुछ भी नहीं। अब कुछ क़ाबिल भी उनमें हैं। उन्होंने क्या काम किया कि दिक़ के मर्ज़ को उन्होंने और अच्छा करके बतला दिया।

अगर कोई शख़्स ठोस पूजा में रमण करता है, फिर उसकी बड़ी तारीफ़ होती है और जब वह खुद बतलाते हैं तो ठोस किस्म की पूजा ही। वजह क्या है? मैं यही कहूँगा कि वह गिरोहबन्दी कायम करना चाहते हैं। मैं अपने तुच्छ विचार के अनुसार यही कहूँगा कि जिस संस्था में असली आध्यात्मिक शिक्षा नहीं है, वह गिरोहबन्दी ही है। जितने तरीक़े उनको बतलाये जाते हैं, उससे वह परमात्मा के निकट होने के बजाय और दूर हो जाते हैं। गोया लकड़ी से वह फ़र्नीचर बन जाते हैं। इससे तो यही अच्छा था कि वह कुछ न करते और हरी लकड़ी रहते कि जिस तरफ़ ज़रूरत होती, झुका दिये जाते। अब तो सन्यासी का मुख्य कर्म यही रह गया है कि Revival of Stone age (पत्थर–युग की पुनरावृत्ति) और जनता को यह चीज़ खूब पसन्द आती है और ऐसे ही आदमी को लोग महात्मा समझते हैं और उनको Submit (शरण जाना) भी करते हैं।

यह ऐसी बवा फैली है कि इसको ताउन और हैजे की बीमारी कहना चाहिये। कबीर साहब ने कितना सुन्दर कहा है–"ब्रह्म छाँड़ि पूजन लागे पथरा।" मूर्ति पूजन तो सबसे ज़्यादा ठोस पूजा है, बल्कि जाप वग़ैरह जो बतलाते हैं, वह भी ठीक नहीं बतलाते, जिससे लोग और ख़राब हो जाते हैं। गर्ज़े मैं कहाँ तक कहूँ; संक्षेप के साथ अभ्यासियों के लाभ के लिये बयान कर दिया। मुझे तो भाई कहना ही है, वह भी चन्द

आपस के लोगों से। इन सन्यासी और उनके Followers (शिष्यों) से मैं कहूँ, तो वह मुझसे नाराज़ हो जायें, इसलिये खामोश हूँ और सोच कर रह जाता हूँ। इतनी Warning (चेतावनी) मैं ज़रूर दे सकता हूँ, कि कुदरत इस चीज़ को बड़ी तेज़ निगाह से देख रही है और नहीं मालूम क्या होता है। यह ज़रूर है कि कुदरत ने जो भी इख़्त्यारात मुझको दे दिये हैं, उसमें उसकी इतनी मेहरबानी है कि वह दख़ल नहीं देती। मगर मैंने अपने आपको और कुदरत ने भी मुझको गुरू महाराज के हाथ में दे दिया है, इसलिये बन्दे को हुक्म का इन्तज़ार रहता है।

एक मुश्किल यह भी है कि आप लोग मेरा ज़्यादा समय लेते रहते हैं, इसलिये मुझको ईश्वरीय काम करने के लिये ज़्यादा समय नहीं मिलता। समय ज़्यादातर कौन लोग लिया करते हैं, जिनको ब्रह्म विद्या की असली मानों में प्यास नहीं है। अगर वह Submission (शरणागत) भी कर लें तो भी मेरा बहुत समय बच जावे। चाहते लोग यह हैं कि चीज़ मुफ़्त मिल जावे और मेहनत न करना पड़े। मुझे इसमें कुछ आर नहीं, क्यों कि मैं तो इसलिये बनाया ही गया हूँ। मगर इस सेवा के ही एवज़ में मुझ पर लोग तरस खायें ताकि मुझको और कामों का भी अवसर मिल जावे। अगर अभ्यासी वाक़ई तौर पर ऐसे बन जावें जैसा उनको होना चाहिये तो मेरे पास से चीज़ खुद ब खुद उनमें जाती रहे। इस पत्र का और इससे पिछले पत्र का मतलब यही है कि लोग सब फेर को छोड़कर सिर्फ़ एक ही फेर में पड़ जावें और इन चीज़ों को देखकर उनमें, ब्रह्म विद्या को सीखने की तड़प और शौक़ पैदा हो जावे। ईश्वर करे ऐसा ही हो।

बिटिया व शुक्लाजी, मैंने यह लम्बे-चौड़े पत्र लिखकर आपका बड़ा समय नष्ट किया है। कहीं आप लोगों के दिल में यह ख़्याल तो पैदा नहीं होगा कि इतनी देर अगर अभ्यास करते या मैं इतनी देर आप लोगों को तवज्जोह देता, जितना समय मैंने खत लिखने में लगाया है तो ज़्यादा फ़ायदा होता। सो आप लोग पत्र को ज़रा पढ़कर तो देखें तो मालूम हो जायेगा कि आप लोगों का समय नष्ट नहीं हुआ और 'मालिक' की कृपा से यह चीज़ मेरे हर ख़त में मिलेगी।

शुभचिंतक
रामचन्द्र

पत्र संख्या–285

लखीमपुर
6.3.53

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी'

सादर प्रणाम।

आशा है मेरा पत्र पहुँचा होगा। केसर की तबियत वैसे तो ठीक है, परन्तु जुकाम खाँसी अभी है, उसमें भी लाभ है। 'मालिक' की कृपा से बड़े भइया को दिल्ली में Service (नौकरी) रेलवे Exhibition Train (एक्ज़बीशन–ट्रेन) में मिल गई है। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई अब तो ऐसा लगता है कि अब तक की सारी दशा मुझमें लय हो गई हैं, ख़त्म हो गई हैं। अब तो जो दशा मैंने अक्सर लिखी है कि निगाह में ऐसा लगता है कि एक तस्वीर कुदरतन सी ही खिंची हुई है, परन्तु अब न जाने क्यों मुझे नहीं मालूम है या नहीं मैं तो वह भी बिसर सी गई हूँ, या यह कहिये 'मालिक' ने इसके भी एहसास से स्वतंत्रता दे दी है। न जाने क्यों मेरे 'श्री बाबूजी' अब कुछ Practical (व्यवहारिक रूप में भी) में भी यानी अंधेरे, उजेले किसी का कुछ एहसास ही नहीं रह गया है। कभी–कभी अंधेरे में यह ध्यान भी दूं कि अंधेरा है तो भी अंधेरे का एहसास नहीं होता और यही हाल उजेले का हो गया है। अब तो भाई, ज़रूरत कुछ करा ले, चाहे अंधेरे में उजेले की सूझ दिलाये या कुछ वरना मुझे किसी की आवश्यकता नहीं रह गई है। सच तो यह है, कि मुझे इनकी तमीज़ ही नहीं रह गई है। मैं सब चीज़ों की ख़ासियत को क़तई भूल चुकी हूँ। मैं तो जहाँ हूँ, बस 'मालिक' से मतलब। यदि तड़प को ही मैं कह लिया जावे तो शायद ठीक होगा। मेरे 'बाबूजी' ऐसा लगता है कि खुद अपने ही अन्दर मैं गुम हो चुकी हूँ। बस ऊपर जो मैंने तड़प लिखी है, वही मैं समझ लिया जावे। अब तो न जाने कैसे ऊपर लिखा सब कुछ मुझसे ओझल हो चुका या भाई, मैं खुद ही ओझल हो गई हूँगी। न जाने क्यों अब नम्रता, अनम्रता की भी दशा मुझे नहीं मालूम पड़ती। ऐसा लगता है कि उस (नम्रता की दशा में) दशा में मेरा फैलाव हो गया है और वही दशा फैल कर एक समान रूप में सब ओर बहने लगी है। अब तो कुछ यह हो गया है कि अपना फैलाव कभी नहीं महसूस होता है, वह तो ख़त्म हो चुका; बल्कि दशा ही फैली महसूस होती है। मुझे मालूम नहीं, शायद मैं उसमें घुली रहती हूँगी। अब तो भाई दशा का इतना सहज–रूप हो गया है कि ऐसा लगता है कि मानों कुदरतन ही एक हालत है। कोई, किसी प्रकार का Weight (वजन) वगैरह का लेशमात्र लगाव दशा में छू तक नहीं गया है, बिल्कुल निख़ालिस, अब मेरी दशा है। ऐसा लगता है कि दशा अपने शुद्ध रूप में निखर आई है। अब कुछ यही या ऐसी ही दशा मुझे महसूस होती है। सब ओर, सब

तरफ़ यही या ऐसा ही महसूस होता है। अब तो कुछ ऐसी दशा है कि कुछ ऐसा महसूस होता है कि 'मालिक' पर मेरी सारी क़लई खुल जाती है। ऐसा लगता है कि बिल्कुल Naked (नग्न) सी ही हर समय रहती हूँ या Naked (नग्न) हो गई हूँ। मेरे 'श्री बाबूजी' ऐसा लगता है कि अब दशा क्या है, बिल्कुल शीशा (आईना) है। 'आप' ने लिखा था कि "तुम जल्दी-जल्दी एहसास करो" मैं अब बहुत जल्दी की ही कोशिश में लगी हूँ। ख़ैर, 'मालिक' जाने। जैसी 'उसकी' मर्ज़ी। अब तो मेरी दशा बिल्कुल Naked (नेकेड) हो गई है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर प्रणाम कहती हैं। इतिः-

सदैव 'आपकी' ही, स्नेहसिक्ता

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-286

प्रिय बेटी, शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद। 8.3.53

इतनी आल्हा लिखने के बाद अब तुम्हारा चौथी मार्च सन् 53 के पत्र के उत्तर लिखने का अवकाश मिला। इसको आल्हा मैंने यूं कहा है कि जब लोग आल्हा सुनने जाते हैं, तो उतनी देर के लिये तबियत में हिम्मत आ जाती है। ऐसे ही मेरे पत्रों को सुनकर थोड़ी देर के लिये अपनी तबियत ताज़ा कर लेते हैं, इसलिये उसको आल्हा ही कहना चाहिये। राम कहानी तो यह उस समय बन सकती है, जब कि अभ्यासी इतनी तड़प पैदाकर लें कि बिला उसके हासिल किये हुये उनको चैन ही न आवे।

मैं तुम्हारे साहस और Faith (विश्वास) पर बहुत खुश हुआ। मगर Faith (फेथ) की इससे ऊंची भी अवस्था है, जो मुझ पर एक बार गुज़री है। जब वह आवेगी, तो मैं लिख दूंगा। वह चीज़ भी अभी बहुत दूर है, मगर पैदा इसी तरह से होती है, जो तुम्हारी हालत है और मैं तुम्हारी हालत देख-देखकर बड़ा ख़ुश होता हूँ और सबसे प्रशंसा भी करता हूँ, यानी उन लोगों से, जो इस रास्ते पर चल रहे हैं, मगर मैं अपनी निगाह को क्या करूँ। मुझे तो उन्नति के सागर में अभी बुलबुला ही दिखाई देती हो। बिटिया! कहीं यह न कह बैठना कि मेरा सब प्रेम और परिश्रम केवल बुलबुले भर ही उन्नति बताई है, सो बिटिया! इसके लिये मैं क्या करूँ कि इतनी तरक्की करने पर भी तुम बुलबुले मात्र दिखाई देती हो। कहीं यह मेरी निगाह का कसूर तो नहीं है।

चिन्ह ऐसे ज़रूर हैं कि अगर यही शौक बना रहा जैसी कि उम्मीद है, तो आला दर्जे की तरक्की का आनन्द ईश्वर ने चाहा चक्खोगी। तुम्हारा पत्र बता रहा है कि मेरे जुनून की आँच तुम पर कुछ ज़रूर असर कर गई है। अगर इतनी ही बात अभ्यासियों

में पैदा हो जाये तो भी बहुत कुछ सुधर जायें। तुमने शुरू में प्रेमी का भाव लिया था, जिसका नतीजा यही होता है कि अभ्यासी प्रीतम बन जाता है, मगर अभी पूरी तौर पर तुम प्रीतम नहीं बन सकीं। हो सकता है कि यह चीज़ बहुत कुछ किसी वक्त पैदा हो जावे। मगर मैं यह ज़रूर कहूँगा कि अभी तक पूरे तौर पर अपना आपा मिट नहीं सका। यह चीज़ बहुत कुछ आगे बढ़ कर ईश्वर देता है, तो कुछ न कुछ नसीब हो जाती है।

असल में तो अपना आपा Complete negation (पूर्ण निगेशन) में जाता है और दर्जे मेरी समझ से जिसको असल महत्वगीरी कहते हैं, उसके बाद शुरू होते हैं। यह किसको ख़बर है? मुझे तो अब किसी-कसी समय यही तड़प रहती है कि लोग इस हालत को पहुँचे। तुमने लिखा है कि "नम्रता की हालत में भिदती चली जा रही हूँ" और फिर लिखा है कि "वही मेरा रूप हो गया है और उस दशा के होते हुए भी मैं उसे भूली सी रहती हूँ" और यह भी लिखा है कि "उसमें भिदाव होता चला जा रहा है।" यह तो बड़ी अच्छी हालत है और इसके मानी यह हैं कि तुम उसकी लय-अवस्था के किनारे पर आ गईं। मैं अभी देखता हूँ कि तुम किस क़दर अपने आप भिद रही हो और अपनी कोशिश से कितनी हो सकती हो? ऊपर तो मैं तुम्हें ले ही जा रहा हूँ, उसका असर भी इसमें लय-अवस्था हो सकता है और कहीं मुझे उचंग आ गई तो मुझसे यह भी कुछ दूर नहीं कि मैं इसमें तुमको लय कर दूं या लय करने की शक्ति पैदा कर दूं। यह सब 'मालिक' की मौज पर है, तुमको मैं नीचे छोड़ना नहीं चाहता। मैंने तुमको इस समय पत्र लिखाते-लिखाते 'N' (एन) स्थान पर खींच दिया है। ईश्वर ने चाहा तो दो-चार रोज़ में, ही उसकी सैर भी शुरू हो जावेगी। वक्त 9.50 P.M. (पी.एम.) है, जब 'N' (रात्रि 9 बजकर 50 मिनट पर) पर खींचा है। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिंतक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-287

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी', लखीमपुर
सादर प्रणाम। 9.3.53

आशा है मेरा पत्र पहुँचा होगा। छोटे भइया तथा मंजू के भी बड़ी चेचक निकली हैं, आशा है आज शाम से बाग़ ले जायें-कोई फ़िक्र की बात नहीं है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

ता. 7,8 कुछ ऐसी दशा रही, जैसी कि एक Stage (स्थिति) और आने वाले Stage (स्टेज) के बीच की, यानी दोनों के बीच की दशा रही, इसीलिये हर तरह से सुस्ती सी रही। परन्तु 'मालिक' की कृपा से कल से यानी ता. 8 की शाम से 6 या 7 बजे से दशा बदल गई है। अब तो ऐसा लगता है जैसे कोई, कुछ भी दशा ही नहीं है। अब तो यह हालत है कि ख़्याल में 'मालिक' का ख़्याल, चाहे वह बेख़्याल ही हो, जाने रहता है या नहीं। रहे या न रहे और रहे कहाँ जब तब ख़्याल या बेख़्याल ही अपना न रहा। अब ऐसा लगता है कि दशा और भीतरी या गम्भीर हो गई है। भाई, ऐसा लगता है कि कल शाम को 'आपने' कृपा करके 'N' point (एन पॉइंट) पर खींच दिया है। सैर भी शुरू हो गई है, बहुत–बहुत धन्यवाद है। ख़्याल और बेख़्याल की जगह तो सफ़ाचट मैदान लहरा रहा है। पूज्य 'श्री बाबूजी' अब महसूस होना नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उससे शायद ख़्याल को ज़ोर मिलता है। बेख़्याल होना यूं नहीं कहा जा सकता कि वह हालत तो कब की ओझल हो चुकी और कहीं उसका (यानी बेख़्याली दशा का) ध्यान आ जावे तो लगता है कि तबियत अपनी दशा से किसी अरोचक दशा में पहुँच गई, इसलिये अब तो ऐसा ही कह लीजिये कि जो है, जैसा है, बस है, 'मालिक' जाने। अब तो ऐसा लगता है कि निगाह और शीशा हो गई है, नहीं–नहीं तबियत या दशा ही और आईना हो गई है। कुछ ऐसा होता है कि जब दशा दो Point (पॉइंट) के बीच की होती है, तो ख़्याल उथला सा रहता है और जहाँ ऊपर Point (पॉइंट) पर 'मालिक' ने खींचा, बस सोई दशा को फिर गम्भीरता तथा चलने का मैदान मिल गया। जब आगे का रास्ता खुला मिलता है तो फिर उस पर चलना तेज़ी से शुरू हो गया। शायद 'मालिक' ने अनुभव भी कुछ शीघ्र कराना शुरू कर दिया है। परन्तु न जाने क्यों कुछ यह भी होता है कि ज्यों–ज्यों ख़्याल को या दशा को गम्भीरता मिलती है, त्यों–त्यों वह उथला होता है। अब तो ऐसा लगता है कि सब दशा वगैरह सफ़ाचट आईना हो गया है। अब तो दूर से भी कुछ बात आई कि झलक पड़ी परन्तु वह आईना 'मालिक' ने बहुत दूर रखा है, इसलिये 'मालिक' का दिया आईना साफ़ ही रहता है। 'उसके' बनाये आईने पर 'उसी' की मेहरबानी से किसी की झलक पहुँचने नहीं पाती, इसलिये वह ज्यों का त्यों रहता है। आत्मिक–दशाओं की झलक तो उस आईने को और भी उज्ज्वल बनाती हैं, इसलिये उन्हें 'मालिक' जाने। और 'उसकी' कृपा से वह और साफ़ ही होता जाता है। तबियत का तो अब यह हाल है कि उसमें तो कोई चीज़ कोई बात है ही नहीं। वह तो बस आईना ही बनी हुई है। अब कुछ यह है कि मुझे पहले की तरह इतना यह महसूस नहीं होता कि 'वह' मेरे लिये बेक़रार है। परन्तु फिर भी खिंची तो बेरोक–टोक मैं जा रही हूँ। ऐसा लगता है कि 'उसी' में मिटी जा रही हूँ। 'बाबूजी' क्षमा कीजियेगा पत्र बहुत जल्दी में लिख रही हूँ, पूज्य मास्टर

साहब जी बैठे हुए हैं, इसलिये कुछ 'आपको' पढ़ने में शायद दिक्कत पड़े, खैर, क्षमा करियेगा। इति:-

सदैव 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-288

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी',

लखीमपुर

12.3.53

सादर प्रणाम।

आशा है मेरा पत्र पहुँचा होगा। आज शायद दद्दा भी पहुँच गये होंगे। ताऊजी केसर को आज कानपुर पहुँचाने गये हैं। छोटे भइया तथा मंजू की चेचक परसों से ढर गई है। खिचड़ी वगैरह खाने लगे हैं। खैर, ता. 18 से इम्तहान है, तब तक ठीक ईश्वर की कृपा से हो जायेंगे। आशा है 'आपकी' तबियत भी ठीक ही होगी 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है सो लिख रही हूँ।

पूज्य 'श्री बाबूजी' अब तो मेरा यह हाल है कि "दास कबीरा जुगति सों ओढ़ी ज्यूं की त्यूं धरि दीन्ही रे" अब तो न जाने कुछ जो Automatically (अपने आप) ही निगाह में या ख्याल में 'मालिक' रहता था, परन्तु अब ऐसा लगता है कि मैं इससे भी ओझल हो गई हूँ। या यों कह लीजिये कि Automatically (अपने आप) पना ही अब स्वतः ही गायब हो गया। न जाने क्यों कुदरतन भी जो 'उसका' ध्यान निगाह में रहता था, उसे यदि ख्याल भी करूं तो अच्छा नहीं लगता है। अब तो यह दशा हो गई है कि अब जो है, जैसी दशा है, सोई न जाने क्या ख्याल में रहती हूँ। नहीं, नहीं, भाई अब तो 'मालिक' की कृपा से कुछ यह दशा है कि जो है, सो है और मैं कुछ नहीं जानती।

मेरे 'बाबूजी' अब निगाह या तबियत को आगे चलने की या आगे की दशाओं में ही इतना शुद्धपना या भाई इतना अच्छा लगता है कि वह तो सदैव उधर ही, आगे पर ही डटी रहती है। अब तो ऐसा लगता है कि एक आईना की तरह ही और एक ही आईना सा सब ओर महसूस होता है। या यों कह लीजिये कि अब ऐसे ही मैदान या दशा में मैं पैर रही हूँ। परन्तु अब इधर मैं देखती हूँ कि अधिकतर शायद इस दशा को मैं भूली सी ही रहती हूँ, कुछ स्मरण नहीं रहता और जब ख्याल आता भी है, तो न जाने क्यों अब आईना की तरह, जो मैंने लिखा है, वह उतना साफ महसूस नहीं होता है और बहुत हल्की तौर पर महसूस सा होता है। ऐसा लगता है मेरे 'बाबूजी' कि वह दशा या मैदान भी हल्का

हो गया है। धुंधला सा हो गया है और वह भी धुलता सा या समाप्त हुआ सा, अब धीरे-धीरे ओझल सा ही हुआ जा रहा है। मेरी याद से परे हुआ जा रहा है।

जिया के पत्र से मालूम हुआ कि बिब्बो का बुख़ार अब उतर गया है, पहले से ठीक है, परन्तु अभी प्लास्टर चढ़ा हुआ है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर प्रणाम कह गई हैं।

सदैव केवल आपकी ही, स्नेहसिक्ता

पुत्री-कस्तूरी

पत्र संख्या-289

शाहजहाँपुर

14.3.53

प्रिय बेटी कस्तूरी,

ख़ुश रहो।

तुम्हारा ख़त 9 मार्च सन् 53 का भी मिल गया। तुम्हें मालूम है कि जो मुकाम तुम तय कर रही हो, उसके नाम मैंने A,B,C,D रख दिये हैं। जहाँ तक कि हमारा ख़्याल है, A से Z (ए से ज़ेड तक) तक जाने कितनी गिन्तियाँ ख़त्म हो जायेंगी। मुक़ामात के गिनने का तजुर्बा कर रहा हूँ। तबियत ज़रूर घबराती है कि कब तक गिनता रहूँगा। तुम बताओ मुझे क्या करना चाहिये? वैसे इससे अच्छा और हो ही क्या सकता है कि हर मुकाम की सैर होती चले। जब हम ऊपर को खींचते हैं, तो एक निगाह सैर कराने की ज़रूर डाल देते हैं, मगर तुम्हें सैर कराने की तबियत यूं चाहती है कि तुम्हारा एहसास ईश्वर की कृपा से बहुत अच्छा है। चीज़ तो उतनी ही सब में पैदा हो जाती है, मगर अभ्यासी जान नहीं पाता। मुझे अपने बारे में पता नहीं है किन्तु "लाला जी" साहब ने फ़रमाया है कि महासमाधि लेने से पहले जब मैं आपके यहाँ चन्द दिनों के लिये गया था, कमाल दे चुके थे। मगर उसके बाद बारह साल और लिये और इस दौरान में जाने क्या-क्या मुक़ामात और क्या-क्या सैर कराई और फिर जब हालत मौजूदा खुलना शुरू हुई तो फिर तीन महीने रात-दिन मुझ पर रूजू रहे। रात में मैंने यह अनुभव किया है कि बराबर मुझको आध्यात्मिक Force (शक्ति) से भरते रहते थे। मेरी अक्ल काम नहीं करती क्योंकि मिज़ाज़ में जल्दी है और चाहता यह हूँ कि जिन लोगों को शौक़ है, और मोहब्बत है, उनको कम से कम पाँचवे Circle (सर्किल) तक पहुँचा ही दूं, ताकि मैं उनसे फ़ारिग होता चलूं। उसके बाद वह हिम्मत करें तो मैं और आगे बढ़ाऊं। अब मास्टर साहब से मैं बेफ़िक्र हूँ। निगाह ज़रूर कभी-कभी डाल लेता हूँ, यह तो मेरा फर्ज़ ही है। उन्हें मिशन की मोहब्बत और काम अब आगे बढ़ा रहा है।

कभी-कभी ख़्याल तुम्हारे बारे में भी आ जाता है, कि पाँचवे Circle (सर्किल) तक खींच दूं ताकि तुमसे भी इत्मिनान हो जाये। मगर यह न समझ लेना कि इससे आगे मैं किसी को बढ़ाना नहीं चाहता। मुझे तो ख़ुशी उस वक्त हो, जब मुझसे भी ज़्यादा लोग तरक्की करें। हमारी तरक्की ही क्या-एक सोये हुये से हैं और सोने का एहसास नहीं। मगर ख़ैर, जो कुछ भी है, उसका शुक्र अदा करता हूँ और चाहता यह हूँ कि लोग इससे ज़्यादा हिम्मत करें। अगर कहीं दस-बारह भी मुझसे बन गये और बोलने के लिये उनकी ज़बान भी पैदा हो गई तो ईश्वर ने चाहा मिशन का नक्शा ही बदल जायेगा। अब तुम्हारे ख़त का जवाब देता हूँ। तुमने लिखा है कि "दशा और भीतरी व गम्भीर हो गई है।" इसके माने यह है कि लय-अवस्था और बढ़ गई और यह उस मुकाम की लय-अवस्था है जहाँ पर कि तुम हो। हर मुकाम पर लय-अवस्था और सारूप्यता की हालत होती है। तुम्हें 'N' Point (एन पॉइंट) पर मैंने खींच दिया था और यह एहसास सही है।

हम ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते हैं, सूक्ष्म होते जाते हैं। यहाँ तक कि हम कुछ नहीं रहते। हमें कुछ न रहना ही चाहिये। अब थोड़ा सा और बताता हूँ। हम जब सूक्ष्म होते हैं तो, हमारे चित्त में सूक्ष्म लहरें उठा करती हैं और हम जब कुछ नहीं रहते तो चित्त में लहरें उठ जाना बन्द हो जाती हैं। लहरें चाहे जितनी सूक्ष्म क्यों न हो, कुछ न कुछ हमारी शान्ति में बाधा ज़रूर डालती हैं और Senses (वृत्तियाँ) भी कुछ मज़े का एहसास करते रहते हैं। अब उनसे छुटकारा तभी हो, जब हमें सूक्ष्मपने से छुटकारा मिले। संक्षेप में लिख दिया, इतनी ही इसकी ज़रूरत थी।

आज इस समय 9.20 A.M. (प्रातः) पर ता. 15.3.53 पर तुम्हें 'O' (ओ) स्थान पर खींच दिया। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिंतक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या -290

मेरे परम स्नेही 'श्री बाबूजी,' लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 16.3.52

कृपा पत्र 'आपका' आज मिला-पढ़कर हर्ष हुआ। मैं वास्तव में Point 'O' (पॉइंट ओ) के धन्यवाद के लिए 'आपको' पत्र लिखने वाली थी, परन्तु आज 'आपके' पत्र का इन्तज़ार था, बहुत-बहुत धन्यवाद है। ईश्वर की कृपा से बड़े भइया दिल्ली

Exhibition (नुमाइश) में 250/– की Pay पर Service (नौकरी) में अभी डेढ़–दो महीने को लग गये–अम्मा तथा सब लोग 'आपको' बधाई देते हैं।

'आपने' अगले पत्र में लिखा था कि "उन्नति के मार्ग में अभी तुम मुझे बुलबुला दिखाई देती हो" और यह लिखा है कि "कहीं यह मेरी निगाह का क़सूर तो नहीं है"। यह 'आपने' बहुत ठीक लिखा है। ऐसा ही, क्योंकि पहले नहीं, परन्तु अब मैं कुछ ज़रूर 'मालिक' की कृपा से समझने लगी हूँ, क्योंकि मैं देखती हूँ कि मेरे 'मालिक' का हृदय अगाध है, और जिसके बारे में केवल 'नेति' ही कहा जा सकता है। उसमें तो ऐसा है कि "जोई जोई पैरूँ, तेई ऊबरूँ" यानी जैसे–जैसे पैरती हूँ, वैसे–वैसे उथली ही पाती हूँ, परन्तु 'मालिक' की कृपा भी अगाध है, यह मैं भली–भाँति जान गई हूँ। पूज्य 'श्री बाबूजी' 'आपने' अपने इस पत्र में लिखा है कि "तुम्हारा अनुभव अच्छा है" परन्तु मैं तो यही कहूँगी कि यह दिया किसका है। केवल 'आपकी' ही मेहरबानी ने मुझे यह भी बख़्श दिया है। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो 'श्री बाबूजी' कमर बाँधकर संग चलने को तैयार हूँ। जहाँ ले चलियेगा।, वहाँ चलूंगी–जो दिखाइयेगा, देखूंगी। परन्तु जनून सदा बढ़ता ही जावे, यही निशि–दिन 'मालिक' से मेरी प्रार्थना है। ता. 15.3.53 से जो दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो ऐसा लगता है कि उस नम्रता के सागर में डूबी रहती हूँ। परन्तु अब नम्रता का वह रूप पहले वाला नहीं है, बल्कि ऐसा लगता है कि नम्रता पिघल गई है, उसी पिघली हुई नम्रता के सागर के भीतर या सागर में पैठ गई हूँ। शायद इसी कारण अब वह भिदाऊ नहीं महसूस होता है, बल्कि अब सब ओर, हर समय वही सागर है और मैं उसी में पैठी हूँ। नहीं बल्कि भाई अब तो कुछ ऐसा हो गया है कि मैं उस सागर को पीती सी जा रही हूँ गटकती सी जा रही हूँ, इसलिये ऐसा लगता है कि वह मुझमें सब गटकता सा जा रहा है और सारा का सारा ऐसा लगता है कि मुझमें अमाया जा रहा है। अब तो न जाने क्यों अक्सर मैं यही नहीं जान पाती हूँ कि यह सागर मेरे पेट में है या मैं उसमें हूँ। परन्तु सच यही है कि यह वास्तव में मेरे पेट में समा गया है और मेरा रूप ही हो गया है। हाँ इतना ज़रूर है कि यह बात भी अब अक्सर मैं भूली, बिसरी सी रहती हूँ, इसलिये इस बात से अनजान ही रहती हूँ कि यह मेरे पेट में है या मैं उसमें हूँ। तबियत 'मालिक' की कृपा से अब Innocent (मासूम सी) ही हरदम, हर समय रहती है। कुछ यह भी हो गया है कि मैं अब अपने को Innocence (मासूमियत) के सागर में हर समय सराबोर पाती हूँ। तबियत ऐसी नहीं रहती है कि जैसे मुझे कुछ नहीं मालूम। दशा के जानने के लिए ग़ौर करती हूँ बस तब तो एक बात अवश्य पहचान जाती हूँ।

न जाने भाई कुछ ऐसा लगता है कि भूल के सागर में हरदम गड़प रहती हूँ। यह भी लगता है कि भूल के सागर की सतह बराबर सी रहती है और उस सतह में मैं पैठी रहती हूँ, मिली रहती हूँ। नहीं-नहीं बल्कि खोई रहती हूँ। भाई कुछ यह हो गया है कि ऐसा लगता है कि Innocence (मासूमियत) का सागर मुझमें गटकते-गटकते अब खोया सा जा रहा है और यही हाल भूल के सागर का होता सा लगता है। अब तो ऐसा है कि जितना गहरा पैठती जा रही हूँ उतना ही शुद्ध, निर्मल, मोती (यानी दशा) मिलता जाता है। भाई, अब कुछ ऐसा लगता है कि जैसे अब आत्मा के कपाट खुलने लगे हों या इतने झीने पड़ गये हैं कि उसमें से उसके (आत्मा के) झीने-झीने और भीने-भीने प्रकाश से अन्तर प्रकाशित हो उठा है। उजेले से रहित, इतना शुद्ध निर्मल और भीना-भीना प्रकाश या ज्योति है कि अन्तर खुद उसी मय ही बन गया है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं तथा केसर ने प्रणाम लिखा है। बिट्टो छोटे भइया प्रणाम कहते हैं और कहते हैं कि कल से इम्तिहान है। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या -291

शाहजहाँपुर

20.3.53

प्रिय बेटी कस्तूरी,

खुश रहो।

तुम्हारा पत्र 12 मार्च और 16 मार्च का मिल गया। 12 मार्च के ख़त का जवाब देता हूँ। तुमने लिखा है कि "निगाह में 'मालिक' रहता था, कि मैं उससे भी ओझल हो गई हूँ।" इस ख़्याल को तुम ठीक Express (अभिव्यक्त) नहीं कर सकीं। जहाँ तक मैं इनको समझा हूँ, जवाब दे रहा हूँ। यह एक लय-अवस्था को हालत है। जब तुम 'मालिक' के ध्यान में जाना चाहती होगी तो ख़्याल उलटता होगा और तुम्हारे जिस्म पर बंधता होगा। क्या यह बात ठीक है? अगर ठीक है तो तुम्हारा कुल शरीर यही एहसास दिलाता होगा कि तुम खुद 'मालिक' हो। लिहाज़ा अब यही ध्यान बाँधना चाहिये और ख़्याल में रहना चाहिये कि यह शरीर वग़ैरह जो कुछ है, यह सब 'मालिक' ही का शरीर है। फ़र्ज़ कर लो तुम 'A' (ए) का ध्यान करती थीं तो अगर मेरा अनुभव ठीक है और तुम्हारी वही हालत है जो मैंने ऊपर लिखी है तो तुम 'A' का मय उसके जिस्म के अब अपने आप को मान कर ध्यान करना शुरू करो और मानना क्या, अगर वाक़ई तुम्हारी यही हालत है, तो आज खुद ऊपर के तरीक़े में तुम्हें अपना ही ध्यान शुरू हो गया होगा। तुम

लिखना कि मेरा एहसास कहाँ तक ठीक है। तुमने जो शुद्धपन लिखा है, तो जितना आगे बढ़ती जाओगी शुद्धता ही शुद्धता मिलती जायेगी।

अब 16 मार्च के ख़त का जवाब देता हूँ। तुमने लिखा है, मेरे लिखने पर कि तुम्हारा जो कुछ भी अनुभव है, वह मेरी बदौलत है। वास्तव में ऐसा नहीं है। अगर मुझमें काब्लियत होती तो जितने मेरे पास आते हैं, सबका ऐसा ही एहसास हो गया होता। यह सब तुम्हारी ज़ाती मेहनत, प्रेम और लगाव का असर है। Innocence (मासूमियत) की जो हालत लिखी है, यह तुममें कुदरती हालत मौजूद है जिसके मानी यह हैं कि तुम पैदाइश ही से बहुत कुछ शुद्ध आई हो। तुमने जो नम्रता लिखी है, यही ठीक है। इस नम्रता को तुम इतना अपना रही हो कि उसमें भी लय-अवस्था की शुरूआत है। अभ्यासी को हर हालत में लय होना चाहिये, तब कहीं Master Minded (स्वामी) आदमी बनता है। हमारे यहाँ तो लोग पूजा और ध्यान के बाद जो कुछ भी थोड़ा बहुत करते हों, उससे ताल्लुक ही नहीं रखते। कहकर और लिखकर हार गया मगर उनके जूं ही नहीं रेंगती। यह हो सकता है कि उनको एकदम से खींचता ही चला जाऊं। कुछ कर भी जाता हूँ। मगर इससे न मुझको आनन्द आता है और न उनको। मेरा दिल तो सबके लिये यही चाहता है। जितनी लालसा अभ्यासी को होगी, उतनी ही जल्दी ईश्वर को आकर्षित करेगा। मसल मशहूर है कि जब तक बच्चा रोता नहीं, माँ दूध नहीं पिलाती। बाकी अबकी जवाब आने पर लिखूंगा। अम्मा को प्रणाम।

ईश्वर की मर्ज़ी उस समय तक नहीं होती, जब तक कि बन्दे को 'मालिक' के पाने की लालसा नहीं होती।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र-संख्या -292

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, **लखीमपुर**
सादर प्रणाम। **20.3.53**

आशा है मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। यहाँ सब अच्छी तरह से हैं। आशा है 'आप' भी अच्छी तरह से होंगे। छोटे भइया व बिट्टो के Papers ईश्वर की कृपा से काफ़ी अच्छे हो रहे हैं। केसर के पत्र आने पर लिखूंगी कि Papers (प्रश्न-पत्र) उसके कैसे हुए। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब इधर कभी-कभी न जाने क्यों एक आध दिन को Innocence (मासूमियत) के सागर या दशा में कभी-कभी थोड़ी बहुत गुंजलक सी आ जाती है या भाई दशा कुछ छितर सी जाती है। मेरा तो कुछ यह हाल है कि पहले जैसे अक्सर मैं कहा करती थी और इस बात की बहुत इच्छा भी हर समय रहती थी कि 'मालिक' में सोलहों आने भर लय हो जाऊं, परन्तु न जाने क्यों अब तो तबियत में हर समय यही रहता है या इस बात की कमर कसे खड़ी रहती हूँ कि बस जो 'मालिक' की मर्ज़ी हो करे। लेने-देने के भाव कुछ नहीं रहते। बस हिम्मत अब उसी बात के लिये कमर कसे रहती है और हिम्मत भी जितनी, जैसी 'वह' दे देता है। अब तो भाई उस यानी सोलहों आने भर लय-अवस्था का भार भी 'उसी' ने अपने जिम्में ले लिया है। या यह इच्छा अब 'मालिक' की मर्ज़ी में मिल गई है। साहस व उन्नति का भार भी 'कृपालु' ने अपने ही जिम्में ले लिया है। जैसा 'मालिक' चाहेंगे, खुद सम्भाल लेंगे। मुझे तो 'उसी' से काम है।

'मालिक' की कृपा से तबियत साफ़ आज फिर अधिक है। कुछ ऐसा है मेरे 'श्री बाबूजी' कि मैं देखती हूँ कि हर दशा में बेहोशी और भूल की दशा आती है, परन्तु शायद जहाँ एक से दूसरी दशा पर चलती हूँ, या भाई न जाने क्यों फिर होश सा या सचेतन सी अवस्था आ जाती है। अब तो यह दशा है कि होश सी या सचेत सी हो रहती हूँ, परन्तु अधिकतर न जाने क्यों होशपने का एहसास भी कुछ भूली, बिसरी सी हो रहती हूँ।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब कुछ ऐसा लगता है कि जैसे 'मालिक' की कृपा से नम्रता के सागर में फाँद सी पड़ी और एकदम से जैसे तैराक जल में कूदता है तो शायद पहले एकदम नीचे को, एक बेहोशी या अनजानी हालत में बैठता चला जाता है, फिर हाथ पैर चलाकर ऊपर आकर तैरना शुरू करता है। उसी प्रकार मैं एकदम से उस सागर में बेहोश सी, अनजानी सी गहराई में पैठती सी चली गई हूँ। परन्तु अब ऐसा लगता है कि हवास फिर ठिकाने हो गया है और 'मालिक' की कृपा से विश्वास है कि बस अब मैं इसे तैर ले जाऊंगी।

'आपने' अपने पत्र में पूछा है कि "तबियत ज़रूर मेरी घबराती है, कि Points (पॉइंट्स) कब तक गिनता रहूँगा। तुम बताओ, मुझे क्या करना चाहिये। सो मैं सच कहती हूँ कि मुझे कुछ नहीं मालूम। जैसी 'आपकी' मर्ज़ी हो करें। मुझे तो बस कृपा करके वह जनून दे दीजिये, जिससे मैं 'मालिक' को पा सकूं। मुझे तो बस 'मालिक' से काम। जैसी 'आपकी' मर्ज़ी हो 'आप' करें।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। 'बाबूजी' शाहजहाँपुर जाने आने के लिये 3 बसें नई निकली हैं। वहाँ से भी यहाँ के लिये शायद नई निकली हों। एक तो सवेरे

7 बजे चलकर साढ़े दस पर शाहजहाँपुर पहुँचा देती है। दूसरी 9 बजे सवेरे चलकर साढ़े बारह पर वहाँ पहुँचाती है। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या –293

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 23.3.53

कल बतारीख 22.3.53 अन्दाज़न 2.30 p.m पर मुझे 'O' point (ओ पॉइंट) पर कुछ कमज़ोरी मालूम हुई। कमज़ोरी मैंने उसी वक्त रफ़ा कर दी थी। आज ता. 23.3.53 को 10.15 P.M. पर तुम्हें मैंने Point 'P' (पॉइंट पी) पर डाल दिया। सैर के परमाणु मैंने इसी वक्त भर दिये हैं, मुमकिन है 2 या 3 बजे से आज ही सैर शुरू हो जाये। अब तुम हाल लिखना। जब तुम्हें पूरा एहसास हो जावेगा, जो शायद दो–चार दिन में हो जावेगा, तब ईश्वर की कृपा से अगले स्थान पर खींच दूंगा। मेरी समझ से मैं इनको गिन न सकूंगा, क्योंकि बहुत अधिक मुक़ामात हैं। 'Z' (जेड) तक ख़तम करने के बाद मुमकिन हो सका तो हर तीसरे रोज़ या जैसा मौक़ा हुआ, एक Point (पॉइंट) ले लिया करूँगा। आज तुम्हारा ख़त 20.3.53 का मिल गया। जवाब की कुछ ज़रूरत नहीं थी। इसलिये नहीं लिखाया।

शुभचिन्तक

रामचन्द्र

पत्र–संख्या–294

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 24.3.53

कृपा पत्र 'आपका' आज मिला –पढ़कर प्रसन्नता हुई। मैं पत्र डालने में कल से 'आपके' पत्र का ही इन्तज़ार कर रही थी कि मिल जावे तो एक साथ में ही लिख दूं। अम्मा अब बिल्कुल ठीक हैं, सो रही हैं, फ़िक्र की बात तनिक भी नहीं है।

मेरे 'श्री बाबूजी' आज दद्दा से मालूम हुआ कि 'आपकी' तबियत अधिक ख़राब हो गई थी। मुझे इधर कई दिनों से यही दिखाई पड़ता था कि 'आप' बीमार हैं, इसीलिये मैंने अपने पत्रों में 'आपकी' तबियत के बारे में पूछा था। ख़ैर, अब आप डाक्टरी दवा

ही खाइये, जिससे जल्दी से अच्छे हो जायें। 'आपने' मेरी दशा को देखकर जो लिखा है, वह बिल्कुल ठीक है, और ता. 25 की डायरी से मिल भी रहा है। मैं इतना साफ़ अब भी नहीं लिख पाई हूँ, जितना साफ़ 'आपने' लिखा है। ख़ैर जो कुछ भी दशा मेरी समझ में आई, लिख रही हूँ और "आपने" जो ध्यान करने को लिखा है, वह तो केवल 'मालिक' की कृपा से खुद ही शुरू हो चुका है। कुछ ऐसा है भाई कि मुझे दिमाग़ लगाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती, जो होना होता है, वह ध्यान खुद ही शुरू हो जाता है। कृपा करके 'आपने' Point 'P' (पॉइंट पी) पर मुझे खींच दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद है। मुझे इसका एहसास एक दिन बाद हो सका। ख़ैर, अब जो आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो मेरा यह हाल है कि जैसे पहले एक बार 'आपने' लिखा था कि "कोई Working (कार्य) करने से पहले यह ख़्याल कर लिया करो कि मैं कर रहा हूँ। 'मेरा' ही ख़्याल व ताक़त काम कर रही है" सो मैं बराबर कर लिया करती थी, परन्तु इधर अब यह दशा है कि जहाँ इस तरफ़ ख़्याल गया नहीं कि बड़ी सरलता से Automatically (अपने आप) ही वैसा मालूम पड़ता है या यह कह लीजिये कि यह ख़्याल तो मेरी चीज़ ही हो गया है। कुछ यह है कि अब 'मालिक' का ख़्याल या ध्यान करना चाहती हूँ तो ख़्याल उलट पड़ता है और कुछ अच्छा नहीं मालूम पड़ता था और इससे शरीर और दिल पर कभी कभी भारीपन सा हो जाता था। इसलिये अब तो भाई अपने बजाय 'मालिक' का ही जल्वा दिखलाई पड़ता है, नहीं,नहीं बल्कि मेरा तो कुल शरीर तक अब 'वही' हो चुका है।

मेरे 'बाबूजी' न जाने क्यों ऐसा लगता है कि दशा अब सोई हुई स्मृति की तरह है। अब तो कुछ ऐसा है कि सब तरफ़ से बेहोशी रहते हुए भी तथा भूल की अवस्था में हर समय रहते हुए भी मुझे इनका एहसास नहीं रहता। कभी महसूस नहीं होता है। भाई, न जाने क्यों कुछ ऐसा है कि मेरा एहसास अब हरदम ख़ाली ही पड़ा रहता है। दशा महसूस करने पर भी न जाने कैसे एहसास ख़ाली रहता है या यों कह लीजिये कि एहसास का ज़ोर निकल कर वह केवल ख़ाली ही रह गया है। इसी कारण अब अक्सर एहसास के एहसास से अनभिज्ञ सी ही रहती हूँ और अनभिज्ञता भी अब एहसास में नहीं आ पाती है, इसलिए वह सूना सा रह गया है। मैं यह देखती हूँ कि दशा में भी अब अधिकतर सूनापन सा ही होता जाता है। परन्तु दशा का 'मज़ा' मैं ज़रूर अनुभव करती हूँ। परन्तु अनुभव में ख़ालीपन सा भी अवश्य रहता है और अब जो दशा का मज़ा मैं अनुभव करती हूँ, वह इस तरह का मालूम पड़ता है कि जैसे सोई हुई स्मृति में 'मज़े' का एक स्पन्दन सा हो जाता है या होता रहता है। बस Senses (वृत्तियाँ) 'मज़े' का इतना

ही एहसास कर पाती हैं। परन्तु एहसास 'मज़े' का एहसास नहीं कर पाता। भाई, मैं कुछ जानती नहीं हूँ कि यह मेरी क्या और कैसी दशा है।

'अपनी' तबियत का हाल जल्दी दीजियेगा। ईश्वर करे 'आप' अच्छे हों। शायद परसों मास्टर साहब जी तथा शुक्ला जी वहाँ पहुँचेंगे। तब तक कुछ दशा एहसास में और आई तो लिखूंगी। केसर पहली या दूसरी तक यहाँ आ जायेगी और 'आपको' प्रणाम लिखा है। उसके तथा बिट्टो और छोटे भइया के Papers भी 'मालिक' की कृपा से ठीक हो रहे हैं। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–295

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम। 29.3.53

मेरा पत्र पहुँचा होगा। आशा है 'आपकी' तबियत अब ठीक होगी। अम्मा बिल्कुल ठीक हैं। पर्चे अभी तक ईश्वर की कृपा से केसर, बिट्टो तथा छोटे भइया तीनों के अच्छे हो रहे हैं। केसर का तो ता. 25 को समाप्त हो गया। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरा तो यह हाल है कि ध्यान करती हूँ, परन्तु रस न जाने क्यों कुछ शान्त सा पड़ता जाता है। न जाने यह क्या बात है कि ध्यान तो करती हूँ, परन्तु ध्यान का कुछ ध्यान नहीं रहता। मैं तो अनजान सी होती जा रही हूँ। अज्ञानपन ऐसा है कि न जाने कैसे अब अनजान से भी अनजान हो अपने को हर समय पाती हूँ, या यों कह लीजिये कि अनजान होने का भी होश नहीं रहता, या यह कह लीजिये की एहसास भी कुछ ख़ामोश सा हुआ जा रहा है। मेरे 'बाबूजी' अब तो यह हाल है कि सारा शरीर 'उसका' ही शरीर महसूस होता है। नहीं, नहीं, केवल 'उसका' ही शरीर दिखलाई पड़ता है और 'वहीं' महसूस होता है। अब तो यह सब कुछ 'उसका' ही रूप हो गया है।

अब तो यह दशा है कि प्रशान्त सागर में ही डूबी रहती हूँ और सागर ऐसा है जिसमें हिलोर या लहर नहीं उठतीं। वह तो शान्त हो गई हैं, परन्तु अभी स्पन्दन ज़रूर शेष है, या होता है और सतह सदा बराबर ही रहती है। कुछ ऐसा लगता है कि प्रशान्त सागर तो मेरा अपना रूप ही हो गया है। इसमें अब न गर्जन होता है, न शब्द ही होता है, बस स्पन्दन ज़रूर है। अब तक यह था कि सागर में Senses (वृत्तियाँ) जागती सी रहती

थीं, परन्तु अब यह देखती हूँ कि Senses (वृत्तियों) में कुछ मुर्दापन सा घर करता जा रहा है। Senses में भी Senseless पना सा बैठता जाता है, या यों कह लीजिये कि उनमें ख़ामोशी सी हुई जा रही है।

मेरे 'बाबूजी' अब तो मेरा यह हाल है कि अपनी ही पूजा करती हूँ। अपना ही ध्यान और अपनी ही अर्चना और वन्दना करती हूँ। अब तो अन्तर भी खुद मैं ही हो गई हूँ या अन्तर मेरा रूप ही हो गया है। परन्तु यह ज़रूर है कि इस 'अपने' या 'मेरे' की तह में तो कोई और ही छिपा हुआ है, 'जो' या 'जिसके' मिलने की तड़प ने अन्तर को मथ सा डाला है और मथे डाल रही है। अब तो भाई, ऐसा लगता है कि आन्तरिक दृष्टि भी ख़ामोश होगई है, या यों कह लीजिये कि अन्तर भी सब बाहर हो गया है, तो आन्तरिक दृष्टि कहाँ रहे या भाई, यह है कि अब तो सब केवल अन्तर ही अन्तर हो गया है। वैसे तो चाहे यह कह लीजिये अब अन्तर या बाहर कुछ है ही नहीं। शायद कुछ स्पन्दन के कारण Senses (वृत्तियों) में पूरा मुर्दापन नहीं आ पाया है, क्योंकि शायद स्पन्दन से Senses (वृत्तियों) को कुछ चेतना सी मिलती है। सपाट सतह की तरह कुछ होगा, मुझे नहीं मालूम। 'आप' ही जानें, जो दिया होगा, सोई होगा।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा बिट्टो, छोटे भइया, प्रणाम कहते हैं। अम्मा और हम सब लोगों की प्रार्थना है कि उत्सव में 4 अप्रैल को आने की कृपा करें। माया, छाया तथा दादी से भी कह दीजियेगा कि अम्मा सबको उत्सव के लिये बुला रही हैं, कृपया अवश्य आवें। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–296

शाहजहाँपुर
2.4.53

प्रिय बेटी कस्तूरी

खुश रहो।

तुम्हारे खत 24.3.53 और 29.3.53 के मिल गये। 24.3.53 के ख़त का जवाब दे रहा हूँ। जब लय–अवस्था बढ़ जाती है तो इस ख़याल करने की ज़रूरत कम रहती है, कि यह काम 'मालिक' कर रहा है। 'मालिक' में जितनी पैवस्तगी ज़्यादा होगी, उतनी दुई कम होगी। पूजा में दुई आ जाती है, इसलिये दिल पर भारीपन महसूस होता है। ऐसी हालत में हल्का–हल्का Natural way (स्वाभाविक रूप में) में ध्यान करना चाहिये। जितनी दशा हल्की होती जाती है, उतना Expression (अभिव्यक्ति) के लिये शब्द नहीं मिलते। आगे हालत में सूनापन ही बढ़ता है और फिर वह भी नहीं रहता।

29.3.53 का जवाब यह है, मैं इस हालत को पढ़कर उछल पड़ा कि "अपना ही ध्यान और अपनी ही अर्चना और वन्दना करती हूँ।" यह अच्छी लय-अवस्था की ख़ुशख़बरी है। किसी ने कहा है :-

"अपने सज़दे के सिवा ग़ैर का सज़दा है हराम।"

मैं 29.3.53 के खत का बहुत जवाब लिखाना चाहता था, मगर मुझे लिखने वाला न मिला। ख़ैर, ईश्वर की मर्ज़ी। अपने आप जो लिखा है, बहुत टूटा-फूटा लिखा है और उसका भी Expression (अभिव्यक्ति) ठीक नहीं। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिन्तक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या-297

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर

सादर प्रणाम। 2.4.53

आशा है पोस्टकार्ड 'आपको' मिला होगा। ताऊजी का फोड़ा अब अच्छा दीखता है। भीतर की सूजन बढ़ना रूककर एक तरफ की पटकना भी शुरू हो गई है, यह आज होम्योपैथ डाक्टर ने कहा है। फोड़ा ऊपर को उमस आया है, यह भी अच्छा बताया है। बुख़ार भी 100° से आगे नहीं जाता है। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसा है कि मुझे अब न तो अपनी चाल तेज़ ही मालूम पड़ती है, न धीमी, कुछ एहसास ही नहीं होता, बस रफ़्तार से और क्रम से चल रही हूँ। अब तो न मुझमें कोई रफ़्तार है, न खड़ी हूँ, और चल रही हूँ तो इसलिये कि हालत यद्यपि भीतरी एक साँ ही रहती है, परन्तु दशाएँ आती रहती हैं, इस प्रकार जैसे कि ऋतुएँ बदलती रहती हैं, परन्तु वर्ष या साल पर इसका कोई असर नहीं पड़ता। अब कुछ ऐसा लगता है कि निगाह या ध्यान अपने ज़र्रे-ज़र्रे में भीतर की ओर हो गई है, या यों कह लीजिये कि कुछ ऐसा लगता है कि वाह्य-शरीर में कुछ एक हल्का सा प्रतिबिम्ब शायद भीतर है। निगाह या ध्यान अब उसी के ज़र्रे-ज़र्रे में अपने 'मालिक' ही 'मालिक' को महसूस करती हूँ। अब तो उसी में भिद रही हूँ। या भाई, उस ज़र्रे-ज़र्रे में 'मालिक' ही 'मालिक' समाया जाता है। अब तो मेरी यह दशा है कि मुझे तो बाहर कोई कुछ महसूस नहीं होता, कुछ, कोई नहीं दिखाई देता है। जहाँ ध्यान है, बस वही है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। 'मालिक' की कृपा से ताऊ जी को कुछ लाभ हो रहा है।

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–298

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' — लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। — 4.4.53

कृपा–पत्र 'आपका' आज शाम को मिला–पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'आपके' कृपा–पत्र से आज दिन की प्रसन्नता में और प्रसन्नता बढ़ी। 'आपकी' कृपा, आपके पत्र मुझे मंज़िल पर चढ़ने के लिये सीढ़ी का काम देते हैं। इधर जो कुछ भी मेरी दशा है, सो लिख रही हूं।

न जाने क्या बात हो गई है बाबूजी कि हर समय तबियत उनींदी सी रहती है, परन्तु नींद तो नहीं आती। जब मन में जोश बढ़ाती हूँ तो तबियत कुछ देर को हरी सी हो जाती है, और ऐसा लगता है कि आँखें खुल गईं, परन्तु जहाँ याद भूली तो फिर वही दशा हो जाती है। यद्यपि कुछ सुस्ती के तौर पर (शरीर की) नहीं है। अब तो जब घर में चहल–पहल सी मचे, तो भी उनींदी सी ही दशा रहती है। हाँ, यह ज़रूर है कि फिर कुछ देर को जैसे तबियत उभर आई और फिर नींद सी में और कुछ नशे सी में भरी तबियत रहती है। वैसे तो जो दशा 'मालिक' दे, सो सिर माथे है, परन्तु मैं देखती हूं कि दशा के अनुभव करने में कुछ बाधा सी पड़ती है, क्योंकि मैं अपने वश में नहीं रहती, मैं तो अजीब नींद सी दशा में रहती हूं।

मेरे 'बाबूजी' न जाने क्यों मुझे अब 'मालिक' के नाम में श्री वगैरह लगाने की न सुधि रहती है और न मुझे खटकता है। मुझे 'उसे' जैसे कहूँ, वैसे ही अच्छा लगता है। अब कुछ ऐसा लगता है कि अन्तर और बाहर के बीच का पर्दा या बाँध टूट कर दोनों एक होकर, समान रूप हो गये हैं। यदि मैं यह कहूँ कि कुछ–कुछ ऐसा ही हाल मेरा, 'मालिक' से शुरू हो गया है तो शायद ठीक हो। अब पत्र समाप्त करती हूँ, रात काफ़ी हो गई है। जल्दी में इतना लिख दिया, अब अनुभव होगी दशा सो अगले पत्र में लिखूंगी। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा चिरंजीवी होने का आशीर्वाद दे रही हैं। केसर कल आ गई, वह तथा बिट्टो और छोटे भइया प्रणाम कहते हैं। आज शुभ दिन श्री लालाजी साहब को हम सब की बहुत–बहुत बधाई है तथा प्रार्थना है कि 'बाबूजी' दीर्घायु हों और मिशन

की खूब उन्नति हो। अम्मा प्रसाद आप सबके लिए और हरी दद्दा के लिए भेज रही हैं। इति:-

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहरिक्ता
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–299

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर
सादर प्रणाम। 5.4.53

कृपा–पत्र 'आपका' लिखा हुआ कल मिला। कुछ उत्तर कल लखनौर वाले भाइयों के हाथ भेज चुकी हूँ, मिल गया होगा। बाबू करुणा शंकर जी अभी मास्टर साहब के यहाँ हैं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

न जाने क्यों, भाई ऐसा लगता है कि आध्यामिकता का Pure रूप या नग्न रूप ही मेरी दशा है। अब तो Pure (प्योर) आध्यामिकता के प्याले ही पिया करती हूँ। मेरी आध्यात्मिक दशा रूपी फुलवारी, मुझसे ही निकलती, या उत्पन्न होती Pure आध्यात्मिकता से खिंचती रहती है। भाई न जाने क्यों मुझे तो यही महसूस होता है कि Pure आध्यात्मिकता की सुगन्ध मुझसे ही हर समय निकला करती है या खुद मुझसे ही पैदा होती रहती है, या यों कह लीजिये कि खालिस आध्यात्मिकता मेरा रूप ही हो गया है। अब ऐसा महसूस होता है कि खालिस आध्यात्मिकता ही मुझमें उतरने लगी है।

मेरे 'बाबूजी' कुछ ऐसी दशा है कि दृष्टि निर्मल हो गई। मुझे तो अब सब शुद्ध ही शुद्ध दीखने लगा है, जिससे मैं खुद अपने दर्शन करने लगी हूं और जिससे अपने को पहिचानने लगी हूँ। अपने में ही रहती और अपने में ही रमण करने लगी हूं। अब तो मैं नहीं जानती कि मुझे तृष्णा 'मालिक' की बढ़ गई या अपनी, परन्तु कहना तो यही है या ठीक तो दूसरी बात (यानी अपनी) मालूम पड़ती है। परन्तु फिर भी 'अपनी' की तह में कोई और ही छिपा है, परन्तु बहुत सूक्ष्म रूप से तभी मुझे शायद उस तह वाले की याद नहीं रहती है।

मेरे 'बाबूजी' सच तो यह है कि अब तो यह कहूँ तो ठीक होगा कि "दिल में है तस्वीरे–यार, जब ज़रा गर्दन झुकाई देख ली।" अब तो यह उल्टी रीति हो गई है। कुछ ऐसा लगता है कि, वैसे तो 'आप' जानें किन्तु शायद Reality (वास्तविकता) अपने वास्तविक रूप में कुछ मुझमें झलकने लगी है। न जाने क्यों, मुझसे अब यह ठीक नहीं

बन पड़ता कि यह काम 'मालिक' कर रहा है, फिर भी अब यह चीज़ कुछ होती ज़रूर है, परन्तु दूसरे रूप में या अन्दर ही अन्दर कुछ बहुत हल्के से तौर पर कर पाती हूँ, परन्तु करती ज़रूर हूँ।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-300

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर

सादर प्रणाम। 8.4.53

आशा है मेरा पत्र मिला होगा। 'आपकी' तबियत अब कैसी है। अम्मा कहती हैं कि बड़े भइया की तनख्वाह के 100/- आज आये हैं, उसमें से केवल 10/-'आप' नज़र-स्वरूप स्वीकार अवश्य करियेगा। प्रसाद भी कल चढ़ेगा। प्रिफेस तो मास्टर साहब ने Correct (ठीक) कर दिया है। मैंने और ताऊजी ने भी देख-भाल लिया है। 'आपको' अकेले इसमें नहीं परिश्रम बहुत पड़ेगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरा तो यह हाल है कि मुझे तो अब हर समय यही कहने में अच्छा लगता है और यही रट लगी रहती है कि :-

"अपने सिजदे के सिवा, गैर का सिजदा है हराम"

'मालिक' की कृपा से अब मुझमें तो यही दशा आईने की तरह चमकने लगी है। मेरा तो अब यही हाल है। कुछ ऐसी दशा है कि बाहर तो कुछ नींद सी, उनींदी सी ही तबियत रहती है, यद्यपि जब से 'आपको' लिखा था, तब से कुछ कम है, परन्तु अन्तर में कुछ चेतना जो शेष है, इसी से शायद शारीरिक-सुस्ती व हर समय सोने से बची रहती हूँ।

'मेरे' 'बाबूजी' न जाने कुछ ऐसा लगता है कि न मृत्यु ही है, न ज़िन्दगी ही। परन्तु अब तो अक्सर कुछ यही दशा मालूम पड़ती है कि केवल ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी है, जहाँ पर मृत्यु का तो प्रश्न ही नहीं रह जाता है। उसी अमर ज़िन्दगी की ही मेरे 'मालिक' ने शुरूआत कर दी है। कुछ ऐसा लगता है कि बाह्य तथा अन्तर की वृत्तियाँ तथा इन्द्रियाँ शायद अब नष्ट या समाप्त ही हो गई हैं। क्योंकि उनमें भी अब ऐसी दशा है कि न मृत्यु ही है और न जीवन ही है। अब न जाने क्या है।

मेरे 'बाबूजी' न जाने कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि शरीर में और नस–नस में 'मालिक' भिदा जाता है। इस शरीर के ज़र्रे–ज़र्रे में 'वह' समाया जाता है और शायद इसी कारण मेरे अंग–अंग में, नस–नस में नम्रता भी भिदती चली जाती है। या भाई, हज़्म होती चली जाती है। या कुछ ऐसी दशा है कि बुन्द में सिन्धु का सिन्धु समाता और सूखता सा चला जाता है। नहीं, नहीं, अब सिन्धु है, और न बिन्दु है दोनों ही न जाने कहाँ चले गये, न जाने कहाँ बिला गये–मुझे नहीं मालूम। मेरे 'बाबूजी' आप शायद Point 'Q' (पॉइंट–क्यू)पर भेजकर मुझे लिखना भूल गये, कृपया लिखियेगा। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं।

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–301

प्रिय बेटी कस्तूरी — लखीमपुर

खुश रहो। — 12.4.53

तुम्हारे ख़त सब मिल गये। हिन्दी मुझे नहीं आती। लिखने में भी हाथ काँपता है और जो सोचता हूँ उसको, जब लिखने बैठता हूँ तो, विचारों की लड़ी ठीक नहीं बन पाती। कहाँ तक मैं अपने नुक़्स लिखूं। दूसरे का मोहताज ही रहना पड़ता है। एक चना भाड़ फोड़ नहीं सकता। चाहता यह हूँ कि सब मिलकर जो काम जिसके लायक है, उसको करें, मगर लोगों में दिलचस्पी पैदा नहीं होती। जिसकी ईश्वर–विषय में दिलचस्पी पैदा नहीं होती, तो वह मिशन के ही काम में दिलचस्पी पैदा करे, तो भी हो सकता है, क्योंकि अगर Sincerity (निष्कपटता) साथ है तो ईश्वर–विषय में भी दिलचस्पी पैदा हो जाय। मगर पित्तामारी कोई करने ही क्यों लगा, गरज़ तो मेरी रह गई है और है भी ऐसा ही। इसलिये वास्तव में मैं खुशामद ही सबकी करता हूँ। इसलिये कि इस चापलूसी ही से कोई फ़ायदा उठा ले। लोग इस इबारत को देखें तो वाक़ई हंसेंगे, मगर मैं अपनी तबियत को क्या करूँ कि मैं सबकी सब, सब में उड़ेलना चाहता हूँ। मुमकिन है कि यही वज़ह हो कि लोग ग्रहण करने के लिये तैयार न होते हों। उड़ेल तो मैं जाऊंगा ही, ख़्वा वह फिर छलक क्यों न पड़े और जिसमें उढ़िल गई, तो फिर दूसरे छलकी हुई चीज़ पा सकेंगे। इसीलिये मैं चाहता हूँ कि सब में उड़ेल दूं। और इस वक्त में तो ऐसा है कि सबमें या जो चाहें उनमें, असल हालत उढ़ेली जा सकती है।

अब यह तो और लोगों के बारे में कहा, अब मैं अपनी कहता हूँ। इतना सुस्त हो गया हूँ और नाकारा कि ऐसी मिसाल तो शायद कहीं न मिले। सुस्ती की यह हालत है कि जैसे किसी में जान न रही हो। चारपाई पर अगर लेटा हुआ हूँ, तो छः महीने उठने की तबियत नहीं चाहती। खाना तैयार है और सुस्ती इस क़दर कि कौन खाये इस वक्त; फिर देखा जायेगा। प्यास लगी हुई है, और इस इतंज़ार में है कि आराम से कौन उठे; जब उठेंगे, पानी पी लेंगे। काम पड़े रहते हैं और करने का जी नहीं चाहता। ठीक है, ईश्वर के यहाँ इंसाफ़ होता है। ऐसे सुस्त और काहिल आदमियों को काहिल और सुस्त आदमी मिलते हैं। मैं जानता हूँ, हमारी संस्था में काहिली और सुस्ती का ज़िम्मेदार मैं ही हूँ, और यही वजह मालूम होती है कि लोग मेरा कहना ज़्यादातर नहीं सुनते। मुर्दे से भला किसको ज़िन्दगी मिली है और सुस्ती से भी चैतन्यता कब हो सकी है? दोनों एक दूसरे के ख़िलाफ़ (Opposit) हैं।

अच्छा, अब मतलब पर आता हूँ। मैं 'P' (पी) स्थान पर ज़्यादा तवज्जोह दे गया था, और वह यह थी कि मुझे कुछ अन्दाज़ नहीं लग सका और यह गलती हमेशा जल्दी की आदत से होती है। कुछ ऐसी आदत पड़ गई है कि जल्दी से इस चीज़ को ख़त्म कर दूं, ताकि बार-बार रूजू न होना पड़े। मैं अक्सर काम को ख़त्म करने में Special will (विशेष इच्छा शक्ति) इस्तेमाल कर जाता हूं और उसमें जल्दी की वजह से यह अन्दाज़ नहीं होने पाता कि कितनी Intensity (गहराई) होनी चाहिये। मैं बड़ी कोशिश करता हूँ, मगर यह चीज़ अब तक ठीक नहीं आई है। 'P' (पी) स्थान पर ज़्यादा तवज्जोह देने की वज़ह से उसमें इतनी शक्ति पैदा हो गई कि तुम उसको हज़म ही नहीं कर पा रहीं थीं। जब देखा कि चीज़ हज़म नहीं हो रही है, तो फिर उसे हज़म कराना पड़ा और साथ ही उसके यह भी ख़्याल रक्खा कि उसमें Mind कहो या चैतन्यता कहो, ऐसा पैदा कर दिया तुम ख़ुद अगले मुकाम पर पहुँचो। चुंनाचे आज 11.45 A.M. पर तुम आगे बढ़ने लगीं। ज़रा सा सहारा मेरी लगाने की ज़रूरत थी, वह लगा दिया और तुम 'Q' (क्यू) स्थान पर पहुँच गईं।

यह ख़्याल तुम्हारा ठीक है कि सुगन्ध -आध्यात्मिक तुमसे हर समय निकलती है। तुमने लिखा है कि पैदा होती रहती है-पैदा नहीं होती, बल्कि सबमें मौजूद है। आवरण पड़े होने के ख़ातिर, जो इंसान के ख़ुद डाले हुए हैं, महसूस नहीं होती। तुमने लिखा है, कि सब शुद्ध ही शुद्ध दीखने लगा है-यह एहसास तुम्हारा सही है। जब इंसान बहिर्मुखी नहीं रहता, बल्कि अन्तर्मुखी हो जाता है, तो वही अन्दर वाली हालत बाहर मालूम होने लगती है। वैराग्य इसीलिये ज़रूरी है कि जब राग उस चीज़ से हो जाता है, तो उसका Weight (वज़न) ख़्याल में पूर्ण वैराग्य हो जाने पर नहीं

रहता और चीज़ निगाह और ख़्याल से हट जाती है। जब यह हालत हो जाती है, तो फिर ईश्वर ही ईश्वर रह जाता है और जंगल में बैठने और तपस्या करने की ज़रूरत नहीं रहती। तुमने यह भी लिखा है कि "जिससे मैं ख़ुद अपने दर्शन करने लगी हूँ और जिससे मैं अपने को पहचानने लगी हूँ।" इसमें से मैं इसका मतलब नहीं समझा कि "मैं अपने को पहचानने लगी हूँ।" तुम लिखो कि तुमने क्या पहचाना। जब 'मालिक' में ज़्यादा प्रवेश हो जाता है तो फिर अपनापन जाता रहता है और अपने से मतलब 'मालिक' का हो जाता है, यानी यह काम सब 'मालिक' कर रहा है। मगर यह कच्ची लय-अवस्था है। जब यह भी ख़्याल जाता रहे यानी इसका Weight (वज़न) भी न रहे कि काम कौन कर रहा है, तब अच्छी लय-अवस्था कही जा सकती है। मगर इसके बाद अभी और कुछ है। यह ज़रूर है कि तुम अब अपना ध्यान करने लगी हो। जहाँ तक कि मेरा ख़्याल है और मुमकिन है उसी को तुमने अपना पहचानना लिखा हो। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिन्तक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या-302

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी', लखीमपुर

सादर प्रणाम। 13.4.53

कृपा-पत्र 'आपका' आज मिला-पढ़कर प्रसन्नता हुई। 'Q' (क्यू) स्थान पर खींच देने के लिये बहुत-बहुत धन्यवाद है। मेरी तबियत भी कुछ ऊबती सी मालूम पड़ती थी, सो ठीक हो गई। न जाने इस ग़रीब की प्रार्थना कब मंज़ूर होगी कि ब्रह्म-विद्या के प्यासों की संख्या दिनों दिन बढ़ने लगे। देखिये कब 'उस' तक आवाज़ पहुँच सके, क्योंकि हम 'उससे' ज़रूर दूर रहते हैं, परन्तु 'वह' हमारे सबसे पास है। 'आपके' पत्र का उत्तर देने की ग़रज़ से नहीं, बल्कि जो 'मालिक' की कृपा से कुछ मालूम है, कुछ रत्तीभर 'उसकी' ही कृपा से अनुभव हो गया है, सो निवेदन कर रही हूँ -

'आपने' लिखा है कि "मुर्दे से भला किसको ज़िन्दगी मिली है?" सो भाई, जहाँ तक मेरी तुच्छ बुद्धि है तो असली ज़िन्दगी मुर्दे से ही मिलती है और मुर्दे को ही मिलती है, हाँ हम पहिचान पावें या नहीं। मुर्दा हमें वैराग्य का सबक देता है।, जिससे हम झूठी, पानी फेरी हुई दमक की ओर से आँखें बन्द करके असल ज़िन्दगी की खोज करते हैं। परन्तु यदि हम केवल रोने में ही लगे रहें और बुद्धि को काम में न लावें तो उसका क्या दोष और मुर्दा होने के बाद ही नया शरीर, नवजीवन या नई ज़िन्दगी मिलती है। दूसरे 'आपने' लिखा है कि "सुस्ती से चैतन्यता कब हो सकती

है?" सो भाई, मैं तो यही सीख रही हूँ और देख रही हूँ कि सुस्ती से ही असल चैतन्यता मिल सकती है और मिलती है। चैतन्यता तो वही है जो 'मालिक' की तरफ़ को 'उसके' लिये हमें हर समय चौकन्ना रखे। यदि हम उस ओर के लिये चैतन्य नहीं हैं तो हम ज़रूर सुस्त हैं। कहा जाता है कि मुर्दे के भी कान होते हैं, तो अचैतन्यता कैसी। अपनी चेतना खोने पर ही चैतन्यता मिलनी शुरू होती है। मुझे तो 'श्री बाबूजी' 'आप' यही सिखा रहे हैं। यह 'आपकी' दशा नहीं बल्कि काहिल और सुस्त हम हैं जो केवल अपने को ही पूजने में लगे रहते हैं। 'आप' तो हमें एक-एक शब्द से Light (प्रकाश) देते हैं, परन्तु हम अन्धे चौंधिया कर आँखें और बन्द कर लेते हैं। ख़ैर 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ। 'आपने' जो लिखा है कि अपने ध्यान करने को ही अपना पहिचानना लिखा हो-यह ठीक है मेरे 'बाबूजी' मेरा तो अब कुछ यह हाल होता जाता है कि :- "ख़ुदी को मिटाने में एक जन्म खोया, मैं क्या जानता था कि ख़ुद ही ख़ुदा है।" अब तो भाई, न जाने कैसी उल्टी रीति ही मेरी दशा हो रही है कि 'मालिक' की कृपा से ऐसा दिखाई पड़ता है, यह महसूस होता है कि अब 'मालिक' पिघल-पिघल कर अंग-अंग में समाता या मिटता चला जा रहा है। पिघल-पिघल कर ज़र्रे-ज़र्रे में मिल जाता है। सिन्दु 'सिन्धु' को पिये जाता है। ऐसा लगता है कि अब तो ज़र्रे-ज़र्रे में से, साँसों में से नम्रता ही निकलती रहती है। हर समय नींद वाली या सुस्ती वाली दशा परसों से ठीक है। मेरे 'बाबूजी' मेरा तो अब यह हाल हो गया है कि ऐसा लगता है कि मैं ख़ुद अपने में ही समा या मिट गई हूँ, मिटती जा रही हूँ। ऐसा लगता है भीतर सब कुछ सिमट सिमटाकर न जाने क्या हो गया है। इति :-

सदैव केवल 'आप' की ही स्नेहासिक्त

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-303

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी', | लखीमपुर

सादर प्रणाम। | 16.4.53

आशा है पूज्य मास्टर साहब जी के हाथ पत्र भेजा था, सो मिल गया होगा। वहाँ तो तीनों जनों को मास्टर साहब जी, भइया (शुक्ला जी) तथा कुकरा वालों को ख़ूब ही आनन्द रहा होगा- और भाई, अपने आराध्य के पास में रहने से कौन ऐसा होगा, जिसका हृदय पिघला न रहता होगा, परन्तु 'मालिक' की कृपा से मैं भी इस आनन्द से वंचित न रही। रात-रात भर तो, आँखें खुलने पर भी वहीं रहने की सी दशा पाई है, वैसे सोने पर तो बराबर यही रहता है कि वहीं 'आप से' कभी कुछ पूछना, 'आपका' उत्तर देना और उन

सब लोगों के साथ बराबर 'आपके' समीप ही बैठे रहना। हाँ, दिन में तो वैसी नहीं, परन्तु जिस दशा में रहती हूँ, वह लिख रही हूँ। मेरी तो वही दशा रहती है कि "रैनभई तब ही उठ जाऊं, भोर भये उठ आऊं"। रात में शरीर के भी साथ में और मन तो बिक ही चुका है। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ यह दशा है कि रग-रग में मैं समा गई हूँ। अपने ज़र्रे-ज़र्रे में अब अपना ही जल्वा देखती हूँ। अब जो दशा महसूस होती है, वह कुछ इस तरह की दिखाई पड़ती है, जैसे Natural-Scene (स्वाभाविक दृश्य) आया, फिर बदल गया- कुछ लगाव-लपेट नहीं मालूम पड़ता है, परन्तु फिर ऐसा लगता है कि हृदय खुला नहीं है, इसलिये ऐसा लगता है कि हर दशा उस सीमा के अन्दर ही रहती है-असीमित नहीं हो पाती। वैसे मन से या दशा से तो सम्भव है 'मालिक' की कृपा से इससे अवश्य परे हो सकती हूँ-या भाई, यों कह लीजिये कि निगाह तो इसके परे है ही-मैं उस बंधन में कतई नहीं हूँ, बल्कि शायद 'मालिक' अवश्य ही स्वतंत्र होने हुए भी बंधन में आ गया है, ख़ैर मुझे कुछ नहीं मालूम, अपनी 'वह' जाने। मेरे परम स्नेही बाबूजी मैं देखती हूँ कि "अपने सिज़दे के सिवा, गैर का सिज़दा है हराम" या भाई, मैं ख़ुद ही 'मालिक' हूँ - यह दशा होते हुए भी मुझे अब इसकी याद नहीं रहती, याद नहीं आती। कुछ इस तरह पर है कि मैं नहीं जानती कि है भी या नहीं। हाँ, यद्यपि मुझे तो अब इसकी भी याद नहीं रहती कि अपने ज़र्रे-ज़र्रे में मैं समा चुकी हूँ और कुछ ऐसा है 'बाबूजी' कि 'मालिक' से इतनी साफ़ हो गई हूँ कि हृदय से कुछ पर्दा न रहा। कहीं ऐसा तो नहीं है कि बराबरी के से रिश्ते की सी दशा की कुछ 'उसकी' कृपा से झलक न पड़ने लगी हो। यह बात 'बाबूजी' यद्यपि शरीर तथा मन से कभी न हो सकेगी। यह 'आप' जानते ही हैं, हाँ 'आप' की कृपा से कुछ दशा ऐसी कि झलक हो तो हो, 'आप' ही सब जानते हैं, जो 'आपने' दिया है। यह बात बेतमीजी की है, कृपया लिखने के लिये क्षमा करियेगा - वैसे, वैसी दशा की झलक हो तो 'आप' की ही हूँ। भाई, अब तो यह दशा है कि ऐसा लगता है, कि शरीर का ज़र्रा-ज़र्रा आईना हो गया है और कुछ ऐसा लगता है या यों कह लीजिये कि मानो मारफ़त के समुद्र में से भी 'मालिक' ने Pure वास्तविकता के सच्चे मोतियों को चुनकर मेरे रोम-रोम में, ज़र्रे-ज़र्रे में जड़ दिया है जिससे कुछ अजीब वैसी ही झलक निकलती रहती है। मेरे 'बाबूजी' अब तो कुछ यह दशा है कि न मैं कहने में, मैं का बोध होता है, और न 'तू' कहने में 'तेरा' का बोध होता है, क्योंकि अब तो 'तू' भी मुझसे कोई अलग, कुछ फ़र्कनहीं रह गया है। अब तो दशा में एक ऐसा आनन्द रहता है या ऐसे Pure (शुद्ध) आनन्द की झलक रहती हैकि जिसमें से आनन्द का Weight (वजन) निकाल लिया गया हो। सब शुद्ध ही शुद्ध रह गया है, नहीं, नहीं, शुद्धता है या नहीं, मैं यह भी नहीं जानती क्योंकि मैं तो अबोध हूँ। हाँ, परन्तु दशा में

कुछ रहता ज़रूर है, जिसे मैं आनन्द कहती हूँ। परन्तु मेरा तो यह हाल है कि जो कुछ वह दशा में रहता हो, आनन्द ही रहो, मैं उसमें साझीदार या अलग रहती हूँ। मैं नहीं कह सकती–मेरी समझ में नहीं आता– जब साझीदार समझती हूँ, तो वही हो जाती हूँ, परन्तु अलग–अलग ही अनुभव करती हूँ। अब 'आप' ही जाने क्या है। अब तो यह कह लीजिये कि अनुभव में चाहे वह आनन्द हो, मज़ा हो, या जो कुछ हो, मैं तो मिली हुई भी उससे अलग या परे रहती हूँ। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो और मुन्नी नमस्ते कहती हैं। मुन्नी की तबियत अभी ठीक नहीं है, ताऊ जी को भी कुछ ज़ुकाम है, ख़ैर 3–4 दिन में सब ठीक हो जायेंगे। इति:–

सदैव केवल 'आप' की ही स्नेहासक्ता

पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–304

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 22.4.53

पत्र तुम्हारा 16 अप्रैल का मिल गया। योग–मार्ग में अपना भिदाव अंतरिक्ष होता है। तुमने लिखा है कि "रग–रग में समा चुका हूँ।" "अभी और समाना बाकी है और रास्ता अभी बहुत चलना है। अभी तो शायद रुपये में एक पैसा या दो पैसा भर चल पाई होगी। यह अनुभव तुम्हारा ठीक है कि अपने ज़र्रे–ज़र्रे में अपना ही जल्वा देखती हो, यह जल्वा अभी पूरी तरह से नहीं देख पाया है, इसमें भी अभी बहुत कमी है। हमें तो शुरू से आख़िर तक ऐसी आँख बना देना है कि रोशनी ही रोशनी रह जाये और आँख–आँख को न देख सके।"

यह तुम्हारा ठीक अनुभव है, इसको मैंने पहले लिखा भी था कि तुम्हारा दिल नहीं खुला है। दिल हमारे यहाँ खोला जाता है, जिससे हदबन्दी एक तरह की ख़त्म हो जाती है। तुमने अच्छी याद दिलाई, दिल को मुझे अभी ठीक करना है। ऊंचा तो तुमको मैंने पहुँचा दिया, मगर दिल से बेख़बर रहा। तुमने लिखा है कि 'मालिक' स्वतंत्र होते हुए बन्धन में आ गया है," इसके यह माने है कि 'उसकी' ताक़त तुममें समा रही है और उसमें 'उसका' अनुभव हो रहा है। क्योंकि तुममें ख़ुद बन्धन मौजूद है, इसलिये 'वह' भी बन्धन में महसूस होता है। बन्धन वाले आदमी में ईश्वर भी सीमाबद्ध दिखाई पड़ता है। यह भी वजह है कि ईश्वर का जब कभी ख़याल किया, वह अपना जैसा समझ में आया और ठोस पूजाओं की शुरूआत हो गई। तुमने जो बराबरी वाली

बात लिखी है, वह ब्रह्म की झलक है और यह हालत बताती है कि अब तुम सीधी उसी में जा रही हो।

तुमने लिखा है कि "मेरे शरीर का अंग-अंग शीशा हो रहा है।" इस हालत को या तो तुम घुमा गई या समझ नहीं पाई। मुझे यह ऐसी हालत मालूम होती है कि तुम्हारे जिस्म के हर ज़र्रे में 'मालिक' की शक्ल मालूम होती होगी और यह बड़ी अच्छी हालत है, ईश्वर मुबारिक करे।

तुमने लिखा है कि "मैं कहने में न मैं का बोध होता है, और न तू कहने में, तेरे का बोध होता है।" यह लय-अवस्था की अच्छी गति है। अभी Body Conciusness (शरीर की चेतना) बाकी है और इसके समाप्त होने में ज़रा देर लगेगी। इसकी पहिचान यह है कि तुम अपने जिस्म को 'मालिक' का जिस्म मान कर ध्यान कर रही होगी और यह लय-अवस्था की दूसरी हालत है। मगर इसको ऐसा ही करती जाओ, जब तक कि यह अपना ठिकाना खुद न बता दे। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिन्तक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या-305

लखीमपुर

22.4.53

मेरे परम स्नेही 'श्री बाबूजी',

सादर प्रणाम स्वीकृत हो।

पूज्य मास्टर साहब जी से 'आप' सबकी कुशलता के समाचार ज्ञात हुये। 'आपको' दौरा करीब घंटे भर सुबह और शाम हो ही जाता है, ईश्वर शीघ्र ही इसे अच्छा कर दें।

भाई, मेरा तो अब यह हाल है कि भीतर-बाहर हर ज़र्रे में उसी वास्तविकता की झलक दिखलाई पड़ती है। हर ज़र्रे में 'वही' झलक या रोशनी निकल रही है। दशा में एक अजीब Pure (शुद्ध) मस्ती की महक रहती है, और दशा में ही क्या, बल्कि हर ज़र्रे-ज़र्रे में से इसी महक का एहसास पाती हूँ। मेरे 'बाबूजी' अब कुछ यह है कि मैं वास्तविकता कहती हूँ, परन्तु उससे दशा के लिये शायद कुछ ठीक नहीं पड़ता है। कुल नज़ारा मेरे में और सब जगह है, वह न जाने क्या है और यह दशा है कि वह नज़ारा मुझसे ही उत्पन्न है। भाई, मेरा तो यह हाल है कि मेरे तो Sense (ज्ञान) वगैरह कुछ है ही नहीं। 'मेरा' और अब 'तेरा' कहने में कोई Sense (अर्थ) नहीं है। दशा आजकल अब तो कुछ बड़ी भीनी-भीनी मालूम पड़ती है। मैं देखती हूँ कि अब जो दशा है और

आती है, उसमें कुछ लगाव लपेट नहीं होता है। कोई Weight (वज़न) किसी प्रकार का महसूस नहीं होता है। बिल्कुल ख़ाली सी, कुछ भीनी सी, दशा होती है।

मेरे 'बाबूजी' मेरे तो जैसे अब Sense (ज्ञान) ही नहीं रह गया है, अजीब भूली सी, भटकी सी दशा रहती है। मुझे तो इसका भी कुछ पता नहीं है, कि 'मालिक' से मिली हूँ या गैर हूँ। अब तो यह न जाने क्या हो गया है कि मेरा तो मन-तन जैसे अब कुछ काबू में नहीं रह गया है। Senses (वृत्तियों) पर कुछ कन्ट्रोल नहीं है और न यह पता कि यह सब कोई चीज़ है या नहीं। भाई, कुछ ऐसा लगता है कि जैसे 'मालिक' ने Senses (वृत्तियों) के बन्धन को भी हटा दिया हो या स्वतंत्र कर दिया हो। अब तो ऐसा है, मेरे 'बाबूजी' कि किसी की तबियत ख़राब है, तो घबड़ाती ज़रूर हूँ, प्रार्थना करती हूँ, परन्तु देखती हूँ कि घबड़ाने का मुझे कोई Sense (अर्थ) नहीं, उद्देश्य नहीं होता।

अब तो भाई तबियत इतनी झुकी हुई महसूस होती है कि छोटे, बड़े मुझे जैसे सब अपने से बड़े के सदृश लगते हैं और वैसे यह भी है कि सब बड़े-छोटे समान ही प्रतीत होते हैं। अपने से छोटा तो मेरे लिये संसार में कोई रह ही नहीं गया है, चाहे कोई पूजा करे या न करे, इससे कुछ मतलब नहीं। ऐसा लगता है कि मुझे चाहे कोई कुछ कह ले, परन्तु फिर भी न जाने क्यों इसे व्यवहार में इतना घटित नहीं कर पाती हूँ। क्योंकि मेरे 'बाबूजी' न जाने कुछ यह हो गया है कि मेरे तो जैसे अब अपने कन्ट्रोल में कुछ नहीं रह गया है। पहले 'मालिक' की कृपा से हर चीज, मन, बुद्धि, व्यवहार, सब कुछ मेरे बस में था। अब जब मैं तो भूली सी, भटकी सी हूँ, तो 'वही' जाने, जैसे रखता है, वैसे ही रहती हूँ। यही नहीं बल्कि भाई, यह दशा है, ऐसा लगता है कि, हर आदमी, बच्चा-बच्चा मुझे सब कुछ सिखा सकता है। चाहे दुनियाँ की बातें और आध्यात्मिकता भी।

कुछ ऐसा है कि न मुझे अब Reality (वास्तविकता) की तमीज़ है, न कुछ की, बल्कि यह Reality (वास्तविकता) कहने से दशा का मतलब ठीक नहीं निकलता। अब तो 'मालिक' ही जानें। भाई, कुछ यह है कि जितना मैं 'उसे' समेटना चाहती हूँ, उतना कर नहीं पाती। समेट ही नहीं पाती। प्रेम यदि कुदरती हो तो 'मालिक' जानें, परन्तु अब मेरी दशा में नहीं महसूस होता, मैं कहाँ से लाऊ, और मैं करूँगी भी क्या, जो कुछ हो 'मालिक' जाने, मैं 'उसे' ज़रूर और ज़रूर चाहूँगी।

अब तो यह दशा है कि ज़र्रे-ज़र्रे में हर तरफ़, एक अजीब जल्वा, अजीब मस्ती का सा अनुभव करती हूँ। अब तो जल्वा, मेरी ही मस्ती, मेरा ही एक अदना रूप की तरह है। मैं नहीं कह सकती कि मुझमें प्रेम नहीं है, हाँ यदि अपने से भी हो तो भी

ग़ैर का नहीं हुआ। हाँ प्रेम, प्रेम के रूप में नहीं, किन्तु 'उसके' रूप में हर समय रमा हुआ है।

भाई, मैं क्या कहूँ, मेरा तो यह हाल है कि न स्वतंत्र हूँ, न कोई बन्दिश ही मालूम पड़ती है। अविच्छिन्न हूँ। न होश में हूँ, न बेहोश हूँ, क्योंकि यह सब एक दशायें हैं और मेरी अब यह कोई दशा, दशा नहीं होती। यदि निर्गुण हूँ, निरजंन हूँ, तो भी 'वही' जाने, क्या है। मैं शायद अब यह सब कुछ नहीं, एक अदना, बहुत अदना हूँ। ख़ैर, 'आप' जाने, जैसी हूँ, 'आप' की हूँ, बस यही है। ऐसा लगता है कि मैं अविच्छिन्न एक केवल कुछ एक सी रह गई हूँ। मेरे 'बाबूजी' आप जाने, मेरी क्या दशा है, जो 'आप' कहेंगे, वही ठीक है। मेरी तो जैसी दशा समझ में आई, लिख दी।

किताबें मिल गईं। धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेंगी। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा बिट्टो, छोटे भइया प्रणाम कहते हैं। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहासिक्ता

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-306

शाहजहाँपुर
25.4.53

प्रिय पुत्री कस्तूरी,

शुभाशीर्वाद।

तुम्हारा पत्र 22 अप्रैल का लिखा हुआ मिला, पढ़कर गदगद् हो गया। यह कुछ ज़माने की खूबी है कि शीशा और हीरा एक ही भाव बिक रहे हैं और ज़माने की भी ख़ता नहीं, ख़ता उनकी है, जिन्होंने ज़माने को बिगाड़ा। यहाँ तो मामूली पढ़े-लिखे और कुछ धार्मिक विचार वाले 'गुरु' बन जाते हैं और उनको सिखाने वाले भी अधिकतर वैसे ही मिल जाते हैं। कहीं वेश फ़कीरी बदल लिया, तो फिर जगत-गुरु बन बैठे और लोगों को बढ़िया-बढ़िया पूजायें सिखाने लगे। वेश के कारण लोगों को भी विश्वास जमने लगा और उन्होंने उन पूजाओं को करना आरम्भ कर दिया। यहाँ मुझको कौन पूछे कि जहाँ वेश तो क्या रंग तक नहीं रहा। अगर हम किसी से कुछ कहते भी हैं तो कोई माने क्यों। इसलिये जो अदायें साधुओं में होती है, उनका तो पता भी मुझमें नहीं है। स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने एक लेक्चर में कहा है कि अगर कहीं हम बीस आदमी ऐसे बना सकें, जिसकी नज़र अन्तरिक्ष हो गई हो और अपने को अपने में देखने लगे तो मेरा काम ख़त्म हो गया। मैं समझता हूँ कि उनको एक ही दो आदमी मुश्किल से मिले होंगे और मैं सैकड़ों चाहता हूँ तो यह चीज़ बिना

'ईश्वर' की मदद के नहीं हो सकती और यह सब 'उसकी' मर्जी पर है। हम बस काम किये जाते हैं, जो इसके लायक मिलता है।

तुमने हमारे Pamphlet (पेम्फलेट) गुरु–सन्देश में पढ़ा होगा कि ईश्वर–दर्शन की हालत क्या है, हमें तो वही हालत चाहिये। शंख–चक्र–गदा–पद्म वाला तो उन्हीं को मुबारक रहे, जो इसी को असल चीज़ समझते हैं और जिन्होंने ईश्वर को अपने जैसा शरीर वाला समझ लिया है। उनके यह समझ में नहीं आता कि ईश्वर को Material (भौतिक) समझ लेने से उनका आध्यात्मिक–लाभ कुछ नहीं होता है और यह ईश्वर की तौहीन है। इससे अपना नुकसान यह है कि अपनी निगाह Matter (भौतिक पदार्थ पर) ही कायम हो जाती है और मैं यह समझता हूँ कि वह ईश्वर को नाराज़गी का भी मौका देते हैं। किसी साफ़–पाक आदमी को अगर गन्दा कह दिया जावे तो, वह जरूर नाराज़ हो जावेगा। तुम्हारी हालत ईश्वर–दर्शन की इससे पहले भी आ चुकी है, मगर इतनी निखरी हुई नहीं थी। मगर तुम्हें अभी इससे आगे जाना है। इसको ऐसा समझो, जैसे बच्चों के लिये खिलौना। हमें यही चाहिये कि हम अपने अन्दर मिटते जायें और अपना जल्वा अपने आप देखें; अन्तर्मुखी होने का यही फायदा है। मगर यह हालत भी ऐसी नहीं है कि उस पर हम ठहर जावें और काफी समझ बैठें। यह तो असल ब्रह्म–विद्या की शुरूआत ही है, अभी तुम्हें और आगे जाना है। जब यह दृश्य देखने का भी एहसास बाकी न रहे, तो उसकी दूसरी सीढ़ी होगी और जितना आगे बढ़ती जाओगी, उसकी शक्ल भी तब्दील होती जावेगी। अभी अथाह समुद्र, जिसमें हमें मिल जाना है, कोसों दूर है।

तुमने लिखा है कि "अब जो दशा आती है, उसमें कोई लगाव–लपेट नहीं होता है और न किसी प्रकार का वज़न" इसका मतलब यह है कि अपना आपापन जो ठोस था, जा चुका है और अब तुम किसी काम की कर्ता नहीं रहीं और न संस्कार बन रहे हैं। तुमने लिखा है कि "हमारे Senses (वृत्तियाँ) ही नहीं रह गये हैं" यह बहुत कुछ ठीक है। मगर अभी Senses (वृत्तियों) में भद्दापन बाकी है, अभी Refined (शुद्ध) नहीं हुए हैं और उस वक्त यह सही आते चले जायेंगे, जितनी कि लय–अवस्था बढ़ती जावेगी और Negation (निगेशन) की पूरी हालत आ जाने पर Senses (वृत्तियाँ) भी पूरी हालत में आ जाते हैं। मैं अपनी निगाह को क्या करूँ कि तुम जहाँ उन्नति कर के पहुँचती हो, हमें शुरूआत ही मालूम पड़ती है।

मेरा Realization (साक्षात्कार) का ख़्याल बहुत ऊंचा है। जब तक कि अभ्यासी अपने आप को ईश्वर में बिल्कुल लय न कर ले, तब तक मैं उसको Perfectly Realized Soul (पूर्णरीत्या साक्षात्कार प्राप्त करने वाली आत्मा) नहीं कह सकता हूँ।

मेरी राय में मुझे ऐसा आदमी इस वक्त कोई नज़र नहीं पड़ता। यह और बात है कि हमारे गुरु महाराज ने किसी को ऐसा बना दिया हो, यह वह जानें। बिटिया! कहीं मेरी निगाह ख़राब तो नहीं हो गई है। एक क़िस्सा सुनाता हूँ :- एक मर्तबा दुर्योधन ने कृष्ण जी से पूछा कि आप अर्जुन को क्यों ज़्यादा मुहब्बत करते हैं और रिश्तेदार मैं भी हूँ, मुझसे मुहब्बत नहीं करते। कृष्ण जी ने कुछ समय व्यतीत होने पर इसका जवाब दिया। वह यह था कि अर्जुन से कहा कि तुम्हारे राज्य में जितने बुरे आदमी हों, उनकी फेहरिस्त बना लाओ और दुर्योधन से कहा कि तुम्हारे राज्य में जितने अच्छे आदमी हों उनकी फेहरिस्त बना लाओ। दोनों चल दिये। अर्जुन जब लौटा तो उसने कहा- "मुझे कोई बुरा आदमी ही नहीं मिला, जिसका नाम फेहरिस्त पर लिखता" और दुर्योधन ने यह खबर दी कि मुझे कोई अच्छा आदमी ही नहीं मिला, जिसको फेहरिस्त पर दर्ज़ करता। तब कृष्ण जी ने कहा कि यही कारण है कि मैं अर्जुन से इतनी मोहब्बत करता हूँ। वह इतना अच्छा है कि उसको सब अच्छे ही दिखलाई देते हैं और तुम इतने बुरे हो कि तुम्हें कोई आदमी अच्छा मालूम ही नहीं दिया। तो कहीं मुझमें दुर्योधन वाली आँख तो पैदा नहीं हो गई। अपने से छोटा तुमने लिखा है कि संसार में कोई नहीं रह गया है, यह एक गति है, जो ब्रह्म-गति से बहुत कुछ निस्बत रखती है। इसमें भी इससे ऊंची हालत पैदा होगी, मगर वह हालत भी आख़िरी हालत नहीं होगी। इसके बाद जो हालत पैदा होती है, मैं उसको बता देता, मगर इसलिये बताना नहीं चाहता कि पहले से कहीं उसका ख़्याल न बाँध लो। ईश्वर ने चाहा तो वह हालत भी आ जावेगी। तुमने लिखा है कि "पहले मन, बुद्धि, व्यवहार, सब कुछ मेरे वश में था और अब भूली भटकी सी हूँ।" इसके माने यह है कि सब रंग मिलना शुरू हो गये हैं, मगर अभी सब रंग मिलाकर सफेद रंग नहीं बना। यह भी हो जावेगा ईश्वर की कृपा से। तुमने लिखा है कि "अपना ही जल्वा, अपनी ही मस्ती, मेरा ही एक अदना करिश्मा है" इसका मतलब यह है कि Non-Duality (अद्वैत) की हालत शुरू है। इसकी पूर्ण गति हो जाने पर, इसका रूख़ कुछ और बदलेगा, जिसको मैं पहले से बताना नहीं चाहता और वह ईश्वर-दर्शन की हालत से बहुत ऊंची हालत होगी। Quotations (उद्धरण) के आगे जो तुमने ख़त में लिखा है, वह सब Non-Duality (अद्वैत) पर आने की खुशख़बरी दे रही है। अभी तुम्हारा अहंभाव अच्छी तरह से नहीं गया है। तुम्हारी यही हालत रही तो ईश्वर-कृपा से यह चीज़ भी पैदा हो जावेगी।

यह हालतें बिना योग-मार्ग पर चलने से पैदा नहीं हो सकतीं और उसके साथ शर्त यह भी है कि हमारे गुरु महाराज सा Guide (मार्ग दर्शक) भी हो और हम सब के वही Guide (गाइड) हैं और खुद अपनी मिसाल हैं। अगर यह सब हालतें सबके सामने रख दी जावें तो भी बहुत कम ऐसे मिलेंगे कि उनका जी इस चीज़ को हासिल करने के

लिये ललचा आवे। मुझसे एक-आध शख़्सों ने इस विषय में बातचीत भी की, मगर उन्होंने यह यक़ीन नहीं किया कि यह हालतें मेरे ज़रिये से प्राप्त भी हो सकती हैं, कारण यह था कि मैं उनकी 'महात्मा' की तारीफ़ के अनुसार कोई महात्मा नहीं था और यह है भी सही मैं तो एक इन्सान हूँ और गुरु महाराज ने मुझको बनाया भी ऐसा ही है। मगर भाई, तुम महात्मा हो और हमारी राय में महात्मा होना अच्छा होगा, क्योंकि यह बड़ी बात है।

तुम्हारा शुभचिन्तक
राम चन्द्र

पत्र-संख्या-307

मेरे परम स्नेही 'श्री बाबूजी',
सादर प्रणाम।

लखीमपुर
25.4.53

कृपा-पत्र 'आपका' कल आया-पढ़कर प्रसन्नता हुई। मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। मुन्नी की तबियत ठीक है। खाना भी कल से मिलने लगा है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, कुछ ऐसा है कि दशा अंधेरा ही अंधेरा है और अंधेरे में ही पैरती या भिदती चली जा रही हूँ। कुछ यह हाल है कि अंधेरा सा ही मेरा रूप हो गया है। भाई अब तो कुछ ऐसा है कि मेरा ज़र्रा-ज़र्रा आईना है, यानी मेरे ज़र्रे-ज़र्रे में 'वही' दिखाई पड़ता है। भीतर बाहर ज़र्रे-ज़र्रे में मेरा 'मालिक' ही 'मालिक' महसूस होता है। न जाने अब कुछ ऐसा है कि अब अपने शरीर को 'उसका' शरीर नहीं, बल्कि कुछ ऐसा हो गया है कि 'वह' तो स्वयं ही, स्वभाविक ही ज़र्रे-ज़र्रे में मौजूद है ही। अपना शरीर का मानना, अब नहीं रह गया है, बल्कि अब तो हर ज़र्रे-ज़र्रे में केवल 'वही' महसूस होता है, 'उसे' ही देखती हूँ। ऐसे ही मेरे क्या, बाहर प्रत्येक ज़र्रे में एक 'वही' भिदा हुआ सा, समाया हुआ सा महसूस होता है। मेरे 'बाबूजी' मैं तो ऐसी अदना और एक कुछ बिल्कुल अविच्छिन्न ही हो गई हूँ।

ऐसा लगता है कि शरीर का ज़र्रा-ज़र्रा पिघल कर बहा जाता है और उसमें अब 'मालिक' समा गया है। भाई, अब तो ऐसा लगता है कि अनुभव और अनुभव करने वाला एक हो गया है। ऐसा ही धीमा सा अनुभव मेरा है।

मेरे 'बाबूजी' न मालूम क्या बात है कि मुझे अपने ज़र्रे-ज़र्रे से, रोयें-रोयें से प्रेम हो गया है और ज़र्रे-ज़र्रे में रस या गुदगुदी और सिहरन सी बस गई है। जो

चाहता है अपने रोएँ–रोएँ में लिपटी रहूँ और 'उसकी' कृपा से लिपटे रहने या समाये रहने की सी ही दशा शुरू हो गई लगती है। भाई और यह न जाने मेरी अब ऐसी दशा है कि संसार के, जड़ हो या चेतन, सब मेरे लिये यही है कि :– "दर दीवार दर्पण भये, जित देखूं तित तोय"। कुछ यह है कि हर एक की मेरे लिये एक ही हस्ती हो गई लगती है। पत्थर से लिपट जाऊं तो मेरी और उसकी (पत्थर की) हस्ती बराबर ही महसूस होती है। भाई, मेरा तो यह हाल है कि जैसे अपने में ज़र्रे–ज़र्रे से लिपटे रहने को जी चाहता है, उसी प्रकार संसार के प्रत्येक ज़र्रे–ज़र्रे से ऐसा ही जी चाहता है और कुछ यह ज़रूर है कि भीतर बाहर के हर ज़र्रे–ज़र्रे से ऐसा ही जी चाहता है और कुछ यह ज़रूर है कि भीतर बाहर के हर ज़र्रे–ज़र्रे से लिपटी या समायी हुई ही महसूस होती हूँ। ज़र्रा–ज़र्रा पिघलकर, गलकर उस अजीब गुदगुदी में मिला ही रहता है। अपना ही क्या बल्कि हर कण–कण में 'वही' दीखता है। परन्तु अब न जाने यह जी कैसा हो गया है कि न हंसने को जी चाहता है और न रोने का। कुछ भीतर अजीब सा हुआ करता है। हल्की सिहरन, धीमी गुदगुदी और ठंडी आह सी महसूस होती है।

मेरे 'मालिक' अब तो ऐसी दशा है कि कुछ अजीब मस्ती सी, झूमती सी दशा है। परन्तु बीच–बीच में अक्सर खाली सी दशा आती है। ऐसी मस्ती है कि ऐसा लगता है कि मैं तो अविच्छिन्न हूँ। न मर सकती हूँ, न जीती हूँ, न किसी से कट सकती हूँ, न डूब सकती हूँ, न कुछ हो सकता है। बस मैं तो जैसी हूँ, वैसी ही रहूँगी। भाई, अब तो ऐसा लगता है कि हर कण–कण की हस्ती एक है, और कण–कण में मैं मौजूद हूँ और हर कण मुझमें मौजूद है। परन्तु यह मस्ती उछालने वाली नहीं है, बल्कि सीधी सादी है, जो हर कण में मौजूद है। सच तो यह है कि अब तो न कण है, और न मैं, बस कुछ एक ही हस्ती रह गई है और उसे 'मैं' कह लूं तो, कुछ नहीं 'वह' कह लूं तो कुछ नहीं, ईश्वर कह लूं तो कुछ नहीं, कुछ ऐसी ही सादी सी, सरल सी मेरी हालत है। ऐसा लगता है कि जैसे मेरे हर ज़र्रे–ज़र्रे की ठोसता या ग्रन्थि साफ़ सी होने लगी है, पिघलने लगी है।

"आज से ता. 26 से कुछ ऐसा मालूम पड़ता है कि निगाह भीतर को जा ठहरती है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं, बिट्टो, छोटे भइया प्रणाम कहते हैं। ताऊ जी को गर्दन में पीछे एक छोटा फोड़ा 4–5 दिन से निकला है, कल से कुछ फूट भी गया है। तकलीफ़ भी कम हो गई है, कोई फ़िक्र की ज़रा भी बात नहीं है।

न जाने क्यों शरीर में कुछ आलस्य या बेपरवाही सी रहती है, परन्तु वैसे नहीं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
पुत्री–कस्तूरी

पत्र-संख्या-308

मेरे परम स्नेही 'श्री बाबूजी',   लखीमपुर

सादर प्रणाम।   28.4.53

कृपा-पत्र 'आपका' आज मिला-पढ़कर प्रसन्नता हुई। मुन्नी की तबियत तो ईश्वर की कृपा से बिल्कुल ठीक है, कमज़ोरी भी काफ़ी ठीक है। ताऊजी के गर्दन में पीछे फोड़ा बड़ा निकला है, उसमें मुंह तो 5-6 हैं, किन्तु पस निकलता कम है। अभी तो तकलीफ़ काफ़ी है परन्तु 'मालिक' की कृपा से शायद 2-3 दिन में फोड़ा ठीक होने लगे। फ़िक्र की बात नहीं है, ठीक हो जायेगा। 'आपने' मास्टर साहब जी को लिखा है कि एक महीने की जून की पूरी छुट्टी लेकर उत्तरकाशी जायेंगे। सो मेरे 'बाबूजी' हम सब की यही प्रार्थना है कि वहाँ से लौटने में थकान ही मिटाने के लिये कृपया 2-4 दिन को 'आप' यहाँ आ जायें। आयेंगे 'आप' अवश्य। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी मेरी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई अब तो कुछ यह है कि न जाने क्यों निगाह शरीर पर नहीं जाती और और न अब शरीर कुछ महसूस ही होता है। मेरा तो अब यह हाल है कि मुझे अब वह दशा कि "अपने ज़र्रे-ज़र्रे में और संसार के ज़र्रे-ज़र्रे में 'मालिक' ही दीखता है," यह चीज़ अब न जाने कहाँ चली गई और अब इस दशा को लाने में दशा अच्छी नहीं मालूम पड़ती कुछ बोझा सा लगता है, इसलिये दशा शुद्ध सी नहीं रह जाती, परन्तु मैं तो 'मालिक' की मर्ज़ी पर हूँ। मुझे तो 'वह' चाहिये और मैं कुछ नहीं जानती। भाई, न जाने क्यों अब यह दशा मेरे एहसास में नहीं रही, या यों कह लीजिये कि 'मालिक' ने ख़्याल को इस दशा के एहसास के बोझ से भी स्वतंत्र कर दिया है।

मेरे 'बाबूजी' एहसास भी न जाने क्यों बिल्कुल ख़ाली ही सा होता जाता है और एहसास, एहसास करता है तो इतने हल्के कि अपने में बोझा नहीं आने देता। दशा का एहसास किया और बस भी रहा, मेरी कुछ दशा हो रही है आजकल/भाई मुझे कुछ ऐसा लगता है कि दशा में भी Material (भौतिकता) होगा तो इतना हल्का कि जो महसूस नहीं होता। इसलिये दशा भी इतनी हल्की व ख़ाली सी आती है कि यदि मैं लिखूं न, तो यह ख़बर ही न रहे, कि यह दशा बदली है या अब यह दशा है। अब तो ऐसा लगता है कि दशा और एहसास और एहसास करने वाले में एकता सी होती जाती है। न जाने क्यों मुझे अब यह महसूस नहीं होता कि 'मालिक' मेरे ज़र्रे-ज़र्रे में समाया हुआ या भिदा हुआ है। मेरे 'बाबूजी' मेरा तो कुछ अब यह हाल है कि ऐसा लगता है कि दशा आती है बदल जाती है, परन्तु भीतर की स्थिति एक सी ही रहती है, और भाई ऐसा

लगता है कि दशा भी अब एक ही रंग की आती है, इतनी हल्की कि अब तो बदलती है तो इतने हल्के तौर पर कि Catch (अनुभव होना) करती हूँ, परन्तु यह एहसास नहीं होता कि यह दूसरी है या क्या है, परन्तु 'मालिक' की कृपा से समझ ज़रूर कुछ काम दे जाती है, यद्यपि अब यह भी रंगी तो उसी रंग में रहती है, परन्तु रंग कह लीजिये तो, ऐसा कि जो यदि हम आँख मूंद लें, तो जो कुछ रहता हो, ऐसा ही समझ लीजिये। 'मालिक' की कृपा से ताऊजी के फोड़े में आज पस भी कुछ ज़्यादा निकला है, इसलिये आराम है।

ता. 29.4.53 अब तो भाई, ऐसा लगता है कि दशा में न कुछ बनाव होता है, न कुछ श्रृंगार होता है, बस जैसी आती है, वैसी आती है। मैं तो बस अदना और कुछ इतनी अदना हो गई हूँ कि कुछ पता नहीं। एक कंगाल कह लीजिये, परन्तु ऐसी जिसे अमीरी का स्वप्न भी न हो और अपनी कंगाली का एहसास भी न हो। यह मेरी अब एक अदना सी हालत है और शायद एहसास ख़ाली रहता है। शायद इसीलिये या क्या, चाहे कितनी हल्की या अदना सी दशा आई नहीं कि स्वयं ही पता लगती चली जाती है, कुछ कोशिश भी नहीं करनी पड़ती, बस ज़रा से उसे देखने भर का ख़याल कह लीजिये, बस लिख लेती हूँ। मेरे 'बाबूजी' न जानें कैसे मुझे कुछ अभी-अभी ऐसा एहसास हुआ कि इस इतनी अदना वाले समुद्र में मैं एकदम डूब गई हूँ। अब ऐसा लगता है कि रग-रग में वही जल बह रहा है और कुछ ऐसा लग रहा है, कि मैं उसी में भिदती सी जा रही हूँ। इस समुद्र का जल मुझमें भिदता या समाता ही चला जा रहा है। मेरे 'मालिक' यह Mastery (स्वामित्व) केवल 'आपकी' ही है, वरना ऐसी रीति न कभी देखी गई है और न सुनी गई है। ऊपर जो मैंने अभी-अभी लिखा है, उसके मतलब क़रीब सबेरे साढ़े आठ बजे हैं। भाई अब तो न कुछ मेरा करिश्मा है और वास्तव में न कुछ करिश्मा ही है न कुछ मेरा जल्वा ही है और न जल्वा ही कोई चीज़ रह गये। अब तो यह दशा है कि एक ही रंग हो गये हैं और मैं नहीं जानती 'आपने' जो दिया होगा, सो होगा। पूज्य 'बाबूजी' न 'आपकी' निगाह ख़राब हो गई है और न 'आपने' जैसा लिखा है, दुर्योधन वाली आँख पैदा हुई है, वरन् मैं तो इतना ही कुछ थोड़ा सा अब यह जान पाई हूँ कि 'आप' हमारी सारी ठोसता को गला कर, रग-रग को शुद्ध करके हमें अपनी कृपा व प्रेमवश असली रूप दे देना चाहते हैं। हमें अपने असली निखार में खड़ा कर देना चाहते हैं। शुरूआत की जो 'आप' ने लिखी, सो मैं तो सच में खुद भी ऐसा ही अनुभव करती हूँ, नहीं, नहीं बल्कि इतना भी नहीं, क्योंकि न मुझे शुरूआत से काम है, न पूर्ण से मतलब, मुझे तो जैसा मेरा 'मालिक' है, बस उसी को पाना है।

अभी मास्टर साहब जी 'आपका' पोस्टकार्ड लाये। Point 'R' (पॉइंट–आर) के लिये 'आपको' बहुत–बहुत शुक्रिया। इति:–

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
पुत्री–कस्तूरी

पत्र–संख्या–309

मेरे परम स्नेही 'श्री बाबूजी', लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 5.5.93

'आपका' Postcard (पोस्टकार्ड) कल मास्टर साहब जी ने सुनाया–शुक्ला जी के रोम–रोम में अजपा खोलने की कृपा के लिये बहुत–बहुत धन्यवाद एवं बधाई है। ताऊजी का फोड़ा भी 'मालिक' की कृपा से चारों ओर से सिमिट कर फूट गया है, बहुत बहता है। फोड़े के लगे में बाँई ओर अभी बहुत कड़ापन है, शायद वहाँ से भी कहीं फूट न जाये, परन्तु डाक्टर ने कहा है कि कोशिश यही करूँगा कि सारा मवाद एक ही मुंह से होकर बह जाये, आगे ईश्वर की मर्ज़ी। कमज़ोरी काफी है, परन्तु ठीक हो रही है। सब ईश्वर की, 'मालिक' की कृपा है। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई ऐसा लगता है कि शरीर के भीतर रोम–रोम में, ज़र्रे–ज़र्रे में यह दशा फैल चुकी है, रम चुकी है। अब तो यह समझ लीजिये कि शरीर भीतर–बाहर हर कण–कण में धूनी रमी हुई है।

मेरे 'बाबूजी' ऐसा लगता है कि आँख, आँख में खो जाती है। निगाह दृश्य में खो सी गई है, भिद सी गई है। भाई, न जाने कुछ ऐसी दशा महसूस होती है कि तीर निशाने पर बैठ चुका है। ऐसा लगता है कि दृश्य, दृष्टि (निगाह) में समाया जाता है। कुछ यह हो गया है कि एक ही आँख और एक ही रंग हो गया है, परन्तु न जाने क्यों आँख को रंग की तमीज़ ही नहीं रह गई है। या यों कह लीजिये कि रंग भी आँख ही हो गया है। कुछ ऐसा दिखाई देता है कि एक ही गति हो गई है और अब उसी मैदान में, या ऐसे ही मैदान में, जैसे 'मालिक' चाहता है, लिये जाता है। या यों कह लीजिये सब गति मिट कर एक ही गति रह गई है, या अब एक ही गति बन गई है। अब इसी मैदान में चली जाती हूँ, जिसमें बस एक ही आँख है और एक ही रंग है, परन्तु दृश्य नहीं है, क्योंकि वह तो शायद आँख में खो चुका है या भिद चुका है। और यह भी Innocence (मासूमियत) पना है कि ऐसी भी दशा लगती है कि न जाने कुछ है भी या नहीं। इस मैदान में या भाई हर एक का यही हाल है कि हर कण मुझे प्यारा है और हर कण को मैं।

मेरे 'बाबूजी' हर कण से मुझे रस मिलता है, हर ज़र्रे से मुझे रोशनी मिलती है, और बात यह भी कि हर कण-कण ज़र्रा-ज़र्रा मेरे रस से पल रहा है और ऐसे मैदान में चली क्या जाती हूँ, बल्कि वह स्वयं ही मेरे में चलता आता है।

पूज्य 'श्री बाबूजी' पहले जैसा मैंने लिखा था कि "हर तरफ़ मेरे लिये एक ही हस्ती हो गई लगती है और पत्थर से लिपट जाऊं तो उसकी और मेरी एक ही हस्ती लगती है।" परन्तु अब तो ऐसा है कि कोई हस्ती ही जैसे नहीं रह गई है। किसी की कुछ हस्ती ही नहीं है। मैदान साफ़ पड़ा है, न कुछ हस्ती है, न कुछ। अब तो हस्ती ही मिट चुकी है, अब न जाने क्या है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा ताऊजी, बिट्टो, छोटे भइया 'आपको' प्रणाम कहते हैं। ताऊ जी को हरारत भी 99.4 तक ही अब जाती है। इतिः-

सदैव केवल 'आप' की ही स्नेहाकांक्षिणी

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-310

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 9.5.53

कृपा-पत्र 'आपका' ताऊ जी के लिये तथा शुक्ला जी के लिये आये। ताऊ जी वाले 'आपके' कार्ड को सुनकर तबियत एकदम थरथरा सी उठी, परन्तु हमें तो 'उसकी' कृपा का ही आसरा है। ता. 7 को सवेरे अपने 'समर्थ जी' से प्रार्थना कर रही थी, तभी अचानक ही एक क्षण को ऐसा रूप कि कद लम्बा, रंग साँवला, ऐसा समझ लीजिये कि मास्टर साहब जैसे कद का और वैसे ही रंग तथा वैसी ही कुछ भारी सी देह की झलक एक क्षण को मिली और अपना नाम कस्तूरी सुनाई पड़ा, बस फिर गायब हो गई। परन्तु तब से एक अजीब उमंग और ऐसी सान्त्वना सी मुझे मिली, और मेरे 'बाबूजी' उस सुमधुर आवाज़ में मुझे उतना ही प्रेम मिला, जितना 'आपके' में मिलता है। 'मालिक' को बहुत-बहुत धन्यवाद है, और अपने 'समर्थ जी महाराज जी' को मैं भला क्या दूं, उनसे क्या कहूँ, बस बारम्बार प्रणाम है। परन्तु मुझे न जाने क्या हो गया कि न मुझे यह याद है, कि मैं क्या प्रार्थना कर रही थी, अब 'आप' ही जाने, मुझे याद नहीं आती। ताऊजी का फोड़ा 'मालिक' की कृपा से दिनों दिन अच्छा हो रहा है। फोड़े के लगे में जो सूजन थी, वह भी काफ़ी पटक गई है। शुक्ला जी वाले 'आपके' एक कार्ड में 'आपके' पेट में बहुत दर्द का हाल पढ़कर तबियत में चिन्ता है। मैं कहती हूँ और अम्मा भी यही कह रही हैं, कि यह कहीं ताऊ जी के फोड़े का ज़हर खींचने के कारण ही तो नहीं है।

मेरे 'बाबूजी' 'आपका' शरीर इस योग्य नहीं है, यदि 'आपका' जी नहीं मानता तो मुझे दे दीजिये मुझे कोई तकलीफ़ न होगी, परन्तु 'आप' का दर्द बेचैन ज़रूर कर देता है। 'आप' अच्छे रहें, फिर चाहे कुछ हो, या न हो, हम सबकी अपने 'मालिक' से यही प्रार्थना है। दुनियाँ में मेरे लिए रोशनी और बहार केवल अपने 'मालिक' के साथ है और मैं हमेशा 'मालिक' के साथ हूँ और 'वह' मुझमें। कृपया 'अपने' पेट के दर्द का हाल ज़रूर दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी थोड़ी सी मेरी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

मेरी दशा तो भाई, अब ऐसी है कि न मुझे कुछ महसूस होता है, न कुछ दिखाई देता है। बस साफ़ाचट मैदान है। न मैदान है, न कुछ, बस कुछ उजाड़ सी है। भाई, न जाने क्यों मेरी कुछ ऐसी तबियत हो गई है कि मुझे न बनाव पसन्द है न सिंगार। यहाँ तक कि कमरा भी ख़ाली ही मुझे अच्छा लगता है। इसके यह मतलब नहीं है कि मैं उदासीन सी होगई हूँ। हाँ, मुझे हर चीज़ ख़ाली ही भली मालूम होती है। दुनियाँ अब दुनियाँ नहीं, बल्कि मेरे लिये एकान्त जगह ही हो गई है। हर चीज़ हर जगह मेरे लिये एकान्त है। कुछ ऐसी तबियत मेरी बन गई है कि आँसू बिखेरने की चीज़ नहीं, बल्कि हृदय में सिमटना ही अच्छा लगता है। हर चीज़ मुझे बस भीतरी, या मन की अच्छी लगती है। अब ऐसा लगता है कि जैसे मेरा सम्बन्ध केवल भीतर से या मन ही से रह गया है और सारे अवयव धुलकर हर चीज़ ख़ाली सी हो गई है। मेरा हर रोयाँ-रोयाँ ख़ाली हो चुका है। मेरे 'बाबूजी' कुछ ऐसा लगता है कि अब बाह्य सम्बन्ध तो बिल्कुल ख़त्म हो चुका है और न जाने क्यों कुछ यह भी है कि हर समय हर चीज़ मुझे बस ख़ाली-ख़ाली सी ही दिखाई देती है। भाई, अब न चन ही दीखता है, न मैदान, न जाने क्या है।

जैसा मैंने पहले लिखा था कि एक ही आँख और एक ही रंग हो गया है, परन्तु अब यह हाल है कि न आँख ही है, न रंग ही।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। इतिः-

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहासिक्त

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या- 311

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 12.5.53

तुम्हारे पत्र सब मिल गये। 5 मई के पत्र का सिर्फ इतना जवाब है कि तुम्हारी लय-अवस्था, जिसको फ़नाइयत भी कहते हैं, बढ़ रही है और अभ्यासी को, जिसके भाग्य होते हैं, उसमें यह चीज़ पैदा होती है और बढ़ती रहती है। इसका छोर अभी दूर है और उसी की कैफ़ियत अन्दर और बाहर महसूस होती है। अपने में ही घुल-मिल कर अपने आप को छोड़ देना ही Spirtuality (आध्यात्मिकता) है।

एक बात मैं तुमको लिखना भूल गया। तुम धार्मिक किताबों की Study (अध्ययन) किया करो। हर किताब, उपनिषद वगैरह, सब देख सकती हो और ईश्वर ने चाहा, तुम्हारी समझ में भी बहुत से शेखीबाजों से अच्छी आवेगी। मैं भी पढ़ने लगा हूँ, परन्तु भूल जाता हूँ। पढ़े-लिखे आदमी के सामने मुझे एक तरह की खिफ्फ़त होती है। तुम अपने में यह कमी न रहने दो।

शुभचिन्तक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या- 312

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर

सादर प्रणाम। 14.5.53

कृपा-पत्र 'आपका' कल मिला-'आपके' पेट के दर्द का हाल पढ़कर सबको चिन्ता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि जल्दी से जल्दी दर्द कम हो जाये। अम्मा भी कहतीं हैं कि 'आप' जहाँ तक हो, आराम करने से भी शायद कुछ लाभ पहुँचे। 'बाबूजी' 'आपने' यहाँ कई बार कहा था कि आलू के झोर से 'आपके' पेट में दर्द को आराम मिलता है, सो मास्टर साहब जी के हाथ आलू का झोर ज़रुर भेजूंगी, 'आप' जल्दी से पी लीजियेगा, बस 'आपको' ज़रुर आराम होवेगा। मास्टर साहब जी से भी कह दूंगी कि वे सीधे 'आपके' ही यहाँ जावें, जिससे 'आपको' जल्दी से आराम हो जावे। क्या करूँ भाई, मैं तो 'आपको' रोज़ झोर बनाकर पिलाती तो शायद पेट का दर्द बढ़ने कदापि न पाता। ताऊजी का फोड़ा बस छोटा सा रह गया है, गिल्टी भी आज नरम हो चली है, कोई जरा सी भी चिन्ताकी बात नहीं है।

भाई, 'आपने' लिखा है कि तुम धार्मिक किताबों की study (अध्ययन) करो। हर किताब, उपनिषद, सब देख सकती हो और ईश्वर ने चाहा, तुम्हारी समझ में भी बहुत से शेखीबाजों से अच्छी आवेगी सो मेरे 'बाबूजी' मुझे तो सब बातें 'आप' ही में प्रतीत होती हैं। मेरा तो Literature (साहित्य) सब कुछ 'आप' ही हैं। Literature (साहित्य) के अतिरिक्त आपशनल subject (विषय) मैंने कुछ नहीं लिये, फिर मैं क्या देखूं। फिर मैं तो यही देखती हूँ, यही महसूस करती हूँ कि हिन्दी भी मुझे 'मालिक' ने ही बताई है। ऐसा क्रम से मुझे मेरा 'मालिक' बता रहा है कि सब कुछ मुझ सी तुच्छ बुद्धि वाली की समझ में आ जाता है। फिर 'मेरे बाबूजी' धार्मिक ग्रन्थ हैं, मैं मानती हूँ, परन्तु जो धर्म की परिभाषा 'आपने' बतलाई है कि "अपने में रम जाना धर्म है," किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा , तो फिर मैं भाई, यही कहूँगी कि जो सीधी सी, मेरी समझ के लायक आपने परिभाषा बताई है, उसे अपने में ठीक जब Reading पढ़ कर लूंगी, तब तो फिर 'आप' जो पढ़ायेंगे, सो पढ़ूँगी। सच तो यह है कि मुझे subject (विषय) के अनुसार ही 'मालिक' बता रहा है। मैं क्या देखूं, मुझे कुछ दिखाई नहीं देता है, मैं क्या सुनूं, कुछ सुनाई नहीं देता है? क्या सीखूं, जब कुछ समझ में आये, तब न। 'आपकी' आज्ञा मानना हर तरह से मेरा कर्तव्य है, परन्तु मैं तो बिक चुकी हूँ। खैर, अब 'आप' जैसा चाहें। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब कुछ ऐसी दशा है कि कुल जैसे अब आखें ही आखें रह गई हैं, परन्तु ऐसी कि उसमें देखने की शक्ति या माद्दा ही नहीं रहा। मेरे 'बाबूजी' अब तो ऐसा लगता है कि जोश तो गलकर जैसे ज़र्रे-ज़र्रे में, नस-नस में शायद बह चुका है, वह भी मुझ में खो गया है। इसी कारण उसमें उफान ही नहीं आ पाता है। ताकत भी (इच्छा-शक्ति) गल गलाकर न जाने कहाँ चली गई है, कुछ पता ही नहीं। मुझे तो भाई, अब ऐसा समझ लीजिये कि जैसे मैं एक समुद्र के समान हो गई हूँ और सब उसमें समाकर लापता हो चुके हैं। बस जल ही जल है, सो भी कैसा, जिसमें अब भिगोने की ताकत ही नहीं रही है। अब कुछ ऐसा है कि जैसे 'कोई' मुझमें जान फूंकता रहता है, बस वही मेरी ज़िन्दगी हो गई है, और जो समुद्र के सदृश मैंने लिखा था, वह भी उथला है, गहराई कहीं रह ही नहीं गई है, सब कुछ बराबर हो गया है।

मेरे 'बाबूजी' 'आपने' जो ईश्वर-दर्शन वाली हालत लिखी थी, वह तो भाई, मुझमें अब हज़्म हो चुकी, फिर ख़ाली की ख़ाली रह गई हूँ। कुछ यह भी हो गया है कि ऐसा लगता है कि प्यास तो अब सीमित न रह कर नस-नस में भिद चुकी है, नहीं नहीं, मन का ज़र्रा-ज़र्रा अब प्यासा ही प्यासा महसूस होता है। यद्यपि प्यास तो टिघल कर ज़र्रे-ज़र्रे में समा चुकी है, अब उसका कोई ख़ास रूप नहीं रह गया है, जिससे

मैं यह कहने या सोचने तक की गुंजाइश रख सकती कि मुझमें प्यास है। मैं तो ख़ाली हूँ, हाँ प्यास मेरा रूप ही हो गया लगता है। अब तो भाई, ऐसा लगता है कि मन में भी गलाव दौड़ने लगा है। कृपया लौटते में थकान यहीं मिटा लीजियेगा।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। झोर भेजने में सब लोग कहते हैं, कि ख़राब हो जायेगा। इसलिये क्या करूँ। अब मास्टर साहब जी 'आप को' या माया ही खिला देगी, तो लाभ हो जायेगा। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहासिक्ता
पुत्री- कस्तूरी

पत्र-संख्या-313

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' | लखीमपुर
सादर प्रणाम। | 19.5.53

पूज्य मास्टर साहब जी के पत्र से 'आपके' पेट के दर्द का हाल पढ़कर तबियत परेशान है। जिस दिन 'आपने' ज़हर खींचने के बाद एक पत्र में पेट का दर्द लिखा था, उसी दिन से मेरी तबियत यही कह रही थी कि इसकी वजह वह ज़हर का कुछ असर भी है। बस यही है हमारी भक्ति और यही है हमारा प्रेम। सच तो यह है 'बाबूजी' कि प्रेम तो असली हम सत्संगी लोगों से भी 'आप' ही करते हैं, हमारा तो प्रेम नहीं, किसी हद तक बनावा ही होगा। ख़ैर, 'ईश्वर' से हृदय से हमारी यही प्रार्थना है कि दर्द जल्दी ही हल्का पड़ जावे। ताऊ जी तो 'मालिक' की कृपा से करीब-करीब बिल्कुल ठीक हैं। गिल्टी भी सारी नर्म होकर पटकने लगी है। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो ऐसा लगता है कि जैसे मन सिकुड़ने लगा है, सूक्ष्म होने लगा है। अब इधर दो-एक दिन से तो ऐसा लगता है कि हर चीज़, हर मनुष्य तक ख़ाली है। ऐसा महसूस होता है कि हर जगह, जैसे हर मनुष्य तक ख़ाली है। ऐसा महसूस होता है कि हर जगह, हर चीज़, जैसे कुछ नहीं है। कुछ नहीं को जैसे कुछ कर ही शायद व्यवहार चालू है। मेरा तो अब यह हाल समझ लीजिये कि सब कुछ, कुछ नहीं है और इसमें भी कुछ अजीब मस्ती की दशा लगती है। सब चीज़ ही नहीं, मेरे 'बाबूजी' बल्कि मैं भी ऐसी ही दीखती हूँ, जैसे कुछ नहीं हो। आजकल तो कुछ नहीं ही मेरी हालत है और कुछ यह हो गया है कि इस कुछ नहीं में समस्त संसार तथा खुद मैं भी बिला गये हैं। यह होते हुए भी न जाने भाई, ऐसा लगता है कि यह दशा अभी पूर्ण शुद्ध रूप में नहीं आ

पाई है, ऐसा लगता है कि 'R' Point (आर पॉइंट) की सैर ख़त्म हो गई है। 'उसकी' कृपा का इन्तज़ार है। परन्तु तबियत 'आपकी' ज़रा कुछ ठीक हो जाये।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। तथा जिया पैर छूना कहती हैं। इति:

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्त
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-314

शाहजहाँपुर
25.5.53

प्रिय बेटी कस्तूरी,

खुश रहो।

पत्र तुम्हारे सब मिल गये। 19 मई का पत्र मिला गया, जिसका जवाब लिख रहा हूँ। कल 11 बजे दिन के तुमको 'R' (आर) के मुकाम से निकाल कर 'S' (एस) पर डाल दिया है। तुम्हें पढ़ना ज़रूर चाहिये, अपने लिये नहीं, बल्कि दूसरों की ख़ातिर। किताबें कुछ चौबे जी के पास ज़रूर होंगी। मैं ख़ुद अपने में इस कमी को महसूस करता हूँ। मैंने कल रात कुछ बन्दिशें (Limitations) हल्के कर दिये हैं। तोड़े ज़रूर नहीं, मगर इससे भी किताबें समझने में मदद ज़रूर मिलेगी और समझ तेज़ ज़रूर होगी। जो हालत तुमने लिखी है, अच्छी है। तुमने लिखा है कि "हर जगह, हर चीज़, जैसे कुछ नहीं है।" इसके मतलब यह है कि **असल** में चिमटना शुरू हो गया है। यह हालत अभी और बढ़ेगी। मन का सिकुड़ना, जो लिखा है, वह यूं महसूस होता है कि उसका रुख़ ऊपर को काफी खिंच चुका है और उसमें जो बातें नहीं होनी चाहिये थीं, वे बहुत कुछ हट चुकी हैं।

शुभचिन्तक,
रामचन्द्र

पत्र-संख्या- 315

लखीमपुर
26.5.53

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी'

सादर प्रणाम स्वीकृत हो।

पूज्य मास्टर साहब जी के पत्र से 'आपके' पेट का दर्द कम पढ़कर सबको प्रसन्नता हुई और यह भी मालूम हुआ कि 'आप' किसी ज़रूरी काम में आज कल लगे हुए हैं।

कृपया मेरी भी यह प्रार्थना है कि जो ज़रा सा Work (काम) 'आप' मुझे बता गये थे, वह 'आपकी' इच्छानुसार ही हो रहा है या कुछ कमी तो नहीं है, यद्यपि असम्भव है, परन्तु ठीक 'आप' ही जाने। ताऊ जी के फोड़े में कल कुछ सूजन तथा कड़ापन फिर आ गया था, परन्तु डाक्टर ने कहा कि यह केवल 2–3 दिन उसमें से खून अधिक निकलने के कारण नसें सूज गई हैं, फ़िक्र की कोई बात नहीं है। कल से खून निकलना बिल्कुल बन्द है, कुछ सूजन भी कम है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी अब आत्मिक–दशा चल रही है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ यह हाल है कि हर हाल शून्य है। हर चीज़, जड़, चेतन और खुद मैं भी शून्य हूँ। मेरे 'बाबूजी' यहाँ तक है कि ऐसा लगता है कि बात तक जो कहती हूँ और जो सुनती हूँ, वह भी केवल शून्य ही महसूस होती है। या यों कह लीजिये कि मेरी तो देखने, सुनने और अनुभव करने की ताक़त भी जैसे सब शून्य हो गई हो। या यों कह लीजिये कि मुझे जीवित रखने की शक्ति भी शून्य हो गई है।

भाई, आजकल बड़ी मासूम हालत है। हर चीज़, हर हालत, यहाँ तक कि मेरे ज़र्रे–ज़र्रे में केवल मासूमियत ही महसूस होती है। अन्तर का कण–कण मासूम बन चुका है। अब मुझे न जाने यह क्या हो गया है 'श्री बाबूजी' की जब किसी को पूजा कराती हूँ, तो भी इतनी शून्यता सी रहती है कि यह एहसास तक नहीं हो पाता कि Sitting (सिटिंग) में कुछ है भी, बिल्कुल शून्य सी रहती है। ख्याल बाँधती हूँ, तो वह भी शून्य ही हो जाता है। इसीलिये टिकता नहीं। 'मालिक' को सौंप देती हूँ, नहीं तो जो कोई पूजा करे, या मुझे कोई देखे तो, यह बैठने का केवल खिलवाड़ या रसम मात्र ही समझे और 'मालिक' की कृपा ही से बैठने वालों की तबियत लगी रहती है।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो ऐसा लगता है कि हृदय–तंत्री में केवल एक ही रागिनी हमेशा लहराती है, वह क्या है, यह मुझे नही मालूम या ऐसे कह लीजिये कि अन्तर का कण–कण अपने 'मालिक' के सम्मिलन से कुछ अजीब मस्ती से भरा रहता है। परन्तु अब तो यहाँ तक हो गया है कि मुझे तो कण–कण भी, भीतर या बाहर का भी, उसमें बिला गया लगता है। बस फिर रह क्या गया, एक अपूर्व मिलन की केवल मस्ती। नहीं, नहीं बल्कि शायद सम्मिलन में अब केवल शून्यता ही शून्यता रह गई है क्योंकि अब वह मिलन भी शून्यता ही से ही लगता है। भाई, नहीं, नहीं, बल्कि मिलन की मस्ती भी क्या है, केवल अन्तर में सबमें शून्यता ही शून्यता है।

मेरे 'श्री बाबूजी' और देखती हूँ कि हृदय–तंत्र में जो रागिनी बजती है, उसके स्वर, शून्य ही होते हैं और शून्यता ही उसकी लहरी होती है। कुछ ऐसा हो गया है कि मेरे 'मालिक' का रूप भी कुछ शून्य ही हुआ जा रहा है। शक्ल है, परन्तु ऐसी कि शून्य

महसूस होता है। मेरी तो अब कुछ ऐसी हालत हो गई है कि शरीर तक का ज़र्रा-ज़र्रा मासूम हो चुका है। संसार का कण-कण मासूम बन चुका है, सब कुछ शून्य हो चुका है। जो कुछ भी दृष्टि है, जो कुछ भी पसारा है और जिसका पसारा है, सब मासूम है, शून्य है, कुछ नहीं है और शायद इसीलिये हर कण में चमक है, परन्तु देखने की चीज़ नहीं, वरन् महसूस करने भर की है, बल्कि वह भी नहीं, शून्य है।

ईश्वर की कृपा से बड़े भइया की नौकरी इधर तो 14 जून तक बढ़ गई है, और फिर 14 जून को वे ब्राड गेज में Exhibition Train (एग्ज़बीशन ट्रेन) पर, जो भारत का Tour (यात्रा) करेगी, चले जायेंगे, फिर आखिरी नवम्बर या शुरू दिसम्बर में लौटेंगे। मास्टर साहब जी के पत्र से यह जानकर बहुत हर्ष हुआ कि 'आप' लौटने पर जून के तीसरे हफ्ते में यहां आयेंगे।

इधर कुंवर की दाहिनी वाली आँख पर टीन पर से भंवर के हाथ से छूटकर बाँस गिर गया था, सो उसमें चोट काफी आ गई थी। जैन के इलाज व डालने वाली दवा और मलाई बाँधने से आँख करीब-करीब बिल्कुल ठीक हो गई, कोई फिक्र की बात नहीं रही। कल जिया आई थीं, वे 'आपको' पैर छूना कहतीं थीं और कहा कि 'श्री बाबूजी' हम पर भी अपनी कृपा बनाये रहें और मुंशीयाइनजी भी 'आपको' पैर छूना कह गई हैं। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं।

न जाने यह क्या बात है कि मैं देखती हूँ कि 'मालिक' की कृपा से मेरा दिमाग़ व समझ खुलती जा रही है। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-316

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी,' लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 27.5.53

आशा है मेरा पत्र मिला होगा। पेट का दर्द तो 'आपका' कम हो गया, परन्तु अभी कमज़ोरी होगी, सो अम्मा कहती हैं कि कुछ ताकत की चीज़ और गरम कपड़ों का उत्तरकाशी में काफ़ी इन्तज़ाम रखियेगा। ताऊजी भी धीरे-धीरे ठीक बराबर हो रहे हैं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, ऐसा लगता है कि सर्वत्र (Zero) (ज़ीरो) का ही साम्राज्य है, Zero (ज़ीरो) का ही पसारा है। हर दशा, हर चीज़ सब कुछ Zero (ज़ीरो) ही हो गया है।

मुझे तो Zero (ज़ीरो) ही दिखाई देता है और Zero (ज़ीरो) ही महसूस होता है। आजकल यही विशुद्ध दशा ही मेरी दशा चल रही है। मेरी दशा क्या है अब? कि न कुछ करिश्मा है, न कोई करिश्मा है, और न किसी का करिश्मा है, पसारा है, न कुछ है, बस कुछ नहीं है। सब कुछ शून्य है, Zero (ज़ीरो) है और मेरी तो नस-नस में, कण-कण में यही हालत समाई जा रही है। सच तो यह है कि अब यह हाल सम्भव है पागलपन का ही है कि जड़, चेतन, सब कुछ मुझे तो अब Zero ही महसूस होता है, चाहे पेड़-पौधे तक। चाहे यों कह लीजिये कि बस अब यही (Zero) (ज़ीरो) दिखाई देता है, बस ऐसा ही महसूस होता है।

मेरे 'श्री बाबूजी' ऐसा लगता है कि न कोई Power (शक्ति) है, न कुछ। ईश्वर तक की भी कुछ Power (पावर) नहीं। मुझे तो सब कुछ Zero (ज़ीरो) रह गया है। यहाँ तक कि भाई, ईश्वर भी Zero (ज़ीरो) ही हो गया है। शायद, क्योंकि मुझे तो कुछ अब महसूस ही नहीं होता। बस अब तो यह हाल हो गया है कि अब तो केवल कुछ नहीं ही दिखाई देता है और वही महसूस होता है। मुझे तो ऐसा लगता है कि मैं भी बिल्कुल Powerless (शक्तिहीन) हूँ और न कहीं से मुझमें Power आती ही महसूस होती है, परन्तु फिर भी 'मालिक' का Working (काम) ज़रूर होता है, हर प्रकार का। यही मेरी मस्त दशा चल रही है। ऐसा लगता है कि शुद्धता, मासूमियत सब कुछ Zero (ज़ीरो) हो गई है। एक ही रंग है, एक ही नक्शा है और एक ही नज़ारा है और वह सब कुछ शून्य ही, Zero ही है। जिसका कोई अर्थ नहीं है, परन्तु यही शून्य मस्ती ही मेरी दशा है। 'श्री बाबूजी' यह सब क्या हो गया है, शून्य मस्ती में शब्द से परे बस मस्ती ही समझ लीजिये।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। मास्टर साहब जी से मेरा, केसर तथा बिट्टो का प्रणाम और अम्मा का शुभाशीर्वाद कहियेगा। मास्टर साहब से कह दीजियेगा कि पेचिश की दवा अपने संग ज़रूर ले जायें, क्योंकि उन्हें अकसर दस्त हो जाते हैं। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहासक्त

पुत्री-कस्तूरी

पत्र–संख्या–317

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर

सादर प्रणाम। 29.5.53

'आपका' कृपा–पत्र कल मिला–पढ़कर प्रसन्नता हुई। Point 'S' (पॉइंट एस) के लिये बहुत–बहुत धन्यवाद। Limitation (सीमा) हल्के करने से जो असर हुआ था, वह तो लिख ही दिया था। मेरे दोनों पत्र मिले होंगे। किताब अंग्रेज़ी वाली 'आपकी' तथा ईशोवास्योपनिषद पढ़ना तो 4–5 दिन से शुरू कर दिया है। मैंने पढ़ने के बारे में लिखा ज़रूर था, परन्तु 'आपने' मुझे पढ़ने को लिखा था, इसलिये मैं भला बिना पढ़े रह कैसे सकती थी, तबियत ही नहीं मानी। 'आपका' दर्द कुछ ठीक पढ़कर प्रसन्नता हुई थी, आज मास्टर साहब जी के कार्ड से यह जानकर कि 'आपको' 3–4 दिन से दस्त भी आने लगे और कमज़ोरी भी होने लगी, पढ़कर फ़िक्र हो गई है। परन्तु दस्तों से यदि कहीं यह लाभ हो जाये कि 'आपके' रक्त में प्रवेश हुआ ज़हर निकल जावे, तो ईश्वर को बहुत–बहुत धन्यवाद है। मेरे 'श्री बाबूजी' हमारे श्री लाला जी साहब ने केवल हम बच्चों पर, गरीबों पर कृपा के ही हेतु प्राणेश्वर के लिये 'आपको' कहा है। प्राणेश्वर छोटी शीशी में है, एक चने के बराबर खुराक है। हमें बड़ी प्रसन्नता है, दस्त तो 'आपके' इससे अवश्य ही थम जायेंगे। गरीबों पर कृपा कैसे हो, वे खुश हों, इसी का अवसर 'आप लोग' कृपा कर हमें देते हैं। अम्मा कहती हैं कि इतना 'आपका' पेट ख़राब है, कमज़ोरी भी है, कुछ सॉस का दौरा भी हो ही जाता है, इस कारण यदि हो सके तो यह उत्तर काशी की यात्रा इस साल के लिये हटा दीजिये। वैसे 'आप' जानें। वैसे सबसे बड़ा रखवाला तो सदैव 'आपके' पास है। वैसे मैं हाल तो अपना लिख चुकी हूँ, कुछ थोड़ा सा इतना और है।

भाई, जैसे पहले मैं लिखा करती थी कि दूसरी दुनियाँ में, जहाँ मैं अपने को पाती हूँ, वही वायु मुझे अच्छी मालूम पड़ती है। परन्तु अब तो यह हाल है कि न तो दुनियाँ है, बस एक ही न जाने क्या हाल है कि न वायु है, न साँस है, सब अंधेरा कहूँ या क्या कहूँ। सब शून्य है, परन्तु शायद ज़िन्दगी ही ज़िन्दगी है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा फूलो जिज्जी, केसर, बिट्टो 'आपको' प्रणाम कहती हैं। लल्लू B.Com III पास हो गये। अलीगढ़ में सुरेन्द्र B.A. तथा विमला M.A. पास हो गये हैं, सब ईश्वर की कृपा है। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

पुत्री–कस्तूरी

पत्र-संख्या-318

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर

2.6.53

सादर प्रणाम।

कल जिया तथा विष्णु से वहाँ के समाचार मालूम हुए। 'आपको' शुक्र को बहुत दस्त आये, न जाने क्यों मुझे यह बराबर महसूस हो रहा था, चाहती थी कि उसी दम उड़कर किसी तरह वहाँ पहुँच कर, वह दवा देकर ही देखूं, परन्तु इसी समय अपना लड़की होना महसूस होता है, खैर 'आप' कमज़ोर बहुत हो गये हैं, कृपया उत्तरकाशी पहुँच कर भी अपनी तबियत का हाल बराबर मास्टर साहब जी से लिखवाकर दिया करियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब इधर तो अक्सर यही हाल रहता है कि भीतर, अन्तर में कचोटपन सी हर समय मची रहती है। कभी-कभी जी चाहता है कि अकेले में बैठकर छाती कूटा करूँ, परन्तु न जाने क्यों यह अच्छा नहीं लगता, क्योंकि सच में अब तो यही मेरी मस्ती है, इसी में झूमती हूँ। बस इसे ही अन्तर में समेटे बैठी हूँ। और क्या हो सकता है, एक भिखारी गरीब के पास, सो भी मेरे 'बाबूजी' गरीबाई ऐसी कि उसे भी भूली हुई और ऐसी कि मानों, वह मेरी कुछ चीज़ ही नहीं है। आँसू रुठ चुके है, और मुझे अच्छे लगते हैं और कुछ यह भी है कि अब तो ठंडी आग अन्तर में लगी हुई है, जो पानी (आँसू) से भी कुछ लाभ नहीं पाती। न जाने यह क्या बात है कि अन्तर में हूक उठती रहे, परन्तु मुंह से उफ़ निकालना मुझे अच्छा नहीं लगता, मन नहीं चाहता। बस कचोटन हृदय को बेधती रहे, यही मुझे अच्छा लगता है, बल्कि अन्तर में भी आह खींचना अच्छा नहीं लगता। बस हृदय को दबाये चुपचाप बैठी रहूँ और जहाँ अकेला हुआ बस ऐसे ही बैठी रहती हूँ।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो यह हाल हो गया है कि न शून्य ही रह गया है न अशून्य। न कुछ नहीं है और न कुछ है। कुछ ऐसा लगता है कि शून्य वाली हालत भी मेरे में हज़्म हो गई है, पचती चली जा रही है। या यों कह लीजिये कि शून्य भी शून्य हो चुका है। कुछ ऐसा महसूस होता है कि एक बिल्कुल सीधे एवं सहज-मार्ग पर तेज़ी से चली जा रही हूँ, जहाँ न कुछ रुकावट है न ठहराव। कुछ यह भी हो गया है कि 2-4 दिन की भी अब तो यदि अड़चन आ जाती है, नहीं, बल्कि यदि अगली हालत पर नहीं पहुँच पाती हूँ तो बेचैनी रहती है, क्योंकि मुझे तो कोई आकर्षण-शक्ति अब ज़ोरों से ऊपर बराबर खींचे लिये जाती है। 'मालिक' का अथाह प्रेम मुझे अपने पास खींचे लिये जाता है, नहीं, नहीं बल्कि अपने में समेटे लेता है, अपने में चिपकाये ले रहा है। मैं तो अब 'उसी' में चिपकी, 'उसी' में समाई जा रही हूँ और 'वही' मेरा असली रूप है। मैं सच कहती

हूँ, मेरे 'बाबूजी' मैं तो अपने 'असल' में ही चलती जा रही हूँ। यदि यह कहूँ कि अब असल ही मेरा रूप हो गया है। यहाँ तक हो गया है कि मैं अपने स्वरूप को भूलकर असल ही असल को महसूस करती हूँ। हर चीज़ मुझे असल ही महसूस होती है। मेरा Naked (असली) रूप ही असल है और असल अब असल में ही समाया जा रहा है। असल में इतना आकर्षण है कि तेज़ी से उसमें समाती हुई भी अधीर हो उठती हूँ।

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

पुत्री-कस्तूरी

पत्र-संख्या-319

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' — लखीमपुर

सादर प्रणाम। — 3.6.53

एक पत्र डाल चुकी हूँ-शायद कल मिल जायेगा। अब 'आपकी' तबियत कैसी है, कृपया लिख दीजियेगा। 'मालिक' की कृपा एवं blessings (आशीर्वाद) से छोटे भइया तथा रमा First (प्रथम) तथा बिट्टो भी Second (सेकेण्ड) पास हो गई। 'आपको' तथा सबको अम्मा कहती हैं, कि हम सब की ओर से बहुत-बहुत बधाई है। मास्टर साहब जी को भी हम सबकी ओर से बहुत-बहुत बधाई है। मुंशी जी का भी लड़का पास हो गया, उसको भी हम सब 'आप' सब तथा मास्टर साहब जी को बहुत-बहुत बधाई है। परन्तु 'आपकी' तबियत कैसी है, क्या 'आप को' कुछ लाभ हुआ है, 'आप' कमज़ोर हो गये हैं। दादी शायद लखनऊ से अब लौट आई होंगी। अपनी आत्मिक-दशा के बारे में मैं लिख ही चुकी हूँ। पढ़ने में जैसा 'आपने' लिखा था Notes (नोट्स) मैं थोड़े बहुत लेती जाती हूँ। जब 'आप' आयेंगे तब सुना दूंगी।

मेरी दशा में तो इधर 'मालिक' की कृपा से बराबर भीतर शुद्ध सी होती चली जा रही है और मैं देखती हूँ कि ज्यों दशा शुद्ध हो रही है बुद्धि भी जैसे निर्मल और चेतती सी चली जाती है। कुछ मैं यह भी देखती हूँ कि जैसे दशा हल्की सी होती जाती है, वैसे ही मेरा अधीर मन अन्दर ही अन्दर बढ़ता जाता है और हाज़मा तो इतना तन्दुरूस्त है कि जैसे अब तो सब कुछ हज़्म होकर सब ख़ाली-ख़ाली हो गया है। मेरे 'श्री बाबूजी' मैं तो यही कहती हूँ कि जितना मेरे 'मालिक' मुझपर मेहरबानी कर रहे हैं, मैं तो भाई, जी भर कर कुछ प्रेम तक नहीं कर पाती हूँ, मैं क्या करूँ। कभी मेरे मन में आता है, कि ऐसे अपने 'मालिक' के लिये मैं क्या करूँ, फिर यही decide (तय) होता है कि अपने को पूरी तौर से बस 'उनके' हवाले कर दूं, फिर जो चाहेंगे, जो मर्ज़ी होगी, अपना गुलाम समझ कर स्वयं ही करवा लेंगे। अब हालत यही है, सब असल ही असल दीखता है।

बस सब वही, खुद मैं भी, मेरा भीतर–बाहर, ज़र्रा–ज़र्रा भी, बस वही (असल ही) महसूस होता है। मेरे 'मालिक' अपना naked (वास्तविक) रूप देख रही हूँ और सब समझ रही हूँ, परन्तु वास्तविक बात यह है कि इस दशा को, इतनी शुद्ध, पवित्र दशा को, किन शब्दों में लिखूं, शब्द समझ में नहीं आते। स्पर्श है, किन्तु शब्द नहीं है। मैं यह भी महसूस कर रही हूँ कि जितने हम शुद्ध या हल्के होते जाते हैं, तभी चाल अदृश्य रूप से तेज़ होती चली जाती है, जो मैं जान नहीं पाती, किन्तु 'मालिक' की कृपा से कभी–कभी कुछ दिखलाई पड़ जाता है। मुझे तो ऐसा लगता है कि शून्य भी शून्य हो गया है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं। मास्टर साहब जी से मेरा, केसर का प्रणाम तथा अम्मा का आशीर्वाद कह दीजियेगा। इति:

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहांकिता

सेविका–कस्तूरी

पत्र–संख्या–320

शाहजहाँपुर

6.6.53

प्रिय बेटी कस्तूरी,

खुश रहो।

तुम्हारे सब खत मिल गये। मैं इसलिये चाहता हूँ कि तुम कुछ पढ़ो, क्योंकि तुम्हारी अनुभव–शक्ति अच्छी है। मैंने कुछ Limitations (सीमा) बहुत मध्यम व धीमे कर दिये हैं। इस तरह पर कि सम्भव है कि वह अपने आप जल्दी खत्म हो जावें; हल्के तो होना शुरू हो गये हैं, और इसकी पहिचान यह है कि तुम में हल्का खुद–ब–खुद बढ़ना शुरू हो गया होगा। आज मुझे बहुत हल्के नज़र आ रहे हैं। मुमकिन है श्री रामचन्द्र मिशन के स्तम्भ में से तुम भी एक हो। मैं लिखता तो यही कि तुम बोलने की भी आदत डालो, मगर लिहाज़ यह है कि तुम कमज़ोर हो, बोलने में तुम्हें तकलीफ़ होगी।

तुम्हारी किताब 'सहज–समाधि' छप गई है। पचास कॉपी मैं भेज रहा हूँ। तुम्हारे हर खत का मैं जवाब देना चाहता हूँ। यदि कोई लिखने वाला मिल जाता है, तो लिखाता रहता हूँ। इसलिये कि मैं यह चाहता हूँ कि तुम खत एक रजिस्टर में नकल करो और उसके जवाब जो कुछ है, वह भी नकल करो। किसी वक्त में छपने की ज़रूरत होगी।

27 मई को जो ख़त आया है, जिसमें Zero (ज़ीरो) क़रीब–क़रीब छः जुमलों में तहरीर है, तो Zero (ज़ीरो) तो अभी बहुत दूर है। जब अभ्यासी सब कुछ पा लेता है, तो लाज़िमी तौर पर कुछ नहीं रहता, जिसको Zero कह सकते हैं। अभी तो सेर भर में छटाँक भर भी नहीं बढ़ पाई हो, मगर बढ़ोगी, अगर ईश्वर को मंजूर है।

वैराग्य की पूर्ण अवस्था पर पहुँचने की, तुम्हारा ख़त कुछ खुश–खबरी दे रहा है। वैराग्य की पूर्ण हालत यह होती है, कि कोई चीज़, सिवाय ईश्वर के अन्दाज़ नहीं होती। अब तुम में यह हालत आती है और कभी इससे ऊंची हालत भी आ जाती है। इसकी वजह यह है कि कभी–कभी मेरी हालत की तलछट उसमें शामिल होती है।

29 मई के ख़त में जो तुमने शून्य गति लिखी है, ठीक है। यह ऐसी गति है, जिसमें से होकर असल में जाना होता है और यह अब बड़ी हालत की तहरीर की तरक़्क़ी समझो और यह गति दूर तक चली जाती है। यह भी किसी वक्त में गायब होती सी दिखाई देगी, मगर साथ यह नहीं छोड़ेगी। जब तक कि असली ठिकाना न मिल जाये।

'S' (एस) की सैर पूरी नहीं हुई है। उत्तरकाशी पहुँचने तक मैं कोशिश करूँगा कि सैर पूरी हो जावे। उसके बाद फिर 'T' (टी) मुकाम पर डाल दूंगा।

शुभचिन्तक

राम चन्द्र

पत्र–संख्या–321

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' — लखीमपुर

सादर प्रणाम। — 11.6.53

कृपा–पत्र 'आपका' मिला–समाचार मालूम हुए। 'आपकी' तबियत अच्छी पढ़कर संतोष हुआ। ईश्वर कृपा ऐसी बनाये रखे। अब मैं पढ़ती भी हूँ, कुछ notes (नोट्स) भी लेती हूँ और 'मालिक' की कृपा से मेरा जी भी अब ऊबता नहीं और 'मालिक' की ही कृपा से समझ में भी सब आता है और आईना की तरह बात साफ़ आती है। 'श्री बाबूजी' मिशन तो इतना सुदृढ़ और सुचारू हो चुका है कि उसमें स्तम्भ ऐसा कह लीजिये कि जैसे गोवर्धन पर्वत को उठाने पर ग्वालबालों ने अपने छोटे–छोटे डण्डे भी उसमें लगा दिये थे। हमारे मिशन के Master (मालिक) से आज संसार Light (प्रकाश) पा रहा है और बराबर पाता रहेगा, आँखें खुलने पर हम उसे पहिचानेंगे, देखेंगे।

आशा है 'आप' सब लोग उत्तरकाशी पहुँच गये होंगे। बड़ी दूर का सफ़र है। 'आप' कब तक लौटेंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी मेरी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ ऐसा लगता है कि मैं अपने अन्तर में, मन में डूब सी गई हूँ, और डूब कर शून्य हो चुकी हूँ। Zero (ज़ीरो) से मेरा मतलब केवल शून्य की ही हालत से है, बल्कि दशा अब तो ऐसी हो गई है कि जैसे शून्य भी शून्य हो गया है। न जाने अब तो कुछ ऐसा लगता है कि दशा में हल्केपन की भी गुंजाइश नहीं रह गई है। भाई, अब तो उसकी (हल्केपन की) सीमा को पार कर कहीं परे चली गई है। नहीं, नहीं, गई कहीं नहीं है, बल्कि, शून्य हो गई है। और मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो ऐसा लगता है कि प्रेम का पलड़ा भारी हो गया है और मेरा पलड़ा शून्य पड़ गया है, इसीलिये अब हल्केपन की गम नहीं रह गई है। मेरी दशा में और फिर प्रेम क्या जानूं मैं। फिर क्या दशा लिखूं। अब तो यह कह लीजिये कि मेरा ज़र्रा-ज़र्रा शुद्धता को भी पीकर हज़म कर गया है। अब तो भाई, कुछ ऐसी दशा लगती है कि जैसे मेरे ज़र्रे-ज़र्रे से, कण-कण से आंसू बहते रहते हैं, नहीं, नहीं बल्कि मेरा ज़र्रा-ज़र्रा, कण-कण आँसू बन गया है। कण-कण ईश्वर बन चुका है, शायद इसी कारण यदि देखा जाय तो मेरे रोम-रोम में, ज़र्रे-ज़र्रे में, बिना गम्य के भी असीमित Power (शक्ति) भरी हुई है। मेरे कण-कण में अपरिमित शक्ति मौजूद है। यह ज़रूर है कि इसका होश तो केवल मेरे 'मालिक' को ही है। भीतर-बाहर सब कुछ ईश्वर हो चुका है। जड़, चेतन, कण-कण मेरे लिये ईश्वर हो चुका है। अब सिवाय इसके दूसरा कुछ महसूस नहीं होता और न जाने क्या है कि ईश्वर भी ऐसा, जैसे शून्य हो चुका है। जैसे कुछ है ही नहीं, बिल्कुल शून्य, खाली है और इसी तरह का ही समस्त संसार का कण-कण, जड़, चेतन, अब मुझे वैसा ही महसूस होता है। और सच तो यह है कि सिवाय इसके, दूसरी चीज़ समाप्त हो चुकी है।

मेरे 'श्री बाबूजी' ऐसा लगता है कि हृदय-तंत्री के एक-एक तार 'मालिक' में समाते जाते हैं। मन का एक-एक तार ऐसा लगता है शून्यता के सागर में मिटता जाता है। मन का एक तार टूट चुका है। परन्तु बस एक बेतार के तार की तरह बिना किसी आधार के एक ख़्याल का तार स्वाभाविक ही लगा हुआ शेष रह गया है, जो मेरे में जीवन लाता रहता है। इधर बराबर कुछ ऐसा महसूस होता है कि मन सिकुड़ता सा, सिमटता सा या सूक्ष्म होता चला जा रहा है। कुछ ऐसा लगता है भाई, कि अपने रोम-रोम में असीमित Power (शक्ति) भरी हुई है और समस्त संसार उस Power (शक्ति) के करतलगत (Under) हो सकता है। हर प्रकार की Power (शक्ति) मौजूद है। ऐसा महसूस होता है। परन्तु हाल यह है कि किसी का भी ग़म नहीं है मुझमें।

अम्मा 'आपको' तथा मास्टर साहब जी को शुभाशीर्वाद कहती हैं तथा केसर, बिट्टो प्रणाम कहती हैं।

इधर कुछ ऐसा लगता है कि शायद आँखों के सामने कुछ मिटता या साफ़ होता चला जाता है, जिससे समझ साफ़ होती जा रही है। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
सेविका –कस्तूरी

पत्र–संख्या–322

प्रिय बेटी कस्तूरी, उत्तरकाशी
शुभाशीर्वाद। 13.6.53

मैं 12 जून को यहाँ आ गया। सर्दी यहाँ नहीं है। अभी यहाँ 4–6 रोज़ रहने का इरादा है। यहाँ पर वेदान्ती और हठयोगी हैं। Transmission (प्राणाहुति) का चाहनेवाला कोई नहीं मालूम होता। अभी मैं लोगों से मिल भी नहीं पाया हूँ। तुम किताब जो पढ़ती हो, उसका नोट लेती जाना, यह अच्छा रहेगा। आज मैंने तुमको 'T' (टी) स्थान पर खींच दिया है। मैंने यह सोचा कि जब और लोग यहाँ के फ़ायदा नहीं उठाना चाहते तो हमारे आपस के लोग फ़ायदा उठा लें। मास्टर साहब को तीर्थ का फल मिल गया और जो मेरे साथ हैं, कुछ न कुछ रोशनी उन्हें भी पहुँची।

यहाँ के बारे में मैंने यह तय नहीं किया है, कि इस जगह को कैसा कर के छोड़ूं। ऐसा कि जैसा यह है, या ऐसा कि इस जगह पर कोई महात्मा अपनी योग सिद्धि न कर सकें। मेरी तबियत ठीक है।

शुभचिन्तक
रामचन्द्र

पत्र–संख्या–323

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर
सादर प्रणाम। 17.6.53

एक पत्र लिख चुकी हूँ। आशा है 'आप' सब वहाँ अच्छी तरह से होंगे। अभी तक कोई पत्र नहीं मिला, शायद वहाँ busy (व्यस्त) होंगे। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो ऐसी दशा है कि मानो 'मालिक' के सामने प्याला हर समय ख़ाली पड़ा रहता है और ऐसा लगता है कि कभी भरता ही नहीं, परन्तु दशा का भी यही हाल है कि इसमें जैसे शून्य की ही गम्य हो सकती है। न जाने क्यों कुछ ऐसा लगता है कि जैसे मेरा रोम-रोम जाग उठा है, सजीव हो उठा है। यही नहीं, बल्कि ऐसा लगता है कि मेरे रोम-रोम में अद्भुत शक्ति भरी हुई है, समाई हुई है, परन्तु मेरे 'मलिक' ने उसके होश का भी ज़िम्मा खुद ही सम्भाल लिया है, क्योंकि मेरा तो ज़र्रा-ज़र्रा, रोम-रोम Innocent (मासूम) हो चुका है। रोआँ-रोआँ आरत्त बन चुका है। क्योंकि कुछ ऐसा हो गया है कि प्याला ख़ाली हो चुका है और कुछ भी सम्भालने का माद्दा ही जाता रहा, इसीलिये सारा ज़िम्मा, सारा होश अब 'वही' जाने। ता. 15 की शाम से ऐसा लगता है कि जो Limitations (सीमायें) 'आपने' हल्के कर दिये थे, वे और साफ़ हो गये। अब समझ साफ़ और स्वतंत्र हो गई है।

मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ यह हाल है कि मैं तो इतनी Innocent (इन्नोसेन्ट) हो गई हूँ, कि मेरा यह हाल है कि न मैं पूजा करती हूँ, न कुछ, और करूँ तो क्या करूँ, किसको करूँ, कुछ समझ ही नहीं रह गई है। अब तो ऐसा लगता है कि मन का हर तार टूटकर वह (मन) साफ़, स्वतंत्र हो चुका है, और मैं तो उसमें (मन में) जैसे गड़कर रह गई हूँ। और ऐसा लगता है कि उसे भेदकर या उसकी हालत को पटकती हुई धंसती चली जा रही हूँ। भाई, मेरा तो ऐसा हाल है, न पूजा करती हूँ, न उपासना और न अभ्यास। अब तो मेरा मन खुद ही पूजा हो चुका है और वही उपासना। अब तो ऐसा लगता है कि मन पानी-पानी हुआ जा रहा है और मन को भेदकर उस पार निकली जा रही हूँ और न जाने ऐसे अद्भुत समुद्र के किनारे आ गई हूँ कि अभी तो बस उसकी हवा या दशा शुद्ध कह लूँ और कुछ कह नहीं मिलता है। ऐसा लगता है कि मन का ज़र्रा-ज़र्रा टिघला तथा बिखरा सा जा रहा है।

'आपने' अपने पत्र में कुछ बोलने की भी आदत डालने को लिखा था, मुझे बस यह समझ में नहीं आता कि किसके सामने और कहाँ बोलूँ। हिम्मत मुझमें 'मालिक' की कृपा से ज़रूर है और फेफड़े-कमज़ोरी की बात है, सो दिन भर भाई, कुछ न कुछ तो बोलती ही रहती हूँ। 'आप' इतनी निष्काम, निःस्वार्थ सेवा करते हैं, इसकी शिक्षा से हमें कुछ न कुछ सीखना ही चाहिये। अम्मा 'आपको' तथा मास्टर साहब को शुभाशीर्वाद कहती हैं तथा केसर, बिट्टो फूलो जिज्जी प्रणाम कहती हैं। इतिः

सदैव केवल 'आपको' ही स्नेहसिक्ता
सेविका-कस्तूरी

पत्र–संख्या–324

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 3.7.53

आशा है 'आप' अच्छी तरह से होंगे। यहाँ अम्मा को कमज़ोरी हो गई है, पेट भी खराब है, इसलिये कुछ ढीली तबियत आजकल उनकी है। आशा है 3–4 दिन में ठीक हो जायें। फूलो जिज्जी कल जायेंगी, छोटे भइया पहुँचाने जायेंगे। केसर, बिट्टो उनके संग जायेंगी। जब 8–10 दिन में वे लौट आयेंगी, तब मैं चली जाऊंगी। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ। पहले उधर ता. 27.6.53 से अब ता. 2–3 तक का हाल लिख रही हूँ।

अब तो भाई, कुछ अजीब साफ़ सुथरी सी दशा रहती है। कुछ अजीब स्थिर सी, किसी भी ओर क्षण को भी न झुकने वाली स्थिर सी तबियत रहती है। बल्कि यों कह लीजिये कि स्फुरण से रहित जमकी हुई सी तबियत हर समय रहती है। अब तो कुछ यह हाल है कि अजीब नशीली सी दशा रहती है और यह भी लगता है कि मेरा ज़र्रा–ज़र्रा मानों चैतन्य हो चुका है। ऐसा मालूम पड़ता है कि अब तो दशा शून्य वाली दशा से ऊंची उठ गई है और उससे भी साफ़–सुथरी हो गई है। शायद इसी कारण अब तो शून्यता वगैरह का भी एहसास मुझे नहीं है, बल्कि अजीब अचल और स्थित सी दशा हो गई है। इधर न जाने क्यों मुझे ऐसा लगता है कि 'आप' न जाने क्या–क्या मुझे सिखा देना चाहते हैं।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो दो–तीन दिन से यह हाल है कि अक्सर मन के होने का एहसास तक नहीं रहता है। कुछ ऐसी दशा है कि जैसे मन से भी वैराग्य हो गया है उससे भी मुंह फिर गया है या भाई, यों कह लीजिये कि मेरा कुल शरीर तक मन ही हो गया है, या मन ही मेरा शरीर हो गया है। न जाने क्या बात है कि पीछे यानी रीढ़ में भी कुछ खोखलापन सा आने लगा है।

अम्मा 'आप' को शुभाशीर्वाद कहती हैं तथा केसर, बिट्टो और फूलो जिज्जी 'आपको' प्रणाम कहती हैं। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
सेविका--कस्तूरी

पत्र-संख्या-325

परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर

सादर प्रणाम। 5.7.53

दोनों पत्र संग ही भेज रही हूँ। पूज्य मास्टर साहब जी से मालूम हुआ कि 'आप' ता. 8 के सबेरे तक लौट आवेंगे। अम्मा को अभी कमज़ोरी है। 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो ऐसा लगता है कि मन में ही हर समय रहती हूँ। मन में ही सोती हूँ और मन में ही जागती हूँ। अब तो यह हाल है कि न बिछौने पर सोती हूँ और न ज़मीन पर, जागती या चलती-फिरती हूँ। बस, अब तो मन में ही सोती, वहीं जागती, नहीं, नहीं, वरन् वहीं अपनी दशा में स्थित रहती हूँ। आज सबेरे से ही दशा बदली हुई है। आजकल तो ऐसी दशा है कि जैसे कमल पर बैठा हुआ भौंरा सूरज निकलने पर उसकी पंखड़ियों के बन्द हो जाने से उसी के अन्दर बन्द हो जाता है। उसी प्रकार ऐसा लगता है कि जैसा मैंने लिखा है कि मैं मन में ही हर समय रहती हूँ और मन की पंखड़ियाँ या पंजे चारों ओर से सिकुड़ते हुए ऐसा लगता है कि मानों मुझे अपने अन्दर बन्द सा कर लेंगे। नहीं, नहीं, भाई, मुझे बन्द क्या कर लेंगे, क्योंकि मुझे तो ऐसा लगता है कि मन के पंजे तो सिकुड़ते और मिटते चले जाते हैं। पंजे से मेरा मतलब वृत्तियों से ही है। ऐसा लगता है कि अब तो मन की वृत्तियाँ भी मिटकर मन जैसे खुद मेरा रूप हो गया है।

मेरे 'श्री बाबूजी' अब तो कुछ यह हाल है कि ऐसा लगता है कि जैसे मन मेरे 'मालिक' का ही स्वरूप हुआ जा रहा है। अन्तर की जगह मुझे अब 'उसी' की शक्ल दिखलाई पड़ती है। मन की जगह अब 'उसी' का रूप महसूस करती हूँ। कुछ ऐसा लगता है कि अन्तर के पर्दे न जाने क्यों धीमें और धुंधले पड़ते जाते हैं। यहाँ तक है कि मुझपर अब किसी का Weight (वज़न) नाम मात्र को नहीं रह गया है और प्रभाव तो मुझपर बस 'उसका' ही, मेरे 'मालिक' का ही मालूम पड़ता है। मेरा तो अब यह हाल है कि - "सूरदास कारी कमरी पर चढ़ै न दूजा रंग"। सो भाई, अब तो मैं कारी कमरी ही हो गई हूँ, अब क्या रंग और क्या प्रभाव पड़ सकता है। मेरे 'मालिक' अब ऐसा लगता है कि अन्तर की शक्ल 'मालिक' में ही बदलती जा रही है। कुछ ऐसा लगता है कि मेरा ज़र्रा-ज़र्रा, रोआँ, रोआँ खुल सा गया है और चैतन्यता की चमक सी भर गई है। भाई, मेरा तो यह हाल है कि अब न मैं बेहोश रहती हूँ, न बेख़बर सी, बल्कि अब तो नस-नस में जैसे चैतन्यता है। रोम-रोम जाग उठा है, सारा अन्तर जाग उठा है, चैतन्य

हो उठा है, परन्तु यह चैतन्यता अजीब सुहावनी चैतन्यता है। ऐसा लगता है कि मानों मेरा रूप ही चेतन हो उठा है। मैं देखती हूँ कि मेरा रूप कुछ और हो चुका है, और अपने उसी रूप में या दशा में, मैं स्थित सी रहती हूँ। स्थिरता ही मेरा रूप होता जाता है। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

सेविका–कस्तूरी।

पत्र–संख्या–326

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर

शुभाशीर्वाद। 11.7.53

तुम्हारे खत तीसरी और पाँचवी जुलाई के मिल गये। पढ़कर खुशी हुई। तुमने अपने पत्र में लिखा है कि अन्तर के पर्दे न जाने क्यों ढीले और धुंधले पड़ते जाते हैं। दुनियाँ पुकार–पुकार कर रोशनी देखने के फेर में पड़ी है। कोई सूर्य की भाँति रोशनी देखना चाहता है और कोई चन्द्रमा जैसी। कोई–कोई इस रोशनी को यहाँ तक बढ़ाना चाहते हैं और कहते भी हैं कि वहाँ हजारों सूरज से ज़्यादा रोशनी है और इसी की कोशिश करते हैं। यह ज़रूर है कि योग की शुरूआत उस वक्त होती है, जब कि एक दफ़ा भी रोशनी दिखाई पड़ जाये, मगर इसके यह माने नहीं कि बस असल है। रोशनी Matter (पदार्थ) है। जो चीज़ असल है, वह न रोशनी है और न अंधेरा और इसको धुंधलापन ही कह सकते हैं। Originality (मूल वस्तु) बस यही है कि हमारी कुल इन्द्रियाँ यही धुंधली शक्ल अख़्तियार कर लें।

तुम्हारे ख़त की अगर हर लाइन का जवाब दिया जावे तो बहुत लम्बा–चौड़ा ख़त हो जावेगा, लिहाज़ा संक्षेप के साथ इतना कहता हूँ कि तुम्हारा Body Consciousness (भौतिक चेतना) अब खत्म हो चुका है, Soul Conciousness (आत्मिक–चेतना) शुरू है। इसके खत्म होने में वक्त लगेगा। ईश्वर ने चाहा तो यह भी इसी तरीके से हो जावेगा।

आज इसी वक्त 3.25 P.M. (रात्रि) पर तुमको 'T' स्थान से निकाल कर 'U' (यू) स्थान पर डाल दिया है। इससे एक घंटा पहले 'T' (टी) स्थान पर तुम्हारे रोकने की ज़रूरत मालूम होती थी। मगर अब ऐसी बात महसूस नहीं होती।

तुम्हारा शुभचिन्तक

रामचन्द्र

पत्र-संख्या- 327

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 11.7.53

आशा है मेरा एक पत्र मिला होगा। अब तो शायद सभी लोग विवाह से लौट आये होंगे। इधर मुझे पत्र लिखने का अवकाश ही न मिला, क्योंकि इलाहाबाद से बड़े चाचा, विमला वगैरह सब लोग आये थे, कल चले गये।'मालिक' की कृपा से अब बड़े चाचा कह गये हैं, मास्टर साहब से भी कहा कि अब वे ब्रह्म-विद्या को ही सीखेंगे, आगे ईश्वर मालिक है। अम्मा का फोड़ा भी 3-4 दिन से फूट कर बह गया। अब बैठने में भी उन्हें कोई तकलीफ नहीं है। पेट का दर्द भी ठीक हो गया। 'मालिक' की कृपा से इधर जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ। ता: 8 के सबेरे से दशा कुछ बदली हुई सी लगती है।

मेरा तो अब यह हाल है कि अक्सर मुझे हर चीज, हर खाना, प्रसाद ही मालूम पड़ता है। मेरे में तो देखती हूँ कि न कुछ भावना होती है, न कुछ, बस यह स्वतः ही कुछ हो गया है। अब भोजन का Taste (स्वाद) नहीं, वरन् सब प्रसाद ही मालूम पड़ता है, चाहे वह जूठा हो, या अनूठा, इससे कुछ मतलब नहीं, और मेरे 'श्री बाबूजी' न जाने यह क्या है कि मुझे तो किसी से न कोई शारीरिक और न मन से ही कोई रिश्ता रह गया है। न भाभी, न बहन, न कोई, बस जो सामने आता है, वह तो बस अपना ही महसूस होता है। किन्तु रिश्ता कोई नहीं रहता। इसी कारण मन हर एक से, सब बात कहने में, साफ हो गया है। मुझे न दुराव है, न छिपाव, जो है भाई, सो है।

भाई, कुछ यह हो गया है कभी-कभी शायद कुछ हल्के आसमानी या समुद्री रंग की झलक लिये हुए कुछ ऐसी चमक की सी किरणें पूरे शरीर से बाहर, अपने चारों ओर, कुछ निर्मल सी ऐसी चमक लिये महसूस होती है कि जिनसे चकाचौंध नहीं, वरन शायद कुछ ठंडक सी रहती है। अक्सर गर्दन से ऊपर सिर के चारों ओर ऐसी ही प्रकाश की किरणें सी मालूम पड़ती हैं, परन्तु 'श्री बाबूजी' मेरी आँखें अब यह सब देखने बाहर नहीं आती। क्योंकि अब तो वे, ऐसा लगता है कि शायद अन्तर में चिपटी ही नहीं, वरन् उसमें लय सी होने लगी हैं और शायद इसका कारण यह हो सकता है कि मुझे तो ऐसा महसूस होता है कि अन्तर 'मालिक' के ही रूप में परिवर्तित होता जा रहा है। ऐसा लगता है कि अब तो अन्तर का रूप या मेरा स्वरूप स्थिरता ही हो गया है। ऐसा होते हुए भी तीर तो अन्तर को भी बेधकर पैठ चुका है।

अम्मा 'आप' को शुभाशीर्वाद कहती हैं। फूली जिज्जी, केसर तथा बिट्टो ने 'आपको' प्रणाम लिखा है। बड़े भइया Train (ट्रेन) पर कल Tour (यात्रा) पर गये होंगे पहले जोधपुर, फिर आसाम जायेंगे। इति:

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहासिक्ता
सेविका- कस्तूरी

पत्र-संख्या-328

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर
17.7.53

सादर प्रणाम स्वीकृत हो।

'आपका' बहुत दिनों से कोई पत्र नहीं आया- इस कारण कोई समाचार नहीं मिल सके। अम्मा बिलकुल ठीक है। 'मालिक' की कृपा से मेरी जो कुछ भी आत्मिक- दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, मेरा तो यह हाल है कि निगाह के बाहर--भीतर सब सूक्ष्म ही रह गया है। स्थूलता तो बाहर, भीतर कहीं महसूस ही नहीं होती। यानी मेरे लिये तो हर चीज़ की स्थूलता समाप्त हो चुकी है। इधर न जाने क्या बात है कि कभी-कभी कुछ अन्दर थोड़ा भारी पन सा लगता है, फिर ठीक हो जाता है। कुछ यह देखती हूँ कि मेरा अन्तर मानों स्थिरता का रूप ही होता चला जा रहा है। यहाँ तक है कि अब चाहे कुछ हो, परन्तु वह सोते, जागते, अपने रूप से विचलित नहीं होता। कभी कुछ परिवर्तित नहीं होता। हालत आती है और बदलती है, परन्तु वह अपने स्वरूप (स्थिरता) में ही स्थित रहता है। मेरे 'श्री बाबूजी' ऐसा लगता है कि मन जैसे अपने वास्तविक रूप में बदलता जाता है। इधर न जाने क्या बात है कि स्मरण-शक्ति बहुत कमज़ोर पड़ रही है। यहाँ तक यह दशा हो जाती है कि अक्सर तरकारी में नमक डालना भूल जाती हूँ। सुस्ती भी इधर इतनी शरीर में रहती है कि न किसी को पत्र डालने की तबियत चाहती है, न कुछ, ज़बरदस्ती करती हूँ। यहाँ तक कि 'आपको' पत्र लिखने की सोचते-सोचते दो-तीन दिन बाद लिखना ज़बरदस्ती से शुरू कर पाती हूँ। इधर दो दिन से दशा में चाल नहीं आ पाती है, सुस्ती भी छाई रहती है। तबियत न काम करने को चाहती है और न आराम ही। अक्सर तबियत अकारण ही बेचैन हो जाती है। कुछ रो लेने से तबियत हल्की ज़रूर पड़ती है, परन्तु न जाने क्यों मैं रो भी नहीं पाती हूँ। हाँ, शायद आँसू आन्तरिक-नेत्र भले ही बहा लेते हों, परन्तु ऊपर वाली आँखें कम। कभी-कभी कुछ हृदय पर हल्का बोझ सा होकर फिर साफ़ हो जाता है।

अम्मा कहती हैं कि फूलो ने मोती के लिये लिखा है, सो कृपया मैं उनका पता लिखे देती हूँ। हो सके तो एकाध दिन में भेज दीजियेगा।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता
सेविका–कस्तूरी

पत्र–संख्या–329

परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 19.7.53

कृपा–पत्र 'आपका' आज मिला–पढ़कर प्रसन्नता हुई। Point 'U' (पाइंट–यू) पर मुझे डाल देने के लिये बहुत–बहुत धन्यवाद है। मेरा तो अब अपने ऊपर बीतने पर यह दृढ़ और सत्य निश्चय है कि भाई, बिना 'सिखाने वाले' के चढ़ना असम्भव है, चाहे कोई कितना ही क्यों न फड़फड़ाये। बिना किसी की ताक़त की सहायता से ऊपर कदापि क़दम पहुँच ही नहीं सकता और यह भी मैं सत्य शपथ से कह सकती हूँ कि Points (पाइंट्स) पार कराना तो आज संसार में केवल और केवल एक 'आपकी' ही ताक़त और 'आपकी' ही शान है। भाई, यह दुनियाँ कब देखेगी, कब जागेगी? ईश्वर जाने। जिसने हमें जगाया है, वह ही दुनिया को जगायेगा। प्रकाश छाया है, चेतावनी मिलती है, अपनी आत्मा से; परन्तु हम अन्धे हो गये हैं और चेतावनी की ओर से Unmindful (असावधान) हैं, फिर क्या हो, और ऐसी ही दुनिया के लोगों में से हम सत्संगी भाई लोग हैं, देखें समय कब आता है।

मेरे दो पत्र मिले होंगे। मैंने जो सुस्ती लिखी थी, वह अब आज जाती रही। चाल में भी गति फिर ठीक हो गई, सब 'मालिक' की कृपा है। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है सो लिख रही हूँ।

मेरे 'श्री बाबूजी' मेरी तोअब्र यह दशा हो गई है कि मानों सत्य ही मेरी दशा हो गई है। अन्तर, बाहर केवल मुझे सत्य ही सत्य दिखलाई पड़ता है और कुछ है ही नहीं। अब तो सब ओर सत्य ही दरशता है। मेरा रोआँ–रोआँ सत्य रूप हो गया है। बोलती हूँ तो लगता है कि सत्य की ही दशा मानों निकल कर फैल रही है। वास्तव में ऐसा लगता है कि मेरी Natural Condition (स्वाभाविक–दशा) सत्यता का ही रूप हो गई है। बस सत्यता के ही निर्मल स्वच्छ प्रकाश से मैं तथा सब ओर, सब कुछ जगमगा उठा है।

कुछ ऐसा लगता है कि मेरी Natural Condition (स्वाभाविक दशा) ही सब ओर फैली हुई है। भाई, अब तो ऐसा लगता है कि 'मालिक' ने मुझे सत्य का स्वरूप दिखला दिया, उसकी पहिचान करवा दी है। भाई मेरे 'श्री बाबूजी' यह सत्य है क्या, यह 'आप' जानें, मुझे तो जो अनुभव हुआ, लिख दिया।

फूलो जिज्जी का पता लिखकर भेजा है। बड़े चाचा आये थे। यहाँ बड़ी धूमधाम रही। मिलने वालों का ताँता और Dinner (डिनर) तथा Party (पार्टी) की अधिकता थी। एक दिन रात के 9 से 12 बजे तक सत्संग भी हुआ। बाद में उन्होंने कहा कि उनकी आत्मा केवल इसी पूजा को करने की गवाही देती है, और यही उनका इरादा भी था तथा 'आपको' पत्र खुद, भी लिखने को कहा था। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहतीं हैं तथा फूलो, केसर, बिट्टो ने 'आपको' प्रणाम लिखा है। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

सेविका–कस्तूरी

पत्र–संख्या–330

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी', लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 24.7.53

आशा है मेरा पत्र पहुँचा होगा। पूज्य मास्टर साहब के पत्र में लिखा था कि 'आपकी' तबियत मथुरा से लौटने पर कुछ ख़राब हो गई, सो कृपया लिखियेगा कि तबियत कैसी है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक–दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो यह दशा है कि ऐसा लगता है कि सारा अन्तर धूमिल या धुंधला पड़ गया है। उसमें कोई चीज़ साफ़ नहीं दिखाई पड़ती है, सब चीज़ धुंधली पड़ गई है। ऐसा लगता है कि आईना ही धुंधला पड़ गया। यहाँ तक है कि मैंने जो 'आपको' लिखा है कि "सत्यता मेरी दशा हो गई है" सो भाई वह प्रकाश भी धुंधला है और जगमगाहट भी धुंधली है। या यों कह लीजिये कि सत्य का रूप ही धुंधला है। ऐसा लगता है कि उसी धुंधलाहट में अब मैं घुस रही हूँ, पैठ रही हूँ। कुछ यह भी हो गया है कि धुंधलाहट का असर कुछ बाहर भी मालूम पड़ता है। आँखों पर विशेषकर है, क्योंकि मुझे आँखों से बाहर की चीज़ें तक, सब धुंधली सी ही दिखाई पड़ती हैं।

मेरे 'श्री बाबूजी' मैं देखती हूँ कि जैसे एक धुंधले, अधाधुन्दी मैदान में धंस रही हूँ, जहाँ पर कुछ दिखाई नहीं पड़ता, सूझता ही नहीं। परन्तु मैं तो न जाने किसके आकर्षण से Unmindful (चेतनाहीन) की तरह धंसती ही चली जा रही हूँ। न जाने कौन

सी शक्ति मुझे बरबस अपनी ओर खींच रही है। मैं रुक नहीं सकती, किसी की तरफ़ देखने की मुझे फुर्सत ही कहाँ है। फिर देखूं क्या, सिवाय धुंधलाहट के कुछ है ही नहीं। आँखें बन्द हैं, परन्तु वह जादूभरी शक्ति मुझे खींचे लिये जा रही है। कहाँ? बस यही कह सकती हूँ और यही महसूस होता है कि "अनन्त की ओर," खींच कर, पहुँचाकर ही मानेगी। किसी ताकत की मजाल नहीं जो मुझे एक क्षण को भी रोक सके।

भाई, जहाँ तक मेरा अनुभव पहुँचता है, तहाँ तक लिखती हूँ कि उस शक्ति में, शक्ति कोई नहीं मालूम पड़ती है, आकर्षण कह लीजिए Natural (स्वाभाविक) और वह भी इतनी सूक्ष्म कि शक्ति की वहाँ गुज़र ही कहाँ है। अब तो जाना ही है, और भाई उस अनन्त का द्वार आज मेरे लिये खुल गया है और लगता है कि मेरा उसमें प्रवेश हो गया है।

मेरे 'श्री बाबूजी' जहाँ तक मेरा अनुभव पहुँचता है कि वह आकर्षण क्या है? शायद कुछ नहीं, जैसे जम्बक और सुई की तरह मामला दिखाई पड़ता है। भाई, और भी है, मेरे 'मालिक' की कृपा से जहाँ तक एहसास पहुँचता है, अनन्त भी Inactive (अकर्मण्य) नहीं, इसमें जान है, परन्तु अभी मेरे 'मालिक' के साम्राज्य की सीमा की असल किरणों का मुझे यहाँ कहीं पता ही नहीं दिखलाई पड़ता है। इसके माने है कि अभी मुझे दूर, कोसों दूर चलना है। परन्तु 'उसकी' कृपा सदैव सिर पर है, इसीलिये कुछ दूर नहीं।

मेरे 'श्री बाबूजी' मेरा तो अब यह हाल हो गया है कि जैसे बिना जम्बक के सुई भागती नहीं, उसी प्रकार बिना 'उसकी' महर के मैं बेजान रहती हूँ। सच पूछिये, तो मेरा यही हाल है कि वाह्य-इन्द्रियों में भी धुन्ध छा गई है, हाथ-पैर बेकाम हो चुके हैं। आँखों की रोशनी समाप्त हो चुकी है सो उन्होंने देखने से जवाब दे दिया है। अब तो बस आठों याम यही रटना है जिह्वा पर यही गीत है, रोम-रोम की यही ध्वनि है कि:-

"प्रभु बिना भक्ति तारो, तब तारिबो तिहारो है"

मेरे 'श्री बाबूजी' 'मालिक' की ही कृपा से कुछ ऐसा दिखाई पड़ता है, महसूस होता है कि अनन्त के पीछे या परे भी किसी का आकर्षण मुझे अपनी ओर खींच रहा है। कोई मुझे मार्ग दिखला रहा है। यह सब मुझे 'उसी' की ही, अपने 'मालिक' के ही नेत्रों की ज्योति से दिखाई पड़ता है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं, तथा केसर, बिट्टो व फूलो जिज्जी ने 'आपको' प्रणाम लिखा है। अपनी तबियत का हाल दीजियेगा। इतिः

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

सेविका-कस्तूरी

पत्र-संख्या-331

परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर

सादर प्रणाम। 25.7.53

आशा है 'आपकी' तबियत ठीक होगी। मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। शुक्लाजी आये थे, मुझे लगता है कि उनमें लय-अवस्था की शुरूआत हो चुकी है। वैसे 'आप' जानते ही हैं। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक-दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि वाह्य इन्द्रियाँ तथा अन्तर की इन्द्रियाँ सब बेकार हो गई हैं। वृत्तियों ने काम करना बन्द दिया है। वृत्तियों में, इन्द्रियों में लगता है कि मानों खुद कोई action (क्रिया) कोई सुरक्षा ही नहीं रह गई है। ऐसा लगता है कि जैसे सारी इन्द्रियाँ, वृत्तियाँ लुप्त होकर न जाने कहाँ धीरे-धीरे अब विलीन हो गईं। बस केवल ध्यान से देखने पर सम्भव है, उनकी धुंधली छाया मात्र ही हो तो हो, और मानों स्थिरता वाली दशा ने सब पर साम्राज्य कर ही लिया हो। मेरे 'श्री बाबूजी' जैसा पहले अक्सर 'आपको' मैं लिखा करती थी कि "लगता है कि हृदय और ख़ाली हो गया", परन्तु अब कुछ नहीं होता। अब तो न ख़ाली होता है, न भरता है, एक अजीब स्थिति स्थिरता सी में रहता है। एक बात कुछ यह न जाने क्या हो गई है कि बाहर के लोगों का कोई भी, किसी का चेहरा मुझे साफ़ दिखाई नहीं पड़ता। केवल एक धुधंली सी छाया मात्र के अतिरिक्त कुछ महसूस नहीं होता। परन्तु लिखती-पढ़ती सब हूँ, काम में कोई हर्ज़ नहीं पड़ता। दिल में दर्द क्या, परन्तु कुछ ऐसा लगता है कि एक काँटे के सदृशय कुछ पैठ चुका है, जो समय-समय पर रह-रह कर उकस पड़ता है। अब अन्तर में न जाने कैसी मसोस सी होती रहती है। आजकल तो 'श्री बाबूजी' न जाने तबियत क्यों रोने को बहुत रहती है, परन्तु रो तो नहीं पाती हूँ, इसलिये मन में मथन सी होती रहती है। ऐसा लगता है 'आपने', मेरे 'मालिक' ने मेरी चाल में फिर गति भर दी है, यानी चाल में जो थकान सी लगती थी, वह दूर हो गई और चाल में फिर गति आ गई।

Point 'U' (पाइंट-यू) की सैर भी 4-5 दिन से शुरू हो गई लगती है। अब तो स्थिरता मेरा रूप क्या, बल्कि वह ऐसा लगता है कि मुझमें समाती या हज़म होती सी जा रही है। मैं तो अब इन सब से परे अपने को किसी और ही दुनियाँ में महसूस करती हूँ। मैं तो बराबर 'मालिक' के पास जाती जा रही हूँ। कुछ यह हो गया है कि जैसा पहले मैं लिखती थी कि "अन्तर रोया करता है" परन्तु अब यह दशा है कि रोता नहीं, बल्कि पसीजा करता है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। फूलो जिज्जी, केसर, बिट्टो ने प्रणाम लिखा है। केसर के पत्र से मालूम हुआ कि 'मालिक' की कृपा से फूलो जिज्जी का मन पूजा में अब खूब लगता है। मैं शायद छोटे भइया के साथ शनिवार को कानपुर चली आऊंगी, तब केसर, बिट्टो, छोटे भइया के साथ लौट आयेगी। इतिः

केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता

सेविका–कस्तूरी

पत्र–संख्या–332

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' — लखीमपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। — 3.8.53

'आपके' दो पोस्ट कार्ड मास्टर साहब जी ने सुनाये थे। 'आपके' सिर का दर्द कम हो गया, सुनकर सन्तोष हुआ। मेरे सिर में भी इधर कई दिनों तक काफी दर्द रहा, परन्तु ईश्वर की कृपा से सब ठीक हो गया, बिल्कुल ठीक है, फ़िक्र की ज़रा भी बात नहीं है। 'आपको' परिश्रम अधिक पड़ जाता है। अब सुना है नारायण दद्दा का Transfer (तबादला) शाहजहाँपुर ही हो गया है, शायद 'आपको' कुछ आराम मिले।

मैं अभी तक कानपुर न जा सकी, शनिश्चर को सवेरे चार बजे मैंने 'आपको' लिखा था जाने के लिये, परन्तु ताऊ जी ने ता. 29 को आने को लिखा था और आज ता. 3 तक नहीं आये। अब जब वे आयेंगे, तब जाऊंगी। अभी कुछ ठीक नहीं है मेरे जाने का। 'मालिक' की कृपा से बड़े भइया को 3 रोज़ Train (ट्रेन) पर 215 रुपये तनख़्वाह के अतिरिक्त और मिल रहा है, इसलिये हम लोग बसन्त पंचमी के अलावा एक बार और वहाँ (शाहजहाँपुर) आने को ताऊजी से कहेंगे।

मेरे 'बाबूजी' इधर दशा भी कोई विशेष नहीं चल रही है। बेकार के ख़्याल भी बहुत आते रहते हैं। ऐसा लगता है कि मानों याद कोई विशेष बात ही नहीं रह गई है, परन्तु तबियत इसके विपरीत ही है। कोशिश करती हूँ और यह 'आपका' वाक्य सामने आ जाता है कि "बिटिया हमारे यहाँ बुरी हालत कोई नहीं होती, क्योंकि बुरी हालत अच्छी हालत खोलने की कुंजी होती है।" इसलिए 'उसका' धन्यवाद ही देती रहती हूँ और आँखें भी ललचाई सी, बेबस सी 'मालिक' की कृपा को ताकती रहती हैं। दशा भी बस जो थोड़ी सी महसूस होती हैं, लिख रही हूँ।

अब न जाने क्यों अपनी सर्वव्यापकता का भास होता है। जिस प्रकार अपने 'मालिक' को हर समय, हर जगह यदि महसूस करूँ तो हर समय पाती हूँ, उसी प्रकार 'मालिक' ने मुझे अब कुछ ऐसी ही दशा प्रदान की है। यही नहीं, हर मानव में मैं मौजूद हूँ, परन्तु यह ज़रूर है कि 'मालिक' को होश मैंने इस दशा का 'उसके' पास रख दिया है, जब चाहे दे दे। कभी-कभी न जाने कैसे या तो ऐसी सर्वव्यापकता वाले प्रसंग आ जायें तो यह दशा मेरी बिल्कुल साफ़ दरशने लगती है। उन ख्यालों से, जो मैंने ऊपर लिखे हैं, मुझे तकलीफ़ कुछ नहीं होती है, क्योंकि वह भी एक दशा ही होगी। 'आपको' लिखते-लिखते वह बात कम हो रही है।

ज़रा सा सिर में अभी पत्र लिखने आदि से दर्द हो जाता है, परन्तु जहाँ उठी कि ठीक हुआ कोई तकलीफ़दे नहीं है। अम्मा को इधर कमज़ोरी अधिक बढ़ गई थी, परन्तु अब कल से लाभ होने लगा है। पेट के कारण उन्हें भूख वगैरह भी बिल्कुल नहीं लगती थी, 'मालिक' की कृपा से धीरे-धीरे सब ठीक हो जायेगा। कोई चिन्ता की बात नहीं है। अम्मा कहती हैं कि इधर बहुत दिन 'आपका' पत्र न आने के कारण चिन्ता लगी रहती है, सो 'अपनी' केवल राजी ख़ुशी की दो लाइनें ही लिखवाकर, ज़रूर डलवा दिया करिये। इतिः

सदैव केवल आप की ही स्नेहसिक्ता
सेविका-कस्तूरी

पत्र-संख्या-333

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी' लखीमपुर
14.8.53

सादर प्रणाम।

कृपा-पत्र 'आपका' बहुत समय से कोई नहीं आया, इसलिये 'आपकी' तबियत का कोई हाल न मिल सका और 'आपको' पत्र की लाइनों से जो स्फूर्ति मिलती थी, वह भी प्राप्त न हो सकी। कृपया मुझ पर 'अपनी' कृपा-दृष्टि डाल लीजियेगा, क्योंकि मेरी दशा न जाने क्यों शुद्ध नहीं हो पाती। यहाँ दाँत के डाक्टर को दिखलाया था। उसने 10 इन्जेक्शन लिवर एक्सट्रैक्ट + विटामिन B के तथा छः इन्जेक्शन रेडाक्स 4 + कैलशियम के लगाते हुए और ज़रूरत होगी तो और लगाकर मसूढ़े वगैरह काटने व साफ करने को कहा है। वैद्य को भी दिखाया था, उसने कम से कम दो महीने दाँत का नहीं, पेट तथा कमज़ोरी के इलाज को कहा है। 10-12 बीमारी बताई हैं, जो मेरी Condition (हालत) से मिलती हैं। दाँत वाले ने कम से कम दाँत के एक महीना बताया है। देखिये, जो होगा, देखा जायेगा। कोई बिल्कुल भी फ़िक्र की बात नहीं

है। मेरी बस दशा में जो कमी हो, उसे ही देख लीजियेगा। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ यह दशा है कि 'मालिक' के प्रति जो मुझमें अटल विश्वास की दृढ़ता थी, कि 'मालिक' की शक्ति तथा 'उसकी' कृपा से होकर रहेगा, परन्तु अब तो यह बात भी धुंधली सी हो गई है। न तो तेज़ी, न उतनी साफ़ ही आ पाती है। कोशिश भी बेकार जाती है। यही क्या, मुझमें तो अब श्रद्धा, विश्वास तथा प्रेम वग़ैरह कुछ भी, वैसा नहीं है। ऐसा लगता है कि सब की धुंधली सी छाया-मात्र हो गई है। पूजा में मन भी अब धुंधला सा ही लगता है। सब कुछ बहुत धुंधला ही हो गया है। यहाँ तक कि चाहे जितनी कोशिश करूँ, 'मालिक' की भी शक्ल केवल बहुत ही धुंधली ही मुझे दीखती है। क्या करूँ, मैं अब जल्दी नहीं चल रही हूँ। अब 'आप' ही संभालिये। फूलो जिज्जी 'आपको' प्रणाम कहती हैं। केसर, बिट्टो 4-5 दिन हुए लखीमपुर गईं। इतिः

सदैव केवल आप की ही स्नेहसिक्ता
सेविका-कस्तूरी

पत्र संख्या-334

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपुर
शुभाशीर्वाद। 7.8.53

तुम्हारे सब पत्र मिल गये। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। हालत तो तुम्हारी ईश्वर की कृपा से अच्छी है ही। तुम 'U' (यू) स्थान पर हो और वह मुझे इतना अच्छा मालूम देता है कि नहीं मालूम क्यों मुझे इससे ऊपर स्थान पर ले जाने को तबियत नहीं चाहती। मेरी निगाह जब तुम्हारे 'U' (यू) स्थान पर जाती है, तो मुझे बड़ी Peace (शान्ति) महसूस होती है और कैफ़ियत बड़ी उम्दा हो जाती है।

शुभचिंतक
रामचन्द्र

पत्र संख्या-335

परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी को, कानपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 19.8.53

आगे मेरा एक पत्र पहुँचा होगा। आशा है 'आप' अच्छी तरह से होंगे। कोई समाचार न मिलने से चिन्ता है। कहीं मेरी साधना में कोई कमी तो नहीं आ गई है, क्योंकि 'आपने'

तो कृपा करके आठ–नौ दिन में ही एक–एक Point (पाइंट) पार करने को कहा था, परन्तु मुझे बहुत देर हो जाती है। कोशिश ज़रूर करती हूँ और करूँगी। परन्तु यह सब होते हुए भी आसरा यही है कि 'मालिक' परम कृपालु है। यदि कोई कमी होगी तो स्वयं ही सुधार लेगा। यही दृढ़ विश्वास रहता है, और क्योंकि 'माँ' से डर नहीं रह गया। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

दशा शान्ति कहूँ तो ठीक होगा, अजीब सी है। परसों से दशा में परिवर्तन लगता है। ऐसा लगता है कि अब दशा कुछ बेरंगीनी सी ही बदलती जाती है। रंगीनी का आवरण भी साफ़ होता सा लगता है। कुछ उजाड़ सी दशा रहती है परन्तु मन को अब कुछ बुरी नहीं लगती है, बल्कि ऐसी ही अच्छी लगती जाती है। मेरे 'बाबूजी' कुछ ऐसा लगता है कि मन पिघल कर छोटा सा हो गया है और ऐसा लगता है कि मुझसे दूर हो गया है और धुंधला पड़ गया है। न शुद्ध, न स्वच्छ है, बस धुंधला और सूक्ष्म पड़ गया है। और हल्का इतना कि कभी–कभी होने और न होने में सन्देह हो जाता है। अब न जाने क्यों ऐसा लगता है कि मेरे हृदय वग़ैरह भी कुछ नहीं रह गया है। भाई, ऐसा लगता है कि मानों इन्द्रियों की छाया तक मिट चुकी है, क्योंकि ध्यान देने पर भी मैं इतना तक नहीं पाती हूँ कि इनका काम Automatic (अपने–आप) ही हो रहा है। ऐसा लगता है कि Senses Loose (इन्द्रियाँ ढ़ीली) हो गये हैं। मेरे 'बाबूजी' 'आप' तो मेरे हैं ही, अब मैं क्या करूँ, मैं तो कुछ अधिक कर नहीं पाती हूँ।

फूलो जिज्जी प्रणाम कहती हैं और मोती के लिये पूछती हैं। पत्र अवश्य कृपा कर इस पते से दीजियेगा। आज 'आपका' कृपा पत्र मिला। इतिः–

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका–कस्तूरी

पत्र संख्या–336

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 28.8.53

आगे मेरा एक पत्र 'आपको' मिला होगा। बहुत दिनों से 'आपका' कृपा–पत्र न आने के कारण परेशानी अवश्य हो जाती है। मुझे भी पत्र लिखने के लिये कम से कम ही समय मिल पाता है, इसलिये मेरे पत्र में भी देरी हो जाती है। न जाने क्यों मुझे 'बिना' 'आपके' कृपा पत्र के धीरज नहीं हो पाता है। जन्माष्टमी में मैं और फूलो जिज्जी यहाँ अवश्य व्रत करूँगी। मेरे ऊपर के मसूढ़े परसों सब कट चुके हैं, अब दवा लगवाने

रोज़ जाती हूँ। नीचे के शायद ता. 1 या 2 को काटेंगे, ऊपर के मसूढ़े ठीक हो जाने पर। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो मेरी ऐसी दशा है कि वह याद आती है कि जैसा एक बार मीरा जी ने किसी से कहा था कि केवल एक श्रीकृष्ण के कोई दूसरा भी मनुष्य है, यह मैं नहीं जानती, बस यही दशा है। खुद मैं तक नहीं, सिवाय 'उसके'। मुझे तो अब जैसे पहले लिखा था कि अन्तर में ही धंसी रहती हूँ, सो अब कुछ नहीं, अन्तर तक मुझे नहीं दीखता। अब तो ऐसा लगता है कि ऐसी दशा हो गई है कि सोना–मिट्टी मेरे लिये सब बराबर है। ता. 25 से दशा कुछ बदलती मालूम पड़ती है। कुछ ऐसा लगता है कि बड़ी मासूम हालत है। अब तो शून्यता वगैरह कतई खत्म हो गई लगती है और एक अजीब सी स्थिरता तथा दृढ़ता सी हालत में होती जा रही है, और वह भी बिना नींव की क्योंकि जब यही नहीं मालूम कि किस चीज़ की दृढ़ता और स्थिरता है, किन्तु हालत में स्थिरता तथा दृढ़ता सी एक अजीब प्रकार की है। कृपया मेरी दशा अवश्य देख, सुधार लीजियेगा, क्योंकि दशा में उतनी शुद्धता नहीं मालूम पड़ती है। पत्र अवश्य दीजियेगा। शायद पूज्य मास्टर साहब जी जन्माष्टमी पर वहाँ होंगे। उनसे तथा शुक्ला जी से मेरा प्रणाम कहियेगा। मेरा कुछ यह हो गया है कि चाहे कोई मसूढ़े काटे या कुछ, न डर लगता है, न कुछ परवाह, बेपरवाही सी ही रहती है। फूलो जिज्जी 'आपको' तथा मास्टर साहब जी से प्रणाम कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका–कस्तूरी

पत्र संख्या–337

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपर
31.8.53

खुश रहो।

मैंने एक पत्र ता. 17.8.53 को कानपुर के पते से भेजा था, मालूम होता है कि तुमको नहीं मिला। तुम्हारे खत सब मिल गये। आज जन्माष्टमी है। मैंने तुम्हें लिखा था कि मेरा जी तुम्हें 'U'(यू) स्थान से अभी ऊपर ले जाने को नहीं चाहता है, और अब भी वही बात है और यह इतना अच्छा स्थान है कि मैं देख–देख कर खुश हो लेता हूँ।

आज जो पोस्टकार्ड तुम्हारा मिला है, उससे यह मालूम होता है कि अभी तुम्हें हटाना भी नहीं चाहिये, जब तक कि कुल बातें उस स्थान की तुम पर न खुल जावें और खुलना ईश्वर की कृपा से शुरू भी हो गई हैं और उसी की Sitting (सिटिंग) मैंने तुमको दो–एक दी हैं और दूंगा भी।

तुमने लिखा है कि अन्तर तक नहीं दीखता। इसके मानी यह हैं कि अंतर बाहर एक होने की शुरूआत हो चुकी है, गो अभी बहुत कुछ बाकी है। भगवान की तारीफ़ तुकाराम ने खूब की है:-

"गुड़ से मीठे हैं भगवान, बाहर-भीतर एक समान।"

शुभचिंतक

रामचन्द्र

पत्र संख्या-338

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 6.9.53

कृपा-पत्र 'आपका' मिला-पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। 'आपकी' तबियत केसर के पत्र से मालूम हुआ कि ख़राब है, परन्तु 'आपने' मुझे लिखा नहीं; कृपया अपनी तबियत का हाल शीघ्र दीजियेगा। मेरे ऊपर के Gums (मसूड़े) तो ता. 26 को ही कट गये थे, परन्तु बहुत अधिक काटे जाने के कारण अच्छा होने में समय लग रहा है। अब परसों से रोज़ 4 मसूढ़े नीचे के बिना dead (डेड) किये करते हैं, जिससे जल्दी अच्छे हों, 'परन्तु' 'आप' विश्वास रखिये, ज़रा भी चूं तक करने की तकलीफ़ मुझे 'मालिक' की माधुरी मूर्ति के कारण महसूस ही नहीं होती। अब मुझे मालूम हुआ मेरे 'मालिक' कि प्रह्लाद जी किस विश्वास व कैसे प्रेम के कारण आग में बैठ गये थे तथा पर्वत से गिराये जाने पर भी चूं तक न की थी। वे शरीर के ऊपर उठ चुके थे। मेरे 'श्री बाबूजी' न जाने क्यों दाँत का डाक्टर कोई शुद्ध चरित्र का आदमी मुझे नहीं दीखता है। परन्तु जिसकी आँखों में, जिसके समस्त शरीर के रोम में 'श्री बाबूजी' समाये हुए हैं, जो एक क्षण को भी किसी दूसरे की कोशिश करने पर भी अनुभव नहीं कर पाती, जिसे केवल मर्द या जो कुछ 'श्री बाबूजी' ही दीखते हैं और सांसारिक परछाईं तक मिट चुकी है, उसे किसी से क्या मतलब और उसका क्या बिगाड़ सकता है। अब 'आप' ही जाने, यदि 'आपको' इस विषय में मुझे कुछ उपाय बताना हो तो बिना डाक्टर का हवाला दिये केवल उपाय लिख दीजियेगा। आख़िरी सितम्बर तक मसूढ़े अच्छे हो जायें। अब 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है सो लिख रही हूँ। कृपया क्षमा करियेगा कि Time (समय) की कमी तथा कुछ शायद थोड़ी सी ही तकलीफ़ के कारण हालत को जान कर भी डायरी में लिखने में देरी हो जाती है।

अब तो कुछ ऐसा हो गया है कि भीतर-बाहर सब समान हो गया है, नहीं-नहीं यों कहिये कि न मेरा भीतर है, न बाहर, कुछ महसूस ही नहीं होता। बस एक सफ़ा मैदान

पड़ा है, ऐसा कि जिसमें न कोई लाइन है न रेखा तक है। तबियत बड़ी नम्र सी रहती है। तबियत ही क्या, बल्कि नम्रता अपना रूप ही है ऐसा ही महसूस करती हूँ, नहीं, नम्रता स्वयं मुझसे ही उत्पन्न हो रही है। भाई न जाने यह क्या हो गया है कि किसी भी बात का तबियत, न आगा सोचती है, न पीछा। आगा-पीछा कुछ आता ही नहीं, बस दशा में दृढ़ता, निश्चलता, स्थिरता अजीब प्रकार की है, ऐसी कि जिसका Weight (वज़न) मुझ पर नहीं रहता। तबियत में बस अडिगता है, बिल्कुल बचपने की मासूम, निर्दोष कैफ़ियत घर कर चुकी है। मेरे 'मालिक' भूल की अवस्था निराले ढंग की चल रही है, ऐसी कि जैसे एक बावला अपनी सी दुनिया में पहुँच कर सब कुछ भूल जाता है। वह यह भी भूल गया है कि वह बावला है, बस यही मेरी अवस्था है। कुछ ऐसी दशा है, इतनी दृढ़ता कि जैसा यदि 'मालिक' के नाम पर कोई छत से कूद जाने को कहे तो बिना आगा-पीछा तबियत में आये ही वैसा हो जायेगा और कुछ यह है कि उस गिराने वाले के प्रति मन में कोई बात या कोई दोष नहीं आ सकता, बल्कि वह रहेगा अपना ही, यह उदाहरण स्वरूप दे दिया है। अब कुछ यह हो गया है कि दशा की दृढ़ता या अडिगता या जैसी कुछ भी मेरी अवस्था है, उसके Weight (वज़न) से भी इतनी निर्दोष हूँ कि कुछ पता ही नहीं है। और ऐसा लगता है कि दिल में ठौर तो कहीं है ही नहीं। न ठौर अन्तर में है न बाहर, क्योंकि अब तो केवल एक साफ़ मैदान के अन्तर-बाहर की भी गुंजाइश नहीं रह गई है और यह याद नहीं रहता है कि मैं भूली सी रहती हूँ, बस तबियत सादा सी रहती है। फिर भी न जाने क्या हो गया है कि मैं तो यही कहूँगी कि मेरा हृदय पत्थर हो गया है। नहीं, बल्कि पत्थर भी नित्य पानी भरने की रस्सी की घिसट लगने के कारण उसमें लाइन हो जाती है, परन्तु इस पत्थर के हृदय पर नहीं। अब तो मेरे 'श्री बाबूजी' यह हालत है कि खुद अपने मन का भी Weight (वज़न) मुझ पर नहीं रह गया है। अब तो बन्दा बेफ़िक्र फिरता है, परन्तु टीगन साथ है। अपनी तबियत का हाल दीजियेगा। लखीमपुर से केसर के पत्र द्वारा मालूम हुआ कि अम्मा भी कमज़ोर क़ाफी हैं। फूलो जिज्जी व जीजाजी 'आपको' प्रणाम कहते हैं। इतिः-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता

सेविका-कस्तूरी

पत्र संख्या–339

प्रिय बेटी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 16.9.53

तुम्हारी चिट्ठी मिली। मेरी तबियत अब ठीक है। तुम्हारी हालत ईश्वर की कृपा से बहुत अच्छी है, मगर 'U'(यू) स्थान से ऊपर ले जाने को अभी तक मेरी तबियत नहीं चाहती है। इसमें भी 'मालिक' की मौज मालूम होती है और यह स्थान मुझे इतना अच्छा मालूम होता है कि उसे देख–देख कर जी खुश होता है। अभी यह खुलेगा और बड़ी शान्ति और साम्य–अवस्था तथा सादगी महसूस होगी। खैर, तुम मुझे लिखना।

शुभचिंतक

रामचन्द्र

पत्र संख्या–340

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय 'श्री बाबूजी', कानपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 17.9.53

कृपा–पत्र 'आपका' बहुत दिनों से कोई नहीं मिला–इसलिये तबियत चिन्तातुर है, आशा है तबियत ठीक होगी। केसर के पत्र से मालूम हुआ कि 'मालिक' ने किसी पागल पर फिर मेहरबानी की है, कृपया लिखियेगा कि वह बड़भागी कौन था, कहाँ से आया था। परन्तु परिश्रम के कारण 'आप' कमज़ोर हो गये, ईश्वर करे 'आप' जल्दी से जल्दी तन्दुरुस्त हों। मेरे नीचे के Gums (मसूड़े) भी पूरे कट चुके हैं, बस अब ऊपर, नीचे के Gums Cure (मसूड़े) ठीक होने भर की देर है। डाक्टर का अन्दाज़ है कि 10 दिन में Cure हो जायेंगे और बीमारी के लिये होमियोपैथिक इलाज है। लाभ है। मेरे 'श्री बाबूजी' कृपया 'आप' दशहरे की छुट्टियों में लखीमपुर अवश्य आवें। मुझे 'आपको' देखने को, 'आपसे' मिलने को बहुत तबियत चलती है। कभी–कभी मेरा मन बहुत उचाट हो जाता है, परन्तु बस से बाहर 'कोई' लगाम लगा देता है जिससे बाहर नहीं हो पाता। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो भाई, ऐसा लगता है कि जैसे ढाल ही ढाल हो गई है कि जैसे उस पर तलवार तक लग कर टूट जाती है, परन्तु ढाल को कोई नुक़सान नहीं पहुँचता। ऐसे ही कुछ साफ़ सा, बेअसर सा मेरा हृदय हो गया है, परन्तु इस ख़्याल से भी सोई हुई रहती हूँ कि तबियत बेअसर या कैसी है। मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ ऐसा हाल है कि मेरी समझ में नहीं आता है कि लोग त्यागी, वैरागी कैसे और कब हो जाते हैं। मुझे तो न

त्याग की पहिचान है, न वैराग्य की जानकारी है। कुछ ऐसा हाल है कि न भक्ति की समझ है, न प्रेम की पहिचान है। मेरा हृदय तो इतना चिकना हो गया है कि उस पर यह कोई भी चीज़ अब मेरे हृदय में असर नहीं पहुँचाने पाती है। मेरी समझ में तो अब न संत, न महात्मा, न फकीर, सब कुछ समझ के बाहर, उससे परे हो चुका है।

मेरे 'मालिक' मेरा तो केवल यह हाल है कि हृदय को मैं अब केवल पत्थर ही कह सकती हूँ और ऐसा कि जो न पसीजता है और न जिस पर कोई लकीर तक ही अंकित हो सकती है। भाई, मैं देखती हूँ कि मैं अब लकीर का फ़कीर नहीं रही, बल्कि जाने क्या हो गया है। मैं तो कोरी हूँ। न कुछ पूजा करती हूँ, न नाम ही जपती हूँ, प्रभो, जैसे चाहे, पार लगावे या न लगावे। न जाने क्या मेरी दशा अब Innocence (मासूमियत) की नहीं, बल्कि कोरी हो गई है, शायद कोई चाह नहीं उठती। 'आपके' बहुत दिन पत्र न आने से शरीर जो कि 'मालिक' की कृपा के उत्साह से शक्तिमान लगता है, सो वैसा उत्साह नहीं आने पाता। बड़े भइया की Train (ट्रेन) सीतापुर गई थी। लखीमपुर से अम्मा, ताऊ जी वग़ैरह सब लोग देख आये। इलाहाबाद से बड़े चाचा तथा विमला वग़ैरह ने बहुत बुलाया है, देखिये, हो सका तो 4–5 दिन को ही जाऊंगी, परन्तु जब मसूढ़े वगैरह बिल्कुल ठीक हो जायेंगे तब उन्होंने बंगा भाई साहब को भेजने को लिखा है। कुछ यह दशा है कि मानो सतह की सतह सर्वत्र संगमरमर ही संगमरमर बिछा हुआ है। भाई, ऐसी दशा है कि सम्भव है इसी दशा में नरसी भक्त रास में मशाल लिये थे। मशाल जलकर समाप्त हो गई और उनका आधा हाथ तक जल चुका था, परन्तु उन्हें पता न था, बस अब यही मेरी हर समय की दशा रहती है। परन्तु मेरा 'मालिक' अपने इस बच्चे पर फिर भी कोई ऐसा ख़तरा नहीं आने देता। अब न जाने क्या हर प्रकार की तमीज़ ही जाती रही, अब 'आप' ही जाने। कृपया कुछ मुझे दो लाइन दुआ की ही अवश्य लिख दीजियेगा। अब तो न होश में ही हूँ, न बेहोश ही हूँ, जैसी हूँ 'मालिक' के सामने हूँ।

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता

सेविका–कस्तूरी

पत्र संख्या–341

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 18.9.53

कृपा–पत्र 'आपका' शाम को मिल गया–तबियत को बड़ी प्रसन्नता एवं सन्तोष प्राप्त हुआ। बड़े भइया 'आपके' पास आये थे, पढ़कर तबियत प्रसन्न हुई, अब न जाने

क्यों मुझे उनको देखने की जो इच्छा थी, वह मानों पूरी हो गई, अब न रही। मैं एक पत्र सबेरे डाल चुकी हूँ, हालत उसी में सब लिख चुकी हूँ। कुछ ऐसा लगता है कि तबियत बिल्कुल ठण्डी सी पड़ चुकी है। 'आपकी' कमज़ोरी तथा परिश्रम न जाने क्यों मुझे महसूस होता था अक्सर, परन्तु कारण अब मालूम हुआ। 'आपको' सचमुच मुरव्वत में बड़ी तकलीफ़ तथा परिश्रम उठाना पड़ता है। यह तो हमें चाहिये कि ऐसे परिश्रमों में डालकर 'आपको' क़तई तकलीफ़ न दें। मैं तो चाहती हूँ कि 'आपके' शरीर के एक-एक रोएँ तक को पलकों पर रखूं, परन्तु किसी न किसी ओर से लाचारी हो ही जाती है। 'मालिक' की जब मौज हो, तब point 'U' (पॉइंट-यू) से हटावें। मुझे कुछ नहीं, बस क़दम आगे ही रहे। मैंने फूलो जिज्जी से मोती के लिये तभी कह दिया था, उन्होंने कहा है कि न लें।

मैंने ग़ौर किया है, अपने चारों ओर चक्र अवश्य पाती हूँ। अपने 'मालिक' की कृपा और 'उसी' के बल पर ही मैं तो निर्द्वन्द रहती हूँ और चक्र को देखकर बिल्कुल बेफ़िक्र हूँ। स्त्री तो उनकी बड़ी सचरित्रा तथा पूजा वाली हैं। 'आपने' जो दिमाग़ का ठस होना लिखा, सो बात बिल्कुल ठीक है, सिर में दर्द उसके बराबर रहता है। बीमार भी काफ़ी पड़ चुका है, खैर, वह इन पर ग़ौर नहीं करता है, क्योंकि विवेक-शक्ति नष्ट हो चुकी है, परन्तु फिर भी विश्वास रखिये कि अपने 'मालिक' के बन्दे के लिये उसे अशुद्धता के विचार छोड़ने पड़ेंगे।

मुझे तो उस पागल पर बड़ा अफ़सोस आता है, जो 'मालिक' की शक्ति का कितना Misuse (दुरुपयोग) कर रहा था। खैर ईश्वर से मेरी यही हार्दिक प्रार्थना है कि 'आपकी' कमज़ोरी भी वह दूर कर दे शीघ्र। मेरे 'श्री बाबूजी' 'आप' शायद दशहरे पर लखीमपुर आवेंगे ही, क्योंकि यह पागल भी 'आपको' ही मिलना चाहा करता है। हो सका तो ताऊ जी से पूछकर 6-7 दिन को इलाहाबाद भी होती आऊंगी, बहुत बुलाया है। सम्भव है, वहाँ दो-एक सत्संगी भी बढ़ें, वैसे ईश्वर जाने। मेरे Gums (मसूड़े) नीचे के भी सब कट चुके हैं, बिना dead (सुन्न) किये ही, जिससे घाव जल्दी भरें। परन्तु दुःख और पीर मुझे नहीं हुआ। 'मालिक' की मधुर छवि आँखों में थी, इसलिये। अभी बाहों में Injections (इन्जेक्शन) रोज़ एक लग ही रहा है। अब घाव जल्दी भरें, इसलिये दो दिन से कास्टिक लगाया जाता है। तकलीफ़ कुछ नहीं होती, फ़िक्र बिल्कुल न करियेगा। कल एक दाढ़ जो क़रीब-क़रीब बिल्कुल सड़ चुकी है, वह उखड़ जायेगी। डाक्टर 8-10 दिन और लगेंगे बताता है। आधा-आधा इंच मसूढ़े काटने पड़े थे, परन्तु ताज्जुब है कि जैसी पीर होनी चाहिये थी, वैसी न हुई। तबियत

में सादगी का ठिकाना नहीं, परन्तु है सब ऐसी कि जैसे एक स्पन्दनहीन सतह बिछी हुई है। फूलो जिज्जी 'आपको' प्रणाम कहती हैं। पत्र अवश्य दीजियेगा। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

सेविका–कस्तूरी

पत्र संख्या–342

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 25.9.53

कृपा–पत्र 'आपके' मिल गये। पूजा तो अब बहुत कम, बल्कि नहीं के बराबर हो है। मैं तो 'मालिक' की कृपा पर निर्भर हूँ। अब तो चाल बहुत मध्यम या धीमी है। हालत क्या है, जैसे एक बेकार Plot (मैदान) पड़ा है। दशा में चमक–दमक या उत्साह नहीं है। मेरी तबियत ठीक नहीं थी, परन्तु धीरे–धीरे सुधर रही है, सो चिन्ता न कीजियेगा। बस कृपया मेरी आध्यात्मिक दशा अवश्य देख लीजियेगा।

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता

सेविका–कस्तूरी

पत्र संख्या–343

प्रिय बेटी, शाहजहाँपुर

खुश रहो। 28.9.53

पत्र मिले। ता. 24.9.53 की सुबह को 8.30 बजे मैंने तुमको 'V' (वी) स्थान पर डाल दिया है। अब तुम्हारी तबियत ठीक होगी। तुम इलाहाबाद, जहाँ तक हो सके, चली जाना। वहाँ सबको लाभ होगा और जज साहब को भी Sittings (सिटिंग्स) देना। मुझे उनके दिल पर मकड़े के जाले की भाँति कुछ मालूम होता है। इसकी वजह उनके पहले का ग़लत अभ्यास है। वह पार्वती जी की शक्ल का ध्यान करते थे।

अच्छा तो यह है कि तुम थोड़े दिनों बीमारी जाने का Meditation (ध्यान) खुद करो। मैंने तुम्हें एक बार बतलाया भी था। वह यह है कि धुंयें (Smoke) की शक्ल में पीछे से सब बीमारियाँ निकल रही हैं और ब्रह्माण्ड से Energy (शक्ति) आ रही है जो बीमारियों को दूर कर रही है। अम्मा को प्रणाम।

शुभचिंतक

रामचन्द्र

पत्र संख्या-344

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी,   कानपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो।   30.9.53

कृपा-पत्र 'आपका' आज मिला पढ़कर प्रसन्नता हुई। स्थान 'V' (वी) पर डाल देने के लिये 'आपको' बहुत-बहुत धन्यवाद है। अम्मा तो 5-6 दिन हुए आ गई हैं। 'आपने' चक्र को हल्का कर दिया, यह अच्छा ही है, क्योंकि अब इतनी ही आवश्यकता है। 'मालिक' की ही कृपा के बल पर गुलाम निर्द्वन्द, मस्त फिरते हैं, फिर भाई, मैं तो 'अपने' 'मालिक' को पाकर निहाल हो गई, परन्तु अभी पूरी तौर पर नहीं, परन्तु मेरे 'मालिक' मैं तो 'उसकी' हो ही चुकी। अब कुछ कमी या अधिकता वही जाने। बालिका को तो बस 'माँ' चाहिये। इलाहाबाद जाने के लिए मैं विमला को लिख रही हूँ कि भाई साहब मुझे आकर ले जायेंगे तो अवश्य जाऊंगी और 'मालिक' की कृपा से बड़े चाचा के दिल पर जो 'आपने' मकड़ी के जाले की तरह कुछ लिखा है, साफ़ हो जायेगा। 'आप' एटा जायेंगे तो अच्छा है, खैर, हम लोग हो सका तो 'आपसे' मिलेंगे ज़रूर, कहीं मिलें, मन नहीं मानता। मैं तो यह समझ ही रही थी कि 'मालिक' की कृपा से अबकी 'आपके' पत्र में आगे point (पॉइंट) पर जाने की खुशखबरी मिलेगी। क्या 'आपने' अभी सैर के परमाणु नहीं डाले हैं। मेरे मसूढ़े अभी नहीं भरे हैं, किन्तु शायद डाक्टर 5-6 दिन में जाने की इज़ाज़त दे दे, परन्तु अभी आशा कम है। होमियोपैथ का इलाज तो हाल लिखकर भी होता रहेगा। दो महीने खाना छोड़ने को कहा है, 8 दिन हो चुके हैं, परन्तु 'आप' विश्वास रखें कि 'मालिक' की कृपा मुझे चला रही है, शक्ति देती है। यहाँ तक कि कोई यह मानने में अचम्भा करते हैं कि बिना अन्न के 8 दिन हो गये, परन्तु उन्हें 'मालिक' की इस निरन्तर कृपा का क्या पता है, जो मुझे जीवन प्रदान करती रहती है। सूजन पेट की भी कम हो रही है। मज़े में मस्त हूँ। फ़िक्र कतई न करियेगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

अब तो ऐसा लगता है कि सूने से देश में हूँ, हालत में सूनापन है। अब तो न जाने क्यों दशा में पहले की तरह पवित्रतापन का अनुभव नहीं मालूम पड़ता है। दशा में लगता है इससे भी ख़ालीपन हो गया है। न पवित्रता, न अशुद्धता ही है और ऐसा लगता है कि शून्य की दशा भी सूनी हो गई है। कुछ यह है कि दशा तो ऐसी है ही कि "बिना भक्ति तारो, तब तारिबो तिहारो है।" परन्तु मन इसके भाव के स्पर्श तक से सूना हो गया है और सूनापन कह लीजिये, वह तो एक शायद बंजर Plot (प्लॉट) सा होता जा रहा है।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा फूलो जिज्जी व जीजा जी प्रणाम कहते हैं आशा है 'आपकी' तबियत ठीक होगी। इतिः-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका-कस्तूरी

पत्र संख्या-345

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, लखीमपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 4.10.53

पोस्टकार्ड 'आपका' दूसरा भी मिल गया। समाचार मालूम हुए। बीमारी का इलाज होमियोपैथिक हो रहा है और डाक्टर ने कहा है कि चाहे जहाँ रहो, हफ्ते में हाल लिखती रहना, बस दवा होती रहेगी। वैसे 'आप' जैसा लिखेंगे, वैसा ही करूँगी। यहाँ वैसे तो कुछ नहीं, कुछ कारखाने के झगड़े के कारण और कुछ वैसे ही कलह के कारण जी कभी-कभी ऊब उठता है। डायरी भी जब मन चाहता है, लिख नहीं पाती हूँ, फिर हाल भूल जाती हूँ, खैर, यदि 'मालिक' की मर्ज़ी हो, 'आप' जैसा चाहें, वैसा ही मैं करूँगी। 'आपकी' कमज़ोरी वगैरह कैसी है? 'आप' ऐटा जायेंगे या नहीं। वहाँ से बुलावा आया या नहीं। लखीमपुर तो 'आप' शायद नहीं पहुँच पायेंगे।

आध्यात्मिक दशा क्या लिखूं, हालत में शुद्धता नहीं मालूम पड़ती। मालूम पड़ता है कि मानों अभी सैर शुरू नहीं हुई। दशा में कुछ तेज़ी नहीं मालूम पड़ती। शायद इसी कारण शरीर की भी फुर्ती कम है। मेरे 'श्री बाबूजी' 'आपने' जो मेरा हाल हफ्ते भर बाद पूछा है, सो मैं लिखूंगी अवश्य, किन्तु मेरी यह इच्छा है कि 'आप' कृपया परिश्रम अधिक न करें। दौरे कमज़ोरी के पड़ते हैं, ठीक हो जायेंगे। 'आप' इस ओर से बिल्कुल बेफ़िक्र रहें। बस आध्यात्मिक-दशा की ओर अवश्य निगाह रक्खे रहें, जैसी कि 'आप' सदैव ही कृपा करते हैं। मुझे जब तक दशा ठीक नहीं आती चैन नहीं पड़ता है, क्योंकि मेरी तो खुराक यही है कि 'मालिक' की कृपा रूपी अमृत का दुग्ध पीकर ही यह बालिका पल और बढ़ रही है। मेरी याद में तो कमी नहीं हो गई, कृपया 'आप' अवश्य लिखियेगा, क्योंकि मुझे तो अब इसकी भी तमीज़ नहीं रह गई है। हालत को हल्का ही क्या लिखूं, नहीं के बराबर मालूम पड़ती है। चाहे कुछ भी हो, अब मैं यह तो मन की अवस्था अवश्य देखती हूँ कि चाहे कैसी परिस्थिति हो, चाहे कहीं रहूँ, मन की जो शाश्वत, शान्ति, एकाग्रता और आनन्द कह लीजिये, उसमें कोई कमी नहीं आती और 'श्री बाबूजी' उसमें बढ़ती भी महसूस नहीं करती हूँ। हाँ, दृढ़ता ज़रूर दृढ़ होती जाती है। वह तो जैसी है, वैसी ही रहती है। हाँ, दशा तो अवश्य बदलती रहती है।

अम्मा की तबियत वैसे तो ठीक है, परन्तु कहती हैं कि बाईं ओर कूल्हे का दर्द नहीं गया है। कृपया 'अपनी' तबियत का हाल भी अवश्य लिखियेगा। अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल 'आपकी' ही स्नेहसिक्ता,
सेविका–कस्तूरी

पत्र संख्या–346

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 8.10.53

आशा है मेरा एक पत्र मिला होगा। अम्मा परसों लखीमपुर चली जावेंगी। 'मालिक' की कृपा से कमज़ोरी तो मुझे कम ही है। पेट में सूजन तो आज डाक्टर ने बताई है कि लिवर, तिल्ली तथा आँतों में अभी क़रीब वैसी ही है। नमक के पानी का सेंक बताया है। यदि पेटेन्ट दवा डाक्टर दे देते, तो शायद मैं अम्मा के साथ चली जाती, परन्तु अभी वे दवा ठीक नहीं तै कर पाये हैं। दूसरे फूलो जिज्जी इम्तहान तक के लिये मुझे रोक रही हैं कि बच्चों को मैं रख लेती हूँ, तो वे पढ़ लेती हैं, परन्तु अक्सर मेरा मन उचट जाता है। टट्टी भी Test करवाई थी, उन्होंने पुरानी आँव के कारण सारी सूजन वग़ैरह बतलाई है। 22 दिन अन्न छोड़ने पर भी 'मालिक' की कृपा ने विशेष कमज़ोरी नहीं आने दी। परसों से इन्फ्लुऐंजा फिर ज़ोर का हो जाने के कारण तथा पेट में कोई लाभ न होने के कारण सबसे बड़े डाक्टर भल्ला हैं, फूलो जिज्जी ने उसे दिखाया है। उन्होंने कहा है कि पेट की T.B. (टी.बी.) शुरू हो चुकी है और इसका इलाज न होने पर बढ़ती जावेगी। पेट में सूजन बहुत है। 30 दिन तक बराबर रोज़ Injection (इन्जेक्शन) लगाने तथा पीने वग़ैरह की भी दवा दी है। फिर इसके बाद बिजली Health (स्वास्थ्य) बढ़ाने के लिये देंगे। Cure (ठीक) हो जाने व कमज़ोरी वग़ैरह सब ठीक हो जाने की गारन्टी ली है। ढ़ाई–तीन महीने लगकर इलाज करने को कहा है। Health (स्वास्थ्य) ज़रा ठीक होती तो इतने दिन न लगते।

'आपने' एक सप्ताह में पूरा–पूरा हाल लिखने को कहा था, इस लिये लिख दिया। 'आप' ज़रा भी चिन्ता न करें, मैं तो चलती फिरती मस्त हूँ। यहाँ यह ज़रूर है कि डायरी या पत्र लिखने के लिये भी कम समय मिल पाता है, इस कारण दिमाग ज़रूर कुछ भद्दू सा हुआ जाता है। ख़ैर, 'मालिक' की जैसी कृपा होगी, सब ठीक हो जायेगा। मेरी दशा (आत्मिक) तो बड़ी धीमी सी, नरम सी, सरल सी चल रही है। पूजा

मैं कैसे कहूँ कि करती हूँ कि नहीं। ऐसी दशा लगती है कि मानों अन्तर–बाहर समान या एक हो गया है। भाई, दशा क्या है संगमरमर (पत्थर) की चट्टान कह लीजिये। या यों कह लीजिये पुनरावृत्ति है कि 'मालिक' की कृपा से अब ऐसी दशा है कि जैसा एक बार 'आपने' किसी पत्र में संग–(पत्थर) बेनमक का ज़िक्र किया था, उसी दशा के आसार अब अपने में पा रही हूँ, वैसे तो देने वाले 'आप' तो सब जानते ही हैं। एक बात यह मैं ज़रूर देख रही हूँ कि Fame चारों ओर फैलती जा रही है। न जाने क्यों शायद 'मालिक' की ऐसी ही मर्ज़ी है, इसलिए ऐसा है। मुझे अब परवाह इसकी भी नहीं रही, क्योंकि भाई शरीर को पालने वाला जिस प्रकार प्राण है उसी तरह सेविका को उन्नति देने वाला है केवल 'स्वामी'। उसी माँ की कृपा रूपी अमृत दुग्ध का अहिर्निशिपान करके यह बालिका पुष्ट हो रही है। मेरा बुखार आज उतर गया है, चिन्ता की कोई बात नहीं है, बस एक यही लालसा केवल अपने 'मालिक' को प्राप्त करने की, उसे ही देखने की लगी रहती है और कुछ नहीं। क्या बताऊं छुट्टियों भर तो मेरा भी मन वहीं लगा रहेगा, 'आप' हमेशा आते थे। ख़ैर, वैसे मैं तो सदैव 'मालिक' के पास हूँ और 'वह' मेरे पास है। इतिः–

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका–कस्तूरी

पत्र संख्या–347

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर
सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 18.10.53

पोस्टकार्ड 'आपका' परसों मिल गया। सर्वेश को टायफाइड हो गया, पढ़कर सबको चिन्ता है। अबकी से दशहरे में वहाँ तो बहुत लोग आये होंगे। बड़े चाचा के Heart (दिल में) में अब वह बात नहीं देखती जो 'आपने' मकड़ी के जाले के सदृशय लिखी थी। वहाँ पहुँचने में तो लाभ ही लाभ है, और आनन्द ही आनन्द तथा आत्म–सन्तोष। मेरे आँत की T.B. के लिए 8 Injections (इन्जेक्शन) लग चुके हैं। कल से पेट की सूजन में 19–20 का फ़र्क है। कल 36 दिन बाद मैंने दरिया–दाल लिया है। अब 24 घंटे में एक बार दरिया मिलेगा। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ आत्मिक–दशा है सो लिख रही हूँ।

अब तो कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि सारे अवयव (Senses) शान्त अपनी–अपनी जगह पर स्थित हो चुके हैं। उनकी विशेषता ही जाती रही, केवल धुंधली छाया मात्र रह गई है। दशा आजकल बड़ी सौम्य सी, सरल सी चल रही है। दशा आज

कल बहुत हल्की, धूमिल, पर्दा या सतह की तरह हो गई है। मेरे 'श्री बाबूजी' सब तरफ़, सब ओर बस ऐसी ही दशा दिखाई पड़ती है। हर तरफ़, हर जगह सतह की तरह यही, ऐसी ही दशा बहती दिखाई पड़ती है। अब तो ऐसा लगता है कि Point 'V' (पॉइंट–वी) की सैर 'मालिक' की कृपा से शुरू हो गई है। केवल एक धूमिल, धुंधली सतह की तरह के अतिरिक्त मुझे अब सामने आँखों से कोई चीज़ दीखती ही नहीं। दशा का रंग बिल्कुल श्वेत, धवल नहीं है, वरन् स्वच्छ, शुद्ध रंग है। बड़ा Pure (पवित्र व शुद्ध) सा रंग या सतह है। अभी अधिक नहीं लिखा जा रहा है, क्योंकि न दिमाग़ ही इतना काम देता है, न हाथ। ख़ैर, चिन्ता की कोई बात नहीं है। 'मालिक' की कृपा से सब ठीक हो जायेगा। यदि मेरे पत्र डालने में देरी भी हो जाये तो चिन्ता कदापि न करियेगा। मुझे ज़रा यह नुकसान ज़रूर है कि कमज़ोरी की वजह से दशा अनुभव देर में कर पाती हूँ।

अम्मा 'आपको' शुभाशीर्वाद तथा फूलो जिज्जी प्रणाम कहती हैं। इतिः–

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्त

सेविका–कस्तूरी

पत्र संख्या–348

कानपुर

22.10.53

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी,

सादर प्रणाम स्वीकृत हो।

कृपा–कार्ड 'आपका' मिला–पढ़कर प्रसन्नता हुई। ताऊजी के कल के पत्र से यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई कि 'आप' भी अच्छे हैं और सर्वेश की भी तबियत ठीक है। मेरी तबियत के बारे में 'आप' चिन्ता न करियेगा क्योंकि इलाज ठीक–ठीक हो रहा है। यह ज़रूर है कि खाट से उठने की सख्त मनाही होने के कारण इंजेक्शन घर पर ही लगता है। सब ईश्वर की कृपा है। आप विश्वास रखिये, मेरा एक–एक रोयाँ तक 'मालिक' ने खरीद लिया है। ज़िन्दगी उसी के लिये है, मृत्यु भी उसी की ख़ुशी के लिये है, दोनों समान हैं। मिशन की सेविका तो मैं हूँ ही। उसके हर तरह के काम के लिये सदैव तैयार हूँ और रहूँगी। मैं लेटे–लेटे भी अब स्वामी विवेकानन्द की (ज्ञानयोग) नामक पुस्तक पढ़ा करती हूँ। फिर दाँत वाले डाक्टर की बहू से स्वामी जी के लेक्चर्स का संग्रह माँग कर पढ़ूंगी। ज्ञानयोग में अपने मिशन की प्रणाली खूब System (सिस्टम) से मिलती है और भी बहुत कुछ है, बहुत अच्छी पुस्तक है, मैं ख़रीद लूंगी। 'आपकी' यह तो अत्यन्त सेविका पर, अपनी बिटिया पर कृपा है कि ख़त देखकर perfection (पूर्णता) देने को तबियत चल आती है। सो 'आप' विश्वास रखिये कि जो कुछ भी

आध्यात्मिकता में प्राप्त हो सकता है, वह तो 'आप' मुझे दिये बगैर रहेंगे ही नहीं, परन्तु साथ ही मेरी इस बात की भी कोशिश है और मेरी कोशिश क्या, 'मालिक' की ही कृपा है कि कभी कोई यह उंगली न उठा सके कि यह 'श्री रामचन्द्र मिशन' की मेम्बर है। ऐसी ही दृढ़ता हर बात में 'मालिक' मुझे प्रदान करता जाता है और 'मालिक' मैं मर मिटूंगी, परन्तु मुंह से यही निकलेगा कि अभी कुछ नहीं, अभी कुछ नहीं। कमज़ोरी भी धीरे-धीरे कम हो रही है। हाँ, अक्सर उस 'माधुर्य मूर्ति' के दर्शनों को जब तबियत तड़पती है, 'मालिक' तभी स्वप्न में अवश्य दर्शन देता है। 'मालिक' की कृपा से जो कुछ भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि अब दशा (आत्मिक) कहीं से आती नहीं मालूम पड़ती, वरन् स्वयं ही अंतर में से ही स्वतः मालूम पड़ती है। कुछ आना जाना महसूस नहीं होता है। महसूस क्या, सच तो यह है कि वास्तव में तो दशा का आना जाना होता ही नहीं। वास्तव में तो मेरे 'श्री बाबूजी' ऐसा लगता है कि मेरे स्वतः स्वरूप जिसे नहीं या न होना कह लीजिये, वही शुद्धरूप खुलता चला जाता है। अब तो ऐसा लगता है कि सूक्ष्म-शरीर के अवयव और निशान मिटते चले जाते हैं। बहुत ही धीमे हल्के से रह गये हैं। नहीं, नहीं, भाई सूक्ष्म शरीर ही मिटता और धीमा सा पड़ता चला जाता है। अब तो 'श्री बाबूजी' कुछ यह दशा है कि ऐसा लगता है कि भीतर से ख़ुद व ख़ुद प्रेम का सागर सा उमड़ा पड़ता है। परन्तु सागर होने के कारण छलकता नहीं। परन्तु यह अवश्य है कि अन्तर स्थल में प्रेम का सागर हिलोर मार रहा है। उसमें आनन्द की लहरें सी उमड़ रही हैं।

पूज्य 'श्री बाबूजी' Perfection (पूर्णता) की मुझे जरा भी परवाह यों नहीं रही क्योंकि Perfection (पूर्णता) तो मेरा उसी दिन हो गया, जिस दिन Perfection (परफेक्शन) मूर्ति 'आपके' दर्शन किये थे। मेरा ही क्या, यह दावे के साथ मैं कह सकती हूँ कि जिसको 'आप' पर श्रद्धा हो गई, उसे Perfection (परफेक्शन) ही क्या, सब कुछ मिल गया समझिये।

अम्मा आपको शुभाशीर्वाद तथा फूलो जिज्जी प्रणाम कहती हैं। इतिः-

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता

सेविका-कस्तूरी

पत्र संख्या-349

मेरे परम पूज्य तथा श्रद्धेय श्री बाबूजी, कानपुर

सादर प्रणाम स्वीकृत हो। 26.10.53

आशा है मेरा एक पत्र मिला होगा। मुझे लाभ धीरे-धीरे हो रहा है, फ़िक्र न कीजियेगा। अब 'मालिक' की कृपा से जो भी आत्मिक दशा है, सो लिख रही हूँ।

भाई, अब तो कुछ यह दशा है कि अब तो ब्रह्म-दर्शन की दशा कह लीजिये, विशुद्ध रूप में हर समय रहती है और ब्रह्म-दर्शन भी कैसा कि उसमें हर समय मानों उसी रस में घुली सी एक रहते हुए रहती है और क्या, मेरा रूप ही ब्रह्म हो गया है। बड़ी Pure (शुद्ध) दशा है। भाई, मेरी तो दुनियाँ ही और है, जहाँ बस कुछ एक ही महसूस होता है और मैं देखती हूँ कि वास्तव में वह एक भी है कुछ नहीं। न जाने क्या है। शब्द नहीं मिलते, कैसे लिखूं। अब तो भाई कुछ यह दशा है कि कुछ ऐसा है कि यदि नहाने को देर हो जाती है या जैसे डाक्टर ने नहाने को रोज़ नहीं बताया है, परन्तु नहाऊं या न नहाऊं, मैं तो गन्दगी या ऊब कभी अनुभव करती ही नहीं, मैं तो नित्य शुद्ध, साफ़-सुथरी ही रहती हूँ, इसलिये मुझे शारीरिक कर्मों की कोई Importance (महत्व) ही नहीं रह गई है। वास्तव में आनन्द क्या है, मैं तो कहूँगी कि कुछ नहीं। गूंगे के गुड़ कैसी दशा है। वास्तव में मुझे तो ऐसा लगता है कि अब आनन्द कोई चीज़ नहीं है, वह तो केवल आत्मा की कुछ अनुभूति (एहसास) मात्र है, उसके पीछे जो छुपा है, वह बड़ा Pure (शुद्ध) कुछ है, जो कुछ नहीं की झलक मात्र है, कुछ ऐसी दशा आजकल चल रही है। आनन्द की Importance (महत्व) यों नहीं अनुभव होती कि कुछ ऐसी दशा है कि दशा आनन्द के पर्दे को भेद कर अब उस पार का एहसास करने लगी है या यों कहिये कि वास्तव में आनन्द का श्रोत मुझमें सोख चुका है, इतना झीना पड़ चुका है कि उस पार की दशा की झलक मुझमें आने लगी है। मैं तो हर समय ब्रह्म में ही स्थित रहती हूँ, नहीं-नहीं, मेरा रूप ही वही हो गया है। अहं ब्रह्मास्मि की दशा है, किन्तु ऐसी कि जिसमें अहं नहीं रहा है। Pure (शुद्ध) दशा है।

मेरे 'श्री बाबूजी' कुछ यह है कि ऐसा लगता है कि कुछ मेरे अन्दर से बहता सा, छलकता सा मालूम पड़ता है। वह सब केवल Pure (प्योर) ब्रह्म ही ब्रह्म महसूस होता है। कुछ ऐसा लगता है कि मेरा तो कुल अंतर, बाहर तक सब ब्रह्म-ज्योति से ही चमकता है, किन्तु चमक कैसी है कि जो विशुद्धता, Purity (पवित्रता) की झलक है, चमक है, बस वैसी ही है। ऐसा लगता है भाई, कि सूक्ष्म शरीर पिघल- पिघला कर समाप्त हो चुका है। कुछ यह है कि अब जो दशा है, या होती है, वह कुछ नहीं की तह से झलकती

है। मेरे 'पूज्य श्री बाबूजी' कुछ यह अनुभव है कि ब्रह्म भी बिल्कुल ख़ालिस नहीं है, वरन् उसकी तह में कुछ अवश्य है, जो महसूस होता है और उसमें सुहावनेपन की बू कुछ न कुछ है, किन्तु ऐसा है कि कहा नहीं जा सकता है। अब तो कुछ ऐसा लगता है कि ब्रह्म अवस्था का भी यह श्रोत मुझमें सोखता जाता है। भाई, मैं तो सोखता हो रही हूँ। हर दशा, हर चीज़ मुझमें सोखती चली जाती है और क्या लिखूं। 'मालिक' भी रग–रग में, कण–कण में समा चुका है। मुझे अनुभव हो या न हो, यदि दूसरा कोई करना चाहे तो वह यही पायेगा। मुझे कुछ यों अनुभव नहीं होता कि खुद मैं भी अपने अन्दर सोख सी गई हूँ।

सदैव केवल आपकी ही स्नेहसिक्ता
सेविका–कस्तूरी

पत्र संख्या–350

प्रिय बेटी कस्तूरी, शाहजहाँपर
शुभाशीर्वाद। 31.10.53

तुम्हारा पत्र 26 अक्टूबर सन् 53 का अभी मिल गया। तुम्हारा पत्र देखकर तबियत उछल पड़ी, इसलिये कि मेरी ज़िन्दगी में ऐसी हालतें मेरे सामने आ रही हैं। यहाँ तो मिशन के मेम्बर्स का यह हाल है कि उन्हें अपने से ही फ़ुर्सत नहीं। कुछ ऐसे भी हैं कि यह उम्मीद लगाये बैठे हैं कि मैं एकदम से उन्हें सब कुछ कर दूंगा। लाखों जन्म गुज़र गये, अब तक अपने वतन को वापसी नहीं हुई और अब भी इसका ख़याल पैदा नहीं होता। मैं भला क्या कर सकता हूँ, जब कोई चलना ही नहीं चाहता। यह सब ईश्वर के हाथ में है, जब 'वह' चाहेंगे, यह भी हो जावेगा। मैं तो यही चाहता हूं कि मुझ को कुछ थोड़ा बहुत आता है, उतना ही लोग सीखें और इतना सीखने के बाद भी अगर उनकी तड़प बुझ न चुके, जैसा कि होना चाहिये, तो मैं आज़ादी से कहने के लिये तैयार हूँ, कि मुझसे ज़्यादा जानने वाले को तलाश कर लें, इसलिये कि मेरी खुशी इसी में है कि लोग मुझसे बेहतर निकलें। मेरा क्या और मेरी हालत क्या? ठीक तो गुरू महाराज को ही खबर है। इतना ज़रूर मैं जानता हूँ कि Infinite (अनन्त) में Swimming (पैराव) ज़रूर कर रहा हूँ और इसका छोर नहीं, इसलिये मैं आत्मिक उन्नति के बारे में क्या राय क़ायम कर सकता हूँ, जब कि न मालूम कि अभी कितनी Swimming (पैरना) बाक़ी है। एक बात मैं ज़रूर लिखे देता हूँ कि मुमकिन है मेरी थोड़ी बहुत हालत जो कुछ भी है, अगर कहीं कोई किसी समय में इसका समझने वाला मिल गया किसी तरीक़े से और लोग भी इसको मालूम कर सकें और ख़ास कर

मिशन के Member (सदस्य) तो फिर उनको मुमकिन है, तमाम उम्र अफ़सोस से हाथ मलना पड़े।

बिटिया! जाने क्या बात है कि मैं बराबर कहता भी रहता हूँ और लिखता भी रहता हूँ, मगर ज़्यादातर उनके जूं नहीं रेंगती, और मैं तो भाई, इसको अपनी ही कमज़ोरी कहूँगा, और वाक़ई क़सूर भी मेरा है। यह हो सकता है कि मुझमें कुछ कच्चापन हो, जिसकी वजह से मेरे कहने सुनने का और तवज्जह का उन पर असर न पड़ता हो। कुछ लोग ऐसे भी हैं, जिनकी जाति का अभिमान ज्यों का त्यों है, और इसी हैसियत से वह मुझको देखते हैं जिससे ऊंच को, नीच को देखना चाहिये। मैं तो भाई, ऐसे तबके में पैदा हुआ हूँ, जिसको ऊंच कुल वाले को नीच समझना ही चाहिये। उनकी निगाह मेरे जिस्म और जाति पर रहती है; उस हालत पर नहीं रहती, जिससे उनको मदद लेना है। मुझे इसका कुछ खेद नहीं है। मैं तो वह च्यूंटी हूँ, कि लोग मुझे अपने पैर से मलें, वह बर्र मैं नहीं हूँ, कि जिसके पकड़ने से या अपनाने से काट खाऊं और उनको तकलीफ़ पैदा हो। जाति का अभिमान एक बहुत बड़ी रुकावट है और यह पहली चीज़ है, जो दूर होना चाहिए। ईश्वर का हज़ार-हज़ार बार धन्यवाद है कि मैं सबसे ऊंचे कुल में पैदा नहीं हुआ, जो यह कमज़ोरी मुझमें रहती। कबीर साहब ने क्या अच्छा लिखा है:-

नीच-नीच सब तर गये, सन्त चरन लवलीन।
जाति के अभिमान से, बूड़े सकल कुलीन।।

तुम्हारे पत्र के उत्तर देने से पहले मैं संक्षेप में कुछ जीव व ब्रह्म के बारे में लिखना चाहता हूँ। किताबों में नहीं मालूम क्या लिखा हो। मेरी समझ में जो है, वह मैं लिख रहा हूँ। किताबों से जो कोई Tally (मिलान) करना चाहे, कर लेवें।

जीव को अपना जीवपन कब महसूस हुआ, जब उसने अपने बैठने का ठिकाना बना लिया; यह ब्रह्म था और है। उसमें इसलिये जीवपन पैदा हुआ, इसलिये कि उसकी बैठक ऐसी जगह थी, जहाँ कि उसको उसी की बू आ रही थी। इस बात ने और इस एहसास ने उसकी रग़वत और भी ज़्यादा कर दी; इसलिए कि जब एक रंग का एहसास हुआ, दूसरा रंग वह खुद-ब-खुद ढूंढने लगा और उसमें अनेकता पैदा हो गई। फिर क्या था, लालच, मोह, हर चीज़ की ख़्वाहिश उसमें पैदा होने लगी; गोया सोने का कौवा एक लोहे के पिंजरे में बन्द हो गया और इसका मोहताज कि उसकी सैरी के लिये, उसको दाना-पानी की ज़रूरत हुई।

कहाँ तक कहा जावे, यह सब जीवपने की बातें हैं। अगर उसको कोई ऐसा मिल गया कि जिसने उसको यह ख़्याल दिला दिया कि तुम असल हो तो उसके बाहरी पर्दे फिर टूटने लगे। अब हम चूंकि जीव हैं, इसलिये इसी ने अपनी ऊंची हालत की ख़बर दी, यानी ब्रह्म की। असल में यह दोनों एक हैं। अब मैं थोड़ी सी रोशनी बेपढ़ों की भाषा में फेंकता हूँ। जीव में चूंकि हरकत (Movement) मौजूद है, उसको ख़बर हरकत वाले की ही हो सकती है और वह किसकी? ब्रह्म की। 'ब्रह्म' शब्द 'ब्र' और मनन से निकला है, जिसके मानें हरकत और सोचने के हैं। जो Function (क्रियायें) कि जीव के अपने छोटे शरीर में होते हैं, वह Function (फन्कशन) ब्रह्म के अपने बड़े शरीर में होते हैं। बंधन जीव में भी हैं, और ब्रह्म में भी। अन्तर केवल इतना है, कि जीव में बंधन ज़्यादा और ठोसता लिये हुए है और ब्रह्म में सूक्ष्मता लिये हुए। मगर अपने-अपने लिहाज़ से Limitations (सीमायें) दोनों में हैं। वेद में 24 प्रकार के ब्रह्म लिखे हैं, या 26 हों; इसको एक विद्वान सन्यासी ने मुझे बतलाया था और आख़िरी ब्रह्म को भूमा कहते हैं। महात्माओं ने इससे ऊंची हालत को पार-ब्रह्म कहा है, मगर भाई, इस असल की न मालूम कितनी हालतें होती चली गई हैं। जैसी संगत मिलती गई, वैसा ही असर उस पर आता गया।

हमारी उन्नति में जहाँ तक झिलमिलावट और हरकत मौजूद है वहाँ तक हम उसी तरह के ब्रह्म के बंधन में हैं और मैं तो भाई, इन सब हालतों को फंसाव ही कहूँगा। जहाँ हमारा ठिकाना है, वहाँ हवा क्या, रोशनी की भी गुज़र नहीं। एक बुझे हुए दीपक की महफ़िल है, जहाँ न कोई चमत्कार है और न चंचलता, सब Light-Light (प्रकाश) पुकार रहे हैं और मैं भी यही कहता हूँ, क्योंकि रास्ते में यह सब चीज़े आती हैं, मगर ठिकाने पर पहुँच कर यह सब ख़त्म हो जाती हैं। मैं समझता हूँ कि अगर हम Light (प्रकाश) ही को चाहते हैं, तो एक जुगनू, जो अपनी Light (लाइट) दूसरों को भी दिखा देता है और Proof (प्रमाण) देता है कि उसके पास Light (लाइट) मौजूद है, तो उसके महात्मा होने में कोई शक नहीं रहता। किसी ने खूब कहा है-

"हम जहाँ हैं, वहाँ से हमको भी, कुछ हमारी ख़बर नहीं आती।"

अब मैं तुम्हारी हालत के बारे में लिखता हूँ। तुमने लिखा है कि "ब्रह्म भी ख़ालिस नहीं है, उसमें कुछ न कुछ अवश्य है।" इसका उत्तर मैं बहुत कुछ ऊपर दे चुका हूँ। फिर उसमें लिखा है कि "उसमें सुहानेपन की बू मौजूद है।" जहाँ तक सुहानापन है, वहाँ तक असल ब्रह्म नहीं कह सकते, इसलिये कि बहुत कुछ माया का लेस-पोत सूक्ष्म हालत में मौजूद है। मुझे तो ऐसी सूनी महफ़िल में तुम सबको ले जाना है, जहाँ कि सूनापन भी हजारोंगुना भारी है और वाक़ई Perfection (पूर्णता) जो कि

मनुष्य के लिये सम्भव है, वही है। हमारे यहाँ इतनी खूबी ज़रूर है कि Perfection (परफेक्शन) सब चाहते हैं, मगर मेहनत और Devotion (भक्ति) के लिये उनको उनकी सुस्ती इज़ाज़त नहीं देती। मान लो कि ईश्वर इतनी कृपा भी करें कि बिना मेहनत उनको यह हालत कहीं मिल जावे, तो नतीजा क्या होगा? कि मेरी शकल से बेज़ार हो जावेंगे, इस लिये कि इस हालत में मज़ा क्या बल्कि शुबह और गुमान तक नहीं। भाई; मज़े की हालत मैं अपने ऊपर अक्सर तारी कर लेता था, अब मौजूदा हालत जो कुछ है, बेमज़े की है। उससे एक Second (सेकेण्ड) भी हटने को जी नहीं चाहता। सो लोग मज़े की हालत लेते हुए जब बेमज़े की हालत में पहुँचेंगे, तब उनका यह हाल हो सकता है, जैसा कि मेरा कि बेमज़े की हालत से हटने को जी नहीं चाहता। अगर कोई मुझसे यह कहे कि तुम अपनी जान दे दो या मौजूदा हालत से अलग हो जाओ तो, जान की Sacrifice (बलि) मुझे दिल से कबूल होगी। अब यह नहीं कहा जा सकता कि वह हालत क्या है? शब्द नहीं, ज़ुबान नहीं कि उसको बयान कर सकूं।

तुमने अपनी वर्तमान हालत को ब्रह्म-दर्शन की हालत लिखा है, वह इस लिहाज़ से तो सही है कि ब्रह्म की हालत सूक्ष्म से सूक्ष्म हर जगह होती चली गई है, मगर जो ब्रह्म का एहसास इस वक्त है, अर्थात 'V' (वी) स्थान पर, उसमें अभी लय अवस्था पैदा नहीं हुई। हल्का-हल्का इशारा तो मैं करता जाता हूँ, ताकि हालत आहिस्ता खुले, इसलिये कि तुम बीमार हो और इस समय तन्दुरुस्त हो जाना ही तुम्हारा धर्म है। तुमने यह भी लिखा है कि 'मेरा तो रूप ही ब्रह्म हो गया है' "तो ब्रह्म रूप तो हो ही और यह सब कह सकते हैं, मगर तुम्हारे लिये मैं यह लिखता हूँ कि हिरण्य-गर्भ की हालत से तुम बहुत ऊंची निकल चुकी हो। Purity (शुद्धता) तो जिस जगह पर तुम हो, अधिक है। मैं इस हालत को भी बंधन की हालत कहता हूँ। जब Purity (शुद्धता) और Impurity (अशुद्धता) दोनों का एहसास ख़त्म हो जावे, तब Reality (वास्तविकता) की शुरूआत समझना चाहिये और उसके आगे अनगिनत Stages (दशायें) हैं, जो गिनने में नहीं आती। मगर यह याद रहे कि Purity (प्योरिटी) और Impurity (इम्प्योरिटी) मिटने का ख़याल मत बाँधना, कुदरती तौर पर जो हालत आती जावे, उसको एहसास करती चलो; रफ़्ता-रफ़्ता वह हालत भी ईश्वर देंगे। तुमने यह भी लिखा है कि "अहं-ब्रह्मास्मि की दशा है।" यह सही हो सकता है, मगर बिटिया, यह हालत हर पर्दे पर और हर स्थान पर महसूस होती है। जितनी ऊंची हालत होती जाती है, उतने अच्छे रूप में यह दिखलाई देती है। इसको मैं क्या लिखूं? मेरी मानेगा कौन? वेदान्ती तो यही कहेंगे, अगर मैं ज़ुबान खोलूं कि यह ग़लत कहता है, और वेद-वाक्य के सम्भव है कि यह ख़िलाफ़ पड़े। जब हमको अहं-ब्रह्मास्मि का भास होता है, तो यह आवश्यक है कि किसी चीज़ से हम उसको Differentiate (भेद करना) कर लेते हैं,

गोया कोई चीज़ अभी ज़रूर ऐसी है जो Difference (भेद) का एहसास दिला रही है। यह तो रही Philosophy (दर्शन) और समझाने की बात। असलियत वहाँ है, जहाँ यह Difference (भेद) ख़त्म हो जाये और फिर न अहं-ब्रह्मास्मि का एहसास रहे और न इसके विरूद्ध। अब भी भाई, कहने को तो perfection (पूर्ण) हो गया, मगर नहीं मालूम, अभी क्या-क्या बाकी है। मैं तो यही कहूँगा कि यहाँ पहुँचने पर भी दिल्ली दूर रह जाती है। अब बिटिया, बताओ मैं क्या लिखूं? इसके आगे भी कुछ न कुछ ज़रूर लिखा जा सकता है मगर कौन समझेगा और कौन मानेगा। ख़ैर, एक बात मैं इससे आगे की भी लिखे देता हूँ। वह यह है कि वहाँ पहुँचने पर सूक्ष्मता बिल्कुल ख़त्म हो जाती है, मगर बहुत बढ़ने के बाद। बस इससे आगे Expression (अभिव्यक्ति) के लिये शब्द नहीं मिलते। इतना मैं और कहे देता हूँ कि इस हालत पर पहुँचने के बाद भूमा के क़रीब पहुँचने के लिये हज़ारों वर्ष भी कम हैं। बल्कि उस दशा पर (जहाँ की सूक्ष्मता ख़त्म होती है) जाने के लिये हज़ारों वर्ष चाहिये और फिर नहीं मालूम कितनी हज़ार सीढ़ियाँ भूमा के निकट पहुँचने में लगेंगी। मैं तो यही समझता हूँ कि इन हालतों को पार कराने की शक्ति सिवाय हमारे गुरू-महाराज के किसी में पाई नहीं जाती और यह ईज़ाद 'आप' ही की है कि जिस्म रखते हुए यह Stages (दशायें) पार कराई जा सकती हैं।

कहाँ तक धन्यवाद ऐसी बुजुर्ग हस्ती को दिया जाये कि जिसने बज़रिये Transmission (प्राणाहुति) एक Second (सेकेन्ड) में उस आख़िरी हालत पर पहुँचाना मुमकिन बना दिया। हम लोग वाक़ई अंधे हैं जो ऐसी बुजुर्ग हस्ती की तरफ़ नहीं देखते, जिसने वह काम कर दिखाया, जिसके लिये Spiritual History (आध्यात्मिक-इतिहास) ख़ामोश है। ईश्वर करे हम सबको यह हालत नसीब हो।

यह Important (महत्वपूर्ण) पत्र है। जब लखीमपुर जाओ, तब इसको लेती जाना, ताकि मास्टर साहब की File (फाइल) में लग जाये।

शुभचिंतक

रामचन्द्र